शब्द ही एकमात्र रत्न है जो मेरे पास है
शब्द ही एकमात्र वस्त्र है जिसे मैं पहनता हूँ
शब्द ही एकमात्र आहार है जो मुझे जीवित रखता है
शब्द ही एकमात्र धन है जिसे मैं लोगों में बाँटता हूँ

–संत तुकाराम

वार्षिकी 2023 - 2024

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)

वार्षिकी

2023 - 2024

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)

वार्षिकी

2023-2024

अध्यक्ष : डॉ. माधव कौशिक
उपाध्यक्ष : प्रो. कुमुद शर्मा
सचिव : डॉ. के. श्रीनिवासराव

अनुक्रम

साहित्य अकादेमी : संक्षिप्त परिचय 4

परियोजनाएँ एवं योजनाएँ 8

2023-2024 की प्रमुख गतिविधियाँ 12

पुरस्कार

-साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2023 15

-साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2023 19

-साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2023 23

-साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2023 27

कार्यक्रम

-उन्मेष, अंतरराष्ट्रीय साहित्य उत्सव, भोपाल 31

-साहित्योत्सव 2024 32

-अकादेमी प्रदर्शनी 2023 का उद्घाटन 33

-संवत्सर व्याख्यान 34

पुरस्कार अर्पण

-साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2023 अर्पण समारोह 35

-साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2023 अर्पण समारोह 40

-साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2023 अर्पण समारोह 44

-साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता अर्पित 48

सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम 53

राष्ट्रीय महत्त्व के कार्यक्रम 54

संगोष्ठियाँ, परिसंवाद, लेखक सम्मिलन आदि 67

साहित्य अकादेमी द्वारा 1 अप्रैल 2023 से 31 मार्च 2024 तक आयोजित कार्यक्रमों की सूची 129

वर्ष 2023-2024 में आयोजित कार्यकारी मंडल, सामान्य परिषद्, वित्त समिति,
क्षेत्रीय मंडलों और भाषा परामर्श मंडलों की बैठकें 161

वर्ष 2023-2024 में आयोजित पुस्तक प्रदर्शनियाँ/पुस्तक मेले 164

प्रकाशित पुस्तकें 172

वार्षिक लेखा 2023-2024 209

साहित्य अकादेमी

(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)

साहित्य अकादेमी भारत की एक प्रमुख साहित्यिक संस्था है, जो स्वयं द्वारा मान्यताप्रदत्त 24 भारतीय भाषाओं के साहित्य का संरक्षण एवं उन्हें प्रोत्साहन देती है। यह संस्था पूरे साल कार्यक्रमों का आयोजन, भारतीय भाषाओं के लेखकों को पुरस्कार तथा महत्तर सदस्यताएँ प्रदान करती है तथा स्वयं द्वारा मान्यताप्रदत्त 24 भारतीय भाषाओं में पुस्तकें प्रकाशित करती है।

अकादेमी ने अपने छह दशकों से अधिक समय के गतिशील अस्तित्व द्वारा 24 भाषाओं में 7000 से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन किया है। अकादेमी मूल कृतियों के प्रकाशन के साथ ही अनुवाद, जिनमें कथासाहित्य, कविता, नाटक तथा समालोचना भी शामिल हैं, के अलावा कालजयी, मध्यकालीन, पूर्व आधुनिक तथा समकालीन साहित्य का भी प्रकाशन करती है। अकादेमी उत्कृष्ट बाल साहित्य को प्रोत्साहित करने में भी संलिप्त है।

भारत में अकादेमी पुरस्कारों को सर्वाधिक प्रतिष्ठित साहित्यिक पुरस्कार माना जाता है। साहित्य अकादेमी पुरस्कार, अकादेमी द्वारा मान्यताप्रदत्त 24 भारतीय भाषाओं की उत्कृष्ट पुस्तक (कों) को प्रदान किया जाता है। भाषा सम्मान उन लेखकों/विद्वानों/संपादकों/संकलनकर्ताओं/कलाकारों/अनुवादकों को प्रदान किया जाता है, जिन्होंने उन भाषाओं के प्रचार-प्रसार एवं उन्हें समृद्ध करने के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया हो, जिन भाषाओं को साहित्य अकादेमी की औपचारिक मान्यता प्राप्त नहीं है तथा इसके अलावा जिन्होंने देश के कालजयी और मध्यकालीन साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया हो। अनुवाद पुरस्कार अकादेमी द्वारा मान्यताप्रदत्त 24 भारतीय भाषाओं के उत्कृष्ट अनुवादों को प्रदान किया जाता है, बाल साहित्य पुरस्कार 24 भाषाओं के उत्कृष्ट बाल साहित्य को प्रदान किया जाता है तथा युवा पुरस्कार 24 भाषाओं के उत्कृष्ट युवा भारतीय लेखकों को प्रदान किया जाता है। ये सारे पुरस्कार अकादेमी द्वारा प्रत्येक वर्ष प्रदान किए जाते हैं।

प्रत्येक वर्ष अकादेमी कम से कम 50 संगोष्ठियों एवं 100 से अधिक परिसंवादों का क्षेत्रीय, राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आयोजन करती है तथा इसके अतिरिक्त 400 से अधिक साहित्यिक कार्यक्रमों, कार्यशालाओं तथा संवाद कार्यक्रमों का आयोजन भी करती है। अकादेमी के कुछ लोकप्रिय कार्यक्रम हैं—लेखक से भेंट (जिसमें कोई प्रख्यात लेखक अपने जीवन एवं कृतियों की चर्चा करता है), संवत्सर व्याख्यान (इसमें भारतीय साहित्य की गहन जानकारी रखनेवाला प्रख्यात लेखक सृजनात्मक विचारक व्याख्यान देता है), कवि अनुवादक (इस कार्यक्रम के अंतर्गत श्रोताओं को मूल एवं अनूदित दोनों कविताओं को एक साथ सुनने का अवसर प्राप्त होता है), व्यक्ति एवं कृति (इसके अंतर्गत अंत: अनुशासनिक क्षेत्रों के लब्धप्रतिष्ठ व्यक्तियों को व्याख्यान हेतु आमंत्रित किया जाता है), कथासंधि (इस कार्यक्रम के अंतर्गत नव-लिखित उपन्यास या नई कहानियों का एकल पाठ होता है तथा उन पर चर्चा की जाती है), कविसंधि (इसमें काव्य-प्रेमियों को कवि/कवयित्री द्वारा एकल कविता-पाठ सुनने का अवसर प्राप्त होता है), लोक : विविध स्वर (यह कार्यक्रम लोक-साहित्य पर आधारित है, जिसमें व्याख्यानों के साथ-साथ प्रदर्शन भी सम्मिलित है), नारी चेतना (यह कार्यक्रम भारतीय भाषाओं में लिखनेवाली महिला साहित्यकारों को एक मंच प्रदान करता है), युवा साहिती (इसमें विभिन्न भारतीय भाषाओं के युवा लेखकों को प्रोत्साहित किया जाता है), पूर्वोत्तरी (इस शृंखला में पूर्वोत्तर के लेखकों/साहित्यकारों को देश के विभिन्न प्रांतों में साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों

में रचना-पाठ हेतु आमंत्रित किया जाता है), ग्रामालोक (ग्रामीण अंचलों में साहित्यिक आयोजन) तथा अनुवाद कार्यशालाएँ (इसके अंतर्गत देश के विभिन्न प्रांतों के अनुवादकों को एक साथ आमंत्रित किया जाता है)। अकादेमी प्रत्येक वर्ष साहित्योत्सव का आयोजन करती है। अकादेमी अपने नई दिल्ली स्थित जनजातीय और वाचिक साहित्य केंद्र तथा अगरतला में स्थित वाचिक पूर्वोत्तर साहित्य केंद्र द्वारा देश में जनजातीय और वाचिक साहित्य को प्रोत्साहित करती है।

अकादेमी भारतीय साहित्य की सेवा करनेवाले प्रख्यात भारतीय लेखकों तथा विदेशी विद्वानों को फ़ेलोशिप भी प्रदान करती है। अकादेमी द्वारा आनंद कुमारस्वामी फ़ेलोशिप उन एशियाई देशों के विद्वानों को प्रदान की जाती है, जो भारत में अपनी पसंद की किसी साहित्यिक परियोजना पर कार्य करते हैं तथा प्रेमचंद फ़ेलोशिप सार्क (SAARC) देशों के उन सृजनात्मक लेखकों अथवा विद्वानों को प्रदान की जाती है, जो भारतीय साहित्य पर शोध करते हैं।

अकादेमी द्वारा भारतीय लेखकों पर विनिबंध, इनसाइक्लोपीडिया तथा संचयन जैसी प्रमुख परियोजनाओं का कार्य भी किया जाता है। हाल ही में संस्कृति मंत्रालय ने 'इंडियन लिटरेचर एब्रॉड' (ILA) नामक एक नई परियोजना अकादेमी को सौंपी है, जिसके अंतर्गत वैश्विक स्तर पर भारतीय साहित्य को प्रोत्साहित करने के लिए उसका विदेशी भाषाओं में अनुवाद कराया जाना है। इसके माध्यम से अकादेमी भारतीय साहित्यिक विरासत को प्रोत्साहित कर सकेगी तथा प्रमुख विदेशी भाषाओं में समकालीन भारतीय साहित्य का अनुवाद भी करा सकेगी। अकादेमी विभिन्न देशों के साथ सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों का भी आयोजन करती है, जिसके अंतर्गत प्रत्येक वर्ष कई लेखकों के प्रतिनिधिमंडल एक-दूसरे देशों में आयोजित होने वाले साहित्यिक कार्यक्रमों, पुस्तक मेलों तथा सम्मिलनों में भाग लेते हैं।

अध्यक्ष

साहित्य अकादेमी के पहले अध्यक्ष पं. जवाहरलाल नेहरू थे। सन् 1963 में वह पुन: अध्यक्ष निर्वाचित हुए। मई 1964 में उनके निधन के बाद सामान्य परिषद् ने डॉ. एस. राधाकृष्णन् को अपना अध्यक्ष निर्वाचित किया। फ़रवरी 1968 में नवगठित परिषद् ने डॉ. ज़ाकिर हुसैन को साहित्य अकादेमी का अध्यक्ष निर्वाचित किया। मई 1969 में उनके निधन के पश्चात् परिषद् ने डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी को अध्यक्ष चुना। फ़रवरी 1973 में वह परिषद् द्वारा पुन: अध्यक्ष चुने गए। मई 1977 में उनकी मृत्यु के पश्चात् उपाध्यक्ष प्रो. के. आर. श्रीनिवास आयंगर साहित्य अकादेमी के कार्यवाहक अध्यक्ष बनाए गए। फ़रवरी 1978 में प्रो. उमाशंकर जोशी अध्यक्ष निर्वाचित हुए। फ़रवरी 1983 में प्रो. वी.के. गोकाक अध्यक्ष निर्वाचित हुए। फ़रवरी 1988 में डॉ. वीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 1993 में प्रो. यू. आर. अनंतमूर्ति अध्यक्ष चुने गए। 1998 में श्री रमाकांत रथ अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 2003 में प्रो. गोपीचंद नारंग अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 2008 में श्री सुनील गंगोपाध्याय अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 2013 में प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी को अकादेमी का अध्यक्ष चुना गया। 2018 में डॉ. चंद्रशेखर कंबार अध्यक्ष निर्वाचित हुए। सामान्य परिषद् को 2023-2028 के कार्यकाल के लिए पुनर्गठित किया गया तथा 2023 में श्री माधव कौशिक अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

संविधान

साहित्य अकादेमी की स्थापना भारत सरकार के 15 दिसंबर 1952 के प्रस्ताव के अंतर्गत हुई, जिसमें अकादेमी का संविधान मूलत: अंतर्भुक्त था। अकादेमी एक स्वायत्त संस्था के रूप में कार्य करती है और अपने संविधान में आवश्यक संशोधन करने का अधिकार अकादेमी

की सामान्य परिषद् में न्यस्त है। समय-समय पर इस अधिकार का प्रयोग भी किया जाता रहा है।

मान्यता प्रदत्त भाषाएँ

भारत के संविधान में परिगणित 22 भाषाओं के अतिरिक्त साहित्य अकादेमी अंग्रेज़ी और राजस्थानी को ऐसी भाषाओं के रूप में मान्यता प्रदान कर चुकी है, जिसमें उसका कार्यक्रम क्रियान्वित किया जा सकता है। इन 24 भारतीय भाषाओं में साहित्यिक कार्यक्रम लागू करने के लिए परामर्श मंडल गठित किए गए हैं। साहित्य अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त भाषाएँ हैं— असमिया, बाङ्ला, बर', डोगरी, अंग्रेज़ी, गुजराती, हिंदी, कन्नड, कश्मीरी, कोंकणी, मैथिली, मलयाळम् मणिपुरी, मराठी, नेपाली, ओड़िआ, पंजाबी, राजस्थानी, संस्कृत, संताली, सिंधी, तमिऴ, तेलुगु और उर्दू।

संगठन

प्रधान कार्यालय : साहित्य अकादेमी का प्रधान कार्यालय रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110001 में स्थित है। यह भव्य भवन रवींद्रनाथ ठाकुर की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में सन् 1961 में निर्मित हुआ था। इसमें तीनों राष्ट्रीय अकादेमियाँ—संगीत नाटक अकादेमी, ललित कला अकादेमी और साहित्य अकादेमी स्थित हैं।

यह कार्यालय 10 भाषाओं यथा—डोगरी, अंग्रेज़ी हिंदी, कश्मीरी, मैथिली, नेपाली, पंजाबी, राजस्थानी, संस्कृत और उर्दू के प्रकाशनों तथा कार्यक्रमों की देखरेख करता है।

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता : सन् 1956 में स्थापित और अब 4. डी.एल. ख़ान रोड (एस.एस.के.एम. अस्पताल के निकट) कोलकाता-700025 में स्थित यह क्षेत्रीय कार्यालय असमिया, बाङ्ला, बोडो, मणिपुरी ओड़िआ और संताली में अकादेमी के प्रकाशन और कार्यक्रमों की देखरेख करता है तथा इसके अलावा यह अन्य उत्तर-पूर्वी भाषाओं में भी कार्यक्रमों का संयोजन करता है। यहाँ पर एक पुस्तकालय भी है।

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु : साहित्य अकादेमी के बेंगलुरु स्थित क्षेत्रीय कार्यालय की स्थापना 1990 में हुई। इस दक्षिणी क्षेत्रीय कार्यालय की मूलत: स्थापना 1959 में चेन्नै में हुई थी तथा बाद में इसे 1990 में सेंट्रल कॉलेज परिसर, यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी बिल्डिंग, डॉ. बी.आर. आंबेडकर वीथी, बेंगळूरु-560001 में स्थानांतरित कर दिया गया। यह क्षेत्रीय कार्यालय कन्नड, मलयाळम् और तेलुगु में अकादेमी के प्रकाशन और कार्यक्रमों की देखरेख करता है। यहाँ पर एक पुस्तकालय भी है।

चेन्नै कार्यालय : दक्षिणी क्षेत्रीय कार्यालय की स्थापना 1959 में चेन्नै में की गई थी तथा 1990 में उसे उप कार्यालय के रूप में परिवर्तित कर क्षेत्रीय कार्यालय को बेंगळूरु में स्थानांतरित कर दिया गया। चेन्नै उप कार्यालय तमिऴ में अकादेमी के प्रकाशनों तथा कार्यक्रमों की देखरेख करता है तथा यह मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग्स (द्वितीय तल), 443 (304), अन्नासालई, तेनामपेट, चेन्न-600018 में स्थित है।

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई : सन् 1972 में स्थापित और 172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुंबई-400014 में स्थित यह कार्यालय गुजराती, कोंकणी, मराठी और सिंधी में अकादेमी के प्रकाशनों और कार्यक्रमों की देखरेख करता है। यहाँ पर एक पुस्तकालय भी है।

प्रकाशनों की बिक्री : साहित्य अकादेमी का बिक्री अनुभाग 'स्वाति', मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 में स्थित है। इसके अतिरिक्त अकादेमी के प्रकाशनों की बिक्री नई दिल्ली स्थित मुख्यालय और मुंबई, कोलकाता, बेंगळूरु और चेन्नै कार्यालयों तथा कश्मीरी गेट एवं विश्वविद्यालय मेट्रो स्टेशन स्थित बिक्री केंद्रों से भी की जाती है। अकादेमी ने अपनी पुस्तकों का विक्रय

अमेज़न (www.amazon.in) तथा साहित्य अकादेमी वेबसाइट (www. sahitya-akademi.gov.in) पर भी प्रारंभ कर दिया है।

पुस्तकालय : साहित्य अकादेमी का पुस्तकालय भारत के प्रमुख बहुभाषिक पुस्तकालयों में से एक है, यहाँ अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त 24 भाषाओं में विविध साहित्यिक और संबद्ध विषयों की पुस्तकें उपलब्ध हैं। क्षेत्रीय कार्यालयों के पुस्तकालयों को संबंधित क्षेत्रीय भाषाओं के केंद्रों के रूप में स्थापित किया गया है और उन क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण भाषा पुस्तकालयों के लिए यह संपर्क संस्था के रूप में कार्य करता है।

साहित्य अकादेमी वेबसाइट : साहित्य अकादेमी की वेबसाइट http://www.sahitya-akademi.gov.in में इसकी स्थापना, उद्देश्यों, साहित्य अकादेमी की भूमिका एवं उसके इतिहास के विवरण उपलब्ध हैं। इसके अलावा अकादेमी की पुस्तकों की संपूर्ण सूची, जिसमें महत्त्वपूर्ण प्रकाशनों का भाषानुसार विवरण उपलब्ध है, उसकी पत्रिकाओं, साहित्यिक गतिविधियों, विशेष परियोजनाओं के बारे में सूचनाएँ, अकादेमी पुरस्कार तथा महत्तर सदस्यता के विवरण, पुस्तकालय के बारे में सूचना तथा गत वर्षों में संस्था की उपलब्धियों का मूल्यांकन उपलब्ध है। अकादेमी वेबसाइट को नियमित रूप से द्विभाषी (हिंदी-अंग्रेज़ी) रूप में अद्यतन किया जाता है।

परियोजना एवं योजनाएँ

अभिलेखागार परियोजना

साहित्य के क्षेत्र में अभिलेखन के महत्त्व और उसकी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए साहित्य अकादेमी ने मार्च 1997 में भारतीय साहित्य के अभिलेखागार की एक परियोजना प्रारंभ की। जब अभिलेखागार पूरी तरह से बन जाएगा तो यह लेखकों और साहित्य से संबंधित महत्त्वपूर्ण सामग्री एकत्र और संरक्षित करेगा, जैसे कि पांडुलिपियाँ, चित्र, ऑडियो रिकार्डिंग, वीडियो रिकॉर्डिंग और प्रतिकृतियाँ (शबीह) आदि। पूरे भारतवर्ष में संस्थाओं और व्यक्तियों के पास उपलब्ध वीडियो फ़िल्म एवं लेखकों की लेखकों के मध्य हुए रोचक पत्राचार एवं साक्षात्कार और पाठ के उपलब्ध ऑडियो रिकॉर्डिंग को इकट्ठा कर यह भारतीय साहित्य के संग्रहालय के लिए एक ठोस आधार तैयार करेगा। अभिलेखागार में कुछ अत्यंत महत्त्वपूर्ण चित्रों को सीडी-रोम्स पर स्कैन करने और संरक्षित करने का कार्य शुरू कर दिया गया है। लगभग एक सौ चित्रों का चयन कर उन्हें पोर्टफोलियो सीडी में संरक्षित किया गया है।

साहित्य अकादेमी ने फ़िल्मों, भारतीय लेखकों और उनके लेखन से संबंधित वीडियो रिकॉर्डिंग के अभिलेखागार की परियोजना पर कार्य प्रारंभ किया है। अकादेमी द्वारा महत्त्वपूर्ण लेखकों पर बनाई गई फ़िल्मों में उनके चित्रों, आवाज़ों, जीवन की महत्त्वपूर्ण प्रभावी घटनाओं, उनके विचारों और सृजनात्मक उपलब्धियों एवं समकालीन प्रतिक्रिया को अभिलेखित करने का प्रयास किया गया है। वीडियो फ़िल्मों का यह अभिलेखागार भविष्य के अनूठे भारतीय साहित्यिक संग्रहालय का एक किया गया है। वीडियो फ़िल्मों का यह अभिलेखागार भविष्य के अनूठे भारतीय साहित्यिक संग्रहालय का एक नमूना होगा, जो आम पाठकों के लिए रुचिकर होगा और साहित्यिक अनुसंधानकर्ताओं और इतिहासकारों के लिए उपयोगी साबित होगा। ये फ़िल्में उन निर्देशकों द्वारा निर्मित की गई हैं, जो अपनी ही तरह के सृजनात्मक कलाकार हैं। अकादेमी द्वारा अब तक 172 लेखकों पर वीडियो फ़िल्में बनाई गई हैं। इनमें से कुछ फ़िल्मों की सीडी बिक्री के लिए भी उपलब्ध है।

अकादेमी से किए जाने वाले पत्राचार की समीक्षा की गई है तथा जवाहरलाल नेहरू, एस. राधाकृष्णन, कृष्ण कृपलानी, ज़ाकिर हुसैन, सी. राजगोपालाचारी एवं अन्य प्रख्यात व्यक्तियों के पत्रों को लेमिनेट कराकर संरक्षण हेतु पुस्तक रूप में तैयार किया गया है। समस्त मास्टर बीटा फ़िल्मों के डिज़िटाइज़ेशन का कार्य पूर्ण हो चुका है। 2015 तक की ऑडियो टेप्स की प्रामाणिकता को जाँचने के उपरांत उनके क्रमांकन, शीर्षक एवं सूची बनाने का कार्य पूरा कर लिया गया है।

एक अन्य महत्त्वपूर्ण कार्य के रूप में अकादेमी ने इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र (IGNCA) के साथ अपने अभिलेखागार के ऑडियो, वीडियो और अन्य सामग्रियों के डिज़िटाइज़ेशन के लिए एक करार किया है। तदनुसार कार्य प्रगति पर है।

अनुवाद केंद्र

चूँकि अनुवाद अकादेमी की गतिविधियों में से एक प्रमुख गतिविधि है, अकादेमी ने बेंगळूरु में तथा कोलकाता में पूर्वी क्षेत्र अनुवाद केंद्र स्थापित किए हैं। ये केंद्र उन क्षेत्रों की भाषाओं से अंग्रेज़ी तथा अन्य भाषाओं में अनूदित पुस्तकों की विशेष शृंखला का प्रकाशन करेंगे।

इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन लिटरेचर

साहित्य अकादेमी की प्रमुख गतिविधियों में *इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन लिटरेचर* का निर्माण भी है। यह अपनी तरह की पहली योजना है, जिसमें भारत की बाईस भाषाओं को शामिल किया गया है। अंग्रेज़ी में प्रस्तुत इस विश्वकोश से भारतीय साहित्य की अभिवृद्धि और विकास की व्यापक रूपरेखा सामने आई है। लेखकों, पुस्तकों और सामान्य विषयों पर लिखित प्रविष्टियों को संबद्ध परामर्श मंडलों द्वारा सुव्यवस्थित किया गया और एक संचालन समिति द्वारा अंतिम रूप दिया गया है। देश भर के सैकड़ों लेखकों ने विभिन्न विषयों पर प्रविष्टियाँ भेजी हैं। यह विश्वकोश, जिसे छह खंडों की परियोजना के रूप में नियोजित किया गया, प्रकाशित है। डिमाई क्वार्टो आकार के प्रत्येक खंड में लगभग 1000 पृष्ठ हैं।

इनसाइक्लोपीडिया के संशोधन का कार्य प्रो. के. अय्यप्प पणिक्कर के संपादन में शुरू किया गया था। वर्तमान में प्रो. इंद्रनाथ चौधुरी इस परियोजना के प्रधान संपादक के रूप में संबद्ध हैं। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय खंडों के संशोधित संस्करण प्रकाशित किए जा चुके हैं। चतुर्थ खंड का कार्य साहित्य अकादेमी क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता की देखरेख में हो रहा है।

हिस्ट्री ऑफ़ इंडियन लिटरेचर

अकादेमी की इस परियोजना का उद्देश्य है— विभिन्न भाषाओं में और विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों के अंतर्गत विभिन्न कालों में भारत में साहित्यिक गतिविधियों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करना। प्रो. शिशिर कुमार दास द्वारा लिखित सन् 500 से 1300, सन् 1800 से 1910 और सन् 1911 से 1956 तक के कालखंड को समेटने वाले तीन खंडों का प्रकाशन हो चुका है।

द्विभाषी शब्दकोश परियोजना

सन् 2004 में साहित्य अकादेमी ने कई द्विभाषी शब्दकोशों का संकलन तैयार करने हेतु एक परियोजना का शुभारंभ किया। प्रथम चरण में बाङ्ला-असमिया, बाङ्ला-ओड़िआ बाङ्ला-मैथिली, बाङ्ला-मणिपुरी तथा बाङ्ला-संताली शब्दकोश लाने का निर्णय लिया गया। प्रत्येक शब्दकोश के लिए प्रख्यात विद्वानों, कोशकारों तथा विभिन्न भाषाओं के भाषा विशेषज्ञों का एक संपादक-मंडल तैयार किया गया है। पांडुलिपि तैयार करने एवं आगामी प्रकाशन संबंधी दिशा-निर्देश तथा उसकी निगरानी के लिए एक केंद्रीय संपादक-मंडल का भी गठन किया गया।

यह पाया गया कि पूर्वोत्तर भारत की लगभग समस्त भाषाओं में अंग्रेज़ी के एकल तथा अंग्रेज़ी एवं अन्य भाषाओं के शब्दकोश तो कमोबेश उपलब्ध हैं, किंतु बाङ्ला-मणिपुरी अथवा मणिपुरी-असमिया आदि भाषाओं के शब्दकोश लगभग न के बराबर हैं। साहित्य अकादेमी पड़ोसी राज्यों के बीच आपसी संबंधों को और अधिक प्रगाढ़ करने के प्रयासों के चलते साहित्यिक कृतियों का अनुवाद एक भाषा से अन्य भाषाओं में करवा रही है। किंतु समुचित मात्रा में शब्दकोशों की अनुपलब्धता एक बाधा बन गई है तथा अनुवादकों के पास अनुवाद कार्य हेतु प्रामाणिक शब्दकोश नहीं हैं। इस परिस्थिति में

साहित्य अकादेमी ने शब्दकोश निर्माण की परियोजना को प्रारंभ किया।

ये शब्दकोश औसत आकार के होंगे, जिनमें 40000-45000 शब्दों तथा वाक्यांशों की प्रविष्टि होगी। विवरण के अंतर्गत आई.पी.ए. (इंटरनेशनल फोनेटिक ऐसोसिएशन) के अंतर्गत उच्चारण चिह्न संस्कृत, अरबी आदि भाषा संबंधी स्रोत : शब्द-भेद, विस्तृत अर्थ (एक से अधिक, यदि आवश्यक हो तो) उदाहरण, व्युत्पत्ति आदि दिया जाना प्रस्तावित है। इस संपूर्ण परियोजना को प्रख्यात कोशकार प्रो. अशोक मुखोपाध्याय के संपादकीय निर्देशन में तैयार किया जा रहा है।

परियोजना के प्रथम द्विभाषी बाङ्ला-मैथिली शब्दकोश का 1 मई 2012 को लोकार्पण किया गया। बाङ्ला-संताली द्विभाषी शब्दकोश को 14 अगस्त 2012 को लोकार्पित किया गया। डोगरी-हिंदी-राजस्थानी शब्दकोश 2012 में प्रकाशित हुआ। बाङ्ला-मणिपुरी शब्दकोश 2014 में प्रकाशित हुआ तथा बाङ्ला-असमिया शब्दकोश 2018 में प्रकाशित हुआ। कन्नड-तेलुगु द्विभाषी शब्दकोश 2019 में प्रकाशित हुआ। बाङ्ला-नेपाली, संताली-ओड़िआ, मैथिली-ओड़िआ तथा मैथिली-असमिया द्विभाषी शब्दकोशों के संकलन का कार्य प्रगति पर है।

जनजातीय तथा वाचिक साहित्य केंद्र

भारत के व्यापक जनजातीय एवं वाचिक साहित्य को संकलित, संरक्षित और प्रचारित-प्रसारित करने के उद्देश्य से साहित्य अकादेमी द्वारा दो केंद्रों की स्थापना की गई है, इंफ़ाल में उत्तर-पूर्व वाचिक साहित्य केंद्र (NECOL) तथा नई दिल्ली में वाचिक एवं जनजातीय साहित्य केंद्र (COTLIT)।

उत्तर-पूर्व वाचिक साहित्य केंद्र की स्थापना का मुख्य उद्देश्य प्रकाशनों एवं रिकॉर्डिंग द्वारा पूर्वोत्तरी वाचिक भाषाओं के कार्यों एवं वहाँ के साहित्य को प्रोत्साहित करना है। यह केंद्र लोक उत्सव, आदिवासी भाषाओं में रचना-पाठ, साहित्य मंच, संगोष्ठी, परिसंवाद, कार्यशालाओं आदि का आयोजन करता रहता है। यह केंद्र पूर्वोत्तरी वाचिक साहित्य को अन्य मान्यता प्राप्त भारतीय भाषाओं में भी अनूदित करवाता है।

यह केंद्र पूर्वोत्तरी जनजातीय भाषाओं को अन्य प्रमुख भारतीय भाषाओं से निरंतर कार्यक्रमों के आयोजनों द्वारा मिलाने का कार्य भी करता है। यहाँ से लेपचा, कॅंकबरॅक, मिसिंग, बोंगचर, गारो तथा मोग भाषाओं से अंग्रेज़ी में कई अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं। वाचिक एवं जनजातीय साहित्य केंद्र (COTLIT) देशभर के वाचिक एवं जनजातीय साहित्य को संकलित, संरक्षित और प्रोत्साहित करने का कार्य कार्यक्रमों एवं प्रकाशनों के माध्यम से करता है। यह केंद्र वाचिक साहित्य के डिजिटल अभिलेख मंच 'स्वर सदन' के सृजन में भी सक्रियता से संलग्न है तथा पूर्वोत्तर क्षेत्र की विभिन्न प्रदर्शनियों में भी सहभागिता करता है।

पुस्तकालय

साहित्य अकादेमी पुस्तकालय 24 भाषाओं की पुस्तकों में साहित्य, समालोचना, दर्शनशास्त्र, इतिहास तथा उससे संबंधित विषयों की पुस्तकों के समृद्ध संग्रह के साथ अपनी तरह का अनूठा पुस्तकालय है। अकादेमी पुस्तकालय सक्रिय एवं प्रशंसक पाठकों (कुल 14,093 पंजीकृत सदस्य) द्वारा दिल्ली में सर्वाधिक प्रयोग किया जाने वाला पुस्तकालय है। वर्ष 2023-2024 में पुस्तकालय के 173 नए सदस्य बने हैं तथा 2,896 नई पुस्तकें पुस्तकालय हेतु ख़रीदी गईं। पुस्तकालय के प्रधान कार्यालय का कुल संग्रह 1.84 लाख से भी अधिक है तथा अकादेमी के

समस्त क्षेत्रीय कार्यालयों के पुस्तकालयों को मिलाकर कुल 2.58 लाख (लगभग) पुस्तकें हैं।

पाठकों की सुविधा के लिए अकादेमी पुस्तकालय के वेब पेज को नया रूप दिया गया है। वेब ओपीएसी (WebOPAC) को अधिक यूजर फ्रेंडली बनाने के लिए अनुकूलित किया गया है। पुस्तकालय ने "सामग्री आधारित पूर्ण पाठ खोज प्रणाली" की एक नई सेवा भी शुरू की है, जो संदर्भ उद्देश्य के लिए बहुत उपयोगी है। पाठकों तथा स्टॉफ सदस्यों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए डिजिटल लाइब्रेरी (साहित्य सागर) का भी निर्माण किया गया है। अब 24 भाषाओं की पुस्तकों की कैटलॉगिंग को पूर्ण रूप से कंप्यूटरीकृत किया जा चुका है तथा वेब ओपीएसी (WebOPAC) के माध्यम से अकादेमी की वेबसाइट www.sahitya-akademi.gov.in पर ऑनलाइन ढूँढ़ा जा सकता है। समस्त भाषाओं की पुस्तकों की ऑन-लाइन कैटलॉगिंग का काम किया जा चुका है। इन खंडों के ऑटोमेशन होने के साथ पुस्तकालय कम समय में ग्रंथ सूची उपलब्ध करा सकता है। "हूज' हू ऑफ़ इंडियन राइटर्स" जैसी महत्त्वपूर्ण परियोजना का कार्य पुस्तकालय स्टाफ़ द्वारा संपन्न किया जा चुका है तथा हमारी वेबसाइट www.sahitya-akademi.gov.in/sahitya-akademi/SA Search System/sauser पर उपलब्ध है। 'क्रिटिकल इन्वेंट्री ऑफ़ नार्थ-ईस्टर्न ट्राइबल लिटरेचर' के द्वितीय खंड के संकलन का काम अभी चल रहा है, जिसे साहित्य अकादेमी द्वारा शीघ्र प्रकाशित किया जाएगा।

पुस्तकालय भारतीय साहित्य पर लिखित अंग्रेज़ी भाषा के आलेख, जो उसकी गृह पत्रिका में प्रकाशित हैं, के क्रमांकन का कार्य भी करता है। यह डाटाबेस पुस्तकालय के पाठकों के लिए भी उपलब्ध है।

पुस्तकालय ने पाठकों के लाभ को ध्यान में रखते हुए अपनी नई सेवा को जारी रखा है, जिसमें समाचार-पत्र की कतरनों, पुस्तक समीक्षाओं तथा ज्वलंत मुद्दों को प्रदर्शित किया जाता है।

क्षेत्रीय कार्यालयों के लिए प्रत्येक वर्ष नियमित रूप से पुस्तकों की खरीद की जाती है। क्षेत्रीय कार्यालयों कोलकाता, बेंगळूरु तथा मुंबई पुस्तकालयों ने अपने संग्रहण के रेट्रोकन्वर्जन कंप्यूटरीकरण का कार्य शुरू कर दिया है। इन पुस्तकालयों के कैटलॉग सिंगल विंडो वेब ओपीएसी (WebOPAC) के माध्यम से प्राप्य हैं, जो यूनियन कैटलॉग के रूप में पुस्तकों की स्थानानुसार उपलब्धता की सूचना प्रदान करते हैं।

कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न की समिति

पी.ओ.एस.एच. अधिनियम के प्रावधानों के अंतर्गत कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न के मामलों को देखने के लिए गठित समिति की बैठक प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली तथा क्षेत्रीय कार्यालयों मुंबई, कोलकाता तथा बेंगळूरु एवं उप-कार्यालय चेन्नै में भी हुई। संबंधित समिति की रिपोर्ट के अनुसार, इस संबंध में कोई शिकायत प्राप्त नहीं हुई।

वर्ष 2023-2024 की गतिविधियाँ

- साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2023 प्रदत्त।
- साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2023 प्रदत्त।
- साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2023 प्रदत्त।
- साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्याताएँ प्रदत्त।
- उन्मेष, अंतरराष्ट्रीय साहित्य उत्सव 2023 के अंतर्गत 82 कार्यक्रम आयोजित।
- साहित्योत्सव 2024 के अंतर्गत 190 कार्यक्रम आयोजित।
- देशभर में कुल 845 कार्यक्रमों का आयोजन।
  - ❖ 08 'अस्मिता', 01 'आविष्कार', 09 पुरस्कार/महत्तर सदस्यातएँ, 03 'बाल साहिती', 13 'पुस्तक परिचर्चा', 04 'सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम', 04 'दलित चेतना', 51 'वृत्तचित्र प्रदर्शन' (दर्पण), 'एक भारत श्रेष्ठ भारत योजना' के अंतर्गत 41, 190 'साहित्योत्सव कार्यक्रम', 'ग्रामालोक' के अंतर्गत 45, 01 'कथाकार अनुवादक', 14 'कथासंधि', 19 'कविसंधि', 'साहित्य मंच' शृंखला के अंतर्गत 97, 16 'लेखक से भेंट', 44 'विविध कार्यक्रम', 01 'भाषा सम्मेलन', 04 'मुलाक़ात', 11 'बहुभाषी कवि/लेखक सम्मिलन', 14 'नारी चेतना', 01 'व्यक्ति और कृति', 05 'कवि सम्मिलन', 03 'प्रवासी मंच', 04 'संवाद', 16 'संगोष्ठियाँ' (जन्मशतवार्षिकी), 28 'संगोष्ठियाँ', 13 'परिसंवाद' (जन्मशतवार्षिकी), 66 'परिसंवाद', 12 'मेरे झरोखे से', 03 'अनुवाद कार्याशालाएँ', 'उन्मेष' के अंतर्गत 82, 13 'लेखक सम्मिलन', 09 'युवा साहिती' आदि विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।
- 439 नई एवं पुनर्मुद्रित पुस्तकें प्रकाशित।
- वर्ष 2023-2024 में 130 पुस्तक प्रदर्शनियों/पुस्तक मेलों का आयोजन एवं सहभागिता।
- साहित्य अकादेमी ने 16.54 करोड़ लाख रुपए की पुस्तकों की बिक्री की।
- साहित्य अकादेमी पुस्तकालयों में 2896 और नई पुस्तकें जुड़ीं।
- प्रख्यात भारतीय लेखकों पर 5 वृत्तचित्रों का निर्माण। साहित्य अकादेमी द्वारा निर्मित वृत्तचित्रों की कुल संख्या बढ़कर अब 172 हो गई है।
- *इंडियन लिटरेचर* के 6 अंकों, *समकालीन भारतीय साहित्य* के 6 अंकों तथा *संस्कृत प्रतिभा* के 4 अंकों का प्रकाशन।

पुरस्कार

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2023

20 दिसंबर 2023 को नई दिल्ली में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री माधव कौशिक की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में वर्ष 2023 के साहित्य अकादेमी पुरस्कार के लिए 24 भाषाओं में 24 पुस्तकों का चयन, संबद्ध भाषाओं में त्रिसदस्यीय निर्णायक मंडल की अनुशंसाओं के आधार पर किया गया। प्रक्रिया के अनुसार कार्यकारी मंडल ने पुरस्कारों की घोषणा निर्णायक मंडलों की सर्वसम्मत अथवा बहुमत संस्तुतियों के आधार पर की। संबद्ध भाषाओं में पुरस्कार उक्त वर्ष से तत्काल पूर्व के वर्ष से पहले के पाँच वर्षों में (अर्थात् 1 जनवरी 2017 से 31 दिसंबर 2021 के मध्य) प्रकाशित पुस्तकों पर दिया गया।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2023 से सम्मानित लेखक

असमिया : प्रणवज्योति डेका, ***डॉ. प्रणवज्योति डेकर श्रेष्ठ गल्प*** (कहानी-संग्रह)

बाङ्ला : स्वप्नमय चक्रवर्ती, ***जलेर ऊपर पानी*** (उपन्यास)

बोडो : नंदेश्वर दैमारि, ***जिउ-सफरनि दाखवन*** (कहानी-संग्रह)

डोगरी : विजय वर्मा, ***दऊं सदियां इक सीर*** (कविता-ग़ज़ल)

अंग्रेज़ी : नीलम सरण गौर, ***रेक्युम इन रागा जानकी*** (उपन्यास)

गुजराती : विनोद जोशी, ***सैरन्ध्री*** (प्रबंध काव्य)

हिंदी : संजीव, ***मुझे पहचानो*** (उपन्यास)

कन्नड : लक्ष्मीश तोल्पाडि, ***महाभारत अनुसंधानदा भारतयात्रे*** (निबंध)

कश्मीरी : मंशूर बानिहाली, ***येथ वावेह हेले साँग कौस जेले*** (कविता-संग्रह)

कोंकणी : प्रकाश एस. पर्येकार, ***वर्सल*** (कहानी-संग्रह)

मैथिली : बासुकीनाथ झा, ***बोध संकेतन*** (निबंध)

मलयाळम् : ई.वी. रामकृष्णन, ***मलयाला नोवेलिंटे देशकालंगळ*** (आलोचना)

मणिपुरी : सोरोकखाईबम गम्भिनी, ***याचंगबा नांग हालो*** (कविता-संग्रह)

मराठी : कृष्णात तुकाराम खोत, ***रिंगाण*** (उपन्यास)

नेपाली : युद्धवीर राणा, ***नेपाली लोकसाहित्य र लोकसंस्कृतिको परिचय*** (निबंध)

ओड़िआ : आशुतोष परिड़ा, ***अप्रस्तुत मृत्यु*** (कविता-संग्रह)

पंजाबी : स्वर्णजीत सवी, ***मन दी चिप*** (कविता-संग्रह)

राजस्थानी : गजेसिंह राजपुरोहित, ***पळकती प्रीत*** (कविता-संग्रह)

संस्कृत : अरुण रञ्जन मिश्र, ***शून्ये मेघगानम्*** (कविता-संग्रह)

संताली : तारासीन बास्के (तुरिया चंद बासकी), ***जाबा बाहा*** (कविता-संग्रह)

सिंधी : विनोद आसुदानी, ***हाथु पाकिदिजैन*** (कविता-ग़ज़ल)

तमिऴ : एन. राजशेखरन, ***नीरवाज़ी पडुवुम*** (उपन्यास)

तेलुगु : तल्लावझला पतंजलि शास्त्री, ***रामेश्वरम काकुलु मारिकोन्नि कथलु*** (कहानी-संग्रह)

उर्दू : सादिक़ा नवाब सहर, ***राजदेव की अमराई*** (उपन्यास)

प्रणवज्योति डेका

नीलम सरण गौड़

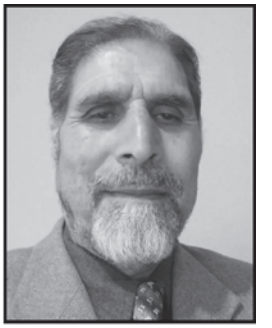

मंशूर बानिहाली

स्वप्नमय चक्रवर्ती

विनोद जोशी

प्रकाश एस. पर्यंकार

नंदेश्वर दैमारि

संजीव

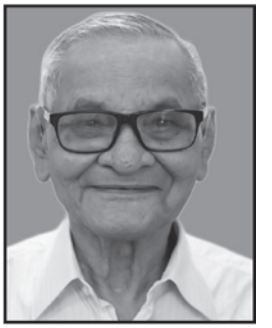

बासुकीनाथ झा

विजय वर्मा

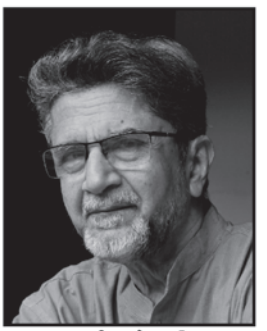

लक्ष्मीश तोल्पाडि

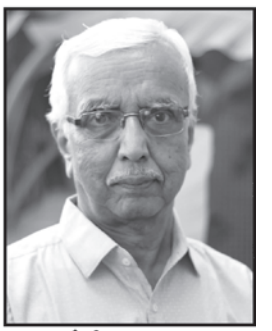

ई.वी. रामकृष्णन

सोरोकखाईबम गम्भिनी

स्वर्णजीत सवी

विनोद आसुदानी

कृष्णात तुकाराम खोत

गजेसिंह राजपुरोहित

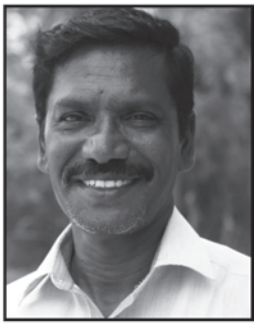

एन. राजशेखरन

युद्धवीर राणा

अरुण रञ्जन मिश्र

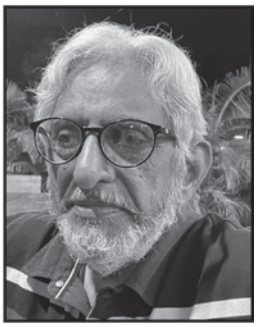

तल्लावझला पतंजलि शास्त्री

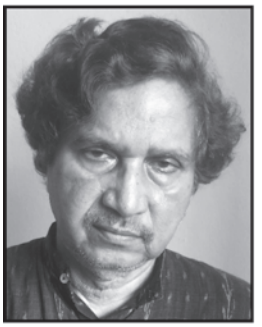

आशुतोष परिड़ा

तारासीन बास्के

सादिक़ा नवाब सहर

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2023 के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया

डॉ. भीमकांत बरुआ
डॉ. रीता चौधुरी
डॉ. लुत्फा हनुम सलीमा बेगम

बाङ्ला

श्रीमती बाणी बसु
श्री नलिनी बेरा
श्री शिबाशीष मुखर्जी

बोडो

श्री गोपीनाथ बरगयारी
श्री जतिंद्र नाथ स्वर्गियारी
श्री थानेश्वर गोयारी

डोगरी

डॉ. जतिंदर सिंह
श्री ओम गोस्वामी
श्री बालक राम बराल

अंग्रेज़ी

प्रो. धनंजय सिंह
प्रो. रीता कोठारी
प्रो. श्यामला ए. नारायण

गुजराती

श्री दीपक मेहता
प्रो. रमणीक अग्रावत
श्री विपुल पुरोहित

हिंदी

श्री लीलाधर जगूड़ी
श्रीमती नासिरा शर्मा
प्रो. (डॉ.) रामजी तिवारी

कन्नड

श्री आनंद जुंजरवाड
श्री नागेश हेगड़े
श्रीमती जे.एन. तेजाश्री

कश्मीरी

श्री असीर किश्तवारी
डॉ. महाराज कृशन कौल
श्री प्राण किशोर

कोंकणी

डॉ. फर. मेल्विन एस. पिंटो
श्री नीलबा ए. खांडेकर
श्री विंसी क्वाड्रॅस

मैथिली

श्री भवेश चंद्र मिश्र शिवांशु
श्री नवीन चौधरी
श्री सियाराम झा सरस

मलयाळम्

डॉ. पी.एस. राधाकृष्णन
श्री सुभाष चंद्रन
डॉ. जॉर्ज ओणक्कूर

मणिपुरी

श्री एल. बीरेंद्र कुमार शर्मा
डॉ. कङ्गबम मेमटोन देवी
डॉ. वायखोम रोमेश

मराठी

श्री अभिराम भडकमकर
डॉ. संतोष खेडलेकर
श्रीमती अनुराधा पाटील

नेपाली

डॉ. चिंता मणि शर्मा
श्री हरेन अलय
श्री एस.आर. सुब्बा

ओड़िआ

श्री हरप्रसाद दास
प्रो. कालिदास मिश्र
श्री राजेंद्र किशोर पंडा

पंजाबी

श्री गुरमीत कड़यालवी
डॉ. जगबीर सिंह
श्री किरपाल कज़ाक

राजस्थानी

प्रो. अर्जुनसिंह उज्ज्वल
श्रीमती किरण बादल
श्री शिवराज छंगाणी

संस्कृत

डॉ. हर्षदेव माधव
प्रो. के. रामसूर्यनारायण
प्रो. कामेश्वर शुक्ल

संताली

श्री भुजंग टुडु
श्री लक्ष्मण किस्कू
प्रो. श्याम चरण हेम्ब्रम

सिंधी

प्रो. विम्मी सदारंगाणी
श्री भगवान अटलाणी
डॉ. कमल गोकलाणी

तमिळ

डॉ. एम. राजेंद्रन
डॉ. के. चेल्लप्पन
श्री एस. रामकृष्णन

तेलुगु

डॉ. बेतावोलु रामब्रह्मम्
प्रो. दारला वेंकटेश्वर राव
डॉ. पापिनेनि शिवशंकर

उर्दू

श्री कृष्ण कुमार तूर
डॉ. महताब आलम
डॉ. मो. तय्यब अली

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2023

11 मार्च 2024 को नई दिल्ली में अकादेमी के अध्यक्ष श्री माधव कौशिक की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2023 के लिए 24 पुस्तकों के चयन को अनुमोदित किया गया। अनुवाद पुरस्कार के लिए पुस्तकों का चयन संबंधित भाषा में चयन समितियों की अनुशंसाओं के आधार पर किया गया। प्रक्रिया के अनुसार कार्यकारी मंडल ने पुरस्कारों की घोषणा निर्णायक मंडलों की सर्वसम्मत अथवा बहुमत संस्तुतियों के आधार पर की। संबद्ध भाषाओं में पुरस्कार उक्त वर्ष से तत्काल पूर्व के वर्ष से पहले के पाँच वर्षों में (अर्थात् 1 जनवरी 2017 से 31 दिसंबर 2021 के मध्य) प्रकाशित कृतियों पर दिया गया।

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2023 से सम्मानित लेखक

असमिया : लक्षज्योति गगै सन्दिकै, ***मोर जिवोन्तो*** (*वन्स अपोन ए लाइफ : बर्न्ट करी एंड ब्लडी राग्स*—संस्मरण, अंग्रेज़ी) तेमसुला आओ

बाङ्ला : मृण्मय प्रामाणिक, ***दलित नंदनतत्त्व*** (*दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र*—साहित्यिक आलोचना, मराठी) शरणकुमार लिंबले

बोडो : अम्बिकागिरि हाज'वारि, ***शान्थनुफोलेरनि फिसाज्ला*** (*शांतनुकुलनंदन*—असमिया, उपन्यास) पूरबी बरमुदै

डोगरी : सुषमा रानी, ***ढां दिल्ली दे कींगरे*** (*ढावां दिल्ली दे कींगरे*—पंजाबी, उपन्यास) बलदेव सिंह

अंग्रेज़ी : (स्व.) नवनीता देव सेन, ***चंद्रावतीज़ रामायण*** (*चंद्रावती रामायण*—बाङ्ला, महाकाव्य) चंद्रावती

गुजराती : मीनल जयंतीलाल दवे, ***स्वेच्छा*** (*स्वेच्छा*—तेलुगु, उपन्यास) पी. ललिताकुमारी 'वोल्गा'

हिंदी : रीतारानी पालीवाल, ***पशु, पंछी मनुष्य और प्रकृति : कथाएँ महाभारत से*** (*बर्ड्स, बीस्टस, मेन एंड द नेचर : टेल्स फ्रॉम महाभारत*—अंग्रेज़ी, कहानी) ए. शर्मा

कन्नड : के.के. गंगाधरन, ***मलयाळम् कथेगळु*** (*चुनी हुई मलयाळम् कहानियाँ*—कहानी, मलयाळम्) विभिन्न मलयाळम् लेखक

कश्मीरी : गुलज़ार अहमद राथेर, ***चूमा सुंड डोल*** (*चूमना डूडी*—कन्नड, उपन्यास) कोटा शिवराम कारंत

कोंकणी : सुनेत्रा जोग, ***अस्ताव्यस्त बायलो*** (*डिसऑडर्ली वुमेन*—अंग्रेज़ी, उपन्यास) मालती राव

मैथिली : मेनका मल्लिक, ***नीलकण्ठ*** (*नीलकण्ठ*—नेपाली, उपन्यास) मत्स्येंद्र प्रधान

मलयाळम् : पी.के. राधामनी, ***अक्षरांगळुडे निषालिल*** (*अक्षरों के साए*—हिंदी, आत्मकथा) अमृता प्रीतम

मणिपुरी : लाइश्रम सोमोरेन्द्रो, ***मीत्ताङबा शगोलगी मिङ्दा अडम्बा कत्पियु*** (*अने घोरे दा दान*—पंजाबी, उपन्यास) गुरदयाल सिंह

मराठी : अभय सदावर्ते, ***ब्रह्मोस—एका अज्ञात संशोधनयात्रेची यशोगाथा*** (*सक्सेस मंत्र ऑफ़ ब्रह्मोस*—कथेतर, अंग्रेज़ी) ए. शिवतनू पिल्लई

नेपाली : छत्रमन सुब्बा, ***कायाकल्प*** (*कायाकल्प*—असमिया, उपन्यास) लक्ष्मीनंदन बोरा

ओड़िआ : बंगाली नंद, ***नेल्लूरी केशवस्वामींक श्रेष्ठ गल्प*** (*नेल्लूरी केशवस्वामी उथमा कथलु*—कहानी, तेलुगु) नेल्लूरी केशवस्वामी

पंजाबी : जगदीश राय कुलरियाँ, ***गुलारा बेगम*** (*गुलारा बेगम*—हिंदी, उपन्यास) शरद पगारे

राजस्थानी : भंवर लाल 'भ्रमर', ***सरोकार*** (*सरोकार*—कहानी, मैथिली) प्रदीप बिहारी

संस्कृत : नागरत्ना हेगडे, ***रुचिराः बालकथाः*** (*मक्कलीगागि नन्ना नेचीना कथेगळु*—कन्नड, बाल कथाओं का संकलन) सुधा मूर्ति

संताली : वीर प्रताप मुर्मू, ***कीरा*** (*प्रतिज्ञा*—हिंदी, उपन्यास) मुंशी प्रेमचंद

सिंधी : भगवान बबाणी, ***सादो लिफाफो*** (*सादा लिफ़ाफ़ा*—बाङ्ला, उपन्यास) मति नंदी

तमिळ : कन्नैयन दक्षिणामूर्ति, ***करुणकुंदरम*** (*द ब्लैक हिल्स*—अंग्रेज़ी, उपन्यास) ममंग दई

तेलुगु : सुरेंद्र नागराजू 'एलानाग', ***गालिब नाति कलाम*** (*ग़ालिब : द मैन, द टाइम्स*—जीवनी, अंग्रेज़ी) पवन के. वर्मा

उर्दू : मोहम्मद अहसन 'अहसन अय्यूबी', ***पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा*** (*पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा*—हिंदी, उपन्यास) चित्रा मुद्गल

लक्षज्योति गगै सन्दिकै

(स्व.) नवनीता देव सेन

गुलज़ार अहमद राथेर

मृण्मय प्रामाणिक

मीनल जयंतीलाल दवे

सुनेत्रा जोग

अम्बिकागिरी हाज'वारी

रीतारानी पालीवाल

मेनका मल्लिक

सुषमा रानी

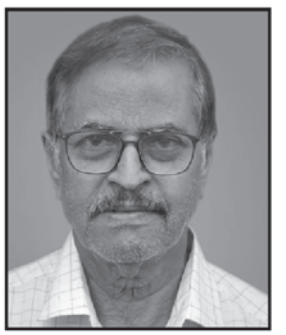

के.के. गंगाधरन

पी.के. राधामनी

लाइश्रम सोमोरेन्द्रो

जगदीश राय कुलरियाँ

भगवान बबाणी

अभय सदावर्ते

भंवर लाल 'भ्रमर'

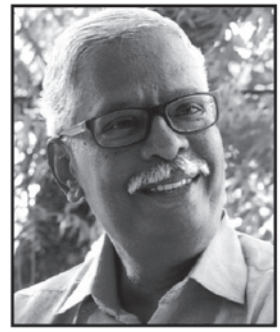

कन्नैयण दक्षिणामूर्ति

छत्रमन सुब्बा

नागरत्ना हेगडे

सुरेंद्र नागराजू 'एलानाग'

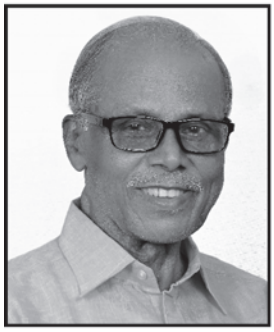

बंगाली नंद

वीर प्रताप मुर्मू

मोहम्मद अहसन 'अहसन अय्यूबी'

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2023 के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया
- डॉ. बिरिंचि कुमार दास
- डॉ. ध्रुवज्योति नाथ
- डॉ. परी हिलोइदारी

बाङ्ला
- श्री नीतीश बिश्वास
- डॉ. स्वाति गुह
- श्री अनिलकृष्ण आचार्य

बोडो
- श्री होरेश्वर नार्जारी
- डॉ. रीता ब'र'
- श्री बनेश्वर स्वर्गियारी

डोगरी
- श्री चंदू भाउ (चंदू लाल)
- श्री सुनील कुमार शर्मा
- सुश्री रीता रानी

अंग्रेज़ी
- डॉ. सी.टी. इंद्र
- प्रो. एस्थर श्याम
- प्रो. सच्चिदानंद महांति

गुजराती
- डॉ. दर्शना ओझा
- डॉ. प्रणव जोशीपुरा
- श्री अश्विन चंद्राना

हिंदी
- प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित
- श्री पल्लव
- डॉ. रणजीत साहा

कन्नड
- डॉ. एम.एस. आशादेवी
- श्री केशव मालगी
- प्रो. एस. सिराज अहमद

कश्मीरी
- डॉ. रूप कृष्ण भट
- श्री सईद शाद-उद-दीन शैदी
- श्री शाहिद देलीनवी

कोंकणी
- श्रीमती जयश्री जी. शानबाग
- श्रीमती प्रशांति तलपंकार
- श्री रामनाथ जी. गावडे

मैथिली
- डॉ. विभूति आनंद
- डॉ. सच्चिदानंद पाठक
- श्री दिनकर कुमार

मलयाळम्
- डॉ. चातनाथ अच्युतन उण्णी
- प्रो. के. वनजा
- डॉ. एम. विजयन पिल्लै

मणिपुरी
- डॉ. ईरुङबम देवेन सिंह
- डॉ. ङाङोम एकाशिनी देवी
- श्री फूरैलतपम ईबोइमा शर्मा

मराठी
- श्री चंद्रकांत भोंजल
- सुश्री माया पंडित नरकार
- सुश्री शारदा साठे

नेपाली
- श्री पूर्ण कुमार शर्मा
- डॉ. समर सिन्हा
- श्री किशन प्रधान

ओड़िआ
- प्रो. बैष्णव चरण सामल
- श्री बिपिन बिहारी मिश्रा
- डॉ. प्रसन्न कुमार महांति

पंजाबी
- श्री भजनबीर सिंह
- श्री के.एल. गर्ग
- डॉ. सरबजीत कौर सोहल

राजस्थानी
- प्रो. कल्पना पुरोहित
- डॉ. कीर्ति शर्मा
- डॉ. मदन सैनी

संस्कृत
- प्रो. ललित कुमार पटेल (ललित कुमार आत्माराम)
- प्रो. उपेंद्र कुमार त्रिपाठी
- प्रो. प्रह्लाद आर. जोशी

संताली
- श्री निरंजन हांसदा
- श्रीमती ताला टुडू
- श्री इन्नोसेंट सोरेन

सिंधी
- सुश्री जया जादवानी
- श्री हरीश कर्मचंदाणी
- श्री लख्मी खीलाणी

तमिळ
- श्री एस. देवदॉस
- श्री एस. मोहम्मद यूसुफ़ (कुलाचल यूसुफ़)
- श्री कुर्रिंजीवेलन (सेलवाराज)

तेलुगु
- श्री वडरेवु चिनवीरभद्रुडु
- श्रीमती स्वाति श्रीपाद
- डॉ. जे. सत्यनारायण मूर्ति (विहारी)

उर्दू
- श्री असलम मिर्ज़ा
- प्रो. ख़ालिद महमूद
- डॉ. नुसरत मेहदी

साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2023

23 जून 2024 को नई दिल्ली में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री माधव कौशिक की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में बाल साहित्य पुरस्कार 2023 के लिए 23 लेखकों के चयन को अनुमोदित किया गया। यह अनुमोदन इस उद्देश्य के लिए गठित संबंधित भाषाओं की त्रि-सदस्यीय चयन समितियों की अनुशंसाओं के आधार पर किया गया। प्रक्रिया के अनुसार, कार्यकारी मंडल ने पुरस्कारों की घोषणा निर्णायक मंडलों की सर्वसम्मत अथवा बहुमत संस्तुतियों के आधार पर की। ये पुरस्कार उक्त वर्ष से तत्काल पूर्व के पूर्ववर्ती पाँच वर्षों (अर्थात् 1 जनवरी 2017 से 31 दिसंबर 2010 के मध्य) में प्रकाशित पुस्तकों पर दिए गए। इस वर्ष कश्मीरी भाषा में कोई पुरस्कार नहीं है।

बाल साहित्य पुरस्कार 2023 से सम्मानित लेखक

असमिया : रथींद्रनाथ गोस्वामी, ***पोवालमोनि चिंचिंगर दुहक्षहक्षिक अभिज्ञान*** (उपन्यास)

बाङ्ला : श्यामलकांति दाश, ***एरोप्लेनेर खाता*** (उपन्यास)

बोडो : प्रतिमा नंदी नार्ज़ारी, ***ग'साइनि गोजोन नोजोर*** (कहानी-संग्रह)

डोगरी : बलवान सिंह जमोड़िया, ***कंजकां*** (कविता-संग्रह)

अंग्रेज़ी : सुधा मूर्ति, ***ग्रैंडपैरेंट्स बैग ऑफ़ स्टोरीज़*** (कहानी-संग्रह)

गुजराती : रक्षाबहेन प्रह्लादराव दवे, ***हुं म्याउं तुं चूं चूं*** (कविता और कहानी-संग्रह)

हिंदी : सूर्यनाथ सिंह, ***कौतुक ऐप*** (कहानी-संग्रह)

कन्नड : विजयश्री हालाडि, ***सुरक्कि गेट*** (उपन्यास)

कोंकणी : तुकाराम रामा शेट, ***जाण*** (उपन्यास)

मैथिली : अक्षय आनंद 'सन्नी', ***ओल कतरा, झोल कतरा*** (कविता-संग्रह)

मलयाळम् : प्रिया ए.एस., ***पेरूमाऴयते कुंजीथऴुगल*** (उपन्यास)

मणिपुरी : दिलीप नाङ्माथम, ***इबेम्मा अमासुंग नगाबेम्मा*** (कहानी-संग्रह)

मराठी : एकनाथ आव्हाड, ***छंद देई आनंद*** (कविता-संग्रह)

नेपाली : मधुसूदन बिष्ट, ***बाल एकांकी नाटकहरू*** (नाटक)

ओड़िआ : जुगल किशोर षडंगी, ***जेजेन्क गप गन्ठिलि*** (कहानी-संग्रह)

पंजाबी : गुरमीत कड़िआलवी, ***सची दी कहानी*** (कहानी-संग्रह)

राजस्थानी : किरण बादल, ***टाबरां री दुनियां*** (संस्मरण)

संस्कृत : राधावल्लभ त्रिपाठी, ***मानवी*** (उपन्यास)

संताली : मानसिंह माझी, ***नेने-पेटे*** (कहानी-संग्रह)

सिंधी : ढोलन राही, ***वाङ्णमल जी शादी*** (कविता-संग्रह)

तमिऴ : के. उदयशंकर, ***आदनिन बोम्मई*** (उपन्यास)

तेलुगु : डी.के. चादुवुल बाबु, ***वज्राला वाना*** (कहानी-संग्रह)

उर्दू : (स्व.) मतीन अचलपुरी (मरणोपरांत), ***ममता की डोर*** (कहानी-संग्रह)

वर्ष 2023 में कश्मीरी में पुरस्कार नहीं दिया गया।

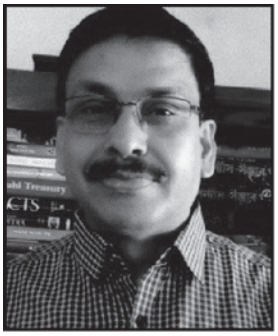

रथींद्रनाथ गोस्वामी

सुधा मूर्ति

तुकाराम रामा शेट

श्यामलकांति दाश

रक्षाबहेन प्रह्लादराव दवे

अक्षय आनंद 'सन्नी'

प्रतिमा नंदी नार्ज़ारी

सूर्यनाथ सिंह

प्रिया ए.एस.

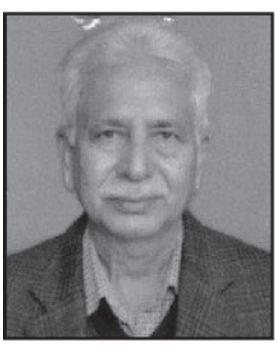

बलवान सिंह जमोड़िया

विजयश्री हालाडि

दिलीप नाङ्माथम

एकनाथ आव्हाड

गुरमीत कड़िआलवी

मानसिंह माझी

मधुसूदन बिष्ट

किरण बादल

ढोलन राही

जुगल किशोर षडंगी

राधावल्लभ त्रिपाठी

के. उदयशंकर

डी.के. चादुवुल बाबु

(स्व.) मतीन अचलपुरी

बाल साहित्य पुरस्कार 2023 के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया

डॉ. अनिल शइकिया
श्री दिगंत ओज़ा
डॉ. जूरी दत्ता

बाङ्ला

श्री बलराम बसाक
डॉ. पल्लब सेनगुप्ता
श्री हिमाद्रि किशोर दास गुप्ता

बोडो

श्री अरॅविंदॅ उज़िर
श्री विद्यासागर नार्ज़ारी
श्री डॉ. रुजब मुसाहारी

डोगरी

श्री राजेश्वर सिंह 'राजू'
श्रीमती प्रोमिला मन्हास
श्री शिव मेहता

अंग्रेज़ी

प्रो. (डॉ.) जमीला बेगम ए.
श्री राणा नायर
प्रो. मंजू जैदका

गुजराती

श्री हरिकृष्ण रामचंद्र पाठक
श्री कीर्ति दूधट
श्री दिलीप झावेरी

हिंदी

श्री बालेंदु दाधीच
श्री प्रताप सहगल
डॉ. जितेंद्र श्रीवास्तव

कन्नड

डॉ. जयश्री सी. कंबार
डॉ. आनंद वी. पाटिल
डॉ. मुदनाकुदु चिन्नास्वामी

कश्मीरी

श्री मोहि-उद्-दीन ऋषि
श्री अशोक कुमार काक
श्री एजाज़ गुलाम मोहम्मद लालू

कोंकणी

श्रीमती ज्योति कुंकोलियेकर
श्रीमती माया अनिल खरंगटे
श्री वालेरियान क्वाद्रास

मैथिली

श्री धीरेंद्रनाथ मिश्र
श्री लक्ष्मण झा 'सागर'
श्री वीरेंद्र मोहन ठाकुर

मलयाळम्

डॉ. पाल मनालिल
श्री बी.एस. राजीव
श्री मुंदूर सेतुमाधवन

मणिपुरी

डॉ. हमोम नबचंद्र सिंह
डॉ. खुन्दोंग्बम गोकुलचंद्र सिंह
प्रो. नाओरेम बिद्यासागर सिंह

मराठी

श्री कैलाश अम्भुरे
श्रीमती उमा कुलकर्णी
श्री शफ़ाअत ख़ान

नेपाली

श्री गोवर्धन बस्तोला
श्री किरण कुमार राई
प्रो. (डॉ.) कृष्णराज घटानी

ओड़िआ

डॉ. फणी महांति
श्री भूपेन महापात्र
डॉ. माहेश्वर महांति

पंजाबी

डॉ. दर्शन सिंह आशट
श्री नछत्तर
प्रो. प्रीतम सिंह

राजस्थानी

श्री दिनेश पांचाल
श्री जय प्रकाश पंड्या (ज्योतिपुंज)
डॉ. नमामि शंकर आचार्य

संस्कृत

प्रो. सत्यनारायण चक्रबॅर्ती
प्रो. पी.एन. शास्त्री
डॉ. वेणीमाधव शास्त्री बी. जोशी

संताली

श्री बैद्यनाथ हांसदा
श्री चंद्रमोहन किस्कू
श्री लक्ष्मण बास्के

सिंधी

डॉ. रोशन गोलानी
डॉ. जेठो लालवानी
श्री किशन रत्नानी

तमिऴ

श्री एम. मुरुगेश
डॉ. सी. सेतुपति (किरुंगै सेतुपति)
डॉ. ए.एस. इलंगोवन

तेलुगु

श्री दसारि वेंकट रमण
डॉ. कांडेपि राणिप्रसाद
श्री नारमशेट्टी उमामाहेश्वर राव

उर्दू

श्री अज़ीम गुरविंदर सिंह कोहली
प्रो. असलम जमशेदपुरी
डॉ. फ़रियाद आज़र

वर्ष 2023 में कश्मीरी में बाल साहित्य पुरस्कार नहीं दिया गया।

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2023

23 जून 2023 को नई दिल्ली में श्री माधव कौशिक की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2023 के लिए 23 पुस्तकों के चयन को अनुमोदित किया गया। युवा पुरस्कार के लिए पुस्तकों का चयन संबंधित भाषा चयन समितियों की अनुशंसाओं के आधार पर किया गया। नियमानुसार, कार्यकारी मंडल ने निर्णायक समिति के सर्वसम्मत अथवा बहुमत से की गई संस्तुतियों के आधार पर पुरस्कार घोषित किए। ये पुरस्कार उन लेखकों की पुस्तकों को दिए जाते हैं, जिनकी उम्र पुरस्कार वर्ष की 1 जनवरी को 35 वर्ष अथवा उससे कम हो। इस वर्ष गुजराती भाषा के लिए पुरस्कार प्रदान नहीं किया गया।

युवा पुरस्कार 2023 से सम्मानित लेखक

असमिया : जिंटू ठाकुरिया, ***मन मरा तरा*** (कहानी-संग्रह)

बाङ्ला : हामिरुद्दीन मिद्या, ***माठराखा*** (कहानी-संग्रह)

बोडो : माइनावस्रि दैमारि, ***सम, जिउ, आरो...*** (कविता-संग्रह)

डोगरी : धीरज कुमार रैना, ***आह्लड़ा*** (नाटक-संग्रह)

अंग्रेज़ी : अनिरुद्ध कनिसेट्टी, ***लॉर्ड्स ऑफ़ द डेक्कन : सदर्न इंडिया फ्रॉम द चालुक्याज़ टु द चोलाज़*** (ऐतिहासिक कथेतर शोध-कार्य)

हिंदी : अतुल कुमार राय, ***चाँदपुर की चंदा*** (उपन्यास)

कन्नड : मंजुनायक चळ्ळूरु, ***फू मत्तू इतर कथेगळु*** (कहानी-संग्रह)

कश्मीरी : निग़हत नसरीन, ***लल्लि नीलवठ च़लि नॅ ज़ाँह*** (कविता-संग्रह)

कोंकणी : तन्वी श्रीधर कामत बांबोळकार, ***शॉट्स*** (निबंध-संग्रह)

मैथिली : संस्कृति मिश्र, ***कहबाक अछि हमरा*** (कविता-संग्रह)

मलयाळम् : गणेश पुत्तूर, ***अच्छनटे अलमारा*** (कविता-संग्रह)

मणिपुरी : थिंनाम परशुराम, ***मटमगी शैरेङ 37*** (कविता-संग्रह)

मराठी : विशाखा विश्वनाथ, ***स्वत:ला स्वत: विरुद्ध उभं करताना*** (कविता-संग्रह)

नेपाली : नयन कला देवी, ***घात-प्रतिघातका उद्‌गारहरू*** (कविता-संग्रह)

ओड़िआ : दिलेस्वर राणा, ***सेंर्रा*** (कहानी-संग्रह)

पंजाबी : संदीप शर्मा, ***चित्त दा जुगराफीया*** (कविता-संग्रह)

राजस्थानी : देवीलाल महिया, ***अंतस रो ओळमो*** (कविता-संग्रह)

संस्कृत : मधुसूदन मिश्र, ***सुदर्शनविजयम्*** (गद्य-काव्य)

संताली : बापी टुडु, ***दुसी*** (कहानी-संग्रह)

सिंधी : मोनिका पंजवाणी, ***ग्लैमर*** (कहानी-संग्रह)

तमिऴ : राम थंगम, ***तिरुकरतियल*** (कहानी-संग्रह)

तेलुगु : तक्केडसिला जानी, ***विवेचनी*** (साहित्यिक समालोचना)

उर्दू : तौसीफ़ ख़ान, ***ज़हन ज़ाद*** (कहानी-संग्रह)

जिंटू ठाकुरिया

अनिरुद्ध कनिसेट्टी

तन्वी श्रीधर कामत बांबोळकार

हामिरुद्दीन मिद्दया

अतुल कुमार राय

संस्कृति मिश्र

माइनावस्रि दैमारि

मंजुनायक चळ्ळूरु

गणेश पुत्तूर

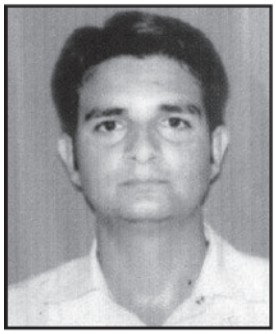

धीरज कुमार रैना

निग़हत नसरीन

थिंनाम परशुराम

विशाखा विश्वनाथ

देवीलाल महिया

मोनिका पंजवाणी

नयन कला देवी

मधुसूदन मिश्र

राम थंगम

दिलेस्वर राणा

बापी टुडु

तक्केडसिला जानी

संदीप शर्मा

तौसीफ़ ख़ान

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2023 के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया
- श्री अनीस उज़ ज़मान
- श्री जीबन नरह
- डॉ. समर ज्योति महंत

बाङ्ला
- डॉ. अभिजीत तरफदार
- श्री आशीष पाठक
- श्री कल्याणब्रत चक्रबॅर्ती

बोडो
- डॉ. दीपक बसुमतारी
- श्री धनेश्वर नार्ज़ारी
- डॉ. रैरूब ब्रह्म

डोगरी
- श्री बिशन सिंह दर्दी
- श्रीमती सुदेश राज
- श्री सुरजीत सिंह

अंग्रेज़ी
- प्रो. आलोक भल्ला
- डॉ. इंद्रनील आचार्य
- श्री जेरी पिंटो

गुजराती
- सुश्री संध्या भट्ट
- श्री हर्षद त्रिवेदी
- श्री संजू वाला

हिंदी
- प्रो. अरुण कुमार होता
- श्री असग़र वजाहत
- प्रो. नीलम सराफ

कन्नड
- डॉ. एच.एस. राघवेंद्र राव
- डॉ. के. मरुलासिद्दप्पा
- श्रीमती एम.आर. कमला

कश्मीरी
- श्री फ़याज़ तिल्गामी
- डॉ. महफूज़ा जान
- प्रो. रतन लाल शांत

कोंकणी
- श्रीमती मीना ककोदकर
- श्री विल्सन रोशन सेकारिया
- श्री प्रकाश दत्ताराम नायक

मैथिली
- श्रीमती आशा मिश्र
- श्री शिव कुमार झा
- श्री ताराकांत झा

मलयाळम्
- डॉ. एम.एन. विनयकुमार
- डॉ. गीता पुतुस्सेरी
- डॉ. नेदुमुदी हरिकुमार

मणिपुरी
- प्रो. अरुणा नहाकपम
- प्रो. ख. कुंजो सिंह
- श्री शरतचंद थियम

मराठी
- डॉ. अक्षय कुमार काले
- श्री बाबा भांड
- प्रो. (डॉ.) विलास पाटिल

नेपाली
- डॉ. गीता छेत्री
- श्री केदारनाथ गुरुंग
- श्री बिमल राय

ओड़िआ
- श्री बिभूति पटनायक
- श्री गोबिन्द चंद्र चाँद
- श्री दास बेनहुर

पंजाबी
- श्री बलविंदर सिंह बराड
- डॉ. नरविंदर सिंह कौशल
- डॉ. पॉल कौर

राजस्थानी
- श्री अतुल कनक
- डॉ. धनंजया अमरावत
- डॉ. गौरी शंकर प्रजापत

संस्कृत
- प्रो. मिथिला प्रसाद त्रिपाठी
- डॉ. एच.आर. विश्वास
- प्रो. रमेश कुमार पांडेय

संताली
- डॉ. जतींद्रनाथ बेसरा
- डॉ. फटिक मुर्मू
- श्री जयराम टुडु

सिंधी
- डॉ. नादिया मसंद
- श्रीमती सरिता शर्मा
- श्री ईश्वर मूर्जानी (ईश्वर भारती)

तमिऴ
- श्रीमती आर. मीनाक्षी
- डॉ. आर. कुरिंजीवेंदेन
- डॉ. मू. रामास्वामी

तेलुगु
- डॉ. अवुल मंजूलता
- श्री दरभाशयानम श्रीनिवासाचार्य
- डॉ. वेद्देपाल्लि कृष्ण

उर्दू
- श्री कौसर सिद्दीक़ी
- श्री मो. खलील
- श्री सैयद जमाल शब्बीर रिज़वी

कार्यक्रम

उन्मेष

अभिव्यक्ति का उत्सव

3-6 अगस्त 2023, भोपाल

महोत्सव का उद्घाटन करती हुईं भारत की माननीय राष्ट्रपति महामहिम श्रीमती द्रौपदी मुर्मू

साहित्य अकादेमी और संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार ने 3 से 6 अगस्त 2023 तक रवींद्र भवन, भोपाल, मध्य प्रदेश में अंतरराष्ट्रीय साहित्य उत्सव 'उन्मेष' का आयोजन किया। भारत की माननीय राष्ट्रपति महामहिम श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने पूर्वाह्न 11:30 बजे हंसध्वनि सभागार में चार दिवसीय अंतरराष्ट्रीय साहित्य उत्सव उन्मेष 2023 का उद्घाटन किया। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने अपने संबोधन में इस बात पर चर्चा की कि किस प्रकार देश के युवाओं के लिए कला और संस्कृति आवश्यक है ताकि वे भारतीय समाज के ताने-बाने में संस्कृति के योगदान और प्रभाव की सराहना कर सकें। उन्होंने यह भी बताया कि अकादेमी निरंतर भारतीय साहित्य की समृद्ध विविधता का उत्सव मनाती रही है। 1954 से साहित्य अकादेमी की यात्रा को प्रदर्शित करने वाली एक लघु फ़िल्म दिखाई गई। मध्य प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने अपने संबोधन में भारत और विशेष रूप से मध्य प्रदेश की महान सांस्कृतिक परंपराओं के बारे में बात की। भारत की माननीय राष्ट्रपति द्वारा संस्कृति मंत्रालय और माई एफएम रेडियो को गोल्डन बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स पुरस्कारों के प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए। आज़ादी का अमृत महोत्सव पर एक लघु फ़िल्म दिखाई गई। मध्य प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री मंगूभाई पटेल ने अपने संबोधन में भारत में अभिव्यक्ति के उत्कर्ष के बारे में बात की। भारत की माननीय राष्ट्रपति ने अपने संबोधन में संस्कृति मंत्रालय और अकादेमी को इस प्रकार के सुंदर

उत्सव के आयोजन के लिए बधाई दी। उन्होंने उल्लेख किया कि वह 5 अगस्त 2023 को दिल्ली में आयोजित होने वाले पुस्तकालयों के उत्सव में भाग लेने के लिए उत्सुक हैं। उन्होंने आगे कहा कि इस तरह के उत्सवों के आयोजन से एक मजबूत पारिस्थितिकी तंत्र बनता है। श्रीमती मुर्मू ने कई प्रतिष्ठित भारतीय लेखकों को उद्धृत किया और देश भर के साहित्यकारों के उदाहरण दिए जिन्होंने भारत की समृद्ध साहित्यिक संस्कृति में योगदान दिया है। उन्होंने कहा कि उनका दृढ़ विश्वास है कि साहित्य की प्रगति के लिए पाठकों की भागीदारी आवश्यक है। साहित्य एक ऐसा माध्यम है जो लोगों को एक साथ लाता है। उन्होंने संताली भाषा तथा उसकी उत्पत्ति के बारे में बात की तथा विभिन्न साहित्यिक हस्तियों का हवाला दिया जिन्होंने भाषा में साहित्य के विकास में मदद की। उन्होंने आदिवासी क्षेत्रों सहित कई भाषाओं को संरक्षित करने की आवश्यकता पर बल दिया, जिससे संबंधित संस्कृति और परंपराओं को जीवित रखा जा सके। एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया जिसमें कई राज्यों के लोगों ने भाग लिया और अपने क्षेत्रों की सांस्कृतिक विशिष्टता को गीत और नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत किया।

साहित्योत्सव 2024

साहित्योत्सव में 190 से अधिक सत्र आयोजित किए गए तथा इसकी शुरुआत गत वर्ष के दौरान अकादेमी की प्रमुख गतिविधियों की प्रदर्शनी के साथ हुई। इस महोत्सव का प्रमुख आकर्षण साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2023 अर्पण समारोह था, जो 12 मार्च 2024 को सायं 5:30 बजे कमानी सभागार में आयोजित किया गया। पुरस्कार अर्पण समारोह की मुख्य अतिथि प्रख्यात लेखिका प्रतिभा राय थीं। प्रतिष्ठित *संवत्सर व्याख्यान* प्रख्यात उर्दू लेखक और गीतकार गुलज़ार ने 13 मार्च 2024 को सायं 6:30 बजे मेघदूत मुक्ताकाश रंगमंच में प्रस्तुत किया।

11 मार्च 2024 को साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यों को सम्मानित किया गया। बहुभाषी कविता-पाठ तथा कहानी-पाठ, युवा साहिती, अस्मिता, पूर्वोत्तरी, भारत का भक्ति साहित्य पर पैनल चर्चा, भारत में बाल साहित्य, भारत का विचार, मातृभाषाओं का महत्त्व, आदिवासी कवि सम्मिलन तथा लेखक सम्मिलन, भविष्य के उपन्यास, सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के रूप में रंगमंच जैसे नियमित कार्यक्रमों के अलावा भारत की सांस्कृतिक विरासत, भारतीय भाषाओं में विज्ञान कथा, नैतिकता तथा साहित्य, भारतीय भाषाओं में आत्मकथाएँ, साहित्य तथा सामाजिक

आंदोलन, विदेशों में भारतीय साहित्य जैसे विविध विषयों पर पैनल चर्चा तथा परिसंवाद आयोजित किए गए। इस वर्ष की राष्ट्रीय संगोष्ठी का विषय 'स्वतंत्रता के बाद का भारतीय साहित्य' था। इसके अलावा अखिल भारतीय दिव्यांग लेखक सम्मिलन, एलजीबीटीक्यू लेखक सम्मिलन, मीर तकी मीर की जन्म शताब्दी के अवसर पर परिसंवाद, गोपीचंद नारंग पर परिसंवाद जैसे महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम आयोजित किए गए। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अंतर्गत राजश्री वारियर द्वारा भरतनाट्यम, गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर को श्रद्धांजलि देने के लिए विशेष कार्यक्रम 'कस्तूरी', महेशराम द्वारा संतवाणी गायन तथा दयाप्रकाश सिन्हा द्वारा लिखित नाटक *सम्राट अशोक* की प्रस्तुति हुई। इस 6 दिवसीय साहित्योत्सव में भाग लेने वाले हिंदी तथा विभिन्न भारतीय भाषाओं के कुछ प्रतिष्ठित लेखक और विद्वान थे - एस.एल. भैरप्पा, चंद्रशेखर कंबार, पॉल ज़कारिया, आबिद सुरती, के. सच्चिदानंदन, चित्रा मुद्गल, मृदुला गर्ग, के. एनोक, ममंग दई, एच.एस. शिवप्रकाश, सचिन केतकर, नमिता गोखले, कुल सइकिया, वाई.डी. थोंगची, मालाश्री लाल, कपिल कपूर, अरुंधति सुब्रह्मण्यम, रख्शंदा जलील, राणा नायर, वर्षा दास, सुधा शेषयान, उदय नारायण सिंह, अरुण खोपकर, शीन काफ़ निज़ाम आदि। माननीय राज्यपालों - श्री आरिफ़ मोहम्मद खान (केरल), श्री विश्वभूषण हरिचंदन (छत्तीसगढ़) ने भी साहित्योत्सव में भाग लिया।

अकादेमी प्रदर्शनी 2023 का उद्घाटन

11 मार्च 2024

प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए भारत सरकार के माननीय संस्कृति राज्य मंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल

साहित्य अकादेमी के साहित्योत्सव के 39वें संस्करण का उद्घाटन भारत सरकार के माननीय विधि एवं न्याय मंत्री तथा संसदीय कार्य एवं संस्कृति राज्य मंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल ने 11 मार्च 2024 को किया। साहित्य

अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव तथा साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री माधव कौशिक के उद्‌बोधनों के पश्चात्, श्री अर्जुन राम मेघवाल ने अपने संबोधन में साहित्योत्सव की प्रशंसा की, जिसमें इस वर्ष 175 भाषाओं तथा 190 सत्रों में 1100 से अधिक लेखकों ने भाग लिया। उन्होंने राष्ट्र तथा समाज को प्रभावित करने में साहित्य की महत्त्वपूर्ण भूमिका तथा संस्कृति को आकार देने में भावना से प्रेरित लेखन के महत्त्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने लेखक के रूप में स्वयं के अनुभव की कहानी के साथ तथा साहित्य के शिक्षाप्रद तथा मानवीय गुणों को स्वीकार करते हुए अपने संबोधन का समापन किया। इसके पश्चात् उन्होंने अकादेमी को आमंत्रण के लिए धन्यवाद दिया तथा साहित्योत्सव में उपस्थित लोगों का स्वागत किया। श्री अर्जुन राम मेघवाल ने फीता काटकर साहित्य अकादेमी प्रदर्शनी का उद्‌घाटन किया।

'सिनेमा और साहित्य' विषय पर संवत्सर व्याख्यान

13 मार्च 2023, नई दिल्ली

संवत्सर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए प्रख्यात लेखक तथा फ़िल्म निर्देशक श्री गुलज़ार

साहित्य अकादेमी की प्रतिष्ठित व्याख्यानमाला के अंतर्गत वर्ष 2024 का *संवत्सर व्याख्यान* उर्दू लेखक तथा फ़िल्मकार गुलज़ार द्वारा प्रस्तुत किया गया। उन्होंने अपने मन की बात खुलकर रखी तथा सिनेमा और साहित्य के बीच संबंधों पर अपने विचार साझा किए। साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने श्रोताओं से श्री गुलज़ार का परिचय कराया तथा भारतीय साहित्य के साथ-साथ संस्कृति के प्रति उनके योगदान की सराहना की। गुलज़ार के लिए सिनेमा एक नई भाषा की खोज थी। चलती आँखों के साथ 'क्लोज़-अप' ने वर्णमाला में एक नए अक्षर की शुरुआत कर दी। एक 'लॉन्ग शॉर्ट', 'कैमरे की पैनिंग', 'ट्राली की गति' फ़िल्म व्याकरण के नए नियम थे। ध्वनि और वाणी के बिना किसी विचार को व्यक्त करने के लिए छवियों को घुमाने से अभिव्यक्ति का एक नया रूप सामने आया। इसे साहित्य का ही विस्तार माना जा सकता है।

पुरस्कार अर्पण

बाल साहित्य पुरस्कार अर्पण समारोह 2023

9 नवंबर 2023, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार विजेताओं के साथ साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव तथा मुख्य अतिथि प्रो. हरीश त्रिवेदी

साहित्य अकादेमी ने 9 नवंबर 2023 को सायं 5:00 बजे त्रिवेणी सभागार, नई दिल्ली में आयोजित एक भव्य समारोह में देश भर के विभिन्न भारतीय भाषाओं के 23 बाल लेखकों को बाल साहित्य पुरस्कार 2023 प्रदान किए। पुरस्कार विजेताओं के नाम हैं - रथींद्रनाथ गोस्वामी (असमिया), श्यामलकांति दाश (बाङ्ला), प्रतिमा नंदी नार्ज़ारी (बोडो), बलवान सिंह जमोड़िया (डोगरी), सुधा मूर्ति (अंग्रेज़ी), रक्षाबहेन प्रह्लादराव दवे (गुजराती), सूर्यनाथ सिंह (हिंदी), विजयश्री हालाडि (कन्नड), तुकाराम रामा शेट (कोंकणी), अक्षय आनंद 'सन्नी' (मैथिली), प्रिया ए.एस. (मलयाळम्), दिलीप नाङ्माथम (मणिपुरी), एकनाथ आव्हाड (मराठी), मधुसूदन बिष्ट (नेपाली), जुगल किशोर षडंगी (ओड़िआ), गुरमीत कड़िआलवी (पंजाबी), किरण बादल (राजस्थानी), राधावल्लभ त्रिपाठी (संस्कृत), मानसिंह माझी (संताली), ढोलन राही (सिंधी), के. उदयशंकर (तमिऴ), डी.के. चादुवुल बाबु (तेलुगु) तथा (स्वर्गीय) मतीन अचलपुरी (उर्दू)। कश्मीरी भाषा में कोई पुरस्कार घोषित नहीं किया गया। आरंभ में, अपने स्वागत वक्तव्य में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने कहा कि बच्चों का साहित्य उनके विकास के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। बच्चे समाज की महत्त्वपूर्ण बपौती हैं। हमें उन्हें सही पाठ्य सामग्री प्रदान करनी चाहिए तथा उन्हें नई दुनिया की खोज के लिए उत्साहित तथा प्रोत्साहित करना चाहिए। वे भविष्य के विशाल वृक्षों के बीज हैं। बाल पुस्तकें उनकी शब्दावली को बढ़ाती हैं तथा उनके व्यक्तित्व को विकसित करती हैं। बच्चों के लिए पुस्तकों से बेहतर कोई शिक्षक नहीं है। उन्होंने आगे कहा, बाल लेखकों को ऐसे प्रकाशक ढूँढ़ने में बहुत संघर्ष करना पड़ता है जो उनकी पुस्तकें प्रकाशित करने के लिए तैयार हों, अब समय आ गया है कि प्रकाशकों को आगे आना चाहिए तथा बाल साहित्य को प्रोत्साहित करना तथा उसे

बढ़ावा देना चाहिए। इस अवसर पर साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने कहा कि वह उन सभी बाल साहित्य पुरस्कार विजेताओं को बधाई देना चाहते हैं जिन्होंने बाल साहित्य में योगदान दिया है, और वे न केवल एक विशाल पाठक वर्ग बनाने में सफल रहे हैं बल्कि उन्होंने अधिक लेखकों को लिखने के लिए प्रोत्साहित और पोषित भी किया है। एक समय था जब हम बाल साहित्य को हेय दृष्टि से देखते थे और सोचते थे कि यह बचकाना साहित्य है, इसीलिए इस पर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता था। अब हम समझते हैं कि बाल साहित्य के लिए हम जितना काम करें, उतना कम है। उन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आने वाला कल बाल साहित्य का है और साहित्य अकादेमी इसके सर्वांगीण विकास के लिए हर संभव कदम उठा रही है। उन्होंने कहा कि "भारत के बच्चे दो भागों में बंटे हुए हैं - एक जो शहरों और शहरी इलाकों से आते हैं और दूसरे छोटे और दूरदराज के गाँवों से आते हैं। आप उनकी आपस में तुलना नहीं कर सकते। किंतु ये लेखक बच्चों के लिए साहित्य तैयार करके उस कमी को पूरा करते हैं, जो उनके साथ समान व्यवहार करता है।" अंग्रेज़ी के प्रख्यात विद्वान एवं लेखक प्रो. हरीश त्रिवेदी, जो पुरस्कार वितरण समारोह के मुख्य अतिथि थे, ने यह कहकर शुरुआत की कि वह एक ऐसे परिवार में पले-बढ़े हैं जहाँ बाल पुस्तकें नहीं खरीदी जाती थीं क्योंकि वे उन्हें खरीद नहीं सकते थे। बालक के रूप में वह इतना जानते थे कि केवल पुस्तकें होती हैं, 'बाल पुस्तकों' के बारे में वे नहीं जानते थे। इन दिनों, माता-पिता पुस्तकों से बच्चों के लिए कहानियाँ पढ़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि वयस्कों और बच्चों के बीच कहानियों के निर्माण में सहयोगात्मक प्रयास होता है। उन्होंने कहा कि सभी वयस्क बच्चों के ज्ञान और बुद्धिमत्ता को कम आँकते हैं तथा उन्हें संरक्षण देते हैं। लेकिन उन्होंने पाया कि विशेष रूप से आधुनिक समय में वयस्क, बच्चों की बुद्धिमत्ता, उनकी कल्पनाशीलता तथा उनकी जिज्ञासा से आश्चर्यचकित होते रहते हैं। साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष प्रोफ़ेसर कुमुद शर्मा ने अपने समापन वक्तव्य में समस्त पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी और कहा कि आज के भव्य पुरस्कार वितरण समारोह में बाल लेखकों का सम्मान करना न केवल इन लेखकों का सम्मान करना है, बल्कि यह भारत में बाल लेखन की लंबी परंपरा का अभिनंदन करना है। यह वह लेखक हैं जिन्होंने बाल लेखन के महत्त्व को समझा और इसे अगली पीढ़ी तक आगे बढ़ाया है। वे कई पाठकों और लेखकों को बच्चों के लिए लिखने के लिए भी प्रेरित करते हैं। विशेषरूप से, बदलते समाज में बाल साहित्य रचना आसान नहीं है बल्कि यह एक बड़ी चुनौती है तथा बाल साहित्यकारों को बच्चों को नई दिशा देने के लिए लिखना ही होगा।

लेखक सम्मिलन

10 नवंबर 2023, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने 10 नवंबर 2023 को पूर्वाह्न 10:00 बजे अपने प्रथम तल स्थित सभागार, रवीन्द्र

लेखक सम्मिलन की अध्यक्षता करते हुए
साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष प्रोफ़ेसर (डॉ.) कुमुद शर्मा

भवन, नई दिल्ली में 'लेखक सम्मिलन' का आयोजन किया, जिसमें वर्ष 2023 के साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार से सम्मानित लेखकों ने अपने रचनात्मक लेखन के अनुभवों को साझा किया। पुरस्कार विजेताओं के नाम हैं - रथींद्रनाथ गोस्वामी (असमिया), श्यामलकांति दाश (बाङ्ला), प्रतिमा नंदी नार्ज़ारी (बोडो), बलवान सिंह जमोड़िया (डोगरी), सुधा मूर्ति (अंग्रेज़ी), रक्षाबहेन प्रह्लादराव दवे (गुजराती), सूर्यनाथ सिंह (हिंदी), विजयश्री हालाडि (कन्नड), तुकाराम रामा शेट (कोंकणी), अक्षय आनंद 'सन्नी' (मैथिली), प्रिया ए.एस. (मलयाळम्), दिलीप नाङ्माथम (मणिपुरी), एकनाथ आव्हाड (मराठी), मधुसूदन बिष्ट (नेपाली), जुगल किशोर षडंगी (ओड़िआ), गुरमीत कड़िआलवी (पंजाबी), किरण बादल (राजस्थानी), राधावल्लभ त्रिपाठी (संस्कृत), मानसिंह माझी (संताली), ढोलन राही (सिंधी), के. उदयशंकर (तमिऴ), डी.के. चादुवुल बाबु (तेलुगु) तथा (स्वर्गीय) मतीन अचलपुरी (उर्दू)। कश्मीरी भाषा में कोई पुरस्कार घोषित नहीं किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष प्रोफ़ेसर कुमुद शर्मा ने की। उन्होंने समस्त पुरस्कृत लेखकों को उनके योगदान की सराहना करते हुए बधाई दी। कार्यक्रम की शुरुआत असमिया पुरस्कार विजेता श्री रथींद्रनाथ गोस्वामी (असमिया) द्वारा अपने साहित्यिक अनुभव साझा करने से हुई। उन्होंने कहा, 'बाल साहित्य की अपनी 40 वर्षों की यात्रा के दौरान मैंने बहुत कुछ सीखा। पाठकों की सुंदर प्रतिक्रिया/प्रशंसा को मैं अपने पुरस्कार के रूप में स्वीकार करता रहा हूँ। बाल साहित्य के प्रति मेरा जुनून अब एक मिशन बन गया है। मैं अधिक से अधिक पाठकों तक पहुँचना चाहता हूँ। बोडो पुरस्कार विजेता प्रतिमा नंदी नार्ज़ारी ने कहा, 'मैंने कभी नहीं सोचा था कि मुझे इतना बड़ा सम्मान प्राप्त होगा। मैं बचपन से ही लेखक बनना चाहता थी। मुझे पौराणिक कहानियाँ बहुत पसंद हैं तथा कहानियाँ लिखने में मुझे आनंद आता है। अब तक बाल कहानियों की मेरी 5 कृतियाँ प्रकाशित हैं।'

डोगरी पुरस्कार विजेता बलवान सिंह जमोड़िया ने कहा कि उनकी रुचि पढ़ने, लिखने तथा प्रकृति में अधिक है। उन्होंने कहा कि उन्होंने अपनी पुरस्कृत कृति में कहावतों को प्रयोग के तौर पर रखा है ताकि बच्चे अपने अतीत से जुड़ सकें। अंग्रेज़ी पुरस्कार विजेता सुधा मूर्ति ने कहा कि बच्चों का मस्तिष्क गीली दीवार की भांति होता है। हम जो बात करते हैं, हम जो करते हैं, हम जो पढ़ाते हैं, वह उस दीवार पर अंकित हो जाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि 'मैंने ये कहानियाँ कर्नाटक के एक छोटे से शहर शिगगाँव में स्थित एक सामान्य मध्यमवर्गीय पारिवारिक परिदृश्य के साथ लिखी हैं, जहाँ कई दादा-दादी शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं। दादा-दादी बच्चों का मनोरंजन करते थे, काल्पनिक कहानियाँ उन्हें हँसाती थीं, सहानुभूति रखती थीं, कार्य करती थीं तथा सोचने पर मजबूर करती थीं।

इस अवसर पर गुजराती पुरस्कार विजेता डॉ. रक्षाबहेन प्रह्लादराव दवे ने कहा, "बच्चे मेरे लेखन की प्रेरणा हैं। बच्चों द्वारा सराही गई मेरी लेखनी को आज पुरस्कार मिला है। मैं अपने पुरस्कार का श्रेय केवल बच्चों को देती हूँ।" हिंदी पुरस्कार विजेता सूर्यनाथ सिंह ने कहा, 'मैंने बाल साहित्य लिखने के बारे में कभी नहीं सोचा था, यद्यपि पढ़ता ज़रूर रहा। अगर उँगलियाँ पकड़ने वाले हाथ मज़बूत हों तो गिरने का डर नहीं रहता। यह विश्वास भी बना रहता है कि रास्ता बिल्कुल सही है। मुझे बाल साहित्य की ओर लाने के लिए मैं इन दो महान कारकों का बहुत आभारी हूँ।'

कन्नड पुरस्कार विजेता विजयश्री हालाडि ने कहा, "जब भी मैं बच्चों के लिए कविता, गद्य या संस्मरण लिखती हूँ तो हर्षोल्लास से भर जाती हूँ। जब मैं बच्चों के लिए कविता लिखती हूँ, तो मैं न केवल उसे लिख रही होती हूँ – बल्कि मैं उसे गुनगुना भी रही होती

हूँ। माता-पिता को यह समझना चाहिए कि बच्चों को अच्छी गुणवत्ता वाली पुस्तकें पढ़ने की आवश्यकता है जो उनके मासूम मस्तिष्क को खिलने में मदद करें, उनकी उत्सुक आँखों को आश्चर्यचकित कर दें तथा उनकी संवेदनाओं का पोषण करें। शिक्षकों की भूमिका भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है"। कोंकणी पुरस्कार विजेता तुकाराम रामा शेट ने कहा, "बाल साहित्य लिखने का अर्थ बच्चों की दुनिया में रहना तथा अपने रिश्ते को अधिक सार्थक और भावनात्मक बनाना है। मेरे अनुसार बाल साहित्य हमारे जीवन का अभिन्न अंग होना चाहिए।" उन्होंने कहा कि उनकी पुरस्कृत कृति न केवल बच्चों के लिए बल्कि वयस्कों के लिए भी है।

मैथिली पुरस्कार विजेता अक्षय आनंद 'सन्नी' ने अपने व्याख्यान का आरंभ कुछ प्रश्नों के साथ किया - लेखन क्या है? मैं क्यों लिखूँ? मेरे लिखने से क्या होगा? बाद के दिनों में जब मेरा मन इन विचारों से विचलित होने लगा तब मुझे एहसास हुआ कि लिखना कितना महत्त्वपूर्ण है तथा इसका उद्देश्य कितना बड़ा है। आज, जब मेरी तीन रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं, तो मुझे लगता है कि लिखना स्वयं को जीवित रखने का एक प्रयास है।

मलयाळम् पुरस्कार विजेता प्रिया ए.एस. ने कहा, "एक आम धारणा है कि बाल कहानियाँ लिखने के लिए प्रतिभा की आवश्यकता नहीं होती है। निजी तौर पर मुझे लगता है कि लिखना बहुत कठिन कार्य है, विशेषरूप से बच्चों और युवाओं के लिए। बच्चों के लिए लिखना, अपने खोये हुए बचपन को फिर से पाने का एक प्रयास है। यह मेरे अंदर के बच्चे को जीवित रखने का भी एक प्रयास है।" मणिपुरी पुरस्कार विजेता दिलीप नाङ्माथम ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि पुस्तक लिखने का प्राथमिक उद्देश्य सबसे उत्तम संदेश देना, सबसे सुंदर विचारों को विकसित करना तथा पाठकों पर स्थायी प्रभाव डालना है। उनका मानना था कि उनकी पुरस्कृत कृति की कहानियाँ कम से कम युवाओं को लाभान्वित करेंगी जब वे इस पुस्तक को पढ़ेंगे तब उनके व्यक्तित्व विकास के साथ-साथ कथाओं की कला और मणिपुर में प्राचीन काल से मौजूद समृद्ध मौखिक साहित्य को उन्हें जानने में मदद मिलेगी। मराठी पुरस्कार विजेता एकनाथ आव्हाड ने कहा कि सच तो यह है कि बच्चों ने ही मुझे लिखने के लिए प्रेरित किया। उन्हीं के कारण मेरा बाल साहित्य फला-फूला। बाल साहित्य का यह बगीचा भी खिल उठा। जबकि बच्चों की बगिया खिलाकर मैं भी खिल गया।

नेपाली पुरस्कार विजेता मधुसूदन बिष्ट ने बच्चों के साहित्य पर उचित ध्यान देने के महत्त्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने आगे कहा कि, "हमारी मातृभाषा केवल एक भाषा नहीं बल्कि हमारी सांस्कृतिक पहचान और इतिहास का भंडार है। इसकी उपेक्षा से हमारी विरासत का क्षरण हो सकता है।" ओड़िआ पुरस्कार विजेता जुगल किशोर षडंगी ने कहा कि खुशी का जुड़ना, दुख का कम होना, हँसी का गुणा और आँसुओं का बँटवारा जीवन का असीमित समीकरण है। इन सबके बीच, ओड़िआ बाल साहित्य के सामंजस्यपूर्ण विकास के लिए मेरे प्रयास जारी रहे। उन्होंने कहा कि बच्चों में पढ़ने का कौशल विकसित करना बहुत ज़रूरी है।

पंजाबी पुरस्कार विजेता गुरमीत कड़िआलवी ने कहा, "उनके बचपन में पोष-माघ महीने की सर्द रातों में कंबल के अंदर बैठकर अपनी दादी या नानी से सुनी कहानियाँ उनके अवचेतन में अब भी हैं। ये कहानियाँ आज भी उनकी रचनाओं का आधार बनी हुई हैं। बाल साहित्य लिखने से कोई लेखक छोटा नहीं हो जाता। उन्होंने कहा कि बाल साहित्य लेखक के रूप में, मैं बच्चों के मन के सुख और दुख को ढालने का प्रयास करता हूँ। मैं जिन बच्चों के बारे में लिखता हूँ वे दूर के बच्चे नहीं हैं, वे मेरे चारों ओर, आस-पास हैं। राजस्थानी पुरस्कार विजेता किरण बादल ने कहा कि शिक्षिका होने के नाते मैं हमेशा बच्चों से दिल से निकटता महसूस करती हूँ।

इस वजह से बच्चे मुझसे जल्दी घुल-मिल जाते हैं। अपने स्वयं के शिक्षण जीवन और अपने परिवेश में बच्चों को देखने के बाद, मुझे एहसास हुआ कि बच्चे वैसे नहीं हैं जैसे हम में से कई लोग उन्हें समझते हैं। वे गीली मिट्टी की भांति हैं जिन्हें रचयिता जो चाहे आकार दे सकता है।

संस्कृत पुरस्कार विजेता राधावल्लभ त्रिपाठी ने कहा कि बाल साहित्य ऐसा होना चाहिए जिसे न केवल बच्चे पढ़ें बल्कि बड़े भी पढ़ना चाहें। बाल साहित्य लिखने के लिए स्वयं बच्चा बनना पड़ता है। संताली पुरस्कार विजेता मानसिंह माझी ने कहा कि कहानियाँ सुनना और सुनाना प्राचीन काल से ही परंपरा रही है। गीत या कविताएँ भी आदिवासियों की सांस्कृतिक विरासत का अनिवार्य हिस्सा हैं। मैंने अपने लेखन में आदिवासी जीवन शैली एवं सामाजिक समरसता/गतिविधियों को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। तमिळ पुरस्कार विजेता के. उदयशंकर ने कहा, "मैं कहानियाँ, कविताएँ, निबंध तथा लेख जैसी विभिन्न शैलियों में लिखकर बच्चों के साहित्य के प्रसार में योगदान दे रहा हूँ। तमिलनाडु में आधुनिक बाल साहित्य शनै: शनै: बढ़ रहा है। यह मानव केंद्रित दृष्टिकोण के स्थान पर पर्यावरण-केंद्रित दृष्टिकोण के महत्त्व पर प्रकाश डालता है।" तेलुगु पुरस्कार विजेता डी.के. चादुवुल बाबु ने कहा, "बाल साहित्य विज्ञान की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम है। मैं बाल लेखकों और नए पाठकों को प्रोत्साहित करता हूँ। मेरी महत्वाकांक्षा लड़कों तथा लड़कियों को लेखक बनने के लिए प्रशिक्षित करना है।

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2023 अर्पण समारोह

12 जनवरी 2024, कोलकाता

मुख्य अतिथि डॉ. सुबोध सरकार तथा पुरस्कार विजेताओं के साथ साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष तथा सचिव

साहित्य अकादेमी ने 12 जनवरी 2024 को कोलकाता के रवींद्र सदन सभागार में अपने युवा पुरस्कार अर्पण समारोह का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री माधव कौशिक द्वारा 22 पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। पुरस्कारों के साथ एक उत्कीर्ण ताम्र फलक तथा पचास हज़ार रुपए का चेक प्रदान किया गया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रशस्ति-पत्र का पाठ किया। पुरस्कार विजेताओं को साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष प्रोफ़ेसर कुमुद शर्मा द्वारा पुष्पगुच्छ भेंट कर सम्मानित किया गया। पुरस्कृत पुरस्कार विजेता थे - जिंटू ठाकुरिया (असमिया), हामिरुद्दीन मिद्या (बाङ्ला), माइनावस्त्रि दैमारि (बोडो), धीरज कुमार रैणा (डोगरी), अनिरुद्ध कनिसेट्टि (अंग्रेज़ी), अतुल कुमार राय (हिंदी), मंजुनायक चळ्ळुरु (कन्नड), निग़हत नसरीन (कश्मीरी), तन्वी कामत बांबोळकार (कोंकणी), संस्कृति मिश्र (मैथिली), गणेश पुत्तूर (मलयाळम्), थिंनाम परशुराम (मणिपुरी), विशाखा विश्वनाथ (मराठी), नयन कला देवी (नेपाली), दिलेस्वर राणा (ओड़िआ), संदीप शर्मा (पंजाबी), देवीलाल महिया (राजस्थानी), मधुसूदन मिश्र (संस्कृत), बापी टुडु (संताली), मोनिका जे. पंजवाणी (सिंधी), राम थंगम (तमिऴ), तक्केडसिला जानी (तेलुगु) तथा तौसीफ़ ख़ान (उर्दू)। इनमें से धीरज कुमार रैना पुरस्कार वितरण समारोह में उपस्थित नहीं हो सके। प्रारंभ में, साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत व्याख्यान में स्वामी विवेकानंद द्वारा कहे गए उत्साहपूर्ण शब्दों को याद करते हुए कहा कि वे युवाओं के सबसे महान ध्वजवाहकों में से एक थे। उन्होंने उन विभूतियों का उल्लेख किया जिन्होंने अपनी युवावस्था में ज्ञान की विभिन्न धाराओं में उत्कृष्टता प्राप्त की थी। युवा मस्तिष्कों को दिशा देने के लिए आवश्यक पठन सामग्री प्रदान करना समाज का कर्तव्य है। समाज के उत्थान के लिए युवा लेखकों को

प्रोत्साहन देना आवश्यक है। उन्होंने युवा साहिती, नवोदय प्रकल्प तथा यात्रा अनुदान जैसी साहित्य अकादेमी की प्रमुख परियोजनाओं के बारे में भी श्रोताओं को बताया, जो विशेष रूप से युवा लेखकों को व्यापक मंच प्रदान करने के लिए तैयार की गई हैं। अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने कहा कि युवा लेखक भारतीय साहित्य का भविष्य हैं। उन्होंने इस अवसर पर एक ही मंच पर बैठे विभिन्न भारतीय भाषाओं के 22 लेखकों की उपस्थिति की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा कि ऐसा लगता है कि पूरा भारतीय साहित्य एक मंच पर बैठा है। रोमांस और विद्रोह युवाओं की मूल भावना है, इसलिए वे परंपरा को चुनौती दे सकते हैं तथा उसे नए रूप से परिभाषित कर सकते हैं। चूंकि वे भारतीय साहित्य और संस्कृति के बदलते परिदृश्य से अवगत हैं, इसलिए वे परंपरा को आधुनिकता के साथ मिलाकर उत्कृष्टता के उच्चतम स्तर तक ले जा सकते हैं। समारोह के मुख्य अतिथि प्रख्यात बाङ्ला कवि डॉ. सुबोध सरकार ने नवोदित लेखकों को मान्यता देने के इस महान अवसर पर उपस्थित होने पर प्रसन्नता व्यक्त की। विश्व के कुछ प्रख्यात लेखकों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि हर युवा लेखक अपने लेखन की वैधता और सफलता को लेकर संशय में रहता है। उन्होंने विश्व भर में लेखकों पर हो रहे हमलों पर खेद व्यक्त करते हुए उम्मीद जताई कि युवा लेखकों की विद्रोही भावना नई संभावनाओं को जन्म दे सकती है। अपने समापन वक्तव्य में साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष प्रो. कुमुद शर्मा ने युवा लेखकों के लिए उचित मार्गदर्शन के महत्त्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि युवा लेखकों को अपने उत्साह को सही दिशा में लगाना चाहिए। इस संदर्भ में उन्होंने इस तथ्य की ओर ध्यान आकृष्ट किया कि सोशल मीडिया के इस युग में लेखकों को अपनी पहचान बनाने के लिए बिना किसी बाधा के विस्तृत मंच मिल रहा है। किंतु उन्होंने युवा लेखकों को आगाह करते हुए कहा कि उन्हें परिपक्व लेखन के लिए समय निकालना चाहिए। इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लेखक, विद्वान और साहित्यप्रेमी उपस्थित थे।

लेखक सम्मिलन

13 जनवरी 2024, नई दिल्ली

लेखक सम्मिलन की अध्यक्षता करते हुए साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष प्रो. (डॉ.) कुमुद शर्मा

साहित्य अकादेमी ने 13 जनवरी 2024 को साहित्य अकादेमी सभागार में युवा पुरस्कार विजेताओं के साथ *लेखक सम्मिलन* का आयोजन किया। बैठक की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष प्रो. कुमुद शर्मा ने की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में उन्होंने युवा लेखकों की रचनात्मकता की सराहना की, जो उनके लेखन में झलकती है। उन्होंने कहा कि उनके लेखन का मानवतावादी दृष्टिकोण मानवता की रक्षा के उनके प्रयास का प्रमाण है। यद्यपि, उन्होंने यह भी कहा कि लेखकों को लिखते समय उचित दृष्टिकोण का भी उपयोग करना चाहिए। बैठक में पुरस्कार विजेताओं ने अपने रचनात्मक अनुभव श्रोताओं के साथ साझा किए।

अपने जीवन के शुरुआती वर्षों के संघर्षों के बारे में बताते हुए जिंटू ठाकुरिया (असमिया) ने श्रोताओं को

बताया कि उनकी कहानी में स्थान और पहचान की अंतर्क्रियाशीलता बहुत प्रभावशाली रही है। साथ ही, हाशिए पर धकेले गए किरदारों ने भी उनका ध्यान आकृष्ट किया है। यौन शोषण, लैंगिक अल्पसंख्यक, नैतिक नीतियाँ, मूल्य संकट, अलगाववाद की अवास्तविकता, सांस्कृतिक पिछड़ापन ऐसे विषय बन गए हैं जिन्हें वे अपने लेखन के माध्यम से व्यक्त करना चाहते हैं। ग्रामीण बंगाल में जन्मे तथा पले-बढ़े हामिरुद्दीन मिद्द्या (बाङ्ला) को शुरू से ही बंगाल की स्वदेशी कहानी कहने की परंपराओं ने प्रभावित किया। उनके गाँव में मनुष्य तथा प्रकृति का घनिष्ठ संबंध था। खेतों में काम करते हुए उन्होंने बहुत सी चीज़ें सीखीं - लोककथाएँ, दंतकथाएँ तथा और भी बहुत कुछ। इन सबने तथा उनके आस-पास के माहौल ने उन्हें वह बनाया जो वे आज हैं। अपने जीवन के बारे में बताते हुए माइनावस्त्रि दैमारि (बोडो) ने श्रोताओं को बताया कि कविता ही उनकी भावनाओं तथा असहनीय दर्द को साझा करने का एकमात्र साधन है। पितृसत्तात्मक समाज में अकेली माँ और पिता को खोना उनके लिए एक आघात था। बेटी होने की असमानता और भेदभाव भी एक और चुनौती थी। उन्होंने कहा कि समाज में बेटे और बेटी की समानता के बारे में आवाज़ तो उठती है, किंतु यथार्थवाद में कहीं न कहीं असमानता अभी भी मौजूद है। अनिरुद्ध कनिसेट्टि (अंग्रेज़ी) ने भारतीय संस्कृतियों और भाषाओं की विविधता के साथ-साथ हमारी राजनीति को आकार देने में इतिहास की भूमिका पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने समकालीन स्थिति की गतिशील प्रकृति पर बोलते हुए विगत पीढ़ी पर भी अपने विचार व्यक्त किए। अतुल कुमार राय (हिंदी) ने अपने लेखन के शुरुआती वर्षों के बारे में बात की और बताया कि किस प्रकार उन्होंने साहित्य के सामाजिक पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए अपने उपन्यासों के कथानक की योजना बनाई। अपने जीवन के संघर्षों पर प्रकाश डालते हुए, मंजुनायक चळ्ळुरु (कन्नड) ने बताया कि किस प्रकार पलायन से जुड़ी अलगाव और भावनाओं ने उनके साहित्यिक प्रयास को आकार दिया। उनके बचपन के स्थान, लोग, तस्वीरें तथा यादें उनके द्वारा लिखी गई कहानियों का स्रोत बनीं। निग़हत नसरीन (कश्मीरी) ने अपने लेखन के विषयों पर बात की जो जीवन की पीड़ा, पारिवारिक समस्याओं, दिन-प्रतिदिन की घटनाओं, सामाजिक परिवर्तन, भाईचारे, महिला सशक्तिकरण और दहेज, घरेलू हिंसा आदि जैसे सामाजिक पाखंडों पर केंद्रित हैं। तन्वी कामत बांबोळकार (कोंकणी) ने कोंकणी क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत पर बात की जो सदियों पुराने इतिहास को दर्शाती चट्टानों की नक्काशी की भूमि है, तथा समृद्ध लोकगीतों एवं हरे-भरे जंगलों की भूमि है। प्रमुख कोंकणी लेखकों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि उनकी रचनाएँ सुंदर कोंकणी समुदाय में पले-बढ़े होने का परिणाम हैं। कविता की प्रकृति पर बोलते हुए, संस्कृति मिश्र (मैथिली) ने श्रोताओं को बताया कि कवयित्री के रूप में, वे केवल समस्याग्रस्त क्षेत्रों को प्रस्तुत करने के बजाय, समस्याओं के संभावित समाधान भी प्रस्तुत करती हैं। गणेश पुत्तूर (मलयाळम्) ने अपने जीवन के शुरुआती वर्षों के बारे में बताया और कहा कि उनके लिए, साहित्य में यथार्थवाद और व्यावहारिकता सबसे महत्त्वपूर्ण मुद्दा है। अपने लेखन की उत्पत्ति पर बोलते हुए, थिंनाम परशुराम (मणिपुरी) ने मणिपुर की वर्तमान स्थिति तथा लोगों पर इसके खतरनाक प्रभावों पर विचार व्यक्त किए। विशाखा विश्वनाथ (मराठी) ने रचनात्मक साहित्य के बुनियादी पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की। उनके लिए लेखन, केवल एक शिल्प नहीं है; यह एक यात्रा है - एक ऐसी यात्रा जिसमें संदेह और विश्वास होते हैं, एक संघर्ष जो अंततः कुछ नए और जीवंत का सृजन करता है। यह एक ऐसी यात्रा है जहाँ हम अपने विश्वासों पर प्रश्न उठाते हैं, चुनौती देते हैं तथा

उनके साथ खेलते हैं, स्वयं को और अपने आस-पास की दुनिया को गहराई से समझने की कोशिश करते हैं। नयन कला देवी (नेपाली) ने कहा कि साहित्य को आम लोगों के जीवन पर केंद्रित होना चाहिए। इसमें आम लोगों के सुख-दुख के साथ-साथ रोज़मर्रा के जीवन में उनके समक्ष आने वाली व्यावहारिक स्थितियों को भी दर्ज किया जाना चाहिए। अपने लेखन पर पड़े प्रभावों की प्रकृति पर बात करते हुए, दिलेस्वर राणा (ओड़िआ) ने श्रोताओं को बताया कि यद्यपि प्रत्येक कहानी सत्य घटनाओं पर आधारित है, किंतु वास्तविकता प्रबल होती है। लगभग समस्त कहानियाँ विस्थापन, खनन के कारण बेघर होने, कालाहांडी की परंपराओं तथा संस्कृति एवं मानवीय मूल्यों के तानेबाने में बुनी गई हैं। इस समय मेरे आस-पास की समस्याएँ, घटनाएँ तथा परिस्थितियाँ उनकी कहानी कहने का काम करती हैं। उनके लिए, एक समस्या जो हल नहीं हो सकती, वह कहानी बन जाती है। संदीप शर्मा (पंजाबी) ने भाषाओं की प्रकृति और उनके पहलुओं पर बात की। उनके लिए, उत्तम साहित्य में भाषा की कोई बाधा नहीं होती। देर-सवेर श्रेष्ठ रचना नए क्षेत्रों को खोजने के लिए अपना रास्ता ढूँढ़ ही लेती है। देवीलाल महिया (राजस्थानी) ने राजस्थानी इतिहास और संस्कृति की समृद्ध विरासत पर बात की। उन्होंने समकालीन राजस्थानी साहित्य तथा अपने साहित्यिक जीवन पर प्रकाश डाला। मधुसूदन मिश्र (संस्कृत) ने संस्कृत साहित्य की विरासत पर बात की तथा इस भाषा के महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का उल्लेख किया। उन्होंने संस्कृत की विशिष्ट साहित्यिक तकनीकों पर भी बात की। बापी टुडु (संताली) ने अपने शुरुआती लेखन के वर्षों पर बात की और कहा कि वे आधुनिक शैली में समकालीन संताली समाज के अधिकतर मुद्दों तथा चुनौतियों पर कहानियाँ लिखते हैं। मोनिका जे. पंजवाणी (सिंधी) ने सिंधी साहित्य के प्रमुख लेखकों तथा उनके लेखन पर उनके प्रभाव के बारे में बताया। कालजयी तमिळ लेखन पर बात करते हुए राम थंगम (तमिळ) ने कहा कि वे काल्पनिक कहानियाँ नहीं लिखते हैं। वह अपने जीवन के अनुभवों से लिखते हैं - वे जिन लोगों से मिले और जो कहानियाँ उन्होंने सुनीं। यह वास्तविक जीवन की कहानी कहने जैसा है जो बहुत जीवंत है। तक्केडसिला जानी (तेलुगु) ने अपने आरंभिक लेखन पर बात की और बताया कि किस प्रकार सामाजिक मुद्दों ने उनके लेखन में स्थान बनाया। उन्होंने अपने शुरुआती जीवन के संघर्षों के बारे में भी बताया। तौसीफ़ ख़ान (उर्दू) ने उर्दू साहित्य की वर्तमान स्थिति के साथ-साथ पिछले युग की तुलना में बदले हुए समाज पर अपने विचार व्यक्त किए। धीरज कुमार रैणा (डोगरी) 'लेखक सम्मिलन' में उपस्थित नहीं हो सके। कार्यक्रम के अंत में, साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2023 अर्पण समारोह

12 मार्च 2023, नई दिल्ली

मुख्य अतिथि श्रीमती प्रतिभा राय तथा पुरस्कार विजेताओं के साथ साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष और सचिव

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2023 अर्पण समारोह 12 मार्च 2024 को सायं 5:30 बजे कमानी सभागार में आयोजित किया गया। प्रख्यात ओड़िआ लेखिका श्रीमती प्रतिभा राय कार्यक्रम की मुख्य अतिथि थीं। आरंभ में, सुश्री सौम्या ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री माधव कौशिक से सुश्री प्रतिभा राय का औपचारिक स्वागत करने का अनुरोध किया। अपने स्वागत व्याख्यान में डॉ. के. श्रीनिवासराव ने कहा कि प्राचीन काल से ही साहित्यिक कृतियाँ मानव मन को पोषित करती रही हैं। उन्होंने कहा कि आज के दिन साहित्य अकादेमी भारतीय साहित्य के लिए अपनी अथक सेवा के 70 वर्ष पूरे कर रही है। अपनी स्थापना के बाद से ही अकादेमी भारतीय साहित्य तथा साहित्यिक गतिविधियों को बढ़ावा देती रही है। 24 भाषाओं में किसी साहित्यिक कृति को पुरस्कृत करना भारतीय साहित्यिक परंपराओं को पुरस्कृत करने के समान है। उन्होंने कहा कि साहित्य हमारे राष्ट्र का डीएनए है। उन्होंने 2023 में अकादेमी द्वारा की गई गतिविधियों की जानकारी दी। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने अपने अध्यक्षीय व्यख्यान में 24 भाषाओं के समस्त पुरस्कार विजेताओं को हार्दिक बधाई दी। उन्होंने कहा कि हज़ारों वर्ष पूर्व जब दुनिया भ्रमित थी, तब भारतीय लेखकों ने ऐसा साहित्य रचा था जो आने वाले वर्षों के लिए प्रकाश स्तंभ साबित होगा। साहित्य सदैव मानवीय मूल्यों को बनाए रखता है तथा आम आदमी की बात करता है। यह अकादेमी के लिए खुशी और सम्मान की बात है कि वह अपने स्थापना दिवस पर लेखकों को पुरस्कृत कर रही है। अपने व्यख्यान के पश्चात् साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष ने 24 भारतीय भाषाओं के लेखकों को साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2023 प्रदान किए। चूँकि असमिया पुरस्कार विजेता पुरस्कार अर्पण समारोह में शामिल नहीं हो सके, इसलिए उनके बेटे ने उनकी ओर से पुरस्कार ग्रहण किया। साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2023 के विजेता हैं : प्रणवज्योति डेका (असमिया), स्वपनमय चक्रवर्ती (बाङ्ला), नंदेश्वर दैमारि (बोडो), विजय वर्मा (डोगरी), नीलम सरण गौड़ (अंग्रेज़ी), विनोद जोशी (गुजराती), संजीव (हिंदी), लक्ष्मीश तोल्पाडि (कन्नड), मंशूर बानिहाली (कश्मीरी), बासुकी नाथ झा (मैथिली),

प्रकाश एस. पर्येंकार (कोंकणी), ई.वी. रामकृष्णन (मलयाळम्), सोरोक्खाईबम गम्भिनी (मणिपुरी), कृष्णात तुकाराम खोत (मराठी), युद्धवीर राणा (नेपाली), आशुतोष परिड़ा (ओड़िआ), स्वर्णजीत सवी (पंजाबी), गजेसिंह राजपुरोहित (राजस्थानी), अरुण रञ्जन मिश्र (संस्कृत), तारासीन बास्के (संताली), विनोद आसुदानी (सिंधी), एन. राजशेखरन (तमिऴ), तल्लावझला पतंजलि शास्त्री (तेलुगु) तथा सादिक़ा नवाब सहर (उर्दू) साहित्य अकादेमी के सचिव ने प्रशस्ति-पत्र पढ़े।

पुरस्कार अर्पण समारोह की मुख्य अतिथि श्रीमती प्रतिभा राय ने अपने संबोधन में इस वर्ष विश्व के सबसे बड़े साहित्योत्सव के आयोजन के लिए समस्त पुरस्कार विजेताओं तथा साहित्य अकादेमी को हार्दिक बधाई दी। उन्होंने कहा कि राजनीति बाँटती है, साहित्य जोड़ता है। उन्होंने कहा कि भारत भाषाओं का अद्भुत देश है तथा संकट के समय लेखक ही विश्व को बचाते हैं।

समापन वक्तव्य साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष प्रोफ़ेसर कुमुद शर्मा ने प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि आज इस मंच पर भारतीय साहित्य का स्वाभिमान, सौंदर्य और गरिमा एक साथ देखने को मिल रही है। साहित्य शाश्वत है तथा आने वाली पीढ़ियों के लिए मानवता का मार्ग प्रशस्त करता है।

लेखक सम्मिलन

13 मार्च 2023, नई दिल्ली

साहित्योत्सव के दौरान साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2023 विजेताओं ने 'लेखक सम्मिलन' के अंतर्गत अपने रचनात्मक अनुभवों को साझा किया। साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष प्रो. (डॉ.) कुमुद शर्मा ने इस सम्मिलन की अध्यक्षता की। असमिया पुरस्कार विजेता श्री प्रणवज्योति डेका उपस्थित नहीं थे। बाङ्ला पुरस्कार विजेता स्वपनमय चक्रवर्ती ने अपनी पुरस्कृत कृति *जलेर ऊपर पानी* पर

'लेखक सम्मिलन' की अध्यक्षता करते हुए साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष प्रो. (डॉ.) कुमुद शर्मा

बात करते हुए कहा कि उन्होंने इसके लेखन में पश्चिम बंगाल और बिहार में बंगाल विभाजन से बचे लोगों की मौखिक कहानी को दर्शाया है।

बोडो पुरस्कार विजेता नंदेश्वर दैमारि ने अपने पुरस्कृत कहानी-संग्रह *जिउ-सफरनि दखोन* की चर्चा करते हुए कहा कि इन कहानियों की रचना करते समय उन्होंन घरेलू परिवेश और समाज में उत्पन्न होने वाली समस्याओं का एहसास कराने का प्रयास किया है।

डोगरी पुरस्कार विजेता विजय वर्मा ने दर्शकों को अपनी लेखन यात्रा के विभिन्न पहलुओं के बारे में बताया, जिसके कारण उन्हें डोगरी में सबसे लंबी ग़ज़ल, 721 पंक्तियों वाली, *दौं सदियां इक सीर* लिखने के लिए प्रेरित किया गया और जो संभवत: सभी भारतीय भाषाओं में सबसे लंबी ग़ज़ल है।

अंग्रेज़ी पुरस्कार विजेता डॉ. नीलम सरण गौड़ ने *रेक्युम इन रागा जानकी* पर चर्चा की, जो इलाहाबाद के इतिहास में एक प्रतिष्ठित लेकिन भुला दी गई शख़्सियत, जानकी बाई इलाहबादी के जीवन से संबंधित है।

गुजराती पुरस्कार विजेता विनोद जोशी ने कहा कि वे साहित्य सृजन की इच्छा से नहीं लिखते हैं। वह भाषा का ज्ञान प्राप्त करने के लिए लिखते हैं।

हिंदी पुरस्कार विजेता संजीव ने कहा कि उनकी पुरस्कृत पुस्तक *मुझे पहचानो* एक माँ और उसकी बेटी

के रिश्ते को बयान करती है और कैसे परिस्थितियाँ माँ और बेटी की भूमिकाओं को बदल देती हैं।

कन्नड पुरस्कार विजेता लक्ष्मीश तोल्पाडि ने अपनी पुरस्कृत कृति *महाभारत अनुसंधानद भारतयात्रे* से एक निबंध 'माई-मनगला ओडु' का संक्षिप्त अंग्रेज़ी अनुवाद पढ़कर सुनाया।

कश्मीरी पुरस्कार विजेता श्री मंशूर बानिहाली ने बताया कि उनके पुरस्कृत काव्य-संग्रह *येथ वावेह हलय साँग कौस जेले* का शीर्षक प्रसिद्ध कश्मीरी संत हज़रत शेखुल आलम के एक दोहे से लिया गया था और इस कृति में उन्होंने पहली बार दो नई शैलियाँ जोड़ी हैं।

कोंकणी पुरस्कार विजेता प्रकाश एस. पर्येंकार ने कहा कि उनका मानना है कि लेखक को एक प्रकाश-स्तंभ की तरह होना चाहिए जो चमकता है और क्षेत्र और आसपास के पथप्रदर्शकों को मंत्रमुग्ध तथा निर्देशित करने के लिए आकर्षित करता है।

मैथिली पुरस्कार विजेता बासुकी नाथ झा ने कहा कि उनके अनुसार पुस्तक ऐसी होनी चाहिए जिससे सत्य का उद्घाटन संभव हो, ईमानदारी का उद्घोष संभव हो तथा समाज व पाठकों को उस पर विश्वास हो।

मलयाळम् पुरस्कार विजेता प्रोफ़ेसर ई.वी. रामकृष्णन ने कहा, जैसे ही प्रिंट संस्कृति ने डिजिटल संस्कृति को रास्ता दिया है, 'साहित्य' जिसे हम आज जानते हैं बड़े पैमाने पर परिवर्तन के दौर में है।

मणिपुरी पुरस्कार विजेता सुश्री सोरोक्खाईबम गम्भिनी ने शून्य सीमा अवधारणा के बारे में बात की, जो उनकी कविता की अनूठी विशेषता है।

मराठी पुरस्कार विजेता कृष्णात तुकाराम खोत का मानना था कि किसी चीज़ के नष्ट होने की चिंता करने की बजाय लेखक को उस चीज़ के नष्ट होने की प्रक्रिया के बारे में वर्तमान चिंता को रेखांकित करना चाहिए।

नेपाली पुरस्कार विजेता युद्धवीर राणा ने बताया कि आजकल आधुनिकता के दबाव में वर्तमान समाज के लोग और बच्चे बदल रहे हैं। हम अपनी लोक परंपरा, लोक रीति-रिवाज़ और संस्कृति को भूलते जा रहे हैं।

ओड़िआ पुरस्कार विजेता डॉ. आशुतोष परिड़ा ने बताया कि उनके पुरस्कृत संग्रह की कई कविताएँ प्रतिकूल परिस्थितियों के सामने कवि के आंतरिक संघर्ष और उथल-पुथल तथा उनसे उबरने की उनकी तीव्र इच्छा को सामने रखती हैं।

पंजाबी पुरस्कार विजेता स्वर्णजीत सवी उर्फ़ स्वर्णजीत सिंह ने कहा कि कविता बदलते युगों के चिंतनशील इतिहास के रूप में कार्य करती है, जो इसके सार को पकड़ती है।

कार्यक्रम में गजेसिंह राजपुरोहित (राजस्थानी), अरुण रञ्जन मिश्र (संस्कृत), तारासीन बास्के (संताली), विनोद आसुदानी (सिंधी), एन. राजशेखरन (तमिऴ), तालावझला पतंजलि शास्त्री (तेलुगु) और सादिक़ा नवाब सहर (उर्दू) ने भी अपने रचनात्मक अनुभवों को साझा किया।

राजस्थानी पुरस्कार विजेता गजेसिंह राजपुरोहित ने बताया कि प्रेम इस ब्रह्मांड की सबसे पवित्र और अनमोल रचना है। प्रेम ईश्वर द्वारा मानवता को दिया गया सर्वोच्च उपहार है।

संस्कृत पुरस्कार विजेता अरुण रञ्जन मिश्र आधुनिक युग के बारे में चिंतित थे जहाँ मनुष्य मशीनों के साथ काम कर रहा है। और उत्तर-आधुनिकता के दौर में, मनुष्य न केवल मशीनों द्वारा निर्देशित होगा बल्कि उनके अधीन भी होगा।

संताली पुरस्कार विजेता तारासीन बास्के ने कहा कि संताली में लोक साहित्य बहुत समृद्ध और विशाल है तथा कई संताली लेखक हैं जो भाषा को अंधकार से प्रकाश

की ओर ले जाने का लेखन के माध्यम से अपना कठिन काम कर रहे हैं।

सिंधी पुरस्कार विजेता विनोद आसुदानी ने कहा कि उनकी पुरस्कृत पुस्तकों में ग़ज़लें सिंधी में उत्तर आधुनिक संवेदनशीलता की अभिव्यक्ति हैं। वे जटिल, बौद्धिक, सामाजिक और लौकिक मुद्दों की खोज करती हैं।

तमिळ पुरस्कार विजेता एन. राजशेखरन उर्फ़ देवीभारती ने तमिळ लेखकों के पीछे काम करने वाली प्रेरणा की प्रकृति के बारे में बताया।

तेलुगु पुरस्कार विजेता तल्लावझला पतंजलि शास्त्री ने कहा कि लेखक को अतीत, वर्तमान तथा भविष्य के विभिन्न काल क्षेत्रों में घूमना पड़ता है।

उर्दू पुरस्कार विजेता सादिक़ा नवाब सहर ने कहा कि उपन्यास जीवन का प्रतिबिंब है जिसमें वातावरण, चरित्र, बातचीत, भाषा और कथन एक दूसरे से जुड़े होते हैं।

साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता अर्पित

आनंद कुमारस्वामी महत्तर सदस्यता प्रदत्त

29 नवंबर 2023, नई दिल्ली

प्रोफ़ेसर असंग तिलकरत्ने को आनंद कुमारस्वामी महत्तर सदस्यता प्रदान करते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री माधव कौशिक, साथ में हैं अकादेमी के सचिव

साहित्य अकादेमी ने सायं 5:00 बजे तृतीय तल स्थित अपने सभाकक्ष, रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली में महत्तर सदस्यता कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें श्रीलंका के बौद्ध अध्ययन के अग्रणी विद्वान प्रोफ़ेसर असंग तिलकरत्ने को औपचारिक रूप से वर्ष 2020 के लिए अकादेमी की आनंद कुमारस्वामी महत्तर सदस्यता से सम्मानित किया गया। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने प्रो. तिलकरत्ने को ताम्र पट्टिका, अंगवस्त्रम एवं पुस्तकें भेंट कर महत्तर सदस्यता प्रदान की। अकादेमी ने इस महत्तर सदस्यता की स्थापना 1996 में महान विद्वान और सौंदर्यशास्त्री डॉ. आनंद कुमारस्वामी के नाम पर की थी, जिन्होंने दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशियाई संस्कृति और सभ्यता को समझने में योगदान दिया था। इस महत्तर सदस्यता का मुख्य उद्देश्य एशियाई विद्वानों द्वारा कला, संस्कृति, साहित्य, इतिहास, सामाजिक विज्ञान आदि पर शोध को बढ़ावा देना है।

प्रारंभ में, साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अपना स्वागत वक्तव्य देते हुए आनंद कुमारस्वामी की महानतम प्रतिभाओं, विद्वानों और शिक्षाविदों में से एक के रूप में सराहना की तथा प्रो. तिलकरत्ने की शैक्षणिक उपलब्धियों पर प्रशस्ति-पत्र भी पढ़कर सुनाया। अपने स्वीकृति वक्तव्य में प्रो. तिलकरत्ने ने कहा, 'मुझे इस प्रतिष्ठित महत्तर सदस्यता के लिए चुनकर मेरे काम को मान्यता प्रदान करने के लिए मैं

साहित्य अकादेमी की ईमानदारी पूर्वक सराहना करता हूँ।'

महत्तर सदस्यता अर्पण समारोह के बाद 'साहित्य मंच' कार्यक्रम हुआ जिसमें प्रो. तिलकरत्ने ने 'आनंद कुमारस्वामी के परिप्रेक्ष्य में ज्ञान की विस्तृति, अस्तित्व की गहराई और सार्वभौमिकता' विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। अपने व्याख्यान के आरंभ में, उन्होंने आनंद कुमारस्वामी के जीवन और कार्यों का संक्षिप्त विवरण देते हुए कहा कि वह जन्म से श्रीलंकाई थे; शिक्षा से ब्रिटिश, पालन-पोषण से पश्चिमी और हिंदू तथा अपने जीवन के अंतिम 30 वर्ष संयुक्त राज्य अमेरिका में रहे। उन्हें श्रीलंका की कला और शिल्प में बहुत गहरी रुचि थी। उनका 'मध्यकालीन सिंहली कला' विषय पर मौलिक और स्मारकीय कार्य है। इसके अलावा, भारतीय और श्रीलंकाई बौद्ध कलाओं और प्रतिमा विज्ञान पर, उन्होंने कई लेख लिखे जिनमें उनके प्रसिद्ध संग्रह द *डांस ऑफ़* शिव, द *बुद्धा एंड द गॉस्पेल ऑफ़ द बुद्धा* तथा बुद्धिज़्म एंड हिंदूइज़्म शामिल हैं। उन्होंने विशेषरूप से आनंद कुमारस्वामी के सार्वभौमिकतावाद के विचार का उल्लेख किया। आज हम सार्वभौमिकता की बहुत प्रशंसा करते हैं। किंतु सार्वभौमिकता के उदाहरण, यद्यपि इस प्रकार का लेबल नहीं दिया गया है, सभी प्रमुख धर्मों में पाए जाते हैं। शुरुआत से ही सार्वभौमिकता इसके मूल और अस्तित्व के केंद्र में थी, बुद्ध ने जिस समस्या का समाधान खोजने का प्रयास किया वह वैश्विक और सार्वभौमिक थी। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि बौद्ध सार्वभौमिकता मानव प्रजाति से आगे बढ़कर पशु जगत और प्राकृतिक पर्यावरण, पेड़ों, पौधों, लताओं, नदियों, पहाड़ों और महासागरों आदि को समाहित करती है। कार्यक्रम के अंत में, साहित्य अकादेमी के उपसचिव श्री कृष्णा किम्बहुने ने सभी का आभार प्रकट किया। इस अवसर पर कई प्रतिष्ठित लेखक एवं साहित्य प्रेमी उपस्थित थे।

प्रेमचंद महत्तर सदस्यता प्रदत्त

8 दिसंबर 2023, नई दिल्ली

छिरिङ ताशी को प्रेमचंद महत्तर सदस्यता प्रदत्त

साहित्य अकादेमी ने 8 दिसंबर 2023 को पूर्वाह्न 11:00 बजे तृतीय तल स्थित अपने सभाकक्ष, रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली में महत्तर सदस्यता कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें भूटान के प्रख्यात लेखक, विद्वान, शोधकर्ता तथा सामाजिक कार्यकर्ता श्री छिरिङ ताशी को औपचारिक रूप से वर्ष 2023 के लिए अकादेमी की प्रेमचंद महत्तर सदस्यता से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने श्री छिरिङ ताशी को पुस्तकें तथा अंगवस्त्रम भेंट कर उनका स्वागत किया। इस अवसर पर उन्होंने भूटान के राजदूत महामहिम मेजर जनरल वेत्सोप नामग्याल को भी सम्मानित किया। डॉ. के. श्रीनिवासराव ने श्री छिरिङ ताशी को ताम्रफलक उत्कीर्ण पट्टिका तथा अंगवस्त्रम भेंट कर प्रेमचंद महत्तर सदस्यता प्रदान की तथा साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री माधव कौशिक (जो अपनी अस्वस्थता के कारण नहीं आ सके) की अनुपस्थिति में श्री ताशी की शैक्षणिक उपलब्धियों पर आधारित प्रशस्ति-पत्र भी पढ़कर सुनाया। अकादेमी ने इस महत्तर सदस्यता की स्थापना वर्ष 2005 में प्रेमचंद (भारत के सबसे प्रसिद्ध लेखकों में से एक) के नाम पर उनकी 125वीं जयंती के दौरान 2005 में की थी। यह महत्तर सदस्यता संस्कृति तथा साहित्य के क्षेत्र में सार्क देशों के प्रतिष्ठित व्यक्ति को प्रदान की जाती है। महत्तर सदस्य के भारत प्रवास की अवधि 15 दिन है। डॉ. राव ने अपने स्वागत व्याख्यान में प्रेमचंद महत्तर सदस्यता योजना का विवरण देते हुए कहा कि श्री छिरिङ पहले भूटानी लेखक और प्रेमचंद महत्तर सदस्यता के 12वें प्राप्तकर्ता हैं जिन्हें इसकी स्थापना के बाद से इस सम्मान से सम्मानित किया गया है। अपने स्वीकृति वक्तव्य में, श्री ताशी ने कहा, 'मैं इस प्रतिष्ठित महत्तर सदस्यता को स्वीकार करते हुए सम्मानित महसूस कर रहा हूँ तथा मेरे कार्यों को पहचानने तथा मुझे दिए गए इस महान सम्मान के लिए मैं साहित्य अकादेमी का आभार व्यक्त करता हूँ।'

महत्तर सदस्यता अर्पण समारोह के बाद 'साहित्य मंच' कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें श्री ताशी ने 'कहानी सुनना : संस्कृति का भंडार' विषय पर अपने

विचार व्यक्त किए। उन्होंने भूटान राज्य के संक्षिप्त इतिहास के बारे में बताते हुए अपनी बात शुरू की, इसकी झीलों, इसकी बिजली परियोजनाओं, इसकी जीडीपी के बारे में बात की और फिर भूटान में कहानी कहने का बहुत ही दिलचस्प इतिहास सुनाया, इसके बाद उन्होंने दो छोटी कहानियाँ सुनाईं - जिनमें से एक 'ताशिगमंग' थी - 'ताशी' - जिसका अर्थ है शुभ और दूसरी थी - 'गो मंग' जिसका अर्थ है कई दरवाज़े।' यह हमारे राष्ट्रीय खज़ाने और विरासतों में से एक है। लैम मैनिप्स पेशेवर कहानीकार हैं। उन्होंने कहा, दशकों से मैं उनमें से कई लोगों से मिला हूँ, मैं आपको एक बात बहुत निश्चितता के साथ बता सकता हूँ कि 100 जीबी की बाहरी हार्ड ड्राइव भी उनकी कहानियों को संग्रहीत करने के लिए पर्याप्त नहीं होगी! जबकि यात्रा कहानीकारों की परंपरा हिमालयी संस्कृति में आम है, ताशीगोमंग परंपरा भूटान के लिए अद्वितीय है। प्रत्येक वर्ष, फसल के मौसम के बाद, यात्रा करने वाले भिक्षु ताशीगोमंग को अपनी पीठ पर ले जाते हैं और एक गाँव से दूसरे गाँव तक यात्रा करते हैं। एक बार जब वे गाँव पहुँचते हैं, तो उस गाँव का दूत शंख बजाकर यात्रा कर रहे साधु के आगमन की घोषणा करता है। उस शाम पूरा गाँव या तो दूत के घर या गाँव के मठ में एकत्रित होगा। भिक्षु धीरे-धीरे वेदी खोलेगा और फिर घंटों तक कहानियाँ सुनाएगा। कुछ यात्रा करने वाले भिक्षु महिला लोगों के बीच लोकप्रिय हैं क्योंकि वे गपशप भी सुनाते हैं। कहानी सत्र के अंत में, ग्रामीण ताजे कटे हुए अनाज की पेशकश करते हैं, जिसका उपयोग लैम मैनिप्स को बनाए रखने के लिए किया जाता है। 2015 में, केवल दो यात्रा करने वाले भिक्षु बचे थे जिनकी आयु 75 वर्ष से अधिक थी। समय पर शाही हस्तक्षेप और भारत में वर्तमान फ्रांसीसी राजदूत के समर्थन से, युवा भिक्षुओं को कहानी कहने की इस महत्त्वपूर्ण संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए प्रशिक्षित किया गया। उन्होंने एक घटना भी साझा की जब भारत के दिवंगत प्रधान मंत्री, अटल बिहारी वाजपेयी ने भूटान का दौरा किया और देश की प्राकृतिक सुंदरता से प्रेरित होकर तथा भूटानी आतिथ्य से अभिभूत होकर, उन्होंने एक बहुत ही सुंदर कविता लिखी थी, जिसे उन्होंने पहले इंडिया हाउस में रात्रिभोज के लिए एकत्र हुए अतिथियों के समक्ष सुनाया था। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि कहानियाँ मौखिक रूप से पीढ़ियों तक दोहराई जाती हैं और भूटान में कहानी कहने की परंपरा न केवल पुरानी और समृद्ध है बल्कि वह संस्कृति का भंडार है। कार्यक्रम के अंत में, साहित्य अकादेमी के उपसचिव श्री कृष्णा किम्बहुने ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

आनंद कुमारस्वामी महत्तर सदस्यता अर्पण समारोह

13 मार्च 2024, नई दिल्ली

शुन्टेंग हुन को आनंद कुमारस्वामी महत्तर सदस्यता प्रदत्त

साहित्य अकादेमी ने 13 मार्च 2024 को पूर्वाह्न 10:00 बजे मीराबाई सभागार, रवींद्र भवन परिसर, नई दिल्ली में आनंद कुमारस्वामी महत्तर सदस्यता कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें कंबोडिया से खमेर साहित्य के प्रख्यात विद्वान श्री शुन्टेंग हुन को औपचारिक रूप से वर्ष 2023 के लिए अकादेमी की आनंद कुमारस्वामी महत्तर सदस्यता प्रदान की गई। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने श्री शुन्टेंग हुन को ताम्र पट्टिका, पुस्तकों का पैकेट तथा अंगवस्त्रम भेंट करके आनंद कुमारस्वामी महत्तर सदस्यता प्रदान की। अकादेमी ने आनंद कुमारस्वामी महत्तर सदस्यता की स्थापना वर्ष 1996 में महान विद्वान एवं सौंदर्य प्रेमी डॉ. आनंद कुमारस्वामी के नाम पर की थी, जिन्होंने दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशियाई संस्कृति और सभ्यता को समझने में योगदान दिया था। इस महत्तर सदस्यता का मुख्य उद्देश्य एशियाई विद्वानों द्वारा कला, संस्कृति, साहित्य, इतिहास, सामाजिक विज्ञान आदि पर शोध को बढ़ावा देना है। महत्तर सदस्यता के अंतर्गत वे 15 दिन की अवधि के लिए भारत प्रवास पर थे।

प्रारंभ में, साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अकादेमी के अध्यक्ष का स्वागत किया तथा इस महत्तर सदस्यता को स्वीकार करने के लिए श्री शुन्टेंग हुन को धन्यवाद दिया तथा दर्शकों को संक्षेप में उनका परिचय भी दिया। अपने स्वीकृति वक्तव्य में, श्री शुन्टेंग हुन ने कहा, 'मैं इस प्रतिष्ठित महत्तर सदस्यता के प्राप्तकर्ता के रूप में मुझे चुने जाने के लिए साहित्य अकादेमी के प्रति अपनी गहरी कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। भारतीय संस्कृति और साहित्य में प्रतिष्ठित और आशाजनक शोध को बढ़ावा देने के लिए समर्पित यह महत्तर सदस्यता वास्तव में एक सम्मान है। इस अविश्वसनीय अवसर ने मुझे साहित्योत्सव तथा साहित्य अकादेमी की 70वीं वर्षगाँठ के दौरान भारत आने की अनुमति दी, उन्होंने कहा कि इस सम्मान के साथ मैं भारतीय संस्कृति के क्षेत्र में अपना शोध जारी रखने के लिए पहले से कहीं अधिक दृढ़ संकल्पित हूँ। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने अपने समापन वक्तव्य में कहा कि अकादेमी श्री शुन्टेंग हुन को सम्मानित करने में गौरवान्वित महसूस कर रही है।

सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम

भारत में बोस्निया और हर्ज़ेगोविना के माननीय राजदूत महामहिम श्री मुहम्मद चेंगीच के साथ साहित्य मंच कार्यक्रम

2 जून 2023, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव तथा भारत में बोस्निया और हर्ज़ेगोविना के माननीय राजदूत महामहिम श्री मुहम्मद चेंगीच

साहित्य अकादेमी ने 'साहित्य मंच' कार्यक्रम के अंतर्गत 2 जून 2023 को भारत में बोस्निया और हर्ज़ेगोविना के माननीय राजदूत महामहिम श्री मुहम्मद चेंगीच द्वारा रचना-पाठ का आयोजन किया। कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अंगवस्त्रम तथा अकादेमी की पुस्तकें भेंट कर उनका स्वागत किया।

अपने स्वागत व्यख्यान में उन्होंने कहा कि भारत की तरह बोस्निया और हर्ज़ेगोविना की संस्कृति भी विविधतापूर्ण है तथा वहाँ का लोक साहित्य भी हमारे जितना ही समृद्ध है। साहित्य अकादेमी अपनी सांस्कृतिक आदान-प्रदान योजना के अंतर्गत ऐसे आयोजनों के माध्यम से एक-दूसरे को बेहतर तरीके से जानने और समझने का मंच प्रदान करती है। महामहिम का परिचय देते हुए उन्होंने कहा कि भारतीय संगीत, साहित्य और संस्कृति में रुचि रखने वाले श्री मुहम्मद चेंगीच भारत को और करीब से समझने का निरंतर प्रयास करते रहे हैं। उनकी कविताओं में भारत की विभिन्न विशेषताएँ तथा छवियाँ भी दिखाई देती हैं।

इस अवसर पर माननीय विदेश एवं संस्कृति राज्य मंत्री सुश्री मीनाक्षी लेखी द्वारा भेजे गए बधाई संदेश को भी पढ़ा गया। महामहिम ने 'सांगली रिवर टेल', 'अफ्रीका' आदि विषयक अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। इस दौरान कुछ कविताओं का हिंदी अनुवाद यथा - 'खाक में सूरतें' भी प्रस्तुत किया गया।

अंत में श्रोताओं ने उनसे बोस्निया और हर्ज़ेगोविना की सामाजिक, सांस्कृतिक तथा साहित्यिक पत्रिकाओं एवं संस्थाओं के बारे में कई प्रश्न पूछे। भाषा के बारे में पूछे गए प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि उनकी भाषा और संस्कृत भाषा में कई समानताएँ हैं। कार्यक्रम में कई भारतीय भाषाओं के लेखक उपस्थित थे।

राष्ट्रीय महत्त्व के कार्यक्रम

अखिल भारतीय दिव्यांग लेखक सम्मिलन

18 जुलाई 2023, नई दिल्ली

श्री अर्जुन राम मेघवाल, श्री माधव कौशिक, प्रो. कुमुद शर्मा, डॉ. के. श्रीनिवासराव तथा लेखक एवं प्रतिभागीगण

अपनी स्थापना के बाद पहली बार, साहित्य अकादेमी ने भारत की विभिन्न भाषाओं और विभिन्न क्षेत्रों के दिव्यांग लेखकों के दृष्टिकोण को जानने के लिए 18 जुलाई 2023 को साहित्य अकादेमी सभागार, रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली में 'अखिल भारतीय दिव्यांग लेखक सम्मिलन' कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम का उद्घाटन भारत सरकार के माननीय संस्कृति राज्य मंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल ने किया। उन्होंने अपने उद्घाटन वक्तव्य में कहा कि सभी की क्षमताओं का उपयोग करने से ही भारत मज़बूत बनेगा। वर्तमान सरकार 'सबका साथ-सबका विकास' का लक्ष्य लेकर चल रही है। इसलिए राष्ट्र निर्माण में दिव्यांगजनों का भी उचित सम्मान एवं भागीदारी सुनिश्चित की जा रही है। ऐसे समागम उन सभी को एक मंच प्रदान करने के लिए सबसे अच्छा कदम साबित होंगे। उन्होंने कई दिव्यांग साहित्यकारों का ज़िक्र करते हुए कहा कि वे अपने जीवन में कुछ कमी होने की चिंता किए बिना रंगों का एक और इंद्रधनुष रचते हैं, जो हम सभी के जीवन में एक नई रोशनी भर देता है। उन्होंने सूरदास के प्रिय भजन 'प्रभु जी, मोरे अवगुण चित न धरो' का ज़िक्र करते हुए कहा कि सूरदास ने कृष्ण की जिन लीलाओं का वर्णन किया है, वह ऐसा लगता है मानो दिव्य दृष्टि से प्रस्तुत किया गया हो। उन्होंने आगे कहा कि संस्कृति मंत्रालय सभी राज्यों में ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने का प्रयास करेगी।

उद्घाटन सत्र की विशिष्ट अतिथि प्रख्यात अंग्रेज़ी लेखिका और विदुषी के. श्रीलता थीं, जिन्होंने दिव्यांग लोगों के समक्ष आने वाली कठिनाइयों को साझा किया और कहा कि हमें दिव्यांगों के प्रति अपना दृष्टिकोण

बदलना होगा ताकि वे हमारे साथ मुख्यधारा में शामिल हो सकें। उन्होंने डिस्लेक्सिया से जूझ रही अपनी बेटी के अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि दिव्यांग बच्चों के लिए स्कूली शिक्षा सबसे कठिन होती है। इसलिए, हमारे स्कूलों को विकलांगों के अनुकूल बनाना बहुत महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने दिव्यांग छात्रों के लिए विशेष पुस्तकालयों, पुस्तकों तथा गतिविधियों को शामिल करने के लिए भी कहा। उन्होंने यह भी कहा कि विकलांगता सिर्फ़ शारीरिक नहीं होती, इसका मानसिक रूप भी होता है। भले ही हम स्वस्थ और सक्रिय हैं, फिर भी हमारी मानसिकता विकलांग है जो सबसे अधिक चिंताजनक और हतोत्साहित करने वाली है।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि साहित्य अकादेमी साहित्यिक अभिव्यक्ति और संवेदनाओं को अलग-अलग हिस्सों में बांटे बिना एक मंच पर लाने का प्रयास कर रही है और आने वाले समय में यह संभव होगा कि इस प्रकार के कार्यक्रम विशेष सम्मेलनों के बजाय एक ही मंच पर प्रस्तुत किए जा सकें। उन्होंने विकलांग लोगों की असीमित क्षमताओं का ज़िक्र करते हुए स्टीफन हॉकिंग का उदाहरण दिया और कहा कि विकलांग लोगों को प्रकृति हमेशा एक अलग गुण देकर क्षतिपूर्ति करती है और उनके गुण हम सामान्य लोगों से भी बेहतर हो जाते हैं। सत्र का समापन करते हुए साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष कुमुद शर्मा ने धर्मवीर भारती की कहानी 'गुल की बन्नो' और निराला की कविता 'रानी और कानी' का ज़िक्र करते हुए कहा कि साहित्य में हमेशा शारीरिक रूप से विकलांग पात्र रहे हैं। लेकिन अब उनके प्रति हमारा नज़रिया काफी बदल गया है। ऐसी बैठकें उस चेतना के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएँगी, जिसकी अपेक्षा हमारे विकलांग लेखकों से की जाती है। इससे पूर्व सभी का स्वागत करते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने कहा कि प्राचीन काल से लेकर अब तक साहित्य में दिव्यांगों के प्रति बदलते नज़रिए को हम देख सकते हैं। साहित्य अकादेमी हमेशा से साहित्य के विभिन्न विद्वानों को एक विशेष मंच प्रदान करती रही है और भविष्य में भी इसी प्रकार की पहल करती रहेगी।

अगला सत्र कवि सम्मिलन था, इसकी अध्यक्षता विनोद असुदानी ने की तथा सुरवी चटर्जी (बाङ्ला), साहिसुली ब्रह्म (बोडो), कुसुमलता मलिक (हिंदी), नितिन वी. मेहता (गुजराती), एस. रघुनाथ (कन्नड), रिलिन जेम्मा लिंगदोह (खासी), सुखबीर मोहब्बत (पंजाबी) तथा मो. असलम बद्र (उर्दू) ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं। इसके बाद 'मेरी साहित्यिक यात्रा' विषयक सत्र आयोजित किया गया, इसकी अध्यक्षता अनिल कुमार अनेजा (अंग्रेज़ी) ने की तथा ध्रुबज्योति दास (असमिया), मारियाथ सी.एच. (मलयाळम्) तथा बृज रौतराय (ओड़िआ) ने रचनात्मक लेखन की अपनी कठिनाइयों और यात्रा को साझा किया। इन सभी ने कहा कि उन्होंने अपनी विकलांगता को दूर करने के लिए साहित्य का सहारा लिया, जिससे उनका जीवन रचनात्मक रूप से महत्त्वपूर्ण हो गया।

सत्र के अध्यक्ष अनिल कुमार अनेजा ने कहा कि इस सम्मिलन से दो बातें बहुत स्पष्ट रूप से समझ में आती हैं कि विकलांगता से लड़ने के लिए शरीर के अंगों की नहीं, बल्कि साहस की आवश्यकता होती है तथा उसे हम भावनाओं के पंखों से हासिल कर सकते हैं। दिव्यांग लेखकों की साहित्यिक यात्रा अन्य लेखकों से बिल्कुल अलग तथा अनूठी होती है। उन्होंने अतीत के कई दिव्यांग लेखकों का ज़िक्र करते हुए कहा कि हमें उन्हें भी सामने लाने की आवश्यकता है। कार्यक्रम का अंतिम सत्र कवि सम्मिलन था, इसकी अध्यक्षता चौ. नागराजू ने की तथा संजय विद्रोही (डोगरी), प्रेम सिंह (हिंदी), तौसीफ़ रज़ा (कश्मीरी), रमाकांत राय रामा (मैथिली), चैतन्य डुंबरे (मराठी), लालरामपना (मिज़ो), अर्जुन शर्मा (नेपाली), आर. अभिलाष (तमिऴ) तथा

बिल्ला महेंदर (तेलुगु) ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं। कार्यक्रम में कई प्रतिष्ठित लेखकों, विद्वानों तथा साहित्य प्रेमियों ने भाग लिया। सम्मलेन में यह निष्कर्ष निकल कर आया कि दिव्यांग लेखकों की दुनिया वास्तव में अथक संघर्ष, आशा, भरोसे, साहस, विश्वास, देखभाल और रचनात्मकता से भरी होती है।

गोदावरी और वितस्ता : एक सांस्कृतिक यात्रा

1 अप्रैल 2023, पुणे

साहित्य अकादेमी तथा संस्कृति मंत्रालय और दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र द्वारा सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय के सहयोग से आयोजित वितस्ता महोत्सव के भाग के रूप में 1 अप्रैल 2023 को 'वितस्ता का विस्तार : गोदावरी और वितस्ता : एक सांस्कृतिक यात्रा' विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय के सहयोग से आयोजित संगोष्ठी का आयोजन ज्ञानेश्वर सभागार में किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति के. विश्वनाथ काले ने की। वरिष्ठ कश्मीरी नाटककार, कहानीकार, निर्माता, साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता प्राण किशोर कौल और सिद्धार्थ काक प्रमुख रूप से उपस्थित थे। साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवास राव और दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र के निदेशक दीपक खिरवडकर मंचासीन थे।

सम्मानित अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलित

प्राण किशोर कौल ने जम्मू-कश्मीर के जीवन में वितस्ता नदी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि राष्ट्रीय एकता के लिए हर क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय अनुवाद संस्थान स्थापित करना आवश्यक है। वितस्ता नदी के किनारे अनेक ऐतिहासिक घटनाएँ घटी हैं, अनेक युद्ध हुए हैं। अनेक कवियों, आचार्यों और विद्वानों का साहित्य फला-फूला। उन्होंने गर्व से कहा कि वह माँ के दूध के साथ वितस्ता नदी का जल पीकर बड़े हुए हैं।

सिद्धार्थ काक ने कहा कि विद्वानों को जम्मू-कश्मीर की संस्कृति को दर्शाने वाले स्थानीय स्तर के साहित्य का भी अध्ययन करना चाहिए और इस लोक साहित्य की विशेषताओं, साहित्य के निर्माण के पीछे के इतिहास का अध्ययन करके इसे संरक्षित करना चाहिए। इस तरह की लोककथाएँ आने वाली पीढ़ी को महान विरासत और संस्कृति को जानने में मदद करेंगी। यह खज़ाना अनमोल है।

अध्यक्षीय संदेश देते हुए के. विश्वनाथ काले ने कहा, देश और खासकर महाराष्ट्र के लिए पुणे विश्वविद्यालय की एक महान शैक्षिक विरासत है। यह महोत्सव ज्ञान और संस्कृति के आदान-प्रदान में मदद करेगा। ज्ञान-विज्ञान-साहित्य और संस्कृति का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। यह संस्कृति अब लुप्त होती जा रही है। साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधियों से उनके स्मरण और संरक्षण में मदद मिलेगी। जिस प्रकार शरीर को मज़बूत रखने के लिए रक्त वाहिकाओं का कार्य महत्त्वपूर्ण है, उसी प्रकार पूरे देश को मजबूत रखने के लिए नदियों की आवश्यकता होती है तथा उनका संरक्षण किया जाना चाहिए।

स्वागत एवं आरंभिक वक्तव्य में डॉ. के. श्रीनिवासराव ने कहा, नदियाँ कई संस्कृतियों का स्रोत हैं। भारतीय

भारत सरकार के माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह, अन्य गणमान्य व्यक्तियों के साथ 'वितस्ता : यूनाइटिंग कल्चर्स' पुस्तक का विमोचन करते हुए

संस्कृति को बचाए रखने के लिए इनकी पवित्रता को बनाए रखना ज़रूरी है। बहुसांस्कृतिक भारत की विभिन्न संस्कृतियों के बीच ज्ञानात्मक संवाद को उद्देश्य बनाकर इस संगोष्ठी का आयोजन किया गया है।

कार्यक्रम की शुरुआत ज्ञान की देवी सरस्वती व सावित्रीबाई फुले की वंदना व दीप प्रज्वलित कर की गई।

आभार व्यक्त करते हुए दीपक खिरवडकर ने वितस्ता महोत्सव और उसके अंतर्गत आयोजित संगोष्ठी की भूमिका पर प्रकाश डाला।

उद्घाटन सत्र के बाद 'गोदावरी और वितस्ता : एक सांस्कृतिक यात्रा' विषय पर वसंत शिंदे, गोदावरी नदी के अष्टांग स्थल पर अरुण चंद्र पाठक, सांस्कृतिक विरासत पदचिह्नों के मूर्त और अमूर्त मिश्रण और गोदावरी नदी के आसपास इसका महत्त्व पर शुभाश्री उपासनी, गोदावरी और वितस्ता के सांस्कृतिक प्रवाह के बारे में सी.के. गरियाली, ललद्यद और नुन्द ऋषि के बारे में रूप कृष्ण भट्ट और ललित परिमू ने नवीन अवधारणा अभिनय योग का प्रतिपादन किया। कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी नई दिल्ली के संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी ने किया।

साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित पुस्तक "वितस्ता : यूनाइटिंग कल्चर्स" का विमोचन 23 जून 2023 को भारत सरकार के माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह द्वारा वितस्ता : कश्मीर महोत्सव के अंतर्गत एस.के.आई.सी.सी. हॉल श्रीनगर में आयोजित किया गया। इस अवसर पर भारत सरकार की संस्कृति राज्य मंत्री श्रीमती मीनाक्षी लेखी, जम्मू और कश्मीर के उपराज्यपाल श्री मनोज सिन्हा, केंद्रीय गृह सचिव श्री अजय कुमार भल्ला, जम्मू और कश्मीर के सचिव श्री मेहता, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के सचिव श्री गोविंद मोहन तथा संस्कृति मंत्रालय की संयुक्त सचिव श्रीमती उमा नंदूरी भी उपस्थित थीं। पुस्तक में जनवरी में चेन्नै में आयोजित संगोष्ठी "कश्मीर की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विरासत", अप्रैल में पुणे में आयोजित संगोष्ठी "गोदावरी एवं वितस्ता : एक सांस्कृतिक यात्रा" तथा इस कार्यक्रम श्रृंखला के अंतर्गत श्रीनगर में आयोजित संगोष्ठी "बौद्ध धर्म एवं कश्मीर" के 30 आलेख शामिल हैं।

संस्कृतसमुन्मेषः 'राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन'

12-14 जुलाई 2023, तिरुपति, आंध्र प्रदेश

संस्कृति मंत्रालय और साहित्य अकादेमी द्वारा राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय और संस्कृति फाउंडेशन, मैसूर के सहयोग से एनएसयू, तिरुपति के परिसर में त्रिदिवसीय 'राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन' का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में केरल के माननीय राज्यपाल श्री आरिफ़ मोहम्मद ख़ान को अन्य गणमान्य व्यक्तियों के साथ इस कार्यक्रम में आमंत्रित किया गया था। नवनिर्मित शैक्षणिक कक्षा परिसर का उद्घाटन करने तथा इसे विश्वविद्यालय के उज्ज्वल भविष्य के लिए समर्पित करने के पश्चात्, माननीय राज्यपाल ने संस्कृत विज्ञान प्रदर्शनी, पांडुलिपि गैलरी, वर्णमाला गैलरी और विभिन्न पुस्तक-स्टॉलों का दौरा किया। वैदिक मंत्रोच्चार और देवी सरस्वती के आह्वान के बाद एनएसयू के इंडोर स्टेडियम में उद्घाटन सत्र आरंभ हुआ। गणमान्य व्यक्तियों ने दीप प्रज्वलित किया तथा साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने सभा में उपस्थित सभी विशिष्ट अतिथियों का स्वागत किया। इस अवसर पर उन्होंने इस बात पर बल दिया कि किस प्रकार संस्कृत भाषा भारतीय संस्कृति और सभ्यता के केंद्र में है, जो स्वयं दुनिया की संस्कृति और सभ्यता का आधार है। प्राचीन संस्कृत परंपरा से कानून, ज्योतिष, खगोल विज्ञान, योग आदि जैसे विभिन्न ज्ञान क्षेत्रों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि प्राचीन दुनिया में किसी भी सभ्यता के पास ज्ञान की इतनी उन्नत विरासत नहीं थी। उन्होंने कहा कि प्राचीन और आधुनिक संस्कृत ग्रंथ समान रूप से सार्वभौमिक भाईचारे यानी वसुधैव कुटुंबकम को बढ़ावा देते हैं। उन्होंने कहा कि सम्मेलन का उद्देश्य संस्कृत को ज़मीनी स्तर तक ले जाना है तथा संस्कृत भाषा को बढ़ावा देने के अर्थ को उसे थोपने अथवा प्रवर्तन के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए। संस्कृत को बढ़ावा देना माननीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' पहल का हिस्सा है। इसके बाद, एनएसयू के कुलपति प्रोफ़ेसर जी.एस.आर. कृष्णमूर्ति ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि संस्कृत कोई ऐसी-वैसी भाषा नहीं है बल्कि यह विभिन्न विकसित विज्ञानों और कलाओं का स्रोत है जिन्होंने संस्कृत को बिसरा दिया है और वे संस्कृत से विलग हो गए हैं। यह सम्मेलन संस्कृत में छिपे ज्ञान को उजागर करने के साथ-साथ संस्कृत और आयुर्वेद, योग, संगीत और नृत्य जैसी कलाओं और विभिन्न विज्ञानों के बीच खोए हुए संबंध को फिर से जीवंत करने का एक प्रयास है। एनएसयू के कुलपति श्री एन. गोपालस्वामी ने इस सम्मेलन की मेज़बानी की शानदार पहल के लिए संस्कृति मंत्रालय, साहित्य अकादेमी और संस्कृति फाउंडेशन, मैसूर को बधाई दी। उन्होंने याद दिलाया कि किस प्रकार संस्कृत और उसकी परंपरा, जो कभी बहुत जीवंत थी, औपनिवेशिक विचारधारा द्वारा नष्ट कर दी गई है। इसलिए, उन्होंने आम जनता के बीच संस्कृत

उद्घाटन व्यख्यान देते हुए केरल के माननीय राज्यपाल श्री आरिफ़ मोहम्मद ख़ान

का प्रचार-प्रसार करने की आवश्यकता पर बल दिया। हाल के दिनों में योग का पुनरुद्धार आशा की किरण के रूप में हुआ है, किंतु संस्कृत के पूरी तरह से लुप्त हो जाने के खतरे से बचने के लिए, उन्होंने विद्यालय स्तर पर त्रिभाषा फॉर्मूला को सावधानीपूर्वक लागू करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने देश के सभी संस्कृत विश्वविद्यालयों को एक साथ आने तथा सभी राज्यों में विद्यालयी स्तर पर संस्कृत शिक्षा के लिए अभियान चलाने का आह्वान किया। संस्कृति मंत्रालय की वित्तीय सलाहकार रंजना चोपड़ा ने अपने संबोधन में कहा कि इस सम्मेलन को शुरू करने के लिए तिरुपति सबसे उपयुक्त स्थान है क्योंकि तिरुपति के हर कोने में भगवान वेंकटेश्वर का गरिमामयी निवास है तथा संस्कृत भाषा में गरिमा के साथ संवाद आरंभ हो चुका है। उन्होंने वर्तमान समाज के उत्थान के लिए वर्तमान पीढ़ी से संस्कृत सीखने और सही अर्थों में संस्कृत ग्रंथों की व्याख्या करने की आवश्यकता पर बल दिया, जिससे आने वाली पीढ़ियों के लिए संस्कृत परंपरा को कायम रखा जा सके। संस्कृति मंत्रालय की संयुक्त सचिव श्रीमती उमा नंदूरी ने अपने संबोधन में संस्कृति और परंपरा के राजदूत के रूप में संस्कृत की पढ़ाई कर रहे एनएसयू के छात्रों की सराहना की। उन्होंने संस्कृत के विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे कम से कम किसी एक व्यक्ति को संस्कृत पढ़ाना अपनी प्राथमिकता बनाएँ। यदि ऐसा होता है, तो सम्मेलन का उद्देश्य पूरा हो जाएगा क्योंकि इससे संस्कृत ज्ञान को जमीनी स्तर तक पहुँचाने में मदद मिलेगी। इस अवसर पर टीटीडी के ईओ श्री धर्म रेड्डी ने संस्कृत के संरक्षण और प्रसार में टीटीडी के प्रयासों के बारे में विस्तार से चर्चा की। उन्होंने बताया कि टीटीडी ने किस प्रकार कोविड-19 से जूझ रही दुनिया को समाधान और सांत्वना देने के लिए विभिन्न संस्कृत विद्वानों की एक बैठक बुलाई थी। विद्वानों ने मंथन किया और योगवाशिष्ठ के विशुचुक महामंत्र को एक ऐसे मंत्र के रूप में चुना जो महामारी के दौरान लोगों को शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से मदद करेगा। लोगों के लाभ के लिए मंत्र और उसके पाठ को टीडीडी के एसवीबीसी चैनल के माध्यम से प्रसारित किया गया।

अपने संबोधन में, केरल के माननीय राज्यपाल श्री आरिफ़ मोहम्मद खान ने कहा कि संस्कृत प्राचीन सभ्यता और इसकी मूल्य प्रणाली की संरक्षक है। उन्होंने इस तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित किया कि इस प्रकार के सम्मेलनों से आम लोगों और विद्वानों में संस्कृत के बारे में जागरूकता आएगी। उन्होंने बताया कि टैगोर ने एक बार कहा था कि वह भारत से प्यार करते हैं इसलिए नहीं कि यह उनकी मातृभूमि है, बल्कि इसलिए क्योंकि इसने उथल-पुथल भरे युगों में संतों के ज्ञान के शब्दों को पीढ़ी-दर-पीढ़ी सहेज कर रखा है। उन्होंने कहा कि जिस प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया है वह संस्कृत के माध्यम से हमारी सभ्यता की निरंतरता का जीवंत प्रमाण है। उन्होंने घोषणा की कि संस्कृत के बिना भारत भारत नहीं है। भारत की प्रतिष्ठा उसकी संस्कृति पर निर्भर करती है और उसकी संस्कृति स्वाभाविक रूप से संस्कृत पर निर्भर करती है, यह कहावत संस्कृत में ठीक ही कही गई है; संस्कृताश्रित। भारतीय सभ्यता इसकी सर्वव्यापी समावेशिता से परिभाषित होती है। उन्होंने याद दिलाया कि किस प्रकार केवल 17% साक्षरता वाले भारत ने स्वतंत्र होते ही नस्ल, धर्म, लिंग और जाति के भेदभाव के बिना सार्वभौमिक मताधिकार की घोषणा की थी। उन्होंने इस बात पर बल देते हुए कहा कि भारत की विविधता इसकी एकता में परिलक्षित होती है। उन्होंने इस तथ्य को रेखांकित किया कि वेदांत प्रचलित सभी विभाजनों के बावजूद एकता को रेखांकित करता है। उन्होंने सम्मेलन में सार्थक विचार-विमर्श की शुभकामनाओं के साथ समापन वक्तव्य प्रस्तुत किया।

प्रोफ़ेसर कुमुद शर्मा ने अपने संबोधन में इस तथ्य को दोहराया कि संस्कृत भारत में संस्कृति की आत्मा है और हमारे पूर्वजों के महान विचारों और उपदेशों का एक जीवंत प्रमाण है जो पीढ़ियों से चली आ रही है। संस्कृत भारतीय उपमहाद्वीप की सभी मातृभाषाओं की जननी है। उन्होंने अफ़सोस जताया कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि वर्तमान पीढ़ी के युवा इसे शून्य रोज़गार योग्यता वाली एक मृतभाषा मानते हैं। प्रोफ़ेसर शर्मा ने विभिन्न लेखकों को उद्धृत किया जिन्होंने संस्कृत की महानता और इसमें निहित खज़ाने के बारे में स्पष्ट रूप से बात की है।

सम्मेलन के समन्वयक प्रोफ़ेसर के. गणपति भट्ट ने सभी गणमान्य व्यक्तियों को उनकी प्रेरक वार्ता के लिए आभार व्यक्त किया तथा धन्यवाद प्रस्तावित किया। सत्र का समापन राष्ट्रगान की प्रस्तुति के साथ हुआ। अष्टावधानम को समर्पित प्रथम सत्र में, असम के माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चंद कटारिया मुख्य अतिथि थे तथा उन्होंने संस्कृत साहित्य में निहित मूल्यों पर बल दिया। राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति श्री एन. गोपालस्वामी ने सत्र की अध्यक्षता की तथा स्कूल स्तर से संस्कृत को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर चर्चा की और अवधनम के महत्त्व पर भी प्रकाश डाला। विशिष्टवधानी माडुगुल नागफणि शर्मा ने अष्टवधानम् की प्रस्तुति की तथा आठ प्रतिष्ठित संस्कृत विद्वानों ने कार्यक्रम में सत्र में भाग लिया। डॉ. अभिराज राजेंद्र मिश्र की अध्यक्षता में संस्कृत काव्य-पाठ को समर्पित द्वितीय सत्र में नौ प्रख्यात संस्कृत कवियों ने अपनी कविताओं का पाठ प्रस्तुत किया। प्रोफ़ेसर हरेकृष्ण शतपथी कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। तृतीय सत्र में, श्री शंकर भट्ट उज्चलि ने महाभारत से "दुर्वासातिथ्यम्" पर हरिकथा की प्रस्तुति प्रस्तुत की। तत्पश्चात, भारत के एकमात्र संस्कृत बैंड, ध्रुव संस्कृत बैंड ने लोकप्रिय संस्कृत कृतियों, श्लोकों आदि पर आधारित संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

अखिल भारतीय आदिवासी लेखक सम्मिलन

9-10 अगस्त 2023, भुवनेश्वर

साहित्य अकादेमी ने पी. पी. आर. ए. सी. एच. आई. एन., शिक्षा ओ अनुसंधान के सहयोग से विश्व के स्वदेशी लोगों के अंतरराष्ट्रीय दिवस और आज़ादी का अमृत महोत्सव के अवसर पर 9-10 अगस्त 2023 को कन्वेंशन हॉल, कैंपस-II, शिक्षा ओ अनुसंधान, भुवनेश्वर में 'अखिल भारतीय आदिवासी लेखक सम्मिलन' का आयोजन किया।

उद्घाटन सत्र में स्वागत वक्तव्य साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने दिया। उन्होंने कहा कि, दुनिया अपनी भाषाओं को खोने के खतरे का सामना कर रही है, जिनमें से कई पहले से ही लुप्तप्राय के रूप में सूचीबद्ध हैं तथा भाषाओं हानि संस्कृति की हानि के सामान है। उन्होंने कहा, अगर हम अब भी नहीं चेते तो हम उस संस्कृति और उससे जुड़ी प्राचीन ज्ञान प्रणाली को खो देंगे जो इन समुदायों के पास है। आरंभिक वक्तव्य डॉ. गायत्रीबाला पांडा, प्रमुख, पी.पी.आर.ए.सी. एच.आई.एन., एस.ओ.ए., भुवनेश्वर ने प्रस्तुत किया। डॉ. पांडा ने कहा कि पी.पी.आर.ए.सी.एच.आई.एन. मूल सरला दास महाभारत के आलोचनात्मक संस्करण के प्रकाशन सहित कुछ प्रमुख कार्यक्रमों में शामिल था, जिसमें डिजिटलीकरण, अनुवाद, गद्य-प्रतिपादन, शब्दकोश का निर्माण तथा सारला दास का साहित्यिक विश्वकोश शामिल है। उन्होंने यह भी कहा कि सामान्य रूप से आदिवासी संस्कृति के मूल्यवान घटकों और विशेष रूप से आदिवासी लोककथाओं को विलुप्त होने से पहले व्यवस्थित तरीके से संरक्षित करना आवश्यक है। कार्यक्रम का उद्घाटन प्रख्यात कवि पद्मश्री हलधर नाग ने किया। श्री नाग, जिन्होंने अपनी मूल कोशाली - संबलपुरी भाषा में उद्घाटन सत्र को संबोधित किया,

ने कहा कि उन्होंने कक्षा तीन तक पढ़ाई की है, चूँकि साहित्य समाज को रास्ता दिखाने का एक ज़रिया है इसलिए साहित्य के प्रति उनका सदैव रुझान रहा है। उन्होंने कहा, "इस तथ्य के बावजूद कि मैंने बहुत अधिक अध्ययन नहीं किया है, मेरी रचनाओं का विश्व की अन्य भाषाओं में अनुवाद किया गया है तथा उनका विस्तार अंतरराष्ट्रीय सीमाओं के पार है।" उन्होंने कहा कि उनकी कई रचनाओं को कई विश्वविद्यालयों में पाठ्यक्रम के रूप में शामिल किया जा चुका है। उन्होंने कहा, "मेरा लेखन उस मिट्टी से जुड़ा है जहाँ मैं रहता हूँ तथा समाज को रास्ता दिखाने वाली साहित्यिक रचनाएँ कालजयी हैं।" प्रख्यात विद्वान प्रोफ़ेसर जगन्नाथ दाश ने बीज-वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि आदिवासी लोग, आधुनिकता से प्रभावित लोगों के विपरीत, अपनी संस्कृति से दूर नहीं जाते हैं। उन्होंने कहा कि, "आदिवासी लोग पहाड़ों, नदियों तथा झरनों जैसी प्रकृति से अटूट रूप से जुड़े हुए हैं तथा दिल से अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हैं। हमें उनकी कविता सुनने और उसकी सराहना करने की आवश्यकता है।" कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि साहित्य अकादेमी के ओड़िआ परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. गौरहरि दास तथा साहित्य अकादेमी के संताली परामर्श मंडल के संयोजक श्री चैतन्य प्रसाद माझी थे। डॉ. गौरहरि दास ने आदिवासी साहित्य के दस्तावेज़ीकरण की आवश्यकता पर बल देते हुए साहित्य अकादेमी और पी.पी.आर.ए.सी.एच.आई.एन. द्वारा आदिवासी लेखक सम्मिलन आयोजित करने के निर्णय की सराहना की। उन्होंने ऐसे उपायों के माध्यम से आदिवासी साहित्य के विकास में योगदान देने के लिए एस.ओ.ए. के संस्थापक अध्यक्ष प्रोफ़ेसर (डॉ.) मनोजरंजन नायक को भी धन्यवाद दिया, जो वहाँ उपस्थित थे। श्री माझी ने इस प्रवृत्ति को रोकने के लिए तत्काल कदम उठाने का आह्वान करते हुए कहा कि दुनिया की 7,000 भाषाओं में से लगभग 40 प्रतिशत पहले ही विलुप्त हो चुकी हैं। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता श्री प्रदीप्त कुमार नंदा, कुलपति, एस.ओ.ए., भुवनेश्वर ने की तथा उद्घाटन सत्र का धन्यवाद प्रस्ताव श्री ज्योतिरंजन दास, डीन, छात्र कल्याण, एस.ओ.ए., भुवनेश्वर द्वारा प्रस्तावित किया गया।

प्रथम सत्र बहुभाषी कविता-पाठ को समर्पित था। इसकी अध्यक्षता सुश्री क्रैरी मोग चौधरी ने की। इस सत्र में राजकिशोर नायक (बाथुडी), भाइचुङ छिरिङ भूटिया (भूटिया), भानुमति सिंह (भूमिज), कुसुम चकमा (चकमा), मानसिंह चौधरी (चौधरी), धनु मुदुलि (गाबाबा), जोमिर जिनि (गालो) ने तथा मिर्थनार्क के. मराक (गारो) ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

द्वितीय सत्र बहुभाषी कहानी-पाठ को समर्पित था। इसकी अध्यक्षता इंदुमति लामाणी (बंजारा) ने की। इस सत्र में सुनील गायकवाड (भीली), पिलिसाई गोंड (गोंडी), दसरू नायक (हो) तथा वाङगो सोसिआ (नोक्टे) ने अपनी कहानियों का पाठ किया।

तृतीय सत्र बहुभाषी कविता-पाठ को समर्पित था। इसकी अध्यक्षता डॉ. दमयंती बेसरा (संताली) ने की। सत्र में योगेश्वरी एस. (हक्कीपिक्की), सुनील पेडकपु (कंध परजा), ऑन तेरॉन (कार्बी), एथिलबर्थ खोंग्रिमाई (खासी), धनुराज नौटिया (कॅकबरॅक) तथा प्रदीप कँहर (कुई) ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

चतुर्थ सत्र में प्रताप कुमार पंडा ने आदिवासी गीतों का मूल्यांकन प्रस्तुत किया। लक्ष्मण शबर ने सौरा चित्रकला पर प्रस्तुति की तथा नागेंद्र शबर ने सौरा लिपि और गीतों पर अपने विचार व्यक्त किए।

दूसरे दिन, पंचम सत्र "आदिवासी भाषाओं में युवा लेखकों के समक्ष चुनौतियाँ" विषय पर आयोजित किया गया। इस सत्र में, छेवाङ ज्ञाल्टसन (लद्दाखी), प्रताप तामाङ, ललरिनहलुई (हमार) तथा राजेश राठवा (राठी) ने आदिवासी भाषाओं में युवा लेखकों के समक्ष आने

आदिवासी लेखक सम्मिलन में भाग लेने वाले प्रतिभागी

वाली चुनौतियों की प्रकृति पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र की अध्यक्षता रत्नम्मा एस. (सोलिगारु) ने की।

षष्ठ सत्र बहुभाषी कविता-पाठ को समर्पित था। सत्र की अध्यक्षता गुलज़ार हुसैन ज़ुबदावी (बल्टी) ने की। इस सत्र में सुदर्शन जुआंग (जुआंग), यानबेनी यानथन (लोथा), काच्यो लेप्चा (लेप्चा), खोशोवा माओ (माओ), बच्चालाल महाली (महाली), लालवेनसाङी चौङथु (मिज़ो) तथा स्वर्णलता आईन्द (मुंडारी) ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

"भारतीय स्वदेशी भाषाओं के संरक्षण और विकास" पर आधारित सप्तम सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात विद्वान डॉ. जगबंधु सामल ने की। इस सत्र में डॉ. गौरांग चरण दाश, डॉ. संतोष कुमार रथ तथा जितेंद्र वसावा ने सत्र के विषय पर आधारित अपने आलेख प्रस्तुत किए।

अंतिम सत्र बहुभाषी कविता-पाठ को समर्पित था। सत्र की अध्यक्षता एस.के. बोरो (बोरो) ने की। सत्र में भास्कर ज्ञानदेव भोसले (पारधी), आर. न्गुपानी ताओ (पौमाई), मुबिन राभा (राभा), लिसु शबर (सौरा), दिव्या टोटो (टोटो) तथा संपत देवजी ठणकर (वारळी) ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

"स्वतंत्रता का दर्शन" विषय पर परिसंवाद

15 अगस्त 2023, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा 15 अगस्त 2023 को स्वाधीनता दिवस एवं आजादी का अमृत महोत्सव के अवसर पर "स्वतंत्रता का दर्शन" विषयक परिसंवाद का आयोजन किया गया। परिसंवाद में अल्पना मिश्र, अनंत विजय, पूरन चंद टंडन, चंदन कुमार चौबे, प्रताप सोमवंशी और राजेश प्रताप सिंह ने अपने विचार व्यक्त किए। परिसंवाद की अध्यक्षता चंद्रभान खयाल ने की। इस अवसर पर राजेश प्रताप सिंह ने कहा कि स्वतंत्रता का अर्थ स्वच्छंदता नहीं है, यानी स्वतंत्रता अपने साथ कुछ कर्तव्य बोध भी लेकर आती है जिसका हमें परिपालन करना चाहिए है। वरिष्ठ पत्रकार अनंत विजय ने कहा कि स्वतंत्रता का जो पश्चिमी दर्शन है वह हमसे अलग है लेकिन काफ़ी समय तक उसी के आधार पर उसको परिभाषित करने के कारण असमंजस की स्थिति बनी है। उन्होंने कहा हमारे दर्शन में तो देवता चुनने की भी स्वतंत्रता है। हमारे दर्शन में स्वतंत्रता जन्म से ही शुरू हो जाती है। हमारे लोक जीवन में ही नहीं स्वतंत्रता का दर्शन हमारे प्रकृति के लिए भी संकल्पित है।

स्वागत वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव

लेखिका अल्पना मिश्र ने कहा कि स्वस्थ समाज के लिए सकारात्मक स्वतंत्रता आवश्यक है। उन्होंने विवेक और स्वनियंत्रण की बात भी की। उन्होंने भेदभाव की विसंगतियों से मुक्त स्वाधीनता को सच्ची स्वतंत्रता बताया। उन्होंने साहित्य की भूमिका को भी रेखांकित किया। पत्रकार और संपादक प्रताप सोमवंशी ने कहा कि स्वतंत्रता का अर्थ सबके लिए अलग-अलग होता है। हमारे स्व की पहचान क्या है यह सबसे महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने अदम गोंडवी के एक शेर का ज़िक्र करते हुए अपनी बात को और विस्तार दिया। प्रोफ़ेसर चंदन कुमार चौबे ने कहा कि धर्म बोध एक ऐसा कारण है जिसके कारण हमारे देश की स्वतंत्रता हमेशा बची रही है। उन्होंने शिक्षा, साहित्य, संस्कृति और कला की स्वतंत्रता को चिन्हित करते हुए कहा कि स्वविवेक और स्वधर्म के बोध से ही हम संतुलन बनाए रख सकते हैं। प्रोफ़ेसर पूरनचंद टंडन ने कहा कि स्वतंत्रता का रचनात्मक पक्ष सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष है और स्वतंत्रता समय सापेक्ष होती है और यह समय के संदर्भ में अपनी परिभाषाएँ बदलती रहती है। आगे उन्होंने कहा कि हमारे यहाँ तो स्वतंत्रता को समीर कहा गया है जो कि हमें सुखद अनुभव देती है। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता विलक्षण और मूल्यवान धरोहर है जिसका हमें संरक्षण करना चाहिए।

सत्र की अध्यक्षता कर रहे प्रख्यात शायर चंद्रभान खयाल ने कहा कि आज़ादी का तस्सवुर हमारे धर्म और संस्कृति में बहुत पहले से रहा है और समय-समय पर उसका रंग रूप बदलता रहा है। उन्होंने अट्ठारह सौ सत्तावन की लड़ाई को महत्त्वपूर्ण मानते हुए कहा कि हमारा स्वतंत्रता आंदोलन एक केंद्रीय लड़ाई थी जिसमें पूरे देश ने भाग लिया। कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव ने सभी का स्वागत अंगवस्त्रम देकर किया और अपने स्वागत वक्तव्य में कहा कि दर्शन का मूल कार्य उस प्रणाली को ढूँढ़ना है जिससे हम उसको सरल रूप में परिभाषित कर सकें। स्वतंत्रता हमारे लिए प्रासंगिक रहे और उसके नए संदर्भ हमारे सामने आएँ इसलिए इस विषय का चुनाव किया गया। कार्यक्रम में भारी संख्या में लेखक, विद्वान, शोधार्थी और विभिन्न विश्वविद्यालयों के छात्र-छात्राएँ उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी के संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी ने किया।

'भारतीय साहित्य की भारतीयता' विषय पर परिसंवाद

31 अक्तूबर 2023, नई दिल्ली

राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर साहित्य अकादेमी ने सभाकक्ष, तृतीय तल, रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली में 31 अक्तूबर 2023 को पूर्वाह्न 10:30 बजे 'भारतीय साहित्य की भारतीयता' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने विशिष्ट अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने भारत के दूसरे राष्ट्रपति तथा प्रथम उपराष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन को याद करते हुए बताया कि वह सर्वपल्ली राधाकृष्णन ही थे जिन्होंने भारतीय साहित्य को इस प्रकार परिभाषित किया था कि 'विभिन्न भाषाओं में लिखे जाने के बावजूद भारतीय साहित्य एक है'। भाषा विज्ञान और साहित्य के प्रतिष्ठित विद्वान तथा भारतीय बौद्धिक परंपराओं के विशेषज्ञ डॉ. कपिल कपूर ने भारतीय उपमहाद्वीप पर उपनिवेश स्थापित करते समय लॉर्ड मैकाले द्वारा अपनाई गई रणनीति के बारे में चर्चा करते हुए बताया कि किस प्रकार उपनिवेशीकरण ने भारत के विचारशील मस्तिष्क वाले लोगों को अनुवाद करने वाले लोगों के रूप में परिवर्तित कर दिया। अपने सिद्धांत का समर्थन करते हुए उन्होंने विष्णु पुराण और अथर्ववेद के संदर्भों का हवाला दिया। उन्होंने वैदिक युग के मूल्यों और संस्कृतियों को आने वाली पीढ़ियों तक प्रसारित करने में भक्ति आंदोलन की भूमिका पर भी चर्चा की।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता मैथिली और बाङ्ला के प्रख्यात कवि एवं नाटककार श्री उदय नारायण सिंह ने की। उन्होंने अपनी नवीनतम कृति *द अदर इंडिया : व्यू फ्रॉम बिलो* के बारे में बात की और कहा कि भारत में यात्रा की परंपरा ने मिथकों और किंवदंतियों को जन्म दिया। उन्होंने कहा कि भारतीय परंपरा में विविधता में एकता के सिद्धांत के समानांतर विरोधाभास के सामंजस्य का सिद्धांत भी मौजूद है, एक सिद्धांत जो भारत को अपनी विशिष्टता प्रदान करता है। प्रतिष्ठित लेखिका, आलोचक और साहित्यिक इतिहासकार सुश्री रक्षंदा जलील ने प्रसिद्ध उर्दू कवि जान निसार अख़्तर कृत पुस्तक *हिंदुस्तान हमारा* पर चर्चा की; उन्होंने पुस्तक में लिखित बाराहामासा की संपूर्ण परंपरा पर भी बात की, जो एक ही समय में रहस्यमय और धर्मनिरपेक्ष थी; उर्दू कवियों और लेखकों द्वारा लिखित *रामायण* के 300 से अधिक रूपांतरणों, जिन्हें बाद में उनकी अनूठी शैली के लिए उनके लेखकों के नाम से मान्यता मिली; तथा *भगवत गीता* और *दिल की गीता* का स्वतंत्रता के बाद के पाकिस्तानी उर्दू कवि ख़्वाजा दिल मुहम्मद द्वारा किए गए रूपांतरणों की भी चर्चा की। पंजाबी से अंग्रेज़ी में कविता और कहानी के प्रख्यात अनुवादक प्रोफ़ेसर राणा नायर ने भारतीयता के विषय पर बात करते हुए द्वंद्व, परंपरा और आधुनिकता पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने आगे कहा कि भारतीयता को संहिताबद्ध या परिभाषित नहीं किया जा सकता; इसे केवल बाहर से ही देखा अथवा अध्ययन किया जा सकता है। प्रख्यात गाँधीवादी विचारक, कला समीक्षक एवं साहित्यकार डॉ. वर्षा दास जो गुजराती, हिंदी तथा अंग्रेज़ी में लेखन करती हैं ने कहा कि भारत में विविध पहचान वाले कई लेखक हैं और वे जो लिखते हैं वह भारतीय साहित्य है। यह ऐसा ही है कि जिस प्रकार किसी क्षेत्र का प्रत्येक लेखक जिग्सॉ पहेली का एक टुकड़ा लेकर आता है, और जब वे इकट्ठे होते हैं, तो चित्र पूरा हो जाता है, जो भारत का निर्माण करता है; प्रत्येक टुकड़ा अपने आप में अपनी संस्कृति, भाषा, त्योहारों, भोजन, पहनावे, विभिन्न दृश्य और प्रदर्शन कलाओं, लोक साहित्य आदि से परिपूर्ण है।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता विख्यात कवि एवं विद्वान श्री भाग्येश झा ने की। उन्होंने कहा कि सदी की शुरुआत

सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. उदय नारायण सिंह

में नौ-ग्यारह की जो घटना हुई थी, उससे पहचान का संकट उत्पन्न हो गया। विश्वव्यापी स्तर पर पहचान की खोज शुरू हुई, इसके बाद और ऐसे समय में एकजुट होने के लिए भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए। प्रख्यात हिंदी कवि, श्री बद्री नारायण ने कहा कि भारत में कथा केवल कहानी कहने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह दर्शकों के लिए मूल्यवर्धक संदेश भी प्रसारित करती है, इस सिद्धांत के समर्थन में उन्होंने बिहार की एक लोक-कथा का उदाहरण प्रस्तुत किया; उन्होंने कहा कि इस अनूठी कथा के बिना भारत की कल्पना नहीं की जा सकती। विख्यात लेखक, कवि एवं आलोचक प्रो. धनंजय सिंह ने इस प्रश्न पर विचार-विमर्श करते हुए बताया कि किस प्रकार भारत अपनी असंख्य जातियों, समुदायों, रीति-रिवाज़ों और विश्वास-प्रणालियों के साथ दर्शन, रस और विधि के सिद्धांतों पर अस्तित्व में बना हुआ है। कार्यक्रम के अंत में, साहित्य अकादेमी के उपसचिव श्री कृष्णा किम्बहुने ने सभी को उनकी भागीदारी तथा विषय पर अंतर्दृष्टि साझा करने के लिए धन्यवाद दिया।

पुस्तकायन : साहित्य अकादेमी पुस्तक मेला

1-9 दिसंबर 2023, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी के 'पुस्तकयान' के दूसरे संस्करण की शुरुआत अकादेमी परिसर में 40 से अधिक प्रमुख प्रकाशकों की भागीदारी के साथ हुई। 1 से 9 दिसंबर 2023 तक चलने वाले 9 दिवसीय पुस्तक मेले में प्रतिदिन प्रात: 10:00 बजे से सायं 8:00 बजे तक कई साहित्यिक कार्यक्रम और सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ आयोजित हुईं, जिसमें विभिन्न भाषाओं और देश के विभिन्न हिस्सों से 50 से अधिक लेखकों/कलाकारों ने भाग लिया। प्रारंभ में, भारत सरकार के माननीय संस्कृति राज्य मंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल ने साहित्य अकादेमी पुस्तकालय में नव स्थापित चिल्ड्रन कॉर्नर तथा पुस्तक मेले का उद्घाटन किया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने गणमान्य व्यक्तियों और सम्मानित सभा का स्वागत करते हुए कहा कि इस पुस्तक मेले के आयोजन का मुख्य उद्देश्य पढ़ने की संस्कृति को बढ़ावा देना है और इसी अंतर्निहित विचार के साथ पिछले वर्ष भी इसका आयोजन किया गया था। पुस्तकें सबसे अच्छी मित्र हैं; जब भी किसी को आवश्यकता हो वे उपलब्ध हैं; वे लक्ष्य हासिल करने में मदद करती हैं, समाधान देती हैं तथा अनावश्यक तनाव दूर करती हैं। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि हर बच्चे को पढ़ने की आदत डालनी चाहिए। नौ दिवसीय कार्यक्रम और नव स्थापित चिल्ड्रन कॉर्नर पर प्रकाश डालते हुए, उन्होंने गत वर्ष लगभग 675 आयोजित कार्यक्रमों तथा 375 प्रकाशित पुस्तकों के साथ अकादेमी की अभूतपूर्व गतिविधियों की भी जानकारी दी।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय संस्कृति राज्य मंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल ने पुस्तक मेले के आयोजन

स्वागत व्याख्यान देते हुए डॉ. के. श्रीनिवासराव

और चिल्ड्रन कॉर्नर बनाने में अकादेमी के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि किसी के जीवन में पुस्तकों के महत्त्व पर कोई संदेह नहीं है। 'अमृत काई' में प्रत्येक बुद्धिजीवी ने माना कि सभी संविधान निर्माता पुस्तक प्रेमी थे। डॉ. बी.आर. अंबेडकर को पुस्तकों का इतना शौक था कि वह हर दिन 10-15 पुस्तकें खरीदते थे, सुबह तक पढ़ते थे और जब संविधान लिखा जा रहा था तब नोट्स बनाकर रखते थे। पुस्तकों ने ही उन्हें संविधान लिखने में सहायता की। उन्होंने आगे बताया कि तकनीकी विकास के युग में भी पुस्तकों का अपना मूल्य है। उनका संस्कृति और चरित्र निर्माण में अत्यधिक योगदान होता है; तथा वे सही दिशा में निर्णय लेने में सहायता भी करती हैं। 'विकसित भारत संकल्प यात्रा' पर चर्चा करते हुए उन्होंने भारत के माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी के वर्ष 2047 तक विकसित भारत के दृष्टिकोण की ओर ध्यान आकृष्ट किया। उन्होंने अकादेमी के पुस्तक मेले को उस दृष्टिकोण का हिस्सा माना।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने इस बात पर हर्ष व्यक्त किया कि अकादेमी पुस्तकों की सबसे बड़ी प्रकाशक है तथा 24 भारतीय भाषाओं में काम करने वाली एकमात्र संस्था है। उन्होंने पुस्तकों की प्रधानता को रेखांकित करते हुए कहा कि ज्ञान आधारित समाज ही विकसित समाज हो सकता है और यह ज्ञान पुस्तकें ही देती हैं। साहित्य विज्ञान को भी उन्मुख करता है। उन्होंने यह भी कहा कि पुस्तक मेला न केवल भविष्य के विकास में एक उत्कृष्ट मंच के रूप में कार्य करता है बल्कि पाठकों, प्रकाशकों और लेखकों से बने त्रिकोण को एक साथ लाता है। यह कार्यक्रम लेखकों से भेंट करने तथा उनकी रचनात्मक यात्रा को सुनने का अवसर प्रदान करता है। कार्यक्रम में श्रीमती उमा नंदूरी, संयुक्त सचिव, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार तथा प्रोफ़ेसर कुमुद शर्मा, उपाध्यक्ष, साहित्य अकादेमी के अलावा प्रख्यात लेखक, विद्वान, प्रकाशक और स्कूली बच्चों ने भाग लिया। उद्घाटन समारोह के बाद सी.सी.आर.टी. के कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी गईं, जिसमें मृदुला नाइक द्वारा ओडिसी एकल नृत्य और राजस्थानी समूह नृत्य शामिल था।

संगोष्ठी, परिसंवाद, लेखक सम्मिलन आदि

बाङ्ला

गौर किशोर घोष पर जन्मशताब्दी संगोष्ठी

16 मई 2023, कोलकाता

बीज-भाषण देते हुए प्रो. गौतम भद्र

साहित्य अकादेमी ने 16 मई 2023 को अपने पूर्वी क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता के सभागार में गौर किशोर घोष पर जन्मशताब्दी संगोष्ठी का आयोजन किया। आरंभ में, साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने वक्ताओं का परिचय कराया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने स्वागत व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने श्रोताओं का स्वागत किया तथा गौर किशोर घोष के जीवन और कृतित्व पर संक्षेप में चर्चा की। उन्होंने उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख किया तथा पत्रकार और कट्टरपंथी मानवतावादी के रूप में उनके जीवन के बारे में बताया। आरंभिक व्याख्यान प्रख्यात बाङ्ला कवि तथा बाङ्ला परामर्श मंडल के पूर्व संयोजक डॉ. सुबोध सरकार ने प्रस्तुत किया। अपने व्याख्यान में गौर किशोर के लेखन के विशिष्ट पहलुओं पर बोलते हुए उन्होंने गौर किशोर के दो प्रमुख व्यक्तित्वों को उजागर करने का प्रयास किया : एक पत्रकार के रूप में तथा दूसरा उपन्यासकार के रूप में। उन्होंने उनकी त्रयी तथा अन्य रचनाओं पर विशेष रूप से प्रकाश डाला। प्रख्यात बाङ्ला इतिहासकार, विद्वान तथा शोधकर्ता प्रोफ़ेसर गौतम भद्र ने अपने बीज-भाषण में गौर किशोर के बहुआयामी जीवन पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि गौर किशोर को किसी एक परिभाषा में नहीं बाँधा जा सकता। वे बहुमुखी प्रतिभा वाले व्यक्ति थे। प्रोफ़ेसर भद्र ने सत्ता के महत्त्व और राजनीति पर भी विस्तार से चर्चा की। उन्होंने गौर किशोर द्वारा रचित चरित्रों का सूक्ष्म विवरणों के साथ अपने जीवंत पत्रकारिता वर्णन के माध्यम से विश्लेषण प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी के बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक तथा पश्चिम बंगाल सरकार के माननीय मंत्री श्री व्रात्य बसु ने गौर किशोर घोष की राजनीतिक सक्रियता के बारे में विस्तार से चर्चा की, जो राजनीतिक रूप से जागरूक व्यक्ति थे। उन्होंने विश्व साहित्य की अन्य कालजयी कृतियों के साथ-साथ प्रफुल्ल राय की *केयापातर नौका* तथा अतीन बंद्योपाध्याय की *नीलकंठ पाखीर खोंजे* सहित बाङ्ला साहित्य की कालजयी कृतियों से उनके लेखन की तुलना की। उन्होंने गौर किशोर के जीवन के महत्त्वपूर्ण चरणों पर भी बात की। साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

"गौर किशोर घोष : जीवन और समय" विषय पर प्रथम सत्र में सुश्री जॅय मित्र ने गौर किशोर के जीवन दर्शन पर विस्तार से बात की। उन्होंने गौर किशोर के कट्टर मानवतावाद पर बल दिया, जो सदैव मानव जीवन शैली की बेहतरी में विश्वास करते थे। उनकी समझ के अनुसार विभिन्न समुदायों के बीच आपसी समझ इसकी कुंजी थी। प्रख्यात पत्रकार श्री देबाशीष भट्टाचार्य ने पत्रकार के रूप में गौर किशोर के कार्य-जीवन पर बात की। उन्होंने उनके लेखन के तरीक़े तथा समाचार की

अवधारणा के प्रति दृष्टिकोण का विश्लेषण प्रस्तुत किया। वे प्रेस की स्वतंत्रता की अडिग भूमिका के समर्थक थे। उन्होंने पत्रकार के रूप में उनके जीवन पर भी बात की। फिल्म अध्ययन के प्रख्यात विद्वान, स्तंभकार तथा पत्रकार श्री सिलादित्य सेन ने प्रख्यात फ़िल्म निर्माता तपन सिंह के दृष्टिकोण से गौर किशोर के जीवन और कार्यों पर बात की। उन्होंने गणतंत्र के प्रतिष्ठित स्वर के रूप में गौर किशोर की "सगीना महतो" पर भी बात की। उन्होंने फ़िल्म निर्माता के दृष्टिकोण से गौर किशोर के लेखन का विश्लेषण प्रस्तुत किया। सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात पत्रकार, लेखक तथा संपादक श्री ज्योतिर्मय दत्त ने की। द्वितीय सत्र गौर किशोर घोष के लेखन पर आधारित था। सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात कथाकार श्री अबुल बशर ने की। सत्र में, *आनंदबाज़ार* पत्रिका की संपादक, प्रख्यात पत्रकार सुश्री इशानी दत्ता राय ने संपादक के रूप में गौर किशोर घोष पर बात की। उन्होंने समाचार पत्रों की भूमिका पर गौर किशोर के योगदानों की चर्चा की। उन्होंने समाचार-निर्माण की प्रक्रिया तथा गौर किशोर ने इसे किस प्रकार निष्पादित किया, पर प्रकाश डाला। उन्होंने पत्रकारिता के प्रति उनके दृष्टिकोण की सत्यता पर भी अपने विचार व्यक्त किए। प्रख्यात विद्वान प्रोफ़ेसर शिबाजी प्रतिम बसु ने गौर किशोर घोष की ग़ैर-समझौतावादी लेखक के रूप में यात्रा पर प्रकाश डाला। उन्होंने विशेष रूप से *जल परे, पाता नोरे, प्रेम नेई* तथा *प्रतिबेशी* की उनकी त्रयी के साथ-साथ कुछ अन्य उपन्यासों तथा कहानियों पर अपने विचार व्यक्त किए। प्रख्यात रंगमंच व्यक्तित्व तथा विद्वान प्रोफ़ेसर शेखर समद्दार ने गौर किशोर के कुछ उपन्यासों पर बात की, जिनमें ई दहा, गरियाहाट ब्रिजेर उपोरे तथा दुजोरे शामिल हैं। उन्होंने कुछ अन्य लेखन के संदर्भ में इन उपन्यासों के विशिष्ट पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की।

संगोष्ठी का संचालन डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने किया। अंत में साहित्य अकादेमी की प्रकाशन सहायक सुश्री समर्पिता गोस्वामी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

कोंकणी

"पांडुरंग भांगी के व्यक्तित्व और कृतित्व" पर जन्मशताब्दी संगोष्ठी

7 जनवरी 2024, पणजी, गोवा

बीज-भाषण प्रस्तुत करते हुए श्री माधव बोरकार

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई ने भारतीय भाषा विभाग, धेंपे कला और विज्ञान महाविद्यालय, अखिल भारतीय कोंकणी परिषद तथा गोवा कोंकणी अकादमी के सहयोग से 7 जनवरी 2024 को धेंपे महाविद्यालय, मिरामार, पणजी, गोवा में "पांडुरंग भांगी के व्यक्तित्व और कृतित्व" पर जन्मशताब्दी संगोष्ठी का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई के प्रभारी अधिकारी डॉ. ओम प्रकाश नागर ने आमंत्रित प्रतिभागियों तथा श्रोताओं का स्वागत किया तथा साहित्य अकादेमी की विभिन्न गतिविधियों पर संक्षिप्त जानकारी दी। कोंकणी परमर्श मंडल के सदस्य शशिकांत पुनाजी ने आरंभिक व्याख्यान प्रस्तुत किया। गोवा कोंकणी अकादमी के अध्यक्ष अरुण साखरदांडे ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया, जबकि बीज-भाषण माधव बोरकार ने प्रस्तुत किया। अखिल भारतीय कोंकणी परिषद के अध्यक्ष चेतन आचार्य तथा धेंपे कॉलेज की प्रिंसिपल वृंदा बोरकार कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कोंकणी परामर्श मंडल के संयोजक मेल्विन रोड्रिगस ने की।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात कोंकणी लेखक कमलाकर म्हाळशी ने की। "पांडुरंग भांगी का जीवन

और कविता में उनका योगदान" विषय पर परेश नरेंद्र कामत ने आलेख प्रस्तुत किया। "कोशकार के रूप में पांडुरंग भांगी" विषय पर दामोदर घाणेकार ने आलेख प्रस्तुत किया। संगोष्ठी के द्वितीय सत्र में, "अनूदित नाटक : पांडुरंग भांगी का योगदान" विषय पर वसंत भगवंत सावंत ने आलेख प्रस्तुत किया। "पांडुरंग भांगी की गद्य रचनाएँ" विषय पर शैलेंद्र मेहता ने आलेख प्रस्तुत किया। इस सत्र की अध्यक्षता तुकाराम शेट ने की। समापन सत्र में, कोंकणी परमर्श मंडल के सदस्य झीलू गांवकार ने कॉलेज के छात्रों के साथ पांडुरंग भांगी की कविताओं का पाठ प्रस्तुत किया। अखिल भारतीय कोंकणी परिषद के सचिव गौरीश वेर्णेकार ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। संगोष्ठी में छात्रों, विद्वानों तथा साहित्य प्रेमियों ने भाग लिया।

कश्मीरी

अमीन कामिल पर दो दिवसीय जन्मशताब्दी संगोष्ठी

21-22 सितंबर 2023, श्रीनगर

साहित्य अकादेमी ने 21-22 सितंबर 2023 को राजकीय महिला महाविद्यालय, मौलाना आज़ाद मार्ग, श्रीनगर में प्रख्यात कश्मीरी कवि और लेखक अमीन कामिल पर दो दिवसीय जन्मशताब्दी संगोष्ठी का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र की शुरुआत में कॉलेज की प्राचार्य प्रो. रूही जान कंठ ने अतिथियों का स्वागत किया। साहित्य अकादेमी के संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी ने संगोष्ठी के संबंध में आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया तथा कार्यक्रम की अवधारणा पर प्रकाश डाला। कश्मीरी परामर्श मंडल के संयोजक शाद रमज़ान ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में इस प्रकार के आयोजन जारी रखने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई, जबकि अकादेमी की सामान्य परिषद के सदस्य मंशूर बानिहाली ने बीज-वक्तव्य प्रस्तुत किया। क्लस्टर यूनिवर्सिटी, श्रीनगर के कुलपति क़यूम हुसैन ने मुख्य अतिथि के रूप में सहभागिता की, जबकि प्रसिद्ध लेखक और अनुवादक इक़बाल नाज़की ने सत्र की अध्यक्षता की। सत्र के अंत में, कश्मीरी परामर्श मंडल के सदस्य मोहम्मद अमीन भट ने सत्र में भाग लेने वाले अतिथियों का धन्यवाद किया। उद्घाटन सत्र का संचालन कश्मीरी परामर्श मंडल के सदस्य गुलज़ार अहमद राथर ने किया।

बीज-वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य श्री मंशूर बानिहाली

प्रथम सत्र की अध्यक्षता अदबी मरकज़ कामराज के संरक्षक रफ़ीक़ मसूदी ने की। सोहन लाल कौल, फ़ैयाज़ दिलबर और शब्बीर अहमद शब्बीर ने अमीन कामिल के जीवन और योगदान पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी के द्वितीय सत्र की अध्यक्षता मशहूर शायर अली शैदा ने की। इस सत्र में अमीन कामिल के जीवन और उपलब्धियों पर प्रकाश डालने वाले आलेख प्रस्तुतकर्ताओं में सतीश विमल और गुलाम नबी हलीम शामिल थे।

दूसरे दिन, 22 सितंबर 2023 को संगोष्ठी के तृतीय सत्र की अध्यक्षता गुलशन मजीद, हसन अंजार, शफ़ी सुंबली और शफ़क़त अल्ताफ़ ने की, जिन्होंने अमीन कामिल के जीवन और योगदान पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता शाद रमज़ान ने की। इस सत्र में जिन लेखकों ने अमीन कामिल के जीवन और साहित्यिक उपलब्धियों के विभिन्न पहलुओं से संबंधित

अपने आलेख प्रस्तुत किए, उनमें रंजूर तिलगामी, इनायत गुल, शाहिदा शबनम और रूप किशन भट शामिल थे। शाद रमज़ान ने अपने संबोधन में कहा कि साहित्य अकादेमी का कश्मीरी परामर्श मंडल जम्मू-कश्मीर के हर कश्मीरी भाषी क्षेत्र में अपना काम जारी रखेगा।

संगोष्ठी में उपस्थित महत्त्वपूर्ण लेखकों और कवियों में मोहम्मद ज़मां आज़ुर्दा, रफ़ीक़ मसूदी, महफूज़ा जान, रूही जान कंठ, बशीर चिराग़, गुलज़ार अहमद भट, गुलज़ार अहमद गनी आदि सहित बड़ी संख्या में कॉलेज की छात्राएँ शामिल थीं। संगोष्ठी का समापन कश्मीरी परामर्श मंडल के सदस्य गुलज़ार अहमद राथर के धन्यवाद प्रस्ताव से हुआ।

मणिपुरी

कवि लीतानथेम राम सिंह पर जन्मशताब्दी संगोष्ठी

11 फ़रवरी 2024, थौबल, मणिपुर

साहित्य अकादेमी ने मणिपुर साहित्य समिति, थौबल तथा कवि लीतानथेम राम सिंह मेमोरियल ट्रस्ट के सहयोग से 11 फ़रवरी 2024 को वाई.वी.यू. भवन, थौबल वांगमाताबा, थौबल, मणिपुर में कवि लीतानथेम राम सिंह पर जन्मशताब्दी संगोष्ठी का आयोजन किया।

संगोष्ठी में स्वागत व्यख्यान साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने प्रस्तुत किया। आरंभिक व्यख्यान साहित्य अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक राजेन तोइजाम्बा ने प्रस्तुत किया। उन्होंने कवि लीतानथेम राम सिंह के जीवन और कार्यों पर संक्षेप में चर्चा की। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि मणिपुर संस्कृति विश्वविद्यालय, इंफ़ाल के पुस्तकालयाध्यक्ष थौनाओजम खोमदोन सिंह ने संगोष्ठी

संगोष्ठी का दृश्य

का उद्घाटन किया। उन्होंने समकालीन समाज के संदर्भ में कवि लीतानथेम राम सिंह की रचनाओं के महत्त्व पर बात की। संगोष्ठी की विशिष्ट अतिथि लीतानथेम निंगोल आर.के. ओंगबी मुहिनी देवी थीं जिन्होंने अपने दिवंगत पिता कवि लीतानथेम राम सिंह की स्मृतियों को साझा किया। मणिपुर साहित्य समिति, थौबल के अध्यक्ष विंग कमांडर ए.डी. सिंह (सेवानिवृत्त) ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। उद्घाटन सत्र का धन्यवाद ज्ञापन मणिपुर साहित्य समिति, थौबल के सचिव सामोन रघुमणि सिंह ने प्रस्तुत किया। प्रथम सत्र में शरतचंद्र लोंगजोम्बा, सनसम नवद्वीप सिंह तथा इबोसाना याम्बेम ने क्रमशः 'कवि के रूप में लीतानथेम राम सिंह', 'उपन्यासकार के रूप में लीतानथेम राम सिंह' तथा 'कवि लीतानथेम राम सिंह और उनके समकालीन मणिपुरी लेखक' विषयों पर हुइरेम बिहारी सिंह के साथ आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र में आनंद लोंगजाम, सेंगोई सनसम तथा युमनाम उत्तमबाला देवी ने 'कवि लीतानथेम राम सिंह के लेखन में उनकी भाषा', 'शिक्षाविद् के रूप में लीतानथेम राम सिंह' तथा 'राम सिंह के उपन्यास में रोमेंटिस्मागी मसक' विषयों पर आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र की अध्यक्षता येंगखोम इंदिरा देवी ने की। मणिपुर साहित्य समिति, थौबल के सदस्य ओ. ब्रजमोहन सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

नेपाली

हाइमनदास राई 'किरात' जन्मशताब्दी संगोष्ठी

2-3 सितंबर 2023, गोरुबथान, कलिम्पोंग, दार्जिलिंग

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र का दृश्य

साहित्य अकादेमी ने साझा साहित्य संरक्षण संस्था, गोरुबथान, जिला कलिम्पोंग, पश्चिम बंगाल के सहयोग से बीएडीपी हॉल, बीडीओ कार्यालय परिसर, गोरुबथान में हाइमनदास राई 'किरात' पर जन्मशताब्दी संगोष्ठी का आयोजन किया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता नेपाली साहित्य के प्रख्यात लेखक जीवन नामदुंग ने की। साहित्य अकादेमी (पूर्वी क्षेत्र) के क्षेत्रीय सचिव देवेन्द्र कुमार देवेश ने स्वागत वक्तव्य दिया। उद्घाटन वक्तव्य साहित्य अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के सदस्य सुभाष सोतांग द्वारा दिया गया। विशिष्ट अतिथि के रूप में साझा साहित्य संरक्षण संस्था के अध्यक्ष तरुण राय और स्वर्गीय हाइमनदास 'किरात' की सुपुत्री लक्ष्मी राय ने भी सभा को संबोधित किया। इस सत्र में केवल एक आलेख प्रस्तुत किया गया। कर्सियांग कॉलेज के व्याख्याता सपन प्रधान ने 'किरात : भारतीय साहित्य के विशिष्ट व्यक्तियों के बीच' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। सत्र के अध्यक्ष जीवन नामदुंग के वक्तव्य के साथ सत्र का समापन हुआ।

सुजाता रानी राई ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की। इस सत्र में बिजय ब्लोन, समीर राय 'शांति' और सीताराम काफले वक्ता थे। उन्होंने क्रमशः 'हाइमनदास राई 'किरात : उनका जीवन और योगदान', 'हाइमनदास राई 'किरात' : एक प्रकाशक के रूप में' और 'किरात द्वारा लिखित केही नामिलेका रेखाहरू का एक अध्ययन' विषयों पर अपने अपने आलेख प्रस्तुत किए। अध्यक्ष द्वारा दी गई समापन टिप्पणी के साथ सत्र समाप्त हुआ। इन दोनों सत्रों का संचालन गोरूबथान के युवा कवि श्री संजय प्रधान ने किया।

द्वितीय सत्र रविवार, 3 सितंबर 2023 को पूर्वाह्न 10:30 बजे आयोजित किया गया। इसकी अध्यक्षता नेपाली के प्रख्यात लेखक प्रदीप गुरुंग ने की। सीताराम काफ्ले ने किरात द्वारा लिखित पुस्तक 'केहि नामिलेका रेखाहरू का एक अध्ययन' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। इंद्र बहादुर छेत्री ने हाइमनदास राई 'किरात' की कहानियों की प्रवृत्तियों पर बात की। हीरा छेत्री ने 'हाइमनदास राई की कहानियों में ग्राम्य भाषा का प्रयोग' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया और मन नारायण प्रधान ने एक उपन्यासकार के रूप में हाइमनदास राई 'किरात' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता कवि एवं लेखक गुमानसिंग राई ने की। सुजाता रानी राई ने 'हाइमदास राई की कहानियों में किरात संस्कृति का अध्ययन' विषय पर प्रकाश डाला, उदय थुलुंग ने 'हाइमनदास राई की कहानियों में सामाजिक चेतना' और नरेश चंद्र खाती ने 'किरात की कहानियों का भाषायी अध्ययन' पर अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए। चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता कवि एवं सामाजिक कार्यकर्ता विलियम फिपोन ने की। इस सत्र में साहित्य अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के संयोजक एस.डी. ढकाल विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने सभा को संबोधित भी किया। ज्ञानेंद्र योक्सो ने 'हाइमनदास राई 'किरात' : एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में', सरिता समदर्शी ने 'एक कवि के रूप में हाइमनदास राई किरात' और बसंत थापा ने 'शताब्दी पुरुष हाइमनदास राई' विषयों पर अपने आलेख

प्रस्तुत किए। सत्र का संचालन रुस्तम शर्मा ने किया। द्वि-दिवसीय कार्यक्रम ने पाठकों को हाइमनदास राई को गहराई से समझने और जानने का अवसर प्रदान किया।

ओड़िआ

चित्तरंजन दास पर जन्मशताब्दी संगोष्ठी

27 नवंबर 2023, खारवेल नगर, भुवनेश्वर

साहित्य अकादेमी ने 27 नवंबर 2023 को भारतीय विद्या भवन, खारवेल नगर, भुवनेश्वर के कॉन्फ्रेंस हॉल में "चित्तरंजन दास" पर जन्मशताब्दी संगोष्ठी का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने स्वागत व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने महान लेखक, दार्शनिक तथा शिक्षाविद् चित्तरंजन दास के जीवन और लेखन पर संक्षेप में बात की। संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए प्रख्यात गाँधीवादी कार्यकर्ता श्रीमती कृष्णा मोहंती ने सरल जीवन शैली वाले इस व्यक्ति द्वारा रचित महान साहित्य पर अपने विचार व्यक्त किए। संगोष्ठी के मुख्य अतिथि श्री सौम्य रंजन पटनायक थे। उन्होंने चित्तरंजन दास के निबंधों की विशिष्ट शैली के बारे में चर्चा की जो आजकल अत्यंत प्रासंगिक हैं। बीज-भाषण प्रख्यात विद्वान गौरांग चरण दाश ने प्रस्तुत किया। उन्होंने चित्तरंजन दास के लेखन के बारे में विस्तार से चर्चा की तथा इस तथ्य को उद्घाटित किया कि उन्होंने ओड़िआ साहित्यिक समालोचना में एक नया आयाम जोड़ा है। अध्यक्ष के रूप में बोलते हुए, साहित्य अकादेमी के ओड़िआ परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. गौरहरि दास ने चित्तरंजन दास के लेखन तथा शैली पर प्रकाश डाला। उद्घाटन सत्र का धन्यवाद प्रस्ताव साहित्य अकादेमी के ओड़िआ परमर्श मंडल के सदस्य श्री पवित्र मोहन ने प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र में, श्री अभिराम बिस्वाल ने चित्तरंजन दास द्वारा लिखे गए यात्रा वृत्तांतों पर बात की। श्री अरबिंद

स्वागत व्याख्यान देते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव

बेहरा ने चित्तरंजन दास के स्तंभों पर बात की तथा श्री पवित्र मोहन दाश ने चित्तरंजन दास के लेखन में पाए जाने वाले गाँधीवादी दर्शन पर बात की। सत्र की अध्यक्षता प्रोफ़ेसर जतिंद्र कुमार नायक ने की तथा सत्र का धन्यवाद ज्ञापन श्री चित्तरंजन चिरंजीत ने किया। द्वितीय सत्र में श्री भारत भूषण महांति ने चित्तरंजन दास की रचनाओं में प्रदर्शित प्रेम तथा स्नेह के विषयों पर बात की। श्री धनेश्वर साहू ने चित्तरंजन दास द्वारा किए गए अनुवादों, विशेष रूप से स्पिनोज़ा की रचनाओं पर बात की। अपने व्याख्यान में श्रीमती प्रबीना महांति ने चित्तरंजन दास को शिक्षाविद् के रूप में प्रस्तुत किया। सत्र की अध्यक्षता श्री अध्यापक बिस्वरंजन ने की तथा सत्र का धन्यवाद ज्ञापन श्री अरुण कुमार साहू ने प्रस्तुत किया। संगोष्ठी का संचालन साहित्य अकादेमी के सहायक संपादक श्री क्षेत्रवासी नायक ने किया।

पंजाबी

मोहिंदर सिंह सरना जन्मशताब्दी संगोष्ठी

27-28 सितंबर 2023, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने भाई वीर सिंह साहित्य सदन के सहयोग से 27-28 सितंबर 2023 को भाई वीर सिंह साहित्य सदन, नई दिल्ली में मोहिंदर सिंह सरना पर

उद्घाटन सत्र के दौरान (बाएँ से दाएँ) प्रो. रवेल सिंह, श्री करणजीत सिंह, श्री माधव कौशिक, श्री मनमोहन, श्री नवतेज सरना तथा श्री जसविंदर सिंह

द्वि-दिवसीय जन्मशताब्दी संगोष्ठी का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने स्वागत वक्तव्य देते हुए भारत की समृद्ध कथा-परंपरा के बारे में बताया और कहा कि कहानीकार एम.एस. सरना इस परंपरा का अभिन्न अंग हैं। उन्होंने यह भी कहा कि एम.एस. सरना के पास सीमा रहित एक भव्य एवं सर्वव्यापी दृष्टिकोण था जो भविष्य के लिए नई उम्मीदें जगाता है। पंजाबी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. रवेल सिंह ने अपने प्रारंभिक वक्तव्य में एम.एस. सरना के लेखन का सार साझा किया और बताया कि एक लेखक के रूप में एम.एस. सरना मंटो किस प्रकार से अलग थे। उन्होंने एम.एस. सरना के लोकार्पित नए प्रकाशनों का परिचय भी दिया। मंच पर उपस्थित गणमान्य अतिथियों ने एम.एस. सरना को समर्पित *खालसा समाचार* के एक विशेष अंक तथा उनके महाकाव्य 'चमकौर', 'पौंटा' और 'साका जिन किया' के नए संस्करण जारी किए गए। एम.एस. सरना की साहित्यिक जीवनी 'मेरी साहित्यिक स्व-जीवनी' का एक नया संस्करण भी लोकार्पित किया गया। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष, माधव कौशिक, जो इस सत्र के मुख्य अतिथि थे, ने इस संगोष्ठी को 'ऋषि ऋण' की संज्ञा दी और कहा कि एम.एस. सरना बहुआयामी लेखक थे, जिन्होंने सभी विधाओं में लिखा। उन्होंने कहा कि एम.एस. सरना दिलचस्प कहानीकार थे और उनका लेखन मानवतावादी दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। उन्होंने यह भी कहा कि एम.एस. सरना की कहानियों में पहचान की सभी सीमाएँ पार हो जाती हैं और क्षेत्रीय कथाएँ संपूर्ण मानवता की कहानियाँ बन जाती हैं। प्रख्यात लेखक, आलोचक मनमोहन ने बीज-वक्तव्य देते हुए एम.एस. सरना के लेखन का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि एम.एस. सरना का लेखन किसी राजनीतिक विचारधारा से बँधा नहीं है। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि उनकी विभाजन की कहानियाँ किस प्रकार निरपेक्ष थीं तथा उन्होंने किसी भी समुदाय को बदनाम नहीं किया। उन्होंने उनके लेखन पर दोबारा ग़ौर करने तथा उसका नए सिरे से पुनर्मूल्यांकन करने की आवश्यकता पर भी बल दिया। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में, प्रख्यात लेखक करणजीत सिंह ने कहा कि यह संगोष्ठी केवल एम.एस. सरना को याद करने के लिए ही नहीं बल्कि समकालीन समय में उनके लेखन को फिर से देखने तथा समझने का अवसर है। उन्होंने कहा कि एम.एस. सरना की कहानी 'छावियाँ दी रट' आज भी ताज़ा है। उन्होंने साहित्य अकादेमी और बी.वी.एस.एस.एस. द्वारा निरंतर साहित्यिक और शैक्षणिक संगोष्ठियाँ आयोजित करने के लिए बधाई दी। सत्र के विशिष्ट अतिथि, लेखक नवतेज सरना ने इस संगोष्ठी के आयोजन को अपने पिता के लेखन पर केंद्रित करने के लिए साहित्य अकादेमी और बी.वी.एस.एस.एस. के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि विनम्रता और विनय एम.एस. सरना के व्यक्तित्व को मुख्य तत्त्व थे। उन्होंने अपने पिता से जुड़े दो किस्से साझा किए। भाई वीर सिंह साहित्य सदन के सचिव जसविंदर सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

'एम.एस. सरना की स्मृति' शीर्षक से हुए प्रथम सत्र की अध्यक्षता नवतेज सरना ने की। उन्होंने कहा कि उनके पिता बहुत संकोची व्यक्ति थे और ज़्यादा मेलजोल नहीं रखते थे। उन्होंने यह भी कहा कि एम.एस.

सरना को उनके लेखन के आधार पर अलग-अलग लोग अलग-अलग तरह से देखते हैं। लेखिका और पत्रकार तथा एम.एस. सरना की बेटी जसकिरण सरना ने उन्हें शांत स्वभाव वाला व्यक्ति बताया। रेणुका सिंह ने अपने छात्र जीवन में एम.एस. सरना और उनकी पत्नी के साथ अपने संबंधों के बारे में बताया कि उन्होंने किस प्रकार उन्हें पंजाबी में लिखने के लिए प्रोत्साहित किया था। प्रो. रवेल सिंह ने पंजाबी अकादमी, दिल्ली के साथ एम.एस. सरना के साथ बिताए समय के बारे में बात की। उन्होंने यह किस्सा साझा किया कि एम.एस. सरना ने अपनी पहली तीस कहानियाँ कभी प्रकाशित नहीं कीं।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता करते हुए जसविंदर सिंह ने कहा कि यह आवश्यक नहीं है कि किसी लेखक का मूल्यांकन उसके समसामयिक काल में ही सही ढंग से किया जा सके। उन्होंने एम.एस. सरना के लेखन के पुनर्मूल्यांकन पर बल दिया। वक्ता गुरपाल संधू ने एम.एस. सरना के उपन्यासों में विभाजन को किस प्रकार प्रस्तुत किया गया है, इस विषय पर अपनी बात रखी और उसके प्रभावों की भी चर्चा की। कुलवीर गोजरा ने मोहिंदर सिंह सरना के दृष्टिकोण की बात की। उन्होंने कहा कि एम.एस. सरना जिस दुनिया को प्रस्तुत करते हैं वह प्रेम, सहानुभूति और सद्भाव से भरी एक आदर्श दुनिया है। वनीता ने अपने आलेख में एम.एस. सरना की कहानियों में प्रयुक्त हुए पर्यावरणीय रूपकों के बारे में बताया। कुलदीप सिंह ने मोहिंदर सिंह सरना की कहानियों में पात्रों के निर्माण के लिए प्रयुक्त की जाने वाली तकनीक पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी के दूसरे दिन तृतीय सत्र धनवंत कौर की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें चार वक्ताओं ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में उन्होंने कहा कि महान साहित्य की पहचान यह होती है कि वह अलग-अलग लोगों तक अलग-अलग रूपों में पहुँचता है। उन्होंने यह भी कहा कि एम.एस. सरना पर्यावरणीय महत्त्व से परिचित थे और उन्होंने लेखन में अंतर पैदा करने के लिए अपने भाषायी कौशल का प्रयोग किया। मेघा सलवान ने उनकी कहानियों की काव्यात्मकता पर अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्हें एक मास्टर कहानीकार कहा। उन्होंने यह भी कहा कि उनके पात्रों के कथन निष्पक्ष थे तथा वे द्वेषपूर्ण नहीं थे। हरप्रीत कौर ने अपने आलेख 'एक कहानी लेखक के रूप में मोहिंदर सिंह सरना की विशिष्टता' में उन्हें पंजाबी साहित्य की कहानी परंपरा में दूसरी पीढ़ी के लेखक के रूप में स्थापित किया। स्वर्णजीत कौर ने अपने आलेख में मोहिंदर सिंह सरना की विभाजन संबंधी कहानियों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए उन्हें पीड़ित और संरक्षक के रूप में वर्गीकृत किया। जे.बी. सेखों ने मोहिंदर सिंह सरना की कहानियों में पार-देशी संवेदना पर अपने आलेख में 'लधे वाला वाराइच' और 'छावियन दी रुह' जैसी विभिन्न कहानियों के विश्लेषण से नई अंतर्दृष्टि प्रदान की।

बलबीर माधोपुरी की अध्यक्षता में चतुर्थ एवं अंतिम सत्र में तीन आलेख प्रस्तुत किए गए। मंजीत सिंह ने 'मेरी साहित्यक स्वजीवनी : इक दृष्टि-संपन्न दस्तावेज़' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने एम.एस. सरना की साहित्यिक जीवनी में व्यक्त विभिन्न अंतर्दृष्टियों पर चर्चा की। मनजिंदर सिंह ने अपने आलेख, 'मोहिंदर सिंह सरना के लेखन का भाषायी मॉडल' में कहा कि एमएस सरना के कार्यों के पाठ्य अध्ययन से ज्ञात होता है कि उनकी प्रत्येक पंक्ति उत्कृष्ट साहित्य है। उन्होंने अपनी बात आनंदवर्धन द्वारा दिए गए ध्वनि सिद्धांत के आधार पर प्रस्तुत करते हुए कहा कि रूपक की स्पष्टता एक अच्छे साहित्यिक पाठ का महत्त्वपूर्ण पहलू है। परवीन शेरॉन ने अपने आलेख जो कि 'मोहिंदर सिंह सरना के महाकाव्यों में सैद्धांतिक चिंताएँ' विषय पर था, में पंजाबी महाकाव्य की साहित्यिक परंपरा में उनके स्थान के साथ शुरू की। उन्होंने उनके आरंभिक लेखन से अंत तक महाकाव्यों में भाषा में बदलाव पर प्रकाश डाला। सत्र के

अध्यक्ष बलबीर माधोपुरी ने एम.एस. सरना के साथ लिए अपने विस्तृत साक्षात्कार के बारे में विस्तार से बताया। कार्यक्रम का समापन भाई वीर सिंह साहित्य सदन के निदेशक मोहिंदर सिंह द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

राजस्थानी

रेवतदान चारण पर जन्मशताब्दी संगोष्ठी

4-5 नवंबर 2023, जोधपुर (राजस्थान)

साहित्य अकादेमी ने राजस्थानी विभाग, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर के सहयोग से रेवतदान चारण पर जन्मशताब्दी संगोष्ठी का 4-5 नवंबर 2023 को बृहस्पति भवन, केंद्रीय कार्यालय, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर में आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत व्याख्यान में रेवतदान चारण को एक ऐसा कवि बताया, जिन्होंने पारंपरिक राजस्थानी और आधुनिक कविता दोनों में योगदान देकर राजस्थानी कविता को नई पहचान दिलाई। इस अवसर पर साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित एवं डॉ. सोहनदान चारण द्वारा संपादित पुस्तक *रेवतदान चारण री तलवी कवितावां* का विमोचन भी किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि तथा जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के.एल. श्रीवास्तव ने कहा कि रेवतदान चारण गरीबों, मज़दूरों तथा किसानों के

व्याख्यान देते हुए राजस्थानी परामर्श मंडल के संयोजक प्रोफ़ेसर अर्जुन देव चारण

अधिकारों की बात करने वाले मानवीय करुणा से परिपूर्ण क्रांतिकारी कवि हैं, जिनकी कविता में विश्व शांति का सकारात्मक संदेश है। उन्होंने यह भी कहा कि रेवतदान चारण आधुनिक राजस्थानी साहित्य के क्रांतिकारी लेखक थे जिन्होंने राजस्थानी साहित्य को नई दिशा दी। इस अवसर पर साहित्य अकादेमी के राजस्थानी परामर्श मंडल के संयोजक, विख्यात कवि-आलोचक प्रोफ़ेसर (डॉ.) अर्जुन देव चारण ने कहा कि रेवतदान चारण की कविता माटी के जीवन का माधुर्य है।

विशिष्ट अतिथि के रूप में बोलते हुए श्री मधु आचार्य 'आशावादी' ने कहा कि अपनी कविता में आम आदमी की पीड़ाओं के बारे में लिखने वाले रेवतदान चारण कालजयी कवि हैं जिन्होंने आधुनिक राजस्थानी कविता को अन्य भारतीय भाषाओं के समकक्ष खड़ा किया है। संगोष्ठी के आरंभ में आमंत्रित अतिथियों ने माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन किया। अतिथियों का स्वागत राजस्थानी परंपरा के अनुसार कवि रेवतदान चारण द्वारा लिखित धरती गीत के गायन से किया गया। उद्घाटन सत्र का संचालन डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित ने किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. मदन सैनी ने की। डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित ने "रेवतदान चारण की कविता में प्रकृति और पर्यावरण", डॉ. धनंजया अमरावत ने "रेवतदान चारण का व्यक्तित्व" तथा डॉ. इंद्रदान चरण ने "रेवतदान चारण की कविता में सामाजिक सरोकार" विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता विख्यात कवि-आलोचक नंद भारद्वाज ने की। इस सत्र में तीन वक्ताओं ने अपने आलेख प्रस्तुत किए - डॉ. राजेंद्र सिंह बारहठ ने "रेवतदान चारण की कविता में भाषा की प्रतिबद्धता", हरीश बी. शर्मा ने "रेवतदान चारण की कविता में राजनीतिक जुगबोध" तथा डॉ. गीता सामौर ने "रेवतदान चारण

की कविता और छंद-पाख: एक दीठ" विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

भारतीय साहित्य में आधुनिक राजस्थानी काव्य का अपना विशेष महत्त्व है क्योंकि इस काव्य में आम जनता के प्रति होने वाले अन्याय और अत्याचारों को प्रमुखता से उजागर किया गया है। इसी परंपरा में, रेवतदान चारण गरीब मज़दूरों और किसानों पर होने वाले अन्याय के विरुद्ध लड़ने वाले तथा स्वतंत्रता के समय राजस्थानी कविता को नई दिशा देने वाले अमर कवि हैं। यह विचार समापन सत्र में राजस्थानी भाषा के विख्यात विद्वान प्रोफ़ेसर (डॉ.) कल्याण सिंह शेखावत ने व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि रेवतदान चारण ने जीवन भर अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध कविता लिखी। सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रोफ़ेसर सोहनदान चारण ने कहा कि कवि रेवतदान चारण सच्ची और कठोर बातें कहने वाले जनवादी कवि थे और उनकी कविताएँ आज भी लोगों के हृदय में बसती हैं। उन्होंने कहा कि रेवतदान की कविता पर आलोचनात्मक और तुलनात्मक शोध की अत्यंत आवश्यकता है।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात साहित्यकार मधु आचार्य 'आशावादी' ने की। इस सत्र में डॉ. गिरधरदान रतनू ने 'रेवत दान चारण की कविता में लोक चेतना' तथा डॉ. रामरतन लटियाल ने 'रेवतदान चारण की कविता में जथारथ-बोध' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता विख्यात साहित्यकार भंवर सिंह सामोरे ने की। इस सत्र में कृष्ण कुमार 'आशु' ने 'आधुनिक राजस्थानी काव्य में रेवतदान चारण का योगदान', डॉ. मदन गोपाल लड्ढा ने 'रेवतदान चारण काव्य में जथारथ-बोध' तथा डॉ. गौतम अरोड़ा ने 'रेवतदान चारण के काव्य की भाषा शैली' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। यह द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी अत्यंत महत्त्वपूर्ण साबित हुई जिसमें समस्त विद्वानों ने कवि रेवतदान चारण के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विभिन्न पहलुओं पर समीक्षात्मक आलेख प्रस्तुत किए।

संताली

नारायण सोरेन 'तोरे सुताम' पर जन्मशताब्दी संगोष्ठी

1 अक्तूबर 2023, चाकुलिया, झारखंड

उद्घाटन सत्र का दृश्य

साहित्य अकादेमी ने आदिवासी सामाजिक-शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक संघ, झारखंड के सहयोग से 1 अक्तूबर 2023 को टाउन हॉल, चाकुलिया, झारखंड में नारायण सोरेन 'तोरे सुतम' पर जन्मशताब्दी संगोष्ठी का आयोजन किया।

संगोष्ठी में साहित्य अकादेमी के सहायक संपादक क्षेत्रवासी नायक ने सभी का स्वागत किया। संताली परामर्श मंडल के संयोजक चैतन्य प्रसाद माझी ने आरंभिक वक्तव्य दिया। उन्होंने श्रोताओं को नारायण सोरेन 'तोरे सुताम' के जीवन और कार्यों से परिचित कराया। संगोष्ठी का उद्घाटन संताली के प्रतिष्ठित लेखक शोभानाथ बेसरा ने किया। बीज-वक्तव्य प्रख्यात संताली लेखक मदन मोहन सोरेन ने दिया तथा अध्यक्षता प्रख्यात संताली लेखक महादेव हाँसदा ने की। उन्होंने संताली साहित्य में नारायण सोरेन के योगदान पर बात की। उद्घाटन सत्र का धन्यवाद ज्ञापन एएसईसीए, झारखंड के महासचिव शंकर सोरेन ने किया। पहले विचार सत्र में, चुंडा सोरेन 'सिपाही', अंजन कर्मकार तथा श्रीपति टुडु ने गुमडा मार्डी की अध्यक्षता

में आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे विचार सत्र में, मनोज टुडु और नजीर हेम्ब्रम ने मोहन चंद्र बास्के की अध्यक्षता में आलेख प्रस्तुत किए। वक्ताओं ने नारायण सोरेन के लेखन के महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने उनके लेखन का विस्तार से उल्लेख किया और उसकी विशिष्टता को दर्शाने के लिए उससे उद्धरण प्रस्तुत किए। उन्होंने आगामी पीढ़ी के संताली लेखकों पर उनके प्रभाव की प्रकृति और सीमा का विश्लेषण किया।

तमिऴ

की. राजनारायणन पर जन्मशताब्दी संगोष्ठी

22-23 जनवरी 2024, सेलम

साहित्य अकादेमी के चेन्नै स्थित उप-क्षेत्रीय कार्यालय ने पेरियार विश्वविद्यालय, सेलम के तमिऴ विभाग के सहयोग से विश्वविद्यालय परिसर में 22-23 जनवरी 2024 को की. राजनारायणन पर जन्मशताब्दी संगोष्ठी का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी, चेन्नै के कार्यालय प्रभारी श्री टी.एस. चंद्रशेखर राजू ने स्वागत व्याख्यान प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी के तमिऴ परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. आर. थमोथरन (अरवेंदन) ने संगोष्ठी के उद्देश्य को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि की. राजनारायणन ने अपने लेखन के माध्यम से साहस के साथ वास्तविकता को व्यक्त किया तथा प्रेम और आपसी स्नेह से भरा

उद्घाटन व्याख्यान देते हुए डॉ. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम

सामाजिक ताना-बाना बुना। कवि और अनुवादक डॉ. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम ने उद्घाटन व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने की. राजनारायणन की प्रशंसा की। राजनारायणन को करिसल साहित्य का पितामह और अग्रदूत माना जाता है। उनकी कहानियों में करिसल बोली का प्रयोग सीधे और शुद्ध रूप में किया गया है। पेरियार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर. जगन्नाथन ने अध्यक्षीय व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि पेरियार विश्वविद्यालय को ऐसे प्रतिष्ठित समारोह की मेज़बानी के लिए चुना गया तथा उन्होंने भविष्य में ऐसे प्रतिष्ठित लेखकों की जन्मशताब्दी मनाने के लिए सहयोग का आश्वासन भी दिया। की. राजनारायणन के पुत्र श्री की.रा. पिरबी ने हार्दिक बधाई दी तथा पिता और लेखक के रूप में की.रा. के साथ अपने अनुभव साझा किए। तमिऴ लेखक श्री इमायम ने विशेष व्याख्यान प्रस्तुत किया। की.रा. ने तमिऴ साहित्य में नए आयाम खोले। उनके वर्णन की शैली उन्हें अन्य आधुनिक तमिऴ रचनात्मक लेखकों से पृथक करती है। तमिऴ विभाग के अध्यक्ष प्रो. टी. पेरियासामी ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा।

प्रथम सत्र में डॉ. आर. कामरासु ने अध्यक्षता की तथा उन्होंने 'की.रा. की कहानियों में मार्क्सवाद' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने की.रा. के मार्क्सवादी सौंदर्यशास्त्र के बारे में बात की और बताया कि किस प्रकार की.रा. ने करिसल क्षेत्र की महिलाओं, बच्चों और किसानों के जीवन का दस्तावेज़ीकरण किया। डॉ. जे. सुदरविज़ी ने 'की.रा. के लेखन में प्रकृति' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। प्रकृति, मिट्टी के लोगों, विशेष रूप से करिसल लोगों के प्रति उनका अनुराग उनके समस्त कार्यों में देखा जा सकता है। प्रो. एस.ए. वेंगडा सौप्रया नायगर ने द्वितीय सत्र की अध्यक्षता की तथा 'की. रा. के लेखन में उत्तर आधुनिकता' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने की.रा. के कुछ कार्यों पर चर्चा

की, जो उत्तर आधुनिकता से संबंधित थे। श्री सिलम्पू एन. सेल्वराज ने तृतीय सत्र की अध्यक्षता तथा 'की.रा. की भाषा के दक्षप्रयोग' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। उनके लेखन में रचनात्मक स्वतंत्रता हावी थी और कोई प्रतिबंध नहीं था। उन्होंने सरल और समझने योग्य तरीके से बोली के शब्दों की विस्तृत शृंखला प्रस्तुत की। डॉ. आर. श्रीविद्या ने 'की.रा. के लेखन में हास्य' पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि उनका मानना था कि हास्य एक आलोचनात्मक सोच कौशल है जो पाठकों के दुखों को दूर करता है तथा उनके लेखन में सूक्ष्म हास्य पैदा होता है।

संगोष्ठी के दूसरे दिन चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता डॉ. ओ. मुथैया ने की तथा 'की.रा. और उनके पत्र' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। पत्र लेखन काफी दिलचस्प कला है तथा की.रा. के पत्र साहित्य का स्रोत हैं। इसके बाद, श्रीमती जे. मंजुला देवी ने 'की.रा. के उपन्यासों में नारीवाद' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। उनकी पत्नी कनवती अम्मल ने की.रा. के लेखन की सराहना की। पंचम सत्र की अध्यक्षता प्रो. एस. षणमुगसुंदरम ने की तथा 'की.रा. और लोकगीत' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। उनके लेखन में बोली जाने वाली शैली के परिचय ने भाषा को आसानी से समझने योग्य बना दिया की.रा. की लेखन शैली सरल और सादी थी, जिससे पाठक उनके उच्चारण, शैली, वाक्यांशों के प्रयोग तथा समृद्ध कल्पना को समझ और उसका आनंद ले सकते थे। डॉ. के. पंजंगम ने समापन वक्तव्य दिया तथा 'करिसल साहित्य के अग्रदूत' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने पुडुचेरी में की.रा. के साथ अपने लंबे जुड़ाव को याद किया।

की.रा. असाधारण कहानीकार थे, जिन्होंने 'करिसल मन्न' के लोगों और संस्कृति के रंगीन चित्रण से अपने पाठकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। वे सामाजिक कार्यकर्ता थे, जिन्होंने अपने विचारों को प्रबलता से व्यक्त किया। कार्यक्रम में तमिळ विभाग के छात्रों तथा व्याख्याताओं, संकायों, शोध विद्वानों, लेखकों तथा स्थानीय साहित्यकारों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

तेलुगु

'राजराजा नरेंद्र का राज्याभिषेक और आदिकवि नन्नय द्वारा महाभारत का लेखन' की 1000वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में संगोष्ठी

16-17 अगस्त 2023, राजमहेंद्रवरम, आंध्र प्रदेश

स्वागत व्याख्यान देते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु ने आदिकवि नन्नय विश्वविद्यालय के तेलुगु विभाग के सहयोग से, राजमहेंद्रवरम स्थित विश्वविद्यालय परिसर में 'राजराजा नरेंद्र के राज्याभिषेक और आदिकवि नन्नय द्वारा महाभारत का लेखन' की 1000 वीं वर्षगाँठ मनाने के लिए दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 16-17 अगस्त 2023 को किया। उद्घाटन सत्र में, साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों का स्वागत किया और आदिकवि नन्नय की गौरवशाली विरासत, तेलुगु महाभारत और राजराजा नरेंद्र के प्रयासों के बारे में संक्षेप में बताया। उन्होंने इसकी रचना के हज़ारों साल बाद, वर्तमान शोधकर्ताओं और साहित्यिक पारखी लोगों के लिए नन्नय के काम के महत्त्व और प्रासंगिकता के बारे में भी अपनी बात रखी। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में तेलुगु परामर्श मंडल की संयोजक मृणालिनी ने संगोष्ठी

के विषय और राजराजा नरेंद्र के राज्याभिषेक की शुरुआत तथा आदिकवि नन्नय द्वारा महाभारत के लेखन की 1000 वीं वर्षगाँठ मनाने की आवश्यकता के बारे में अपना पक्ष प्रस्तुत किया। अपने उद्घाटन वक्तव्य में, प्रख्यात विद्वान बी. रामब्रह्मम ने कहा कि यह नन्नय के कारण ही आज तेलुगु भाषा, संस्कृति और साहित्य मौजूद है। वे वास्तव में हमारी परंपराओं और हमारी संस्कृति के जनक हैं। अपने संबोधन में मुख्य अतिथि आदिकवि नन्नय विश्वविद्यालय के कुलपति कोप्पिरेड्डी पद्माराजू ने विश्वविद्यालय परिसर में संगोष्ठी आयोजित करने के लिए साहित्य अकादेमी को धन्यवाद दिया। अपने बीज वक्तव्य में, प्रख्यात विद्वान सलाका रघुनाथ सरमा ने 'नन्नय भारतम' की मुख्य विशेषताओं के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि किस प्रकार इसने संपूर्ण तेलुगु संस्कृति की नींव रखी। उन्होंने इस कार्य को बढ़ावा देने में राजराजा नरेंद्र की भूमिका को भी उल्लेखित किया। तेलुगु और संस्कृत अकादेमी, आंध्र प्रदेश की अध्यक्ष नंदमुरी लक्ष्मीपार्वती ने नन्नय के योगदान के बारे में बात की।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता के. मलयवासिनी ने की। तीन प्रतिष्ठित विद्वानों, कोप्पर्थी वेंकटरमणमूर्ति, एस. कलाकर शर्मा और कात्यायनी विदमहे ने 'राजराजा नरेंद्र - चालुक्यों का शासनकाल और योगदान', 'आंध्र महाभारत का लेखन : पृष्ठभूमि' और 'नन्नय भारतम में महिला पात्र' विषयों पर अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता कात्यायनी विदमहे ने की। तीन प्रख्यात विद्वानों, के. मलयवासिनी, वी. शंकर राव और ए. पेरेय्या नायडू ने क्रमश: 'नन्नय की अनुवाद विधियाँ', 'नन्नय - कथा तकनीक' और 'नन्नय भारतम में धर्म सूक्ष्मलु' पर आलेख प्रस्तुत किए।

प्रख्यात विद्वान, बी. रामब्रह्मम की अध्यक्षता में तृतीय सत्र में, दो विद्वानों, बी. वेंकटेश्वरलु और सी.एच. लक्ष्मण चक्रवर्ती ने क्रमश: 'नन्नय की भाषायी उत्कृष्टता' और 'नन्नय भारतम में नकारात्मक चरित्र' विषयों पर आलेख प्रस्तुत किए। बी. रामब्रह्मम ने कहा कि 'नन्नय भारतम' में चौंसठ प्रकार के पात्र हैं और यह एक शतरंज मंडल जैसा दिखता है तथा कई तत्त्व इस कृति को पूरी दुनिया में बहुत अनूठा बनाते हैं।

प्रो. बी. वेंकटेश्वरलू की अध्यक्षता में आयोजित चतुर्थ सत्र में तीन प्रख्यात विद्वानों, प्रो. पी. रविकुमार, डॉ. सीलम श्रीनिवास राव तथा प्रो. के.वी.एन.डी. वारा प्रसाद ने क्रमश: 'नन्नया की काव्य तकनीक', 'नन्नया द्वारा चित्रित चालुक्य शैली' तथा 'नन्नया द्वारा विद्वान सभाओं का वर्णन' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

पंचम सत्र की अध्यक्षता रंकीरेड्डी राममोहन राव ने की, और दो विद्वानों, जी.एस. सोमयाजी और वी. नित्यानंद राव ने क्रमश: 'नन्नय के कृतित्व में प्रकृति-विवरण' और 'नन्नय पर शोध' शीर्षक से आलेख प्रस्तुत किए। रंकीरेड्डी राममोहन राव ने भी 'नन्नया की उपश्रुति' पर आलेख प्रस्तुत किया।

समापन सत्र की अध्यक्षता के.वी.एन.डी. वर प्रसाद ने की, जिसमें आदिकवि नन्नय विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार टी. अशोक मुख्य अतिथि थे। अपने संबोधन में आर. लक्ष्मीनरसिम्हा मूर्ति, जो सत्र के विशिष्ट अतिथि थे, ने न केवल तेलुगु लोगों बल्कि संपूर्ण मानवता के लिए 'नन्नय भारतम' की महानता, महत्त्व और प्रासंगिकता के बारे में बताया। आदिकवि नन्नय विश्वविद्यालय के तेलुगु विभाग के डोंटाराजू लक्ष्मी नरसम्मा ने धन्यवाद दिया।

कन्नड

गंगाधर चित्तल पर जन्मशताब्दी परिसंवाद

29 दिसंबर 2023, बेंगळूरु

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु ने एम.एल.ए. उच्च शिक्षा अकादमी के सहयोग से 29 दिसंबर 2023 को बेंगळूरु में अकादेमी परिसर में श्री

उद्घाटन वक्तव्य देते हुए श्री आनंद ज़ुंज़ारवाड़

गंगाधर चित्तल की जन्मशताब्दी के अवसर परिसंवाद का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र में, साहित्य अकादेमी, बेंगळूरु के प्रभारी अधिकारी डॉ. एस. राजमोहन ने प्रतिभागियों तथा श्रोताओं का स्वागत किया और देश की समस्त भाषाओं में शताब्दी संगोष्ठियों तथा परिसंवादों का आयोजन करने के साहित्य अकादेमी के उद्देश्य के बारे में संक्षेप में बात की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में, साहित्य अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. बसवराज कलगुड़ी ने कहा कि चित्तल हर मायने में अग्रणी कवि तथा आधुनिकतावादी थे और उनकी कविता अन्य नव्य कवियों से अलग थी। उन्होंने कहा कि 'हरिवा नीरिदु' आधुनिक कन्नड साहित्यिक इतिहास के सबसे महत्त्वपूर्ण कविता-संग्रहों में से एक है। अपने उद्घाटन वक्तव्य में, प्रख्यात कन्नड कवि श्री आनंद ज़ुंज़ारवाड़ ने बताया कि किस प्रकार पीड़ा और शरीर का दर्शन चित्तल की कविता की पृष्ठभूमि बनाते हैं। उन्होंने कहा कि चित्तल की अधिकांश कविताएँ आंतरिक हैं तथा उन्होंने दुख को कम करने के लिए सामंजस्य और माधुर्य विकसित किया और उन्होंने नव्य कविता आंदोलन के चरम के दौरान कविताएँ लिखीं, किंतु नव्य आंदोलन से आगे निकल गए और स्वयं को कन्नड साहित्य के अग्रणी कवियों में से एक के रूप में स्थापित किया।

श्री केशव मलागी की अध्यक्षता में प्रथम सत्र में, 2 प्रख्यात विद्वानों, श्री विक्रम विसाजी और महाबलमूर्ति कोडेलकेरे ने क्रमशः "चित्तल की कविता" तथा "चित्तल की कविता की प्रमुख प्रेरणाएँ" विषयों पर आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता थारिनी शुभदायिनी ने की। 2 प्रख्यात विद्वानों श्री राजशेखर हलेमाने तथा श्री सुभाष राजमाने ने क्रमशः "चित्तल की कविता में शरीर की खोज" और "चित्तल की कविता : पृथ्वी और मनुष्य" पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। थारिनी शुभदायिनी ने "चित्तल की कविता में समय के बारे में विचार" पर अपने विचार व्यक्त किए। तृतीय सत्र की अध्यक्षता एच.एल. पुष्पा ने की। कवि टी. येलप्पा तथा एच.जी. उमेशा ने चित्तल की चुनिंदा कविताओं पर रचनात्मक प्रतिक्रिया प्रस्तुत की। साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य श्री बसवराज सदर ने समापन सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने कहा कि यद्यपि चित्तल ने अपने जीवन में कष्ट सहे, किंतु उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से अपने पाठकों को अपार आनंद प्रदान किया। अपने समापन वक्तव्य में प्रख्यात लेखक एवं विद्वान श्री विवेक शानबाग ने चित्तल की कविता में मानवतावाद के बारे में बात की तथा चित्तल की कविता के प्रमुख विषयों पर संक्षेप में चर्चा की। एम.एल.ए. अकादमी के प्रिंसिपल प्रोफ़ेसर पी.वी. पद्मजा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थीं।

कोंकणी

"वामन बाळकृष्ण सरदेसाय का व्यक्तित्व और कृतित्व" पर जन्मशताब्दी परिसंवाद

6 जनवरी 2024, पणजी, गोवा

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई ने भारतीय भाषा विभाग, धेंपे कला और विज्ञान महाविद्यालय, अखिल भारतीय कोंकणी परिषद और गोवा कोंकणी अकादमी के सहयोग से 6 जनवरी 2024 को धेंपे महाविद्यालय, मिरामार, पणजी, गोवा में "वामन बाळकृष्ण सरदेसाय का

बीज-भाषण देते हुए श्री उदय भेंब्रे

व्यक्तित्व और कृतित्व" पर जन्मशताब्दी परिसंवाद का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई के प्रभारी अधिकारी डॉ. ओम प्रकाश नागर ने आमंत्रित प्रतिभागियों तथा श्रोताओं का स्वागत किया। धेंपे महाविद्यालय की प्राचार्या वृंदा बोरेर ने आरंभिक व्याख्यान प्रस्तुत किया तथा वामन सरदेसाय के कृतित्व पर संक्षिप्त जानकारी दी। उद्घाटन वक्तव्य लीबिया लोबो सरदेसाय ने प्रस्तुत किया तथा उदय भेंब्रे ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। प्रख्यात लेखक, पत्रकार संदेश प्रभुदेसाय तथा धेंपे चैरिटीज ट्रस्ट के प्रशासक राजेश भाटीकर कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कोंकणी परामर्श मंडल के संयोजक मेल्विन रोड्रिग्स ने की।

प्रख्यात कोंकणी लेखक श्री नारायण देसाय ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की। संजीव सरदेसाय ने 'वामन सरदेसाई के जीवन तथा गोवा मुक्ति आंदोलन में उनके योगदान' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। प्रवीण सबनीस ने 'वामन सरदेसाय का मराठी साहित्य' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। परिसंवाद के द्वितीय सत्र में, आकाश गाँवकर ने 'अभिजीत' तथा 'वजरांची खोन' पुस्तकों पर आलेख प्रस्तुत किया। आलेख-पाठ के पश्चात् शकुंतला भरणे ने वामन सरदेसाय के गीतों का पाठ किया। इस सत्र की अध्यक्षता पूर्णानंद चारी ने की। कोंकणी परामर्श मंडल की सदस्य अंजू साखरदांडे ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। परिसंवाद में छात्रों, विद्वानों तथा साहित्य प्रेमियों ने भाग लिया।

मलयाळम्

आर. रामचंद्रन की जन्मशताब्दी परिसंवाद

7 अक्तूबर 2023, एडप्पल

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु ने वल्लथोल विद्यापीठम के सहयोग से 7 अक्तूबर 2023 को एडप्पल में आर. रामचंद्रन की जन्मशताब्दी के उपलक्ष्य में परिसंवाद का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र में श्री के.वी. दिलीप कुमार ने प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा उनका परिचय कराया। साहित्य अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के संयोजक श्री के.पी. रामनुन्नी ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में आर. रामचंद्रन की कविताओं में मानवतावादी तत्त्वों के बारे में बात की और बताया कि उन्होंने किस प्रकार कविताओं को सार्वभौमिक रूप से आकर्षक बनाया। अपने उद्घाटन व्याख्यान में प्रो. के. सच्चिदानंदन ने रामचंद्रन की कविता के अनूठे तत्त्वों के बारे में बताया कि, किस प्रकार यह मौन और मृत्यु की ओर एक यात्रा के समान थी, किस प्रकार कविता अपने आप में एक अनुभव थी, उनकी कविता में खेद की प्रकृति भी थी, आदि। श्री पी.वी. नारायणन ने धन्यवाद ज्ञापित किया। प्रो. अनिल वल्लत्तोल की अध्यक्षता में हुए प्रथम सत्र में, दो प्रसिद्ध विद्वानों, अपर्णा टी. तथा एम. कृष्णन नंबूदरी ने क्रमशः "आर रामचंद्रन की कविताओं में कल्पना" तथा "रामचंद्रन की काव्य भाषा" विषयों पर

उद्घाटन व्याख्यान देते हुए प्रो. के. सच्चिदानंदन

आलेख प्रस्तुत किए, तथा अनिल वल्लथोल ने रामचंद्रन के जीवन के प्रति दृष्टिकोण पर अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. एम.आर. राघव वारियर की अध्यक्षता में आयोजित द्वितीय सत्र में, दो प्रसिद्ध विद्वानों, सुभा के. तथा राजेंद्रन एडथुमकारा ने क्रमश: "आर. रामचंद्रन की कविताओं में प्रकृति की अवधारणा" तथा "स्मृति और विस्मृति की कविता" विषयों पर आलेख प्रस्तुत किए। श्री नंदन ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

मराठी

मराठी कवि वसंत बापट पर जन्मशताब्दी परिसंवाद

6 अक्तूबर 2023, पुणे

साहित्य अकादेमी ने साधना ट्रस्ट, पुणे के सहयोग से 6 अक्तूबर 2023 को महान मराठी कवि वसंत बापट की जन्मशताब्दी परिसंवाद का आयोजन किया। उक्त कार्यक्रम एस.एम. जोशी हॉल में आयोजित किया गया, जिसमें "वसंत बापट : व्यक्तित्व और कृतित्व" विषय पर चर्चा की गई। अपने स्वागत वक्तव्य में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने कविताओं तथा कवियों की विविधतापूर्ण प्रकृति पर प्रकाश डाला। उन्होंने वसंत बापट को रवींद्रनाथ ठाकुर, मैथिलीशरण गुप्त तथा श्री अरबिंद जैसे कवियों से जोड़ते हुए इस बात पर प्रकाश डाला कि जीवन की सांसारिक सच्चाइयों

बीज-भाषण देते हुए श्री विनय हार्डिकर

में निहित बापट की कविता में भाषाई और सांस्कृतिक सीमाओं को पार करने की शक्ति थी, जो सीधे मानवीय आत्मा से बात करती थी। नरेंद्र पाठक ने अपने आरंभिक वक्तव्य में वसंत बापट के उदार व्यक्तित्व के पहलुओं पर अपने विचार व्यक्त किए। परिसंवाद के उद्घाटनकर्ता भरत सासने ने आज की पीढ़ी के लिए आवश्यक प्रेरणा के रूप में वसंत बापट की सराहना की, जो अपने रुख़ पर अड़े रहे। साहित्य अकादेमी के कार्यकारी मंडल के सदस्य तथा प्रख्यात लेखक विश्वास पाटिल ने चर्चा सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि वसंत बापट मात्र साहित्यिक दिग्गज ही नहीं थे, बल्कि बौद्धिक और मानवीय कारणों को हल करने में निपुण भी थे। कार्यक्रम में डॉ. वैद्य ने अपनी वृत्तचित्र 'बसंत बहार' प्रस्तुत की, जिसे 24 मिनट तक दिखाया गया। वृत्तचित्र ने वसंत बापट के जीवन और समय की झलक प्रस्तुत की, जिससे कवि और उनके दर्शकों के बीच संबंध और गहरा हो गया। चर्चा को सत्रों में विभाजित किया गया था, जिनमें से प्रत्येक में वसंत बापट के योगदान पर अनूठा दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। लेखक तथा विद्वान विनय हार्डिकर ने वसंत बापट के व्यक्तित्व के गुणों पर बीज-भाषण प्रस्तुत किया। परिसंवाद को कई सत्रों में विभाजित किया गया था, जिनमें से प्रत्येक सत्र वसंत बापट के योगदानों पर आधारित था।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रमोद मुंघटे ने की तथा यह सत्र "वसंत बापट की कविता" पर आधारित था। श्री किशोर कदम ने बापट की 6 कविताओं का पाठ करके सत्र की शुरुआत की। इंद्रजीत भालेराव ने बापट की कविताओं की बहुमुखी प्रकृति पर प्रकाश डाला तथा उनके विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। साहित्यिक आलोचक डॉ. नीलिमा गुंडी ने बापट की कविता की खोज की, लीना पाटनकर ने बापट के विचारों का विश्लेषण प्रस्तुत किया, जो उनके लेखन में रचनात्मक रूप से प्रवाहित होते हैं, जिसमें उनके यात्रा वृत्तांतों का उल्लेख किया गया था। रणधीर शिंदे ने बापट के बौद्धिक और आलोचनात्मक

लेखन पर चर्चा की। अंत में, विख्यात ओड़िसा नृत्यांगना तथा विद्वान झेलम परांजपे ने समापन वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने वसंत बापट की कुछ कविताओं को नृत्य शैली में भी प्रस्तुत किया। समापन सत्र की अध्यक्षता रामदास भटकल ने की, जबकि साधना ट्रस्ट के अध्यक्ष विवेक सावंत ने कार्यक्रम का समापन किया। परिसंवाद का संचालन क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई के प्रभारी अधिकारी डॉ. ओम प्रकाश नागर ने किया।

'विद्याधर गोखले के व्यक्तित्व और कृतित्व' पर जन्मशताब्दी परिसंवाद

4 जनवरी 2024, मुंबई

आरंभिक वक्तव्य देते हुए डॉ. नरेंद्र पाठक

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई ने मराठी विभाग, एसएनडीटी महिला विश्वविद्यालय के सहयोग से 4 जनवरी 2024 को मुंबई में 'विद्याधर गोखले का व्यक्तित्व और कृतित्व' पर जन्मशताब्दी परिसंवाद का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई के प्रभारी अधिकारी डॉ. ओम प्रकाश नागर ने प्रतिभागियों तथा श्रोताओं का स्वागत किया। सामान्य परिषद् के सदस्य डॉ. नरेंद्र पाठक ने आरंभिक वक्तव्य में विद्याधर गोखले को शिक्षक और बहुमुखी प्रतिभा वाला बताया, जिसे आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा के रूप में देखा जा सकता है।

श्री अरुण नलावडे ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि गोखले द्वारा संगीत नाटकों के पुनरुद्धार तथा ऐतिहासिक, पौराणिक और सामाजिक मुद्दों जैसे उनके विभिन्न विषयों को समकालीन साहित्यकारों द्वारा अपनाया जाना चाहिए। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि सुश्री सुभदा दादरकर थीं। एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय की कुलपति डॉ. उज्ज्वला चक्रदेव ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की।

श्री अभिराम भड़कमकर ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की जिसमें एस.एन. पंडित ने "विद्याधर गोखले की नाट्य दृष्टि" पर आलेख प्रस्तुत किया तथा श्री प्रमोद बापट ने "विद्याधर गोखले के नाटक और संगीत" पर विस्तार से चर्चा की। परिसंवाद के द्वितीय सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के सामान्य परिषद् के सदस्य नरेंद्र पाठक ने की। श्रीराम शिधाये ने "विद्याधर गोखले और पत्रकारिता" विषय पर तथा मीनाक्षी बरहाटे ने "विद्याधर गोखले के कथा साहित्य" विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। एस.एन.डी.टी. विश्वविद्यालय के मराठी विभागाध्यक्ष सुनील रामटेके ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में साहित्यकारों, विद्वानों तथा विश्वविद्यालय के छात्रों ने भाग लिया।

तेलुगु

अब्बूरी वरदा राजेश्वर राव की जन्मशताब्दी पर परिसंवाद

28 जनवरी 2024, राजम

अध्यक्षीय व्याख्यान देती हुईं प्रोफ़ेसर सी. मृणालिनी

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु ने राजम रचयितला वेदिका के सहयोग से 28 जनवरी 2024 को राजम स्थित विद्या निकेतन स्कूल में 'अब्बूरी वरदा राजेश्वर राव की जन्मशताब्दी पर परिसंवाद का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के सदस्य श्री चिंताकिंडी श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों तथा श्रोताओं का स्वागत किया तथा परिसंवाद के विषय का प्रवर्तन किया। साहित्य अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल की संयोजक प्रोफ़ेसर सी. मृणालिनी ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में अब्बूरी वरदा राजेश्वर राव की साहित्यिक प्रतिभा के बारे में बताते हुए कहा कि वे 8 वर्ष की आयु में नाटक लिखने वाले प्रतिभाशाली बालक थे तथा वे ऐसे बहुमुखी विद्वान थे, जिन्होंने हज़ारों युवा तेलुगु लेखकों को प्रोत्साहित किया तथा उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। राजम रचयितला वेदिका के श्री गारा रंगनाथम ने अपने संबोधन में राजम में परिसंवाद आयोजित करने तथा एसोसिएशन के साथ सहयोग करने के लिए साहित्य अकादेमी को धन्यवाद दिया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता अल्टी मोहन राव ने की। तीन विख्यात विद्वानों - अवधानुला मणिबाबू, पिल्ला तिरुपति राव तथा पोडिलापु श्रीनिवास ने क्रमश: "स्तंभकार के रूप में अब्बूरी", "निबंधकार के रूप में अब्बूरी" तथा "पोस्ट मास्टर अब्बूरी" विषयों पर आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता ओमनी रमण मूर्ति ने की। तीन विख्यात विद्वानों - बाला सुधाकर मौली, एम. कृष्णकुमारी तथा सम्मेता नागमल्लेश्वर राव ने क्रमश: "कवि के रूप में अब्बूरी", "नाटककार के रूप में अब्बूरी" तथा "अब्बूरी - छाया - साहित्यिक जोड़ी" विषयों पर आलेख प्रस्तुत किए। समापन सत्र की अध्यक्षता श्री चिंतिकिंदी श्रीनिवासराव ने की। प्रख्यात लेखक श्री डी.वी.जी. शंकर राव कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे तथा राजम रचयिथला वेदिका के श्री के. तिरुमाला राव ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

असमिया

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में असमिया साहित्य का योगदान पर संगोष्ठी

12-13 जून 2023, डिब्रूगढ़, असम

उद्घाटन व्याख्यान देते हुए श्री नगेन शइकीया

साहित्य अकादेमी ने डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय के सहयोग से 12-13 जून 2023 को इंदिरा मिरी कॉन्फ्रेंस हॉल, डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय, असम में 'भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में असमिया साहित्य का योगदान' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने स्वागत व्याखान प्रस्तुत किया। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों तथा संबंधित साहित्य को प्रोत्साहित करने में प्रख्यात असमिया लेखकों के योगदान पर अपने विचार व्यक्त किए। आरंभिक व्याखान साहित्य अकादेमी के असमिया परामर्श मंडल के संयोजक श्री दिगंत बिस्वा सरमा ने प्रस्तुत किया। प्रख्यात लेखक तथा साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य श्री नगेन शइकीया ने कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलित करके किया। उन्होंने महत्त्वपूर्ण साहित्यिक ग्रंथों पर अपने विचार व्यक्त किए, जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को चित्रित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। संगोष्ठी का उद्घाटन डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय के कुलपति श्री जितेन हाजरिका ने किया। बीज-भाषण प्रख्यात असमिया लेखिका सुश्री रीता चौधरी ने प्रस्तुत किया। उन्होंने इस संदर्भ में प्रमुख असमिया लेखकों के आख्यान के विकास के बारे में विस्तार से चर्चा की। साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष प्रोफ़ेसर कुमुद शर्मा

उद्घाटन सत्र की अध्यक्ष थीं। प्रोफ़ेसर अर्पणा कोंवर तथा डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर साहित्यरथी लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। प्रथम सत्र का विषय था - "असमिया गीतों तथा कविताओं में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के चरित्र का प्रतिबिंब"। इस सत्र में बिनीता बोरा देव चौधरी, मृणाल तालुकदार तथा सब्यसाची महंत ने प्रोफ़ेसर कार्बी डेका हजारिका की अध्यक्षता में अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र का विषय था - "भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन तथा असमिया कथा लेखन"। इस सत्र में समर ज्योति महंत, मनोज कुमार गोस्वामी तथा नीलिमा शइकीया ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा प्रोफ़ेसर अपूर्व शइकीया ने सत्र की अध्यक्षता की। तृतीय सत्र का विषय था - "भारतीय स्वतंत्रता के प्रति जुनून और असमिया नाटक"। इस सत्र में रंजन कलिता तथा मोनालिसा शइकीया ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र की अध्यक्षता भीम कांत बरुआ ने की। चतुर्थ सत्र का विषय था - "समकालीन असमिया पत्रिकाएँ तथा असम में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन"। इस सत्र में चंदन कुमार शर्मा, नरेश कलिता तथा प्रकाश महंत ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र की अध्यक्षता समुद्र गुप्ता कश्यप ने की।

डोगरी

डोगरी भाषा और साहित्य के इतिहास पर दो दिवसीय संगोष्ठी

21-22 सितंबर 2023, जम्मू

अध्यक्षीय व्याख्यान देते हुए प्रो.अंजू भसीन

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली ने जम्मू विश्वविद्यालय के डोगरी पी.जी. विभाग के सहयोग से 21 और 22 सितंबर 2023 को जम्मू विश्वविद्यालय के सभागार में 'डोगरी भाषा और साहित्य के इतिहास' पर दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता जम्मू विश्वविद्यालय की डीन अकादमिक मामले और रिसर्च स्टडीज़ अंजू भसीन, ने की, स्वागत वक्तव्य साहित्य अकादेमी के उपसचिव एन. सुरेशबाबु ने दिया। बीज-भाषण डोगरी के प्रख्यात लेखक ओम गोस्वामी ने दिया। उन्होंने डोगरी भाषा एवं साहित्य की वर्तमान स्थिति एवं भविष्य की रूपरेखा पर प्रकाश डाला। उन्होंने प्रासंगिक विषय के बारे में बड़े मुद्दों और बड़े परिदृश्यों को प्रस्तुत किया।

हाल ही में वरिष्ठ लेखक वेद घई और ज्ञानेश्वर शर्मा के दुखद निधन पर दोनों दिवंगत आत्माओं की स्मृति में मौन प्रार्थना की गई। आरंभिक वक्तव्य साहित्य अकादेमी के डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक मोहन सिंह द्वारा दिया गया। उन्होंने कहा कि यह संगोष्ठी विद्वानों और आम लोगों में भाषा और साहित्य के प्रति जागरूकता पैदा करेगी। भाषा का इतिहास बहुत महत्त्वपूर्ण है और हर किसी को अपनी भाषा और साहित्य का इतिहास जानना चाहिए।

ओम गोस्वामी ने अपने बीज-वक्तव्य में कहा कि डोगरी साहित्य का इतिहास बारहवीं शताब्दी से मिलता है। इस अवसर पर ओम गोस्वामी द्वारा लिखित और साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित एक इतिहासपरक पुस्तक का विमोचन भी किया गया। अंजू भसीन ने कहा कि भाषा और साहित्य विविध संस्कृतियों को बढ़ावा देते हैं। हमें इस डिजिटल युग में सावधान रहना होगा ताकि हम इस चुनौतीपूर्ण समय में भाषा का स्वाद और विशेषकर डोगरी साहित्य का स्वाद न खो दें।

संगोष्ठी में उद्घाटन सत्र के अलावा चार सत्र शामिल थे तथा प्रत्येक सत्र में तीन आलेख प्रस्तुत किए

गए। प्रतिष्ठित विद्वानों ने लीक से हटकर अछूते विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रथम दो सत्र डोगरी भाषा के इतिहास से संबंधित थे तथा अन्य दो सत्र साहित्य के इतिहास से संबंधित थे।

प्रख्यात डोगरी लेखक नरसिंह देव सिंह जम्वाल की अध्यक्षता में प्रथम सत्र में प्रकाश प्रेमी जी ने पाडर किस्तवार, पोगल और रामबन में डोगरी भाषा के उद्भव स्वरूप और क्षेत्रीयता पर आधारित आलेख प्रस्तुत किया। वरिष्ठ साहित्यकार शिव डोबलिया ने बनी, बशोली और हिमाचल में डोगरी भाषा के स्वरूप और क्षेत्रीयता पर आलेख प्रस्तुत किया। तीसरा आलेख तरसेम रैना द्वारा पुंछ, राजौरी और बुद्धल में डोगरी भाषा के स्वरूप और क्षेत्रीयता पर प्रस्तुत किया गया। नरसिंह देव जम्वाल ने अध्यक्षता करते हुए आलेख प्रस्तुतकर्ताओं के काम की सराहना की। उन्होंने अपने ज्ञान और अनुभवों को साझा किया।

द्वितीय सत्र में प्रमुख डोगरी लेखक शिव निर्मोही अध्यक्ष थे। इस सत्र में तीन आलेख हुए. सुषमा रानी ने शकरगढ़, स्यालकोट और पंजाब में डोगरी भाषा के स्वरूप और क्षेत्रीयता पर आलेख प्रस्तुत किया। स्वर्ण सिंह कोहिस्तानी स्वास्थ्य कारणों से संगोष्ठी में शामिल नहीं हो सके, लेकिन उनके द्वारा भिजवाया गया रामनगर, डुडू और बसंतगढ़ में डोगरी भाषा के स्वरूप और क्षेत्रीयता पर था। विजय वर्मा ने कंडी, देवा बटाला और मनावर में डोगरी भाषा के स्वरूप और क्षेत्रीयता के बारे में आलेख प्रस्तुत किया। शिव निर्मोही ने अपनी टिप्पणी में आलेख पाठकों द्वारा विषयों के प्रति बरती गई ईमानदारी की सराहना की।

संगोष्ठी के दूसरे दिन यानी 22 सितंबर 2023 को संगोष्ठी के तृतीय सत्र की शुरुआत हुई। सत्र की अध्यक्षता अर्चना केसर ने की तथा इस सत्र में तीन आलेख प्रस्तुत किए गए। डॉ. नीलम सरीन ने डोगरी उपन्यासों के इतिहास पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। डॉ. संदीप सूफ़ी ने डोगरी कविता के इतिहास पर अपना आलेख प्रस्तुत किया तथा राधा शर्मा ने डोगरी कहानी के इतिहास पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। ओम गोस्वामी ने कुछ सवाल भी उठाए और सुझाव भी दिए। अर्चना केसर ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में शोधपत्रों के पुनरीक्षण के लिए बहुत मूल्यवान सुझाव दिए।

अंतिम सत्र यानी चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता वीणा गुप्ता ने की। 'डोगरी नाटक का इतिहास' विषय पर राधा रानी, चंचल भसीन ने गद्य के इतिहास पर तथा पदम देव सिंह ने विस्तृत जानकारी और साहसिक प्रस्तुति के साथ 'डोगरी आलोचना का इतिहास' विषयों पर अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में वीणा गुप्ता ने नई पीढ़ी के लेखकों, पाठकों और आम लोगों की मदद और प्रेरणा के लिए डोगरी भाषा और साहित्य के विकास तथा समग्र प्रचार के संबंध में कुछ सवाल उठाए और कुछ सुझाव भी दिए।

संगोष्ठी के समापन में मोहन सिंह ने मंडल और प्रतिभागियों, सभी दर्शकों, मीडिया और डोगरी विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय के विद्वानों तथा जम्मू और कश्मीर के विभिन्न कॉलेजों के प्रोफ़ेसरों को धन्यवाद दिया। सभी का मानना था कि ऐसे सफल कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित होते रहने चाहिए।

अंग्रेज़ी

'स्मृति स्थल के रूप में हिंद महासागर : प्रवासी भारतीय साहित्य और संस्कृति से प्रतिबिंब' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

7-8 दिसंबर 2023, मुंबई

साहित्य अकादेमी ने मुंबई विश्वविद्यालय के मुंबई मुन्स्टर इंस्टीट्यूट ऑफ़ एडवांस्ड स्टडीज़ के सहयोग से 'स्मृति स्थल के रूप में हिंद महासागर : प्रवासी भारतीय साहित्य और संस्कृति से प्रतिबिंब' विषय पर 7 और 8 दिसंबर

द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का उद्घाटन सत्र

2023 को आई.सी.एस.एस.आर. सम्मेलन कक्ष, जे.पी. नाइक भवन, मुंबई विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, कलिना कैंपस, सांताक्रूज़ ईस्ट, मुंबई में द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया।

मुंबई मुन्स्टर इंस्टीट्यूट ऑफ़ एडवांस्ड स्टडीज के सह-निदेशक प्रो. निलुफर ई. भरूचा संगोष्ठी के संयोजक थे। संगोष्ठी के मुख्य अतिथि भारतीय नौसेना के कमोडोर डॉ. श्रीकांत केसनूर, वीएसएम (सेवानिवृत्त) थे तथा समापन समारोह की मुख्य अतिथि प्रोफ़ेसर स्मिता शुक्ला, निदेशक, अलकेश दिनेश मोदी संस्थान, मुंबई विश्वविद्यालय तथा भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (डब्ल्यूआरसी-आईसीएसएसआर) की प्रभारी निदेशक थीं।

प्रोफ़ेसर स्टियरस्टॉर्फर ने अपने आरंभिक वक्तव्य में भारतीय महासागर के विषय पर अध्ययन तथा विचार-विमर्श के महत्त्व पर, विशेष रूप से वर्तमान भू-राजनीतिक परिदृश्य को देखते हुए संक्षेप में चर्चा की। प्रोफ़ेसर भरूचा ने कमोडोर डॉ. श्रीकांत केसनूर का परिचय देते हुए उन्हें संगोष्ठी के विषय पर अपनी बात रखने के लिए आमंत्रित किया। उन्होंने बताया कि नौसेना अधिकारी के रूप में उनके अनुभवों ने किस प्रकार भारतीय प्रवासियों तथा भारत और उसके लोगों के साथ उनके जुड़ाव के बारे में उनके दृष्टिकोण को आकार दिया। उद्घाटन सत्र के अंत में धन्यवाद ज्ञापन साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई के प्रभारी अधिकारी श्री ओम नागर ने प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता एमएमआईएएस परामर्श मंडल के सदस्य प्रो. श्रीधर राजेश्वरन ने की। विश्वभारती विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल के अंग्रेज़ी के पूर्व प्रोफ़ेसर सोमदत्त मंडल ने 'द इंडियन ओशन एज़ मेमोरीस्केप : मल्टीपल क्रॉसिंग्स इन मीनल हजरतवालाज़ लीविंग इंडिया' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। फ्रेंच विभाग की प्रमुख तथा आई/सी निदेशक, सेंटर फ़ॉर यूरोपियन स्टडीज़, मुंबई विश्वविद्यालय की प्रो. विद्या वेंकटेसन ने 'द कुली ओडिसी' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। पुरातत्त्वविद्, पाककला मानवविज्ञानी और संग्रहालय सलाहकार के डॉ. कुरुश दलाल 'द इंडियन ओशन एज़ कलिनरी मेमोरी स्पेस' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उनकी प्रस्तुति ने भारतीयों तथा विदेशियों द्वारा भारत में लाए गए विदेशी और स्वदेशी खाद्य पदार्थों के अंत:क्रियाओं की खोज की।

मुंबई के डॉ. बी.एम.एन. कॉलेज की प्रिंसिपल प्रो. माला पांडुरंग ने 'ए जेंडरड रीडिंग ऑफ़ मेमोरी टेक्स्ट फ्रॉम ईस्ट अफ्रीका' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। मुंबई विश्वविद्यालय के अफ्रीकी अध्ययन केंद्र की पूर्व प्रमुख प्रो. रेणु मोदी ने 'इंडियन डायसपोरा इन अफ्रीका एन्ड मेमोरी स्पेसेस इन द इंडियन ओशन' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। संगोष्ठी के प्रथम दिन की अंतिम प्रस्तुति अहमदाबाद के भारतीय विद्या भवन आर.ए. कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स एंड कॉमर्स (यूजी एंड पीजी) में अंग्रेज़ी विभाग की एसोसिएट प्रोफ़ेसर एवं प्रमुख डॉ. विद्या राव ने 'सेलेक्ट इंडो-अफ्रीकन डायस्पोरा प्लेराइट ऑफ़ द पोस्ट अपरथेड़ एरा' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी के दूसरे दिन की शुरुआत तृतीय सत्र से हुई जिसकी अध्यक्षता मॉरीशस मुक्त विश्वविद्यालय, मॉरीशस की डॉ. सुशीला गोपाल ने की। मुंबई विश्वविद्यालय के

अंग्रेज़ी विभाग के एसोसिएट प्रोफ़ेसर तथा इंडो-कैनेडियन स्टडीज़ सेंटर के मानद समन्वयक डॉ. सचिन लाबाडे ने 'द मराठी डायस्पोरा इन मॉरीशस : ए रिव्यू' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने मॉरीशस में मराठी प्रसार की समृद्धता के बारे में बताया तथा एक ऐसे समुदाय पर प्रकाश डाला जिसने द्वीप के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परिदृश्य में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। इतिहास विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय की सहायक प्रोफ़ेसर डॉ. अनघा कांबले ने अफ्रीका में सिनेमा और भारतीय प्रसार पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने बताया कि किस प्रकार सिनेमा पहचान निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है तथा किस प्रकार हिंदी सिनेमा हिंद महासागर के व्यापार नेटवर्क के माध्यम से अफ्रीका पहुँचा।

चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता डॉ. सचिन लाबडे ने की। डॉ. सुशीला ने 'बिल्डिंग अप द न्यू थैलासोलॉजी ऑफ़ द इंडियन ओशन थ्रो एडवर्ड ए. एल्पर्स व्यूस' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि हिंद महासागर की दुनिया के अध्ययन में कल्पना की भूमिका को देखना कितना महत्त्वपूर्ण है।

संगोष्ठी के पाँचवें तथा अंतिम सत्र की अध्यक्षता प्रो. सोमदत्त मंडल ने की। मुंबई के रामनिरंजन झुनझुनवाला कॉलेज (स्वायत्त) में अंग्रेज़ी की एसोसिएट प्रोफ़ेसर डॉ. शर्मिला जाजोदिया ने 'रीप्रेसेंटेशन ऑफ़ इंडियन डायसपोरा इन अफ्रीका इन लिट्रेचर' पर आलेख प्रस्तुत किया। उनका आलेख सामाजिक-आर्थिक तथा राजनीतिक-सांस्कृतिक भूमिकाओं पर आधारित था। संगोष्ठी की अंतिम प्रस्तुति मुंबई के कोहिनूर बिजनेस स्कूल में संचार और सॉफ्ट स्किल्स की एसोसिएट प्रोफ़ेसर डॉ. प्रीति शिरोडकर ने 'बीटिंग स्टिग्मा, ब्रेकिंग साइलेंस : रिफ़्लेक्शंस ऑन वैनेसा गोवेन्डर की बीटन बट नॉट ब्रोकन' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। डॉ. शिरोडकर ने बताया कि किस प्रकार दक्षिण अफ्रीका में लिंग आधारित हिंसा एक प्रमुख मुद्दा है।

कन्नड

'कन्नड साहित्यिक अनुसंधान के विभिन्न आयाम' पर संगोष्ठी

29-30 जनवरी 2024, मैसूरु

उद्घाटन व्याख्यान देते हुए प्रोफ़ेसर बी.वी. वसंत कुमार

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु ने महारानी महिला कला महाविद्यालय के सहयोग से 29-30 जनवरी 2024 को मैसूरु के महाविद्यालय परिसर में "कन्नड साहित्यिक अनुसंधान के विभिन्न आयाम" विषय पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया। सत्र में, साहित्य अकादेमी, क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु के प्रभारी अधिकारी एस. राजमोहन ने प्रतिभागियों तथा श्रोताओं का स्वागत किया तथा भारत और विश्व भर में हो रहे विभिन्न प्रकार के साहित्यिक शोधों के बारे में संक्षेप में बताया। अपने उद्घाटन व्याख्यान में महारानी कला महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफ़ेसर बी.वी. वसंत कुमार ने कर्नाटक में प्राचीन से मध्यकाल तथा आधुनिक काल तक हो रहे शोध के बारे में बताया। अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में साहित्य अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक प्रोफ़ेसर बसवराज कालगुडी ने आधुनिक तथा समकालीन कन्नड साहित्यिक अनुसंधान और उन क्षेत्रों के बारे में बात की जिनमें कन्नड साहित्यिक अनुसंधान फल-फूल रहा है। उन्होंने कर्नाटक में अनुसंधान के कई केंद्रित क्षेत्रों के बारे में विस्तार से बताया और कहा कि यद्यपि कन्नड साहित्यिक अनुसंधान में लगातार प्रगति हुई है, किंतु आगे का मार्ग लंबा है तथा हमारे सामने एक कठिन कार्य है।

पी.जी. कॉलेज में कन्नड अध्ययन केंद्र के समन्वयक प्रोफ़ेसर एच.एम. कलाश्री कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे तथा विभाग के प्रोफ़ेसर नंजुंदैया ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रथम सत्र में गुरुपद मारीगुड्डी की अध्यक्षता में दो विख्यात विद्वानों - नित्यानंद शेट्टी तथा के. रवींद्रनाथ ने क्रमश: "कन्नड अनुसंधान के विभिन्न दार्शनिक आधार" तथा "कन्नड पांडुलिपि विज्ञान में अनुसंधान के विभिन्न पहलु" विषयों पर आलेख प्रस्तुत किए। सत्राध्यक्ष, गुरुपद मारीगुड्डी ने "ऐतिहासिक अनुसंधान और कन्नड संस्कृति" विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। वीरन्ना धांडे की अध्यक्षता में द्वितीय सत्र में दो विख्यात विद्वानों - एम.जी. मंजुनाथ तथा विक्रम विसाजी ने क्रमश: "शिलालेखों के अध्ययन के विभिन्न दृष्टिकोण" तथा "आधुनिक कन्नड साहित्यिक अनुसंधान के विभिन्न दृष्टिकोण" विषयों पर आलेख प्रस्तुत किए। सत्राध्यक्ष, वीरन्ना ढांडे ने "कन्नड अनुसंधान में मौखिक संस्कृति का महत्त्व" विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। प्रो. टी. एस. सत्यनाथ की अध्यक्षता में तृतीय सत्र में दो विख्यात विद्वानों - डी.सी. गीता तथा एच. शशिकला ने क्रमश: "नारीवादी अनुसंधान और कन्नड साहित्य" तथा "कन्नड अनुसंधान और विभिन्न भाषाई दृष्टिकोण" विषयों पर आलेख प्रस्तुत किए। सत्राध्यक्ष, टी.एस. सत्यनाथ ने "कन्नड साहित्यिक संस्कृति में तुलनात्मक अध्ययन की संभावनाएँ" विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। चतुर्थ सत्र में एन.एस. तारानाथ की अध्यक्षता में दो विख्यात विद्वानों - अप्पागेरे सोमशेखर तथा सुरेश नागलमदिके ने क्रमश: "कन्नड अनुसंधान के सामाजिक पहलू" तथा "कन्नड में लोक अनुसंधान के विभिन्न पहलू" विषयों पर आलेख प्रस्तुत किए। सत्राध्यक्ष, एन.एस. तारानाथ ने "पुराने कन्नड साहित्यिक शोध के विभिन्न पहलू" विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। पंचम सत्र में बंजगेरे जयप्रकाश की अध्यक्षता में दो विख्यात विद्वानों - गीता वसंत तथा जयप्रकाश ने क्रमश: "कन्नड में अंत:विषय और बहु-विषयक अनुसंधान" तथा "कन्नड साहित्यिक अनुसंधान के अंत:विषय पहलुओं" विषयों पर आलेख प्रस्तुत किए।

समापन सत्र में, डॉ. मनु बलिगर ने अध्यक्षता की। उन्होंने विशेष रूप से वर्तमान समय में साहित्यिक अनुसंधान के महत्त्व तथा प्रासंगिकता के बारे में संक्षेप में बात की तथा कन्नड संस्कृति और साहित्य के विभिन्न पहलुओं को संरक्षित करने के लिए साहित्यिक अनुसंधान को जारी रखने की आवश्यकता पर भी बल दिया। अपने समापन भाषण में, प्रख्यात कन्नड कवि, समालोचक एवं विद्वान प्रोफ़ेसर अरविंद मालागट्टी ने कन्नड साहित्यिक अनुसंधान के विभिन्न रुझानों के बारे में बात की, और बताया कि किस प्रकार साहित्यिक रचनाओं तथा उन पर किए गए शोध को समाज के वंचित वर्गों का स्वर बनाया जा सकता है तथा उन्हें सशक्त बनाने के लिए उपकरण के रूप में उनका इस्तेमाल किया जा सकता है। उन्होंने कालजयी कृतियों के महत्त्व को बताते हुए यह भी कहा कि उन कृतियों के विभिन्न आयामों और रंगों को सामने लाने के लिए उन पर शोध करना अत्यंत आवश्यक है तथा किए गए शोध द्वारा वह किस प्रकार लाखों कन्नड लोगों के क्षितिज को व्यापक बनाने में सहायक सिद्ध हो सकता है। प्रोफ़ेसर बी.वी. वसंतकुमार तथा प्रो. प्रस्थान के.एम. देवमन्नी कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे तथा प्रोफ़ेसर टी.एल. जगदीश ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

कोंकणी

'शणै गोयंबाब : व्यक्तित्व और कृतित्व' पर संगोष्ठी

16-17 दिसंबर 2023, गोवा

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई ने गोवा कोंकणी अकादमी तथा बाल भवन के सहयोग से 16-

17 दिसंबर 2023 को बाल भवन, पणजी-गोवा में 'शणै गोयंबाब : व्यक्तित्व और कृतित्व' पर दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई के प्रभारी अधिकारी डॉ. ओम प्रकाश नागर ने प्रतिभागियों तथा श्रोताओं का स्वागत किया। उन्होंने साहित्य अकादेमी की विभिन्न गतिविधियों का संक्षेप में परिचय दिया। सामान्य परिषद् के सदस्य डॉ. पूर्णानंद चारी ने आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया। संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए श्री दामोदर मावज़ो ने शणै गोयंबाब के व्यक्तित्व और कृतित्व के बारे में संक्षेप में बात की। उन्होंने गोयंबाब को कोंकणी साहित्य का जनक बताया, एक क्रांतिकारी लेखक जिन्होंने कोंकणी भाषा को उसकी असली पहचान दी। श्री उदय भेंब्रे ने बीज-वक्तव्य दिया तथा शणै गोयंबाब की साहित्यिक कृतियों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उनके क्रांतिकारी लेखन ने युवाओं को जागरूक किया, जिसके परिणामस्वरूप गोवा की मुक्ति हुई। गोवा कोंकणी अकादमी के अध्यक्ष श्री अरुण साखरदांडे ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की।

प्रथम सत्र "शणै गोयंबाब : भाषा बनाम पहचान का अध्ययन" पर आधारित था तथा इसकी अध्यक्षता मेल्विन रोड्रिगस ने की। भूषण भावे ने "भाषा और पहचान पर विचार" विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया, श्री प्रकाश वज़रीकर ने "मातृभाषा और शिक्षा पर विचार" विषय पर अपने विचार साझा किए, जबकि श्री सुशांत नाइक ने "भाषा अध्ययन के उपकरण" (व्याकरण, ध्वनिविज्ञान) पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

बीज-वक्तव्य देते हुए श्री उदय भेंब्रे

द्वितीय सत्र "शणै गोयंबाब : ऐतिहासिक शोध तथा उनके योगदान की मान्यता" पर आधारित था। श्री देवीदास पै ने "शणै गोयंबाब : शोध और विरासत के लिए प्रेरणा" विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री प्रजल साखरदांडे ने "इतिहास की खोज और आगामी उपलब्धि" विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया तथा अंतिम आलेख वक्ता पालिया पंडित ने "शणै गोयंबाब : उनके शोध की पद्धति" विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। सत्र की अध्यक्षता सुश्री किरण बुडकुले ने की।

दूसरे दिन आयोजित संगोष्ठी का तृतीय सत्र "रचनात्मक साहित्य में दर्शन" विषय पर आधारित था तथा इस सत्र की अध्यक्षता श्री गोकुलदास प्रभु ने की। श्री हनुमंत चोपड़ेकर ने "अरण्यकाम : साहित्यिक महत्ता" विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री प्रकाश पर्येकार ने "आरण्यक संवसर बूटी में दर्शन" पर अपना आलेख प्रस्तुत किया तथा श्री पूर्णानंद चारी ने "प्रगतिशील विचारों की विरासत" पर अपने विचार व्यक्त किए।

चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता श्री देवीदास कदम ने की तथा यह सत्र "पुन:सृष्टि, तत्त्वांतरण, रूपांतरण के चमत्कार" विषय पर आधारित था। श्री मित्रा बोरकार ने "फ्रांस से गोवा तक : नाटक में असामान्य शैली" विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। फादर लुइस गोम्स ने "अनुकूलन का चमत्कार" विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया, जबकि श्री पांडुरंग फलदेसाई ने "गीता के अनुवाद में शैली" पर चर्चा की। समापन वक्तव्य गोवा कोंकणी अकादमी के उपाध्यक्ष श्री वसंत सावंत ने दिया तथा सत्र की अध्यक्षता फादर मौजिन्हो अतादे ने की, जबकि गोवा कोंकणी अकादमी की सचिव सुश्री मेघना शेटगाँवकर कार्यक्रम की मुख्य अतिथि थीं। बाल भवन के निदेशक श्री दयानंद एन. चाव्किदार ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

मैथिली

'मैथिली साहित्य में सीता' विषय पर संगोष्ठी

17-18 दिसंबर 2023, पुपरी

उद्घाटन सत्र में उपस्थित अतिथिगण

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली ने मैथिली साहित्य सम्मेलन, पुपरी के सहयोग से 17-18 दिसंबर 2023 को कृष्णा कॉम्प्लेक्स, पुपरी में "मैथिली साहित्य में सीता" विषय पर द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। साहित्य अकादेमी के मैथिली परामर्श मंडल के सदस्य श्री प्रमोद कुमार झा ने उद्घाटन वक्तव्य देते हुए कहा कि संपूर्ण विश्व में सीता का चरित्र अद्वितीय है। विश्व की पचास से अधिक भाषाओं में रामकथा लोकप्रिय है, किंतु इनमें राम की कथा है। इन कहानियों के केंद्र में सीता नहीं हैं। यह हर्ष की बात है कि विगत दस-पंद्रह वर्षों में अंग्रेज़ी तथा विभिन्न भाषाओं में सीता के विभिन्न रूपों पर केंद्रित उपन्यास लिखे गए हैं। सीता पर अभी भी अध्ययन होना बाकी है। प्रसिद्ध मैथिली साहित्यकार रमानंद झा 'रमण' ने बीज-वक्तव्य देते हुए कहा कि सीता का विनम्र स्वभाव अद्वितीय है, तथा उनका साहस अनंत है। पति के प्रति समर्पित तथा पतिव्रता होने के बावजूद उनमें विरोध करने की क्षमता भरपूर है। वे अपने स्वाभिमान की रक्षा करते हुए विनम्रता से अपने विचार व्यक्त करने में सदैव निपुण हैं। मिथिला में माता-पिता अपनी पुत्री में सीता को देखते हुए उसका नाम सीता रखते हैं। इसलिए जब हम मिथिला की बात करते हैं तो कहा जाता है कि जहाँ सीता का जन्म हुआ, वह मिथिला है।

साहित्य अकादेमी के मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' ने कहा कि रामकथा और रामायण तथा हनुमान के चरित्र पर काफी शोध कार्य हुआ है, किंतु विभिन्न भारतीय भाषाओं में सीता को किस रूप में देखा गया है, इस पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। वास्तव में, यदि हम मैथिली लोक साहित्य और आधुनिक काव्य का आकलन करें, तो हमें अधिक प्रामाणिक तथ्य मिल सकते हैं। इन विचारों के लिए इस प्रकार के आयोजन की आवश्यकता थी, जिसके क्रियान्वयन के लिए मैं साहित्य अकादेमी तथा मैथिली साहित्य सम्मेलन, पुपरी को धन्यवाद देता हूँ। उद्घाटन सत्र के अंत में संगोष्ठी के संयोजक श्री संजीव सिन्हा ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात साहित्यकार श्रीमती कमला चौधरी ने की। इस सत्र में श्री रंगनाथ दिवाकर ने 'खंडकाव्य में सीता का चित्रण' तथा श्री रामानंद मंडल ने 'रामेश्वरचरित' पर अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रख्यात साहित्यकार सुश्री मेनका मल्लिक ने द्वितीय सत्र की अध्यक्षता की। श्री बैद्यनाथ मिश्र ने 'चंदा झा द्वारा रचित रामायण के सुंदरकांड', श्री धर्मव्रत चौधरी ने 'मैथिली लोक साहित्य में सीता की उपस्थिति' तथा सुश्री दीपा मिश्रा ने 'समकालीन काव्य में सीता' विषय पर अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वि-दिवसीय संगोष्ठी के दूसरे दिन की शुरुआत तृतीय सत्र से हुई, जिसकी अध्यक्षता डॉ. प्रमोद कुमार झा ने की। इस सत्र में श्री कृष्ण मोहन झा 'मोहन' ने 'सीता पर केंद्रित सहयोगात्मक कविता-संग्रह का परिदृश्य', श्री नंदन कुमार ने 'जानकी की जन्मभूमि पुनौरा से संबंधित तथ्यात्मक विश्लेषण' तथा सुश्री श्वेता भारती ने 'सीतायन नाटक में सीता का चित्रण' विषय पर अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए। चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता श्री नरेंद्र झा ने की, जिसमें श्री संजय वशिष्ठ ने 'लोकनाट्य 'लवहरि कुशहरी' में सीता का स्वरूप',

सुश्री शालिनी झा ने 'सीता पर आधारित लोकगीत' तथा डॉ. चेतना झा ने 'सीता से जुड़ी लोककथा' विषय पर अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए। संगोष्ठी का समापन श्री शरत झा द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

मलयाळम्

'महाभारत की परंपराओं का पुन:कथन' विषय पर संगोष्ठी

16 फ़रवरी 2024, तिरूर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु ने थुंचन मेमोरियल ट्रस्ट के सहयोग से 16 फ़रवरी 2024 को तिरूर के थुंचन परम्बू में ''महाभारत की परंपराओं का पुन:कथन' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों तथा श्रोताओं का स्वागत किया और महाकाव्य के विभिन्न प्रस्तुतीकरणों और उन प्रस्तुतीकरणों से निकली परंपराओं और वर्तमान में उनकी प्रासंगिकता के बारे में संक्षेप में बात की। साहित्य अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के संयोजक श्री के.पी. रामानुन्नी ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में महाभारत को आध्यात्मिकता और भौतिकवाद के मिश्रण के रूप में बताया तथा दोनों की कमियों पर प्रकाश डाला। अपने उद्घाटन व्याख्यान में, प्रख्यात कवि, नाटककार, आलोचक एवं विद्वान प्रोफ़ेसर एच.एस. शिवप्रकाश ने बताया कि किस प्रकार महाभारत देश भर में अनुकूलन, पुनर्कथन, पुनर्निर्माण की शृंखला के माध्यम से विकसित हुआ।

उद्घाटन व्याख्यान देते हुए प्रो. एच.एस. शिवप्रकाश

प्रथम सत्र की अध्यक्षता के. मुरलीधरन ने की। के.सी. नारायणन ने उपमहाद्वीप के विभिन्न समुदायों में महाभारत के प्रसार और विविधताओं से संबंधित आलेख प्रस्तुत किया तथा उन्होंने बताया कि इसे संभवत: केरल से इतर महत्त्वपूर्ण धार्मिक और दार्शनिक ग्रंथों में से एक माना जाता है। सी.आर. प्रसाद का आलेख इस तथ्य पर आधारित था कि किस प्रकार भक्ति आंदोलन से प्रेरित होकर महाभारत पूरे देश में प्रचारित हुआ तथा उन्होंने उसके विभिन्न प्रस्तुतीकरणों पर भी प्रकाश डाला। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता टी.के. संतोष कुमार ने की। दो विख्यात विद्वानों, प्रसन्नराजन तथा के.एम. अनिल ने क्रमश: कि किस प्रकार महाभारत ने भारतीय लेखकों की पीढ़ियों को प्रभावित किया तथा किस प्रकार महाभारत ने सदियों से विभिन्न सामाजिक आंदोलनों को प्रभावित किया है, पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

मराठी

अन्ना भाऊ साठे : व्यक्तित्व और कृतित्व पर परिसंवाद

01 नवंबर 2023, नांदेड़

दीप प्रज्वलित करते हुए विश्वास पाटिल, दत्ता भगत तथा अन्य

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई ने स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, नांदेड़ के सहयोग से "अन्ना भाऊ साठे : व्यक्तित्व और कृतित्व" पर परिसंवाद का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई के प्रभारी अधिकारी डॉ. ओम प्रकाश नागर ने प्रतिभागियों तथा श्रोताओं का स्वागत किया तथा साहित्य अकादेमी की विभिन्न गतिविधियों पर संक्षिप्त जानकारी दी। मराठी परामर्श मंडल के संयोजक विश्वास पाटिल ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। मराठी उपन्यासकार को श्रद्धांजलि देते हुए, श्री पाटिल ने इस बात पर बल दिया कि अन्ना भाऊ साठे का कद अद्वितीय रहा, एक ऐसा तथ्य जिसे मराठी साहित्यिक आलोचक अक्सर अनदेखा कर देते हैं। उन्होंने कहा कि महानगरीय साहित्य, नारीवादी साहित्य, अंबेडकरी साहित्य तथा श्रमिक साहित्य के विषय सभी साठे के अभूतपूर्व कार्यों से उत्पन्न हुए हैं। श्री अर्जुन डांगले ने बीज-वक्तव्य देते हुए कहा कि अन्ना भाऊ साठे को दलितों और वंचितों का पुरोधा बताया जाता है। उनकी रचनाएँ मुख्य रूप से ग्रामीण चरित्रों तथा परवरिश पर आधारित थीं। उनके लोकगीत मुख्य रूप से लावणी, पोवाड़ा आदि महाराष्ट्रीयन संस्कृति तथा सामाजिक-आर्थिक अभावों को दर्शाते थे। स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विश्वविद्यालय के कुलपति श्री उद्धव भोसले ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की।

परिसंवाद के प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्रीकांत उमरीकर ने की, जबकि सोपान खुडे ने अन्ना भाऊ साठे के लोकगीतों तथा नाटकों पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। सत्र के दूसरे आलेख वक्ता बलिराम गायकवाड़ ने अन्ना भाऊ साठे के कथा साहित्य पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

द्वितीय सत्र में प्रमोद गरोड़े ने अन्ना भाऊ साठे की शायरी (कविताएँ) पर अपने विचार प्रस्तुत किए, जबकि प्रतीक्षा गौतम तलंगकर का आलेख अन्ना भाऊ साठे के नारीवादी साहित्य पर आधारित था। इस सत्र की अध्यक्षता विट्ठल भंडारे ने की।

परिसंवाद के समापन सत्र की अध्यक्षता स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, नांदेड़ के सम-कुलपति जोगेंद्रसिंह बेस्सैन ने की। डॉ. दत्ता भगत ने समापन वक्तव्य दिया तथा परिसंवाद में प्रस्तुत विभिन्न आलेखों पर अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. पृथ्वीराज तौर ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। शिवराज शिंदे तथा किरण सावंत ने अन्ना भाऊ साठे द्वारा लिखित गीतों का पाठ किया, जिसे छात्रों, विचारकों, साहित्य प्रेमियों तथा मीडिया द्वारा खूब सराहा गया।

ओड़िआ

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में ओड़िआ साहित्य का योगदान विषय पर संगोष्ठी

10-11 अगस्त 2023, भुवनेश्वर

साहित्य अकादेमी ने ओड़िआ पीजी विभाग, उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर के सहयोग से 10-11 अगस्त 2023 को पीजी काउंसिल कॉन्फ्रेंस हॉल, उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर में आज़ादी का अमृत महोत्सव के अवसर पर 'भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में ओड़िआ साहित्य का योगदान' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया।

उद्घाटन सत्र में स्वागत व्याख्यान साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने दिया। डॉ. राव ने कहा कि ओड़िआ साहित्य ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में विशिष्ट भूमिका निभाई थी। संगोष्ठी का उद्घाटन प्रख्यात ओड़िआ लेखक विभूति पटनायक ने किया। डॉ. पटनायक ने स्वतंत्रता-पूर्व युग के दौरान देशभक्ति का प्रसार करने में ओड़िआ समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं के योगदान पर चर्चा की। उद्घाटन सत्र की विशिष्ट अतिथि उत्कल विश्वविद्यालय की पीजी काउंसिल की अध्यक्ष नवनीता रथ थीं। बीज-वक्तव्य रमेश चंद्र मलिक, समंवयक, ओड़िआ विभाग, उत्कल विश्वविद्यालय द्वारा

स्वागत व्याख्यान देते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव

दिया गया, जिसकी अध्यक्षता गौरहरि दास, संयोजक, ओड़िआ परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी ने की।

प्रथम सत्र का विषय 'ओड़िआ उपन्यास' था। सत्र में, कृष्ण चंद्र प्रधान, सुखमणि मेहर और लोहिताक्ष जोशी ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में ओड़िआ उपन्यासों की भूमिका पर आलेख प्रस्तुत किए। सत्र की अध्यक्षता विभूति पटनायक ने की।

द्वितीय सत्र का विषय था 'ओड़िआ कविता और गीत'। सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात कवि अमरेश पटनायक ने की, जिसमें संग्राम जेना, पल्लीश्री पटनायक और चंद्रशेखर होता वक्ता थे।

दूसरे दिन तृतीय सत्र 'ओड़िआ नाटक' पर केंद्रित था। इस सत्र में, संघमित्रा मिश्रा, शंकर त्रिपाठी और निबेदिता जेना ने बिजय कुमार सत्पथी की अध्यक्षता में भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में ओड़िआ नाटकों के योगदान पर बात की।

चतुर्थ सत्र 'ओड़िआ कहानी' विषय पर आधारित था। सत्र में, अरबिंद राय, देबप्रसाद दास और सीतेश त्रिपाठी ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की उत्पत्ति और विकास में ओड़िआ कहानी की भूमिका पर बात की। सत्र की अध्यक्षता वैष्णव चरण सामल ने की।

अंतिम सत्र 'ओड़िआ निबंध और पत्रिकाएँ' पर आधारित था। सत्र की अध्यक्षता जतींद्र कुमार नायक ने की, जिसमें अभिराम बिस्वाल और चित्तरंजन चिरंजीत वक्ता थे। रमेश मलिक, समंवयक, ओड़िआ पीजी विभाग, उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर द्वारा धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया गया।

पंजाबी

जसवंत सिंह कंवल पर संगोष्ठी

20-21 मार्च 2024, कुरुक्षेत्र

साहित्य अकादेमी द्वारा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र के पंजाबी विभाग के सहयोग से 20-21 मार्च 2024 को कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के सीनेट हॉल में प्रख्यात पंजाबी लेखक जसवंत सिंह कंवल पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र के आरंभ में कुलदीप सिंह ने मुख्य अतिथियों तथा विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों से आए प्रतिनिधियों का स्वागत किया। साहित्य अकादेमी के संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी ने संगोष्ठी की रूपरेखा श्रोताओं के साथ साझा की। उन्होंने जसवंत सिंह कंवल की रचनाओं तथा उनके उच्च साहित्यिक मानदंडों की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए अकादेमी द्वारा इस संगोष्ठी के आयोजन के महत्त्व पर भी प्रकाश डाला। साहित्य अकादेमी के पंजाबी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. रवैल सिंह ने अपने आरंभिक वक्तव्य में जसवंत सिंह कंवल की साहित्यिक कृतियों को दोबारा पढ़ने तथा उन पर समालोचनात्मक चिंतन करने की आवश्कता पर बल दिया। मनमोहन ने अपने

द्वि-दिवसीय संगोष्ठी के उद्घाटन का दृश्य

बीज-भाषण में कहा कि कंवल के साहित्य को विभिन्न आलोचकों की टिप्पणियों के आलोक में नए सिरे से पढ़ने तथा समझने की आवश्यकता है। मुख्य अतिथि रतन सिंह ढिल्लों ने कंवल की समाजवादी प्रतिबद्धता की कड़ी आलोचना की। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि पाठक को गंभीरता से अध्ययन करना चाहिए तथा किसी लेखक की कृति से सिर्फ़ भावनात्मक स्तर पर नहीं जुड़ना चाहिए। सत्र की अध्यक्षता करते हुए नरविंदर सिंह कौशल ने कहा कि यद्यपि कंवल की पहचान उपन्यासकार के तौर पर अधिक है, किंतु कंवल का गद्य भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। कंवल का गद्य सदैव पंजाब, पंजाबी संस्कृति तथा पंजाबी संस्कृति के समक्ष आने वाली चुनौतियों को भलीभांति प्रस्तुत करता था।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र में तीन आलेख प्रस्तुत किए गए। प्रवीण कुमार का पहला आलेख कंवल कृत उपन्यास *तोशाली हंसो* के दार्शनिक परिप्रेक्ष्य पर आधारित था। दूसरा आलेख मनजिंदर सिंह ने कंवल की कहानियों पर प्रस्तुत किया। तीसरा आलेख हरविंदर सिंह द्वारा 'पंजाब के अस्तित्व पर चिंतन' विषय पर आधारित था। सत्र की अध्यक्षता रवैल सिंह ने की। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता जसविंदर सिंह ने की। इस सत्र में दो आलेख प्रस्तुत किए गए। पहला आलेख कुमार सुशील ने कंवल कृत उपन्यास *रात बाकी है* पर प्रस्तुत किया। दूसरा आलेख बलजीत कौर रियाद ने 'जसवंत सिंह कंवल के राजनीतिक विषयों पर आधारित उपन्यास' विषय पर प्रस्तुत किया। सत्र का मुख्य आकर्षण प्रमोद पब्बी द्वारा जसवंत सिंह कंवल की कहानियों के स्क्रीन रूपांतरण की प्रस्तुति थी। इस लघु फ़िल्म की प्रस्तुति के पश्चात्, प्रमोद पब्बी ने कंवल के उपन्यासों पर अपने विचार व्यक्त किए, और कहा कि कंवल का सबसे बड़ा उपहार पंजाबियों के बीच एक बड़ा पाठक वर्ग बनाना रहा है। संगोष्ठी के दूसरे दिन तृतीय सत्र पूर्वाह्न 10:30 बजे आरंभ हुआ। इस सत्र में कंवल के गद्य पर 2 तथा कंवल की कविता पर 1 आलेख प्रस्तुत किया गया। कंवल के काव्यात्मक अर्थ पर आलेख प्रस्तुत करते हुए देविंदर सैफी ने कंवल की कृतियों भावना, आराधना तथा साधना पर आधारित कविता के बारे में बताया। दूसरे आलेख में अमरजीत सिंह ने कंवल के गद्य में प्रस्तुत पंजाबियत की छवि को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया। हरजिंदर सिंह ने कंवल के यात्रा-वृत्तांत *गोरा मुख सज्जनां दा* में मौजूद विविध सांस्कृतिक विमर्श पर आधारित तीसरा आलेख प्रस्तुत किया। इस सत्र की अध्यक्षता गुरपाल सिंह संधू ने की। चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता कुलबीर गोजरा ने की। उन्होंने कंवल के महान उपन्यासकार बनने के विभिन्न कारणों पर प्रकाश डाला। कुलदीप सिंह ने कंवल कृत उपन्यासों के परस्पर विरोधी विषयों, किसान तथा ग़ैर-किसान समुदायों के बीच अंतर पर आधारित आलेख प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के अंत में उन्होंने संगोष्ठी में भाग लेने वाले समस्त प्रतिनिधियों तथा छात्रों का धन्यवाद भी किया।

राजस्थानी

'समकालीन राजस्थानी साहित्य' विषय पर संगोष्ठी

23-24 सितंबर 2023, श्रीगंगानगर, राजस्थान

साहित्य अकादेमी ने सृजन सेवा संस्थान के सहयोग से 23-24 सितंबर 2023 को चौधरी बल्लूराम गोदारा

संगोष्ठी का दृश्य

राजकीय कन्या महाविद्यालय, श्रीगंगानगर, राजस्थान में 'समकालीन राजस्थानी साहित्य' पर संगोष्ठी का आयोजन किया।

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि राजस्थानी के प्रख्यात साहित्यकार मंगत बादल ने कहा कि व्यक्ति को अपनी मातृभाषा के महत्त्व के प्रति सदैव जागरूक रहना चाहिए और इसके विकास के लिए लगातार काम करना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति अपनी मातृभाषा से दृढ़तापूर्वक जुड़ा रहता है तो वह अपनी जड़ों से जुड़ा रहता है। उन्होंने आगे कहा कि विश्वविद्यालयों में राजस्थानी को एक माध्यम के रूप में लागू करने का कारण नई पीढ़ी को इससे जोड़े रखना है। उन्होंने उपस्थित विद्यार्थियों से अपील की कि वे जनसंख्या जनगणना में राजस्थानी को अपनी मातृभाषा के रूप में नामांकित करें और दूसरों को भी अपनी मातृभाषा के प्रति स्नेह बढ़ाने के लिए प्रेरित करने का प्रयास करें। सत्र की अध्यक्षता राजस्थानी परामर्श मंडल के संयोजक अर्जुनदेव चारण ने की। उन्होंने कहा कि समकालीन राजस्थानी साहित्य केवल एक शब्द नहीं है। वास्तविक दुविधा यह है कि किसे समसामयिक माना जाए और किसे नहीं। उन्होंने कहा कि अगले दो दिनों में हम इस बात पर मंथन करेंगे कि राजस्थानी भाषा में समसामयिक कहानी, उपन्यास और अन्य विधाओं में क्या लिखा जा रहा है और समय के साथ चलने के लिए उनमें किन बदलावों की ज़रूरत है।

सृजन सेवा संस्थान के अध्यक्ष अरुण शहरिया 'टायर' ने कहा कि मातृभाषा के प्रति प्रेम की रक्षा करते हुए, यथासंभव अधिक से अधिक भाषाएँ सीखने का प्रयास करना चाहिए। कार्यक्रम की शुरुआत में साहित्य अकादेमी के सहायक संपादक ज्योति कृष्ण वर्मा ने सभी गणमान्य व्यक्तियों और अतिथियों का स्वागत किया और राजस्थानी साहित्य के इतिहास का संक्षिप्त विवरण दिया। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में राजस्थानी लेखकों के योगदान पर बात की।

प्रथम सत्र समकालीन राजस्थानी कविता विषय पर था। अंबिका दत्त ने सत्र की अध्यक्षता की और कहा कि समय को समझने के लिए ज्ञान महत्त्वपूर्ण है। इतिहासकार समय को बेहतर ढंग से समझते हैं और उन्हें प्रभावी ढंग से रेखांकित करने में सक्षम होते हैं। यही कारण है कि इतिहासकार और लेखक समकालीन समय को समझते हैं। प्रश्न यह है कि क्या समकालीन और क्लासिक कविता एक ही चीज़ है, जिसे स्पष्ट रूप से समझने की आवश्यकता है। गजेसिंह राजपुरोहित ने कहा कि समकालीन राजस्थानी कविता काव्यात्मक विरासत है।

द्वितीय सत्र में समसामयिक राजस्थानी कहानी पर विस्तृत चर्चा हुई। इस सत्र में अध्यक्षता करते हुए चेतन स्वामी ने कहा कि समसामयिक होने का अर्थ नए विचारों, शैलियों और तरीकों को अपनाना, लेखन का मूल्यांकन करना और उसे वर्तमान समय के अनुरूप लाना है। सत्यनारायण सोनी ने कहा कि 1970 के बाद भाषा, कहानी और कला में बदलाव देखा जा सकता है, पहले आदर्शवादी कहानियाँ ही लिखी जाती थीं। प्रारंभिक दौर की राजस्थानी कहानी में अधिकतर ग्रामीण परिवेश, आदर्शवादी कथानक, सांस्कृतिक संदर्भ और लोक संवाद शामिल थे, जबकि आधुनिक कहानी मुख्यत: भावनाओं के स्तर पर और जीवन के मार्मिक पहलुओं को इंगित

करने का काम करती है। संजय पुरोहित ने कहा कि समकालीन कहानी साहित्य के सृजनात्मक स्वरूप को तब तक नहीं समझा जा सकता, जब तक कि पहले उसकी पृष्ठभूमि का अध्ययन न किया जाए।

तृतीय सत्र में समकालीन राजस्थानी उपन्यास विषय पर नागेंद्र किराडू ने कहा कि राजस्थानी उपन्यासों का कालक्रम 1980 से प्रारंभ होता है, इससे पूर्व 20-25 उपन्यास ही मौजूद हैं। दिनेश पांचाल ने राजस्थानी उपन्यासों की सीमित संख्या पर चिंता व्यक्त की और कहा कि बहुत कम राजस्थानी उपन्यासों का दूसरी भाषाओं में अनुवाद हुआ है, इस पर भी विशेष ध्यान देने की ज़रूरत है। सत्र की अध्यक्षता करते हुए भरत ओला ने कहा कि पिछले 120 वर्षों में राजस्थानी उपन्यास ने बहुत धीमी यात्रा की है, इसका अधिकांश भाग सामाजिक कुरीतियों के विषयों पर ही लिखा गया है, महिलाओं और दलित सरोकारों पर भी लिखने की ज़रूरत है।

अगले दिन चतुर्थ सत्र समसामयिक राजस्थानी नाटक, निबंध एवं आलोचना विषय पर आयोजित हुआ। आशाराम भार्गव ने कहा कि समय की बाधाओं को पार करना ही समसामयिकता है। कृष्ण कुमार 'आशु' ने कहा कि राजस्थानी संस्कृति को समझने के लिए राजस्थानी निबंध अवश्य पढ़ना चाहिए। हरीश बी. शर्मा ने कहा कि राजस्थानी साहित्य में आलोचना पर कार्य अंशकालिक रूप में ही हुआ है। इस क्षेत्र में और अधिक काम करने की ज़रूरत है। पी.सी. आचार्य ने सत्र की अध्यक्षता की और वक्ताओं की प्रस्तुतियों के लिए उनकी सराहना की।

पाँचवाँ सत्र समकालीन युवा लेखकों, महिला लेखकों और बाल साहित्य पर था। सत्र की अध्यक्षता मीठेश निर्मोही ने की। उन्होंने कहा कि राजस्थानी साहित्य में बहुत कुछ किया गया है और बहुत कुछ करने की ज़रूरत है। इस सत्र में वक्ता थे - राजेंद्रदान देथा, नवज्योत भनोट और किरण बादल। समापन सत्र की अध्यक्षता अर्जुन देव चारण ने की और मुख्य अतिथि मधु आचार्य 'आशावादी' थे। उन्होंने कहा कि साहित्य एक पवित्र मंदिर है। राजस्थानी लेखकों को सबसे पहले अच्छा पाठक बनना चाहिए, जब विद्वान साहित्य को पढ़ना और सराहना बंद कर देते हैं तो वह धीरे-धीरे खत्म हो जाता है। सत्र की अध्यक्षता करते हुए अर्जुन देव चारण ने कहा कि आज के सोशल मीडिया युग में हमें अच्छी किताबें पढ़कर और उन्हें सोशल मीडिया पर साझा करके इसका उपयोग करने की आवश्यकता है। यह पाठकों तक नई पुस्तकों को प्रचारित करने के लिए एक बहुत ही उपयोगी माध्यम के रूप में भी कार्य करता है, जिससे पाठकों की संख्या में वृद्धि होगी। उन्होंने आगे कहा कि संगोष्ठी के दो दिनों के दौरान तीन पीढ़ियाँ मौजूद थीं, जो चर्चाओं को तीन गुना परिप्रेक्ष्य प्रदान करने के लिए एक महत्त्वपूर्ण कदम था। चौधरी बल्लूराम गोदारा राजकीय कन्या महाविद्यालय की प्राचार्य आशा शर्मा ने सभी साहित्यकारों का आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में स्थानीय साहित्यकार एवं साहित्यप्रेमी शामिल हुए।

सिंधी

'स्वातंत्र्योत्तर सिंधी साहित्य' पर द्विदिवसीय संगोष्ठी

9-10 सितंबर 2023, अहमदाबाद

साहित्य अकादेमी ने सिंधी साहित्य अकादेमी, गाँधीनगर के सहयोग से 9-10 सितंबर 2023 को होटल सिल्वर क्लाउड सभागार, आश्रम रोड, अहमदाबाद में 'स्वातंत्र्योत्तर सिंधी साहित्य' पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया। प्रारंभ में, साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों और दर्शकों का स्वागत किया। उन्होंने घोषणा की कि सिंधु सभ्यता एवं संस्कृति को सबसे प्राचीन सभ्यता माना जाता है। आज़ादी के बाद विकसित सिंधी साहित्य में विभाजन के निशान सचमुच

उद्घाटन सत्र में दीप प्रज्वलित करते हुए अतिथिगण

दिखाई देते हैं। आरंभिक वक्तव्य सिंधी परामर्श मंडल के संयोजक मोहन हिमथाणी ने प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि आज़ादी के बाद का सिंधी साहित्य समृद्ध सिंधु संस्कृति को आगे बढ़ाता है और इसे साबित करने के लिए उन्होंने कविता और गद्य का संदर्भ दिया। गुजरात साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष भाग्येश झा इस कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि थे। उन्होंने रेखांकित किया कि सिंधी समुदाय मेहनती है और उनका साहित्य अस्तित्व में है। सिंध के लोक साहित्य का बड़ा महत्त्व है, वहीं इसकी कहानियाँ देश के लिए प्रेरणास्रोत हैं। प्रेम प्रकाश ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया और पिछले 75 वर्षों में सिंधी साहित्य के विकास की रूपरेखा प्रस्तुत की। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता नामदेव ताराचंदाणी ने की। उन्होंने कहा कि सिंधी साहित्य पर दशकों से चर्चा होती रही है लेकिन उनके कुछ पहलू बचे हैं जिन पर प्रकाश डालने की आवश्यकता है और उसके लिए डिजिटल माध्यम प्रभावी हो सकता है। उद्घाटन सत्र में धन्यवाद ज्ञापन जयेंद्रसिंह जादव, महासचिव, गुजरात साहित्य अकादमी द्वारा दिया गया, जबकि सत्र का संचालन ओम प्रकाश नागर, प्रभारी अधिकारी, साहित्य अकादेमी, क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा किया गया।

'स्वातंत्र्योत्तर सिंधी कविता' विषय पर प्रथम सत्र की अध्यक्षता भगवान निर्दोष ने की और चारुमित्रा मखीजाणी, विनोद आसुदाणी और जयेश शर्मा ने आलेख प्रस्तुत किए। 'स्वातंत्र्योत्तर सिंधी उपन्यास, कहानी और बाल साहित्य' विषय को समर्पित द्वितीय सत्र की अध्यक्षता हुंदराज बलवाणी ने की, जबकि कैलाश शादाब ने सिंधी कहानी पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। द्वितीय आलेख वक्ता जया जादवाणी ने सिंधी उपन्यास पर चर्चा की। जबकि सिंधी बाल साहित्य पर रोशन गोलाणी का आलेख जेठो लालवाणी ने पढ़ा। 'स्वातंत्र्योत्तर सिंधी कथेतर साहित्य' विषय पर आधारित तृतीय सत्र की अध्यक्षता जेठो लालवाणी ने की, जबकि नाटकों पर सुरेश बबलाणी, आलोचना पर कमला गोकलाणी तथा कई अन्य विधाओं पर कलाधा मुतवा ने आलेख प्रस्तुत किए।

'स्वातंत्र्योत्तर सिंधी साहित्य-पत्रकारिता' विषयक चतुर्थ सत्र 10 सितंबर 2023 को आयोजित किया गया तथा इसकी अध्यक्षता नामदेव ताराचंदाणी ने की। आशा चाँद और सुनीता मोहनाणी ने आलेख प्रस्तुत किए।

समापन सत्र की अध्यक्षता मोहन हिमथाणी ने की, जबकि समापन वक्तव्य विनोद आसुदाणी ने प्रस्तुत किया। धन्यवाद ज्ञापन ओम प्रकाश नागर, प्रभारी अधिकारी, साहित्य अकादेमी, क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा प्रस्तुत किया गया। संगोष्ठी में साहित्य प्रेमियों, छात्रों और मीडियाकर्मियों ने भाग लिया।

तमिऴ

'वल्लालर - 200' पर संगोष्ठी

28-29 अगस्त 2023, मदुरै

साहित्य अकादेमी के उप-क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै ने त्यागराजार कॉलेज, मदुरै के सहयोग से 28-29 अगस्त 2023 को कॉलेज परिसर में 'वल्लालर - 200' पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया। टी.एस. चंद्रशेखर राजू साहित्य अकादेमी, चेन्नै के कार्यालय प्रभारी ने प्रतिभागियों और दर्शकों का स्वागत किया। उन्होंने साहित्य अकादेमी की साहित्यिक गतिविधियों के बारे में संक्षेप

उद्घाटन सत्र में उपस्थित अतिथिगण

में बताया। कॉलेज के सचिव करुमुथु के. त्यागराजन ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया और कहा कि तमिऴ विभाग के छात्रों को वल्लालर की शिक्षाओं का गहन अध्ययन तथा शोध करना चाहिए। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के कुलपति प्रोफ़ेसर शांतिधुलिपुड़ी पंडित ने उद्घाटन वक्तव्य देते हुए कहा कि प्राचीन काल से ही विभिन्न कालखंडों में तमिऴ भाषा लोकप्रिय रही है। उन्होंने साहित्यिक कार्यक्रमों के माध्यम से साहित्य और भाषा को बढ़ावा देने में निरंतर प्रयास करने के लिए साहित्य अकादेमी की सराहना करते हुए कहा कि यह वर्तमान पीढ़ी के लिए वल्लालर से सीखने और स्वयं को तैयार करने का सुअवसर है, जो एक आध्यात्मिक नेता, कवि, चिकित्सक आदि थे। तमिऴ परामर्श मंडल के संयोजक आर. थामोथरन ने संगोष्ठी के विषय पर विस्तार से चर्चा की। आलोचक के. ज्ञानसंबंदन ने वल्लालर के शाकाहार के सख़्त पालन के बारे में बात की। 'दिनमणि' के संपादक के. वैद्यनाथन ने विशेष वक्तव्य दिया। उन्होंने वल्लालर के साहित्यिक योगदान के बारे में बताया और कहा कि वल्लालर का प्रेम इंसानों से आगे बढ़कर जीवन के सभी रूपों को समाहित करता है, चाहे वह जानवर हों या पौधे। प्राचार्य डी. पांडियाराजा ने धन्यवाद ज्ञापन किया। प्रथम सत्र में के. पंजंगम ने अध्यक्षता की और 'वल्लालर एवं गरीबी उन्मूलन' पर आलेख प्रस्तुत किया।

जी.सतीश ने 'वल्लालर के चमत्कार' पर तथा एम. लोगेश्वरन ने 'वल्लालर की टिप्पणियों की विशेषताएँ' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। द्वितीय सत्र में पी.एन. कमला ने 'अरुलपेरुन्जोथी अगावल-संकेत और अभिसंकेत' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। याज़ एस. चंद्रा ने 'वल्लालर इन ए मॉडर्न पर्सपेक्टिव' पर आलेख प्रस्तुत किया। स्टालिनराजंगम ने 'आधुनिक शैव आंदोलन और वल्लालर' पर, जी. गुरुसामी ने 'वल्लालर की दार्शनिक उप्पत्ति' पर तथा आर. इलक्कुवन ने 'दक्षिणी तमिळनाडु में वल्लालर की लोक रचना' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी के दूसरे दिन, तृतीय सत्र में पी. चिदंबरनाथन ने अध्यक्षता की और 'वल्लालर का अद्वैत सिद्धांत' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उनके बाद, पी. आनंदकुमार ने 'वल्लालर के विचारों में व्यक्तिवाद और समाजवाद' पर, आर. मालारविज़ी मंगयारकारसी ने 'सर्वव्यापी के साथ विलय' पर तथा वी. देवेंदिरन ने 'प्रिंट में वल्लार की रचनाएँ' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

चतुर्थ सत्र में, के. पजानिवेलो ने 'वल्लालर के पेरुबाथेसम : ए नैराटोलॉजिकल पर्सपेक्टिव' पर, एस. गांधीदुरई ने 'वल्लालर : द सोशल डॉक्टर' पर तथा एस. सुजा ने '19वीं सदी का समाज और वल्लालर' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

समापन सत्र में, आर. मालारविझी मंगयारकारसी ने स्वागत वक्तव्य दिया। प्राचार्य डी. पांडियाराजा ने सत्र की अध्यक्षता की। आलोचक सोलोमन पप्पैया ने अपने समापन वक्तव्य में वल्लालर के जीवन और शिक्षाओं के बारे में चर्चा करते हुए कहा कि वल्लालर ने ईश्वर को एक शाश्वत प्रकाश के रूप में देखा और खुद को दार्शनिक टिप्पणियों तक सीमित नहीं रखा। सोलोमन पप्पैया ने बताया कि उनकी शिक्षाएँ सरल थीं, जबकि उनके छंद आध्यात्मिक थे, उन्होंने इस तथ्य को कभी नहीं भुलाया कि जब हम इस धरती पर ज़रूरतमंदों की सेवा करते हैं तो हम ईश्वर की सबसे अच्छी सेवा

करते हैं। तमिळ विभाग के सहायक प्रोफ़ेसर एम. परमासिवन ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में छात्रों, शोधार्थियों, प्राध्यापकों और कई अन्य स्थानीय साहित्यकारों ने सहभागिता की।

तेलुगु

'भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में तेलुगु साहित्य का योगदान' पर संगोष्ठी

29-30 अगस्त, 2023, हैदराबाद

साहित्य अकादेमी के बेंगळूरु स्थित क्षेत्रीय कार्यालय ने तेलंगाना सरकार के भाषा और संस्कृति विभाग के सहयोग से 29-30 अगस्त 2023 को हैदराबाद के रवींद्र भारती में 'भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में तेलुगु साहित्य का योगदान' विषय पर दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में, साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों और दर्शकों का स्वागत किया और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में तेलुगु साहित्य - कविताओं, उपन्यासों, कहानियों और पत्रकारिता से लेकर लोक और मौखिक परंपराओं तक के विविध योगदानों के बारे में संक्षेप में बात की। साहित्य अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल की संयोजक सी. मृणालिनी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन ने साहित्य को बहुत प्रभावित किया और साहित्य ने भी आंदोलन को गति दी तथा स्वतंत्रता

बीज-भाषण देते हुए श्री वद्रेवु चिन्ना वीरभद्रुडु

के लिए लड़ने के लिए ऊर्जा को प्रेरित किया। सत्र में विशिष्ट अतिथि मामिदी हरिकृष्ण ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में विभिन्न तेलुगु साहित्यिक योगदानों के बारे में बात की और संगोष्ठी के आयोजन के लिए साहित्य अकादेमी को बधाई दी। अपने बीज-भाषण में, प्रख्यात कवि और आलोचक वद्रेवु चिन्ना वीरभद्रुडु ने विभिन्न साहित्यिक योगदानों पर प्रकाश डाला, लेकिन इस दिशा में तेलुगु साहित्यिक अनुसंधान में कमियों की ओर भी इशारा किया। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान कई घटनाओं और पहलुओं को विभिन्न कारणों से दर्ज नहीं किया गया था और इसलिए यह नहीं माना जा सकता कि वे वास्तविक नहीं थे। एम. देवेंद्र ने उद्घाटन सत्र के प्रतिभागियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता एस.वी. सत्यनारायण ने की। इस सत्र में तीन प्रतिष्ठित विद्वानों दारला वेंकटेश्वर राव, नागसुरी वेणुगोपाल तथा सांगिसेट्टी श्रीनिवास ने क्रमशः 'स्वतंत्रता साहित्य : नई अवधारणाएँ', 'स्वतंत्रता साहित्य : गाँधीवादी दर्शन' तथा 'स्वतंत्रता आंदोलन : प्रेस की भूमिका' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता सांगिसेट्टी श्रीनिवास ने की। इस सत्र में तीन प्रतिष्ठित विद्वानों एस.वी. सत्यनारायण, दोरावेती चेन्नैय्या तथा कोयी कोटेश्वर राव ने क्रमशः 'स्वतंत्रता साहित्य : गीत', 'स्वतंत्रता साहित्य : कविताएँ' तथा 'स्वतंत्रता आंदोलन : मुस्लिम कवियों का योगदान' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। तृतीय सत्र की अध्यक्षता पी. वारिजा रानी ने की। तीन प्रतिष्ठित विद्वानों ए. भानु प्रकाश, के. हनुमंत राव तथा सुदामा ने क्रमशः 'स्वतंत्रता साहित्य : पौराणिक नाटक', 'स्वतंत्रता साहित्य : सामाजिक नाटक' तथा 'स्वतंत्रता आंदोलन में रेडियो की भूमिका' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता कोटला हनुमंत राव ने की। तीन प्रतिष्ठित विद्वानों एलिजाबेथ जयाकुमारी, के.पी. अशोक कुमार तथा जी. सुदर्शन ने क्रमशः 'स्वतंत्रता साहित्य :

ऐतिहासिक उपन्यास', 'स्वतंत्रता साहित्य : सामाजिक उपन्यास' तथा 'स्वतंत्रता साहित्य : कहानियाँ' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। पंचम सत्र की अध्यक्षता एस. रघु ने की। तीन प्रतिष्ठित विद्वानों आर. सीतारामराव, वाई. सुभाषिनी तथा वी. त्रिवेणी ने क्रमश: 'रोमांटिक आंदोलन और स्वतंत्रता साहित्य', 'प्रगतिशील आंदोलन और स्वतंत्रता साहित्य' तथा 'स्वतंत्रता आंदोलन : स्त्री और दलित चेतना' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। तेलंगाना साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष जे. गौरी शंकर ने समापन सत्र की अध्यक्षता की और कहा कि स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान के तेलंगाना के तेलुगु साहित्य को अन्य क्षेत्रों तथा संस्कृतियों तक ले जाना होगा। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि अम्मांगी वेणुगोपाल ने तेलंगाना में हो रहे समानांतर संघर्षों तथा उसने राष्ट्रीय आंदोलन को किस प्रकार प्रेरित किया, पर अपने विचार व्यक्त किए। प्रख्यात इतिहासकार जीतेंद्र बाबू ने अपने समापन वक्तव्य में कहा कि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के कई गुमनाम नायकों के संघर्षों को दर्ज नहीं किया गया है तथा राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास में उसे पुन: लिखने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि तेलंगाना में इस प्रकार के कई राष्ट्रीय संघर्षों की उपेक्षा की गई है। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम ने हमें 'राष्ट्रीय आंदोलन में तेलुगु साहित्य की भूमिका' के पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता का स्मरण कराया है। इम्मादी महिंदर ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

उर्दू

'स्वतंत्रता संग्राम में उर्दू साहित्य का योगदान' विषय पर संगोष्ठी

5-6 अक्तूबर 2023, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा 5-6 अक्तूबर 2023 को 'स्वतंत्रता संग्राम में उर्दू साहित्य का योगदान' विषय पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। 5 अक्तूबर 2023

स्वागत व्याख्यान देते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव

को आयोजित उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात उर्दू विद्वान अख़्तर उल-वासे ने की, बीज वक्तव्य ख़्वाजा गुलामूसैयदैन ने, आरंभिक वक्तव्य उर्दू परामर्श मंडल के संयोजक चंद्रभान ख्याल ने, उद्घाटन वक्तव्य मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी हैदराबाद के कुलपति सैयद ऐनुल हसन ने प्रस्तुत किया। इस सत्र की मुख्य अतिथि प्रख्यात उर्दू विदुषी सैयदा सैयदैन हमीद थी। सभी का स्वागत साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने किया। संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए प्रो. अख़्तर उल-वासे ने कहा कि भाषाओं का कोई मज़हब नहीं होता बल्कि मज़हब को ज़बानों की ज़रूरत होती है। ज़बानें संवाद पैदा करती हैं, विवाद नहीं। उन्होंने कहा कि उर्दू वो भाषा है जिसने ना सिर्फ पूरे देश को एकजुट किया है बल्कि स्वतंत्रता संग्राम में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के बहुत सारे अन्य पहलूओं का ज़िक्र करते हुए कहा कि उर्दू साहित्य में स्त्री आंदोलन के हवाले से मैं इन दो व्यक्तियों को ख़ास मानता हूँ, पहला डिप्टी नज़ीर अहमद और दूसरे अलताफ़ हुसैन हाली। अपने उद्घाटन वक्तव्य में मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनीवर्सिटी के वाइस चांसलर प्रो. सैयद ऐनुल हसन ने कहा कि भारतीय पंचतंत्र का गहरा प्रभाव फ्रांस की क्रांति पर पड़ा है। उन्होंने प्रेमचंद के *सोज़-ए-वतन* समेत ऐसी तमाम किताबों का ज़िक्र किया जिन्हें अंग्रेज़ों ने ज़ब्त कर लिया था।

मुख्य अतिथि प्रो. सैयदा सैयदैन हमीद ने अपने परदादा मौलाना अलताफ़ हुसैन हाली और वालिद ख़्वाजा गुलामूसैयदैन के हवाले से स्वतंत्रता संग्राम पर प्रकाश डाला।

आरंभ में उर्दू परामर्श मंडल के संयोजक चंद्रभान ख़्याल ने संगोष्ठी के उद्देश्य के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान कई विस्मृत साहित्यकारों का उल्लेख करते हुए कहा की नई पीढ़ी को उनके बारे में जानना समझना ज़रूरी है। अगला सत्र डॉ. नरेश की अध्यक्षता में हुआ जिसमें महमूद मलिक, चश्मा फ़ारूक़ी और नौशाद मंज़र ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। दिन का अंतिम सत्र माहिर मंसूर की अध्यक्षता में संपन्न हुआ जिसमें क़ासिम खुर्शीद, अबू ज़हीर रब्बानी और शहनाज़ रहमान ने अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए। 6 अक्तूबर 2023 को आयोजित प्रथम सत्र शहज़ाद अंजुम की अध्यक्षता में हुआ जिसमें साजिद क़ादरी, शाज़िया उमैर और अनवारूल हक़ ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। अंतिम सत्र की अध्यक्षता चंद्रभान ख़याल ने की और रज़िया हमीद और अजय मालवीय ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

असमिया

'असमिया स्त्री लेखकों के उपन्यासों में स्त्री विषयवस्तु का प्रतिनिधित्व' विषय पर परिसंवाद

20 अगस्त 2023, जोरहाट, असम

साहित्य अकादेमी ने असम साहित्य सभा के केंद्रीय कार्यालय और जोरहाट ज़िला साहित्य सभा के सहयोग से 20 अगस्त 2023 को दानबीर राधाकांत संदिकै भवन, जोरहाट, असम में 'असमिया स्त्री लेखकों के उपन्यासों में स्त्री विषयवस्तु का प्रतिनिधित्व' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया।

परिसंवाद का दृश्य

उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव देवेंद्र कुमार देवेश ने स्वागत वक्तव्य दिया। उन्होंने भारतीय स्त्री लेखन के प्रति समर्पित साहित्य अकादेमी की साहित्यिक गतिविधियों पर बात की। आरंभिक वक्तव्य दिगंत विश्व शर्मा, संयोजक, असमिया परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी द्वारा प्रस्तुत किया गया। उन्होंने इस संदर्भ में ऋषि अरबिंद की रचनाओं का ज़िक्र करते हुए भारत की साहित्यिक विरासत पर बात की। सत्र के मुख्य अतिथि असम साहित्य सभा के अध्यक्ष सूर्यकांत हाज़रिका थे। उन्होंने स्नेहा देवी, नीलिमा शर्मा, निरुपमा बरगोहाईं, प्रबीना सैकिया, अनिमा गुहा, मामोनी रायसॅम गोस्वामी, अपर्णा महंत जैसी अन्य प्रमुख असमिया स्त्री लेखकों का उल्लेख किया। उन्होंने उनके लेखन के विषयों पर भी बात की। उन्होंने स्त्रियों के मुद्दों को आगे बढ़ाने में पश्चिम के स्त्री आंदोलनों की भूमिका पर बात की। बीज-वक्तव्य अनुराधा शर्मा पुजारी, सदस्य, असमिया परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी द्वारा प्रस्तुत किया गया। उन्होंने भारत में स्त्री लेखन की परंपरा पर बात की, जो अपने पश्चिमी समकक्ष से भी पुरानी है। उन्होंने बौद्ध धर्म और अन्य कारकों पर भी प्रकाश डाला, जिन्होंने पुराने युग में भारत में स्त्रियों के लेखन को प्रभावित किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता जोरहाट ज़िला साहित्य सभा के अध्यक्ष भाबा गोस्वामी ने की। उद्घाटन सत्र का धन्यवाद ज्ञापन रामानंदन ब'रा ने किया।

प्रथम सत्र में, मौसमी रेखा खाउंद और पल्लवी डेका ने ज्योति प्रसाद सैकिया की अध्यक्षता में परिसंवाद के विषय पर आलेख प्रस्तुत किए। ज्योति प्रसाद सैकिया ने कहा कि स्त्रियों के लेखन में उनके अनुभव केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। द्वितीय सत्र में, नयनज्योति भुइयाँ और संकब कौशिक बरुआ ने ध्रुवज्योति नाथ की अध्यक्षता में आलेख प्रस्तुत किए। सभी वक्तव्यों ने बदलते समय के संदर्भ में असम की स्त्रियों के लेखन की उत्पत्ति और विकास पर जोर दिया गया।

'असमिया साहित्य में राष्ट्रवाद और जातीय पहचान' पर परिसंवाद

22 अगस्त 2023, उत्तरी लखीमपुर, असम

साहित्य अकादेमी ने लखीमपुर कॉमर्स कॉलेज, उत्तरी लखीमपुर, असम के सहयोग से 22 अगस्त 2023 को लखीमपुर कॉमर्स कॉलेज, उत्तरी लखीमपुर, असम में 'असमिया साहित्य में राष्ट्रवाद और जातीय पहचान' पर परिसंवाद का आयोजन किया।

उद्घाटन सत्र में स्वागत वक्तव्य साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव देवेंद्र कुमार देवेश ने दिया। उन्होंने असमिया साहित्य को समृद्ध करने के साथ-साथ असमिया समुदायों की पहचान की साहित्यिक छवि के निर्माण में असमिया समुदायों के योगदान पर बात की। उन्होंने साहित्यिक गतिविधियों के माध्यम से भारत की विविध भाषाई परंपराओं को बढ़ावा देने में साहित्य अकादेमी की भूमिका पर भी बात की। आरंभिक वक्तव्य दिगंत विश्व शर्मा, संयोजक, असमिया परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी द्वारा प्रस्तुत गया। उन्होंने ऋषि अरबिंद के राष्ट्रवाद के विचारों का ज़िक्र करते हुए राष्ट्रवाद की अवधारणा के विभिन्न अर्थों पर बात की। बीज-वक्तव्य प्रख्यात उपन्यासकार फणींद्र कुमार देव चौधरी ने दिया। सत्र की अध्यक्षता लोहित हाज़रिका, प्राचार्य, लखीमपुर कॉमर्स कॉलेज, उत्तरी लखीमपुर कॉलेज, असम ने की। उन्होंने असम में राष्ट्रवाद की धारणा बनाने में शंकरदेव के लेखन की भूमिका पर बात की। इस संदर्भ में, उन्होंने असमिया में शुरुआती लेखन का भी उल्लेख किया। उद्घाटन सत्र का धन्यवाद ज्ञापन हरिनी पटवारी दास, सहायक प्रोफ़ेसर, अंग्रेज़ी विभाग, लखीमपुर कॉमर्स कॉलेज द्वारा किया गया। प्रथम सत्र की अध्यक्षता सत्यकाम बरठाकुर ने की, जिसमें अरबिंद राजखोवा और बेदब्रत देव मिश्रा वक्ता थे। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता माधुर्य मंडित बरुआ ने की और वक्ता के रूप में ज्योतिस्मिता शर्मा और विभा दत्ता थीं।

व्याख्यान देते हुए ज्योतिस्मिता शर्मा

बाङ्ला

'बाङ्ला भाषा में तुलनात्मक साहित्य' पर परिसंवाद

19 सितंबर 2023, कोलकाता

आरंभिक वक्तव्य देते हुए डॉ. मृण्मय प्रामाणिक

साहित्य अकादेमी ने तुलनात्मक भारतीय भाषा और साहित्य विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय के सहयोग से, सीनेट हॉल, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता में 'बाङ्ला भाषा में तुलनात्मक साहित्य' पर परिसंवाद का आयोजन किया।

स्वागत वक्तव्य साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव देवेंद्र कुमार देवेश ने दिया। उन्होंने भारतीय भाषाओं के बीच आंतरिक संबंधों की परंपरा के बारे में संक्षेप में बात की। आरंभिक वक्तव्य कलकत्ता विश्वविद्यालय के तुलनात्मक भारतीय भाषा और साहित्य विभाग के विभागाध्यक्ष मृण्मय प्रामाणिक द्वारा दिया गया। उन्होंने बाङ्ला में तुलनात्मक साहित्य के क्षेत्र को फैलाने में आशुतोष मुखर्जी की भूमिका के विश्लेषण के साथ-साथ बाङ्ला में तुलनात्मक साहित्य के प्राथमिक साहित्यिक ग्रंथों पर विस्तार से बात की। उद्घाटन सत्र में, बीज-भाषण अभीक मजुमदार ने दिया, जिसकी अध्यक्षता बारिदबरन घोष ने की। अभीक मज़ूमदार ने साहित्यिक अनुशासन के रूप में तुलनात्मक साहित्य के विभिन्न पहलुओं के बारे में विस्तार से बात की। बारिदबरन घोष ने बंगाल के कई लेखकों पर एक अध्ययन प्रस्तुत किया और बताया कि उन्होंने किस प्रकार बाङ्ला में तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन की नींव रखी। उद्घाटन सत्र का धन्यवाद ज्ञापन कलकत्ता विश्वविद्यालय के तुलनात्मक भारतीय भाषा और साहित्य विभाग के सहायक अभिषेक बोस ने प्रस्तुत किया।

परिसंवाद का प्रथम सत्र 'तुलनात्मक साहित्य : बंगाल, भारत और परे' विषय पर केंद्रित था। सत्र में विप्लव चक्रवर्ती, सुचरिता चट्टोपाध्याय और सुमित चक्रवर्ती ने प्रासंगिक विषयों पर आलेख प्रस्तुत किए। विप्लव चक्रवर्ती ने विभिन्न भारतीय भाषाओं में भारतीय साहित्य में दर्शाए गए आधुनिकतावाद के आगमन पर बात की। उन्होंने इस क्षेत्र में अनेक भारतीय भाषाओं में रचित ग्रंथों पर आधारित तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया। उन्होंने प्रमुख भारतीय ग्रंथों के साथ-साथ भारतीय भाषाओं में साहित्यिक पत्रिकाओं के उद्भव का उल्लेख किया। सुचरिता चट्टोपाध्याय ने कनाडाई साहित्य और बाङ्ला साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया और साथ ही इन साहित्यिक परंपराओं में पाई जाने वाली समानताओं और अंतरों का भी उललेख किया। सुमित चक्रवर्ती ने 'फ्रेनोलॉजी और सांस्कृतिक अभ्यास : उन्नीसवीं सदी के दो ग्रंथों का तुलनात्मक विश्लेषण' विषय पर बात की। द्वितीय सत्र का शीर्षक था—'बंगाल में तुलनात्मक साहित्य : कुछ महत्त्वपूर्ण कारक'। इस सत्र में अमित कुमार भट्टाचार्य, नीलांजना भट्टाचार्य, ताप्ती मुखर्जी और इप्सिता हालदर द्वारा आलेख प्रस्तुत किए गए। अमित कुमार भट्टाचार्जी ने विभिन्न भारतीय भाषाओं के सिद्धांत और व्यवहार में पाए जाने वाले विभिन्न प्रकार के रस-साहित्य पर बात की, इप्सिता हालदर ने विभिन्न भारतीय भाषाओं में कुरान शरीफ़ के संस्करणों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया। डॉ नीलांजना भट्टाचार्य ने विभिन्न भारतीय भाषाओं में स्त्रियों के प्रस्तुतीकरण का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया। ताप्ती मुखर्जी ने बाङ्ला में तुलनात्मक साहित्य की चर्चा को बढ़ावा देने में विश्व भारती सहित कई साहित्यिक संगठनों की भूमिका का विश्लेषण प्रस्तुत किया। परिसंवाद की कार्यवाही का संचालन कलकत्ता विश्वविद्यालय के तुलनात्मक भारतीय भाषा और साहित्य विभाग की सहायक प्रोफ़ेसर दीपान्विता मंडल ने किया।

बाङ्ला

बाङ्ला में बाल साहित्य पर परिसंवाद

15 नवंबर 2023, कोलकाता

साहित्य अकादेमी ने 15 नवंबर 2023 को अपने सभागार में 'बाङ्ला में बाल साहित्य' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव

उद्घाटन वक्तव्य देते हुए श्री शीर्षेन्दु मुखोपाध्याय

के. श्रीनिवासराव ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने प्रमुख बाङ्ला बाल लेखकों तथा बाङ्ला बाल साहित्य के इतिहास पर संक्षेप में अपनी बात रखी। साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य शीर्षेन्दु मुखोपाध्याय ने सुकुमार राय तथा रवींद्रनाथ ठाकुर जैसे प्रख्यात बाङ्ला लेखकों द्वारा रचित किशोर साहित्य का उल्लेख किया। उन्होंने बाल साहित्य पर शोध के महत्त्व पर बल दिया। बीज-भाषण देते हुए शीर्षेन्दु गुप्ता ने माता-पिता द्वारा बच्चों को बाल साहित्य की पुस्तकें उपलब्ध कराने के महत्त्व पर बल दिया। उन्होंने *बालक, सखा, मुकुल, रंगमंच, रामधनु, किशोर भारती, शुकतारा* आदि प्रख्यात साहित्यिक पत्रिकाओं के साथ-साथ बाङ्ला में बाल साहित्य में उनके योगदान का उल्लेख किया। पश्चिम बंगाल सरकार के माननीय शिक्षा मंत्री तथा साहित्य अकादेमी के बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक व्रात्य बसु ने बाल शिक्षा तथा बाल साहित्य के बीच संबंधों पर प्रकाश डाला। उन्होंने बाल साहित्य के क्षेत्र में विद्यासागर, सुकुमार राय, परशुराम आदि जैसे दिग्गजों के कार्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने बाल साहित्य के अनुवादकों के संदर्भ में मधुसूदन मुखोपाध्याय, खगेंद्रनाथ मित्र, सुधींद्रनाथ राहा, मानबेंद्र बंद्योपाध्याय आदि की रचनाओं का उल्लेख किया। सत्र का धन्यवाद ज्ञापन साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव देवेंद्र कुमार देवेश ने किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता अशोक कुमार मित्र ने की। इस सत्र में श्री आशीष खास्तगीर ने बाङ्ला में बाल साहित्य की उत्पत्ति और विकास पर बात की। सुश्री रूपा मजुमदार ने बाङ्ला में समकालीन बाल साहित्य पर बात की। उल्लास मल्लिक ने व्यक्तिपरक दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए बाल साहित्य को मासूमियत और अन्वेषण का साहित्य बताते हुए कहा कि इसमें तर्क की एक अलग भावना का इस्तेमाल किया जाता है। सभी वक्ताओं ने अपने भाषणों में महत्त्वपूर्ण ग्रंथों तथा लेखकों का विस्तार से उल्लेख किया। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में अशोक कुमार मित्र ने बाङ्ला में बाल साहित्य की यात्रा पर संक्षेप में बात की।

द्वितीय सत्र में, सीज़र बागची ने बाङ्ला में बाल साहित्य को समृद्ध करने में साहित्यिक पत्रिकाओं की भूमिका पर तथा पार्थजित गंगोपाध्याय ने बाङ्ला में बाल साहित्य के संपादन के मापदंडों पर अपने विचार दर्शकों के साथ साझा किए। प्रणबेश माइती ने बाल साहित्य के महत्त्व को व्यक्त करने में चित्रण तथा पेंटिंग की भूमिका पर अपने विचार व्यक्त किए। इस सत्र के अध्यक्ष त्रिदिब कुमार चटर्जी थे। उन्होंने बाङ्ला में बाल साहित्य के क्षेत्र का विस्तार करने में प्रकाशकों की भूमिका पर प्रकाश डाला। परिसंवाद का संचालन साहित्य अकादेमी के सहायक संपादक क्षेत्रवासी नायक ने किया।

बोडो

'मनोरंजन लाहिड़ी का व्यक्तित्व और कृतित्व' पर परिसंवाद

8 सितंबर 2023, क'क्राझार, असम

साहित्य अकादेमी ने क'क्राझार गवर्नमेंट कॉलेज, क'क्राझार, असम के सहयोग से 8 सितंबर 2023 को क'क्राझार गवर्नमेंट कॉलेज, क'क्राझार, असम में 'मनोरंजन लाहिड़ी का व्यक्तित्व और कृतित्व' पर परिसंवाद का आयोजन किया।

कार्यक्रम में स्वागत वक्तव्य साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव देवेंद्र कुमार देवेश ने दिया।

व्याख्यान देते हुए जैश्री बोरो

कार्यक्रम का उद्घाटन क'क्राझार सरकारी कॉलेज के प्राचार्य दिमाशा डी. मुसाहारी ने किया। आरंभिक वक्तव्य साहित्य अकादेमी के बोडो परामर्श मंडल की सदस्य जैश्री बोरो ने दिया। बीज-वक्तव्य तेरेन चौधरी द्वारा दिया गया। बोडो साहित्य सभा के अध्यक्ष, सुरथ नारज़ारी ने विचारोत्तेजक वक्तव्य दिया। उद्घाटन सत्र का धन्यवाद ज्ञापन अंजली बसुमतारी, एसोसिएट प्रोफ़ेसर और विभागाध्यक्ष, भौतिकी विभाग, के.जी. कॉलेज द्वारा प्रस्तावित किया गया। आलेख-पाठ सत्र में, अनिल कुमार बसुमतारी, दीपाली खेरकटारी, इंद्रजीत ब्रह्म और तुलन मुसाहारी ने गोबिंदो बोरो की अध्यक्षता में आलेख प्रस्तुत किए। वक्ताओं ने मनोरंजन लहरी के जीवन और लेखन पर बात की। उन्होंने उनके प्रमुख साहित्यिक कार्यों के संदर्भ में उनके लेखन के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की।

डोगरी

'डोगरी से तथा अन्य भाषाओं से डोगरी में अनुवाद के विशेष संदर्भ में साहित्य के रूप में अनुवाद' विषय पर परिसंवाद

03 फ़रवरी 2024, जम्मू, जम्मू और कश्मीर

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली ने जम्मू और कश्मीर कला, संस्कृति और भाषा अकादमी के सहयोग से 3 फ़रवरी 2024 को राइटर्स क्लब, जम्मू और कश्मीर अकादमी, जम्मू, जम्मू और कश्मीर में 'डोगरी से तथा अन्य भाषाओं से डोगरी में अनुवाद के विशेष संदर्भ में साहित्य के रूप में अनुवाद' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात डोगरी कवि और साहित्यिक समालोचक श्री दर्शन दर्शी ने की। साहित्य अकादेमी की ओर से साहित्य अकादेमी के डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक श्री मोहन सिंह ने स्वागत व्याख्यान तथा आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया। विख्यात लेखक डॉ. ज्ञान सिंह ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। उनके पश्चात् जम्मू और कश्मीर कला, संस्कृति एवं भाषा अकादमी के सचिव तथा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री भरत सिंह मनहान ने अपने संबोधन में सभी से भाषाओं के संरक्षण करने का आग्रह किया। श्री दर्शन दर्शी ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में डोगरी भाषा और साहित्य दोनों के उत्थान के लिए साहित्य अकादेमी द्वारा समय-समय पर की गई पहल पर प्रकाश डाला। जम्मू-कश्मीर

बीज-भाषण प्रस्तुत करते हुए डॉ. ज्ञान सिंह

अकादमी की सहायक संपादक सुश्री रीता कादयाल ने सहयोग के लिए साहित्य अकादेमी को धन्यवाद दिया। उद्घाटन सत्र के दौरान, गणमान्य व्यक्तियों ने साहित्य अकादेमी द्वारा नव प्रकाशित डोगरी पुस्तकों का विमोचन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री जितेंद्र उधमपुरी ने की तथा उपन्यास के अनुवाद पर श्री प्रकाश प्रेमी तथा कविता के अनुवाद पर श्री निर्मल विनोद ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. अर्चना केसर ने की तथा श्री जगदीप दुबे ने नाटक के अनुवाद तथा श्री राधा शर्मा ने कहानी के अनुवाद पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। परिसंवाद में बड़ी संख्या में साहित्य प्रेमी तथा प्रमुख डोगरी लेखक एवं विद्वान उपस्थित हुए। धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

अंग्रेज़ी

'अनुवादों में रवींद्रनाथ टैगोर की प्राप्ति' पर परिसंवाद

9 मई 2023, नई दिल्ली

गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर की 162वीं जयंती के उपलक्ष्य में साहित्य अकादेमी ने 9 मई 2023 को सायं 4:00 बजे अकादेमी सम्मेलन कक्ष, तृतीय तल, रवींद्र भवन, नई दिल्ली में 'अनुवादों में रवींद्रनाथ टैगोर की प्राप्ति' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया, जिसमें पाँच प्रख्यात लेखकों एवं विद्वानों – श्री प्रयाग शुक्ल (हिंदी),

स्वागत व्याख्यान देते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव

प्रो. राधा चक्रवर्ती (अंग्रेज़ी), डॉ. मोहनजीत (पंजाबी), श्री फ़ेसीन एजाज़ (उर्दू) तथा प्रो. एच.एस. शिवप्रकाश (कन्नड) ने भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता अंग्रेज़ी की प्रख्यात लेखिका एवं विदुषी तथा साहित्य अकादेमी के अंग्रेज़ी परामर्श मंडल की संयोजक प्रो. मालाश्री लाल ने की। प्रारंभ में, साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने सभी अतिथि वक्ताओं का उत्तरीय से स्वागत किया।

श्री फ़ेसीन एजाज़ ने टैगोर की रचनाओं का अनुवाद करते समय अपने अनुभव साझा किए। उन्होंने कहा कि टैगोर ने अपने गीतों में स्वयं को जीवंत रखा। प्रो. एच.एस. शिवप्रकाश ने कन्नड के विशेष संदर्भ में टैगोर की रचनाओं के अनुवाद के बारे में चर्चा की। उन्होंने अन्य लेखकों पर टैगोर के प्रभाव पर चर्चा करते हुए बताया कि टैगोर की रचनाओं के कई अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद की संख्या को बढ़ाया जाना चाहिए।

श्री मोहनजीत ने टैगोर की रचनाओं में भाषा, राजनीति, मिथक, दर्शन तथा आध्यात्मिकता पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि टैगोर सिख गुरुओं और विद्वानों, विशेष रूप से गुरु नानक, बंदा बहादुर तथा भाई तारू सिंह से बहुत प्रभावित थे। श्री प्रयाग शुक्ल ने कोलकाता में बिताए अपने बचपन के दिनों को याद करते हुए बताया कि उन्होंने किस प्रकार टैगोर के साहित्य का हिंदी में अनुवाद करना आरंभ किया, जिसे करने में उन्हें बहुत आनंद आया। उन्होंने इस बात पर भी बल दिया कि अन्य भारतीय भाषाओं में टैगोर की कृतियों के अनुवाद की संख्या को और अधिक बढ़ाया जाना चाहिए।

प्रो. राधा चक्रवर्ती ने टैगोर के कुछ गीतों का अंग्रेज़ी अनुवाद सुनाया। उन्होंने अपने आलेख में कहा कि टैगोर की कविताओं में शब्दों की ताकत है तथा उनके अनुवाद विभिन्न भाषाई बाधाओं को पार करते हैं तथा इसके साथ ही उन्होंने टैगोर को एशिया का प्रथम नोबेल पुरस्कार विजेता भी बताया। कार्यक्रम की अध्यक्ष प्रो. मालाश्री

लाल ने सभी का आभार व्यक्त किया तथा रवींद्रनाथ टैगोर की कहानी *मोह माया* का अनुवाद प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में कई प्रतिष्ठित लेखक भी उपस्थित थे।

'कॉट बिटवीन टंग्स : रीसेंट ट्रेंड्स इन इंडियन फ़िक्शन इन इंग्लिश' विषय पर परिसंवाद

28 अगस्त 2023, कोलकाता

साहित्य अकादेमी ने 28 अगस्त 2023 को विमेंस क्रिश्चियन कॉलेज, कोलकाता के सहयोग से 'कॉट बिटवीन टंग्स : रीसेंट ट्रेंड्स इन इंडियन फिक्शन इन इंग्लिश' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र की शुरुआत अग्रणी इंडो-अंग्रेज़ी कवि जयंत महापात्र को श्रद्धांजलि के साथ हुई, जिनका 27 अगस्त 2023 को स्वर्गवास हो गया था। उनकी स्मृति में एक मिनट का मौन रखा गया। परिसंवाद की शुरुआत में साहित्य अकादेमी की ओर से देवेंद्र कुमार देवेश ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने अधिक पाठकों तक पहुँचने के लिए अकादेमी द्वारा की गई तकनीकी प्रगति का भी उल्लेख किया।

महिला क्रिश्चियन कॉलेज, कोलकाता की प्राचार्य अजंता पॉल ने कॉलेज की ओर से सभी का स्वागत किया। उन्होंने उपमहाद्वीप में अंग्रेज़ी भाषा की उत्पत्ति

बीज-भाषण देते हुए प्रो. जी.जे.वी. प्रसाद

के ऐतिहासिक महत्त्व के बारे में बात की। उन्होंने इस तथ्य पर प्रकाश डाला कि प्रत्येक भारतीय भाषा, अपनी विशेष स्थानीय भाषा के कारण, साहित्यिक आदान-प्रदान की संगति में अंग्रेज़ी के साथ एक अनूठा रिश्ता रखती है।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता सुबोध सरकार ने की। उद्घाटन वक्तव्य रश्मि नार्जारी ने दिया। उन्होंने थ्री ईज, इन्कुइसिटिव, इंटरैक्ट और इनकंस्टेंट के बारे में बात की। उन्होंने परिसंवाद के विषय को परिभाषित करते हुए अनुवाद के बारे में भी चर्चा की। प्रख्यात लेखक एवं विद्वान प्रो. जी.जे.वी. प्रसाद द्वारा बीज-भाषण प्रस्तुत किया गया। उन्होंने भारतीय अंग्रेज़ी के सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक संदर्भों के बारे में बात की। उन्होंने इस तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित किया कि अंग्रेज़ी में कथा साहित्य लिखने वाले भारतीय लेखकों पर मातृभाषा का प्रभाव अवश्य पड़ता है। उनके अनुसार, अपनी मातृभाषा के अलावा किसी अन्य भाषा में रचना करने वाला प्रत्येक लेखक अनुवादक होता है क्योंकि वह जानबूझकर या अनजाने में अपनी स्थानीय भाषा से अनुवाद करता है।

प्रख्यात बाङ्ला कवि सुबोध सरकार ने समापन वक्तव्य दिया। उन्होंने महान कवि, जयंत महापात्र की कविता, 'द हाउस' का पाठ किया और दिवंगत कवि को श्रद्धांजलि दी। उन्होंने वक्ताओं को उनके सुंदर और विचारोत्तेजक वक्तव्य के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि हमें सभी भाषाओं में अनुवाद की ज़रूरत है। महिला क्रिश्चियन कॉलेज, कोलकाता के अंग्रेज़ी विभाग के प्रमुख कुशल एंड्रयू विश्वास ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता जी.जे.वी. प्रसाद ने की। पहली वक्ता श्रीतन्वी चक्रवर्ती ने 'सांस्कृतिक पहचान और राष्ट्रीय कल्पना : भारतीय डायस्पोरा की वर्तमान अंग्रेज़ी कथा' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। बसुधारा रॉय ने 'वर्तमान अकादमिक विवरणों के परिप्रेक्ष्य से

अंग्रेज़ी में भारतीय कथा' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। जयदीप षड़ंगी ने 'उत्तर-पूर्व भारत से गद्य लेखन : पाठ और संदर्भ' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने भारत के कुछ अन्य हिस्सों के साथ-साथ उत्तर पूर्व के इतिहास के बारे में हमारे ज्ञान की कमी पर अफ़सोस जताया क्योंकि इसे हमारे शैक्षणिक पाठ्यक्रम का हिस्सा नहीं बनाया गया है। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र में साहित्य का उत्कृष्ट भंडार है जो पढ़े जाने की प्रतीक्षा कर रहा है।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता जयदीप षड़ंगी ने की। प्रथम वक्ता किरीटि सेनगुप्ता ने 'रीजनल फिक्शन इन इंग्लिश ट्रांसलेशन : एंग्जाइटीज़ ऑफ़ ऑथेंटिसिटी एंड एक्सेंट' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने प्रचारक और लेखक के दृष्टिकोण, उनकी चिंताओं, और उनके स्रोतों तथा पुस्तक प्रकाशित होने की चुनौतियों के बारे में बात की। शोभा चट्टोपाध्याय ने 'सबाल्टर्न सिनर्जीज एंड ए पोएटिक्स ऑफ़ पेरीफेरी : दलित राइटर्स' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने दलित लेखकों की आत्मकथा के बारे में विस्तार से बात की, जहाँ उन्होंने छुआछूत, उत्पीड़न और रोज़मर्रा की ज़िंदगी में उनके सामने आने वाली चुनौतियों के मुद्दे उठाए हैं। सत्र की अंतिम वक्ता क्षिप्रा मुखर्जी ने 'रीडिंग द मार्जिन्स : द वर्नाक्युलर रियलिटीज़ ऑफ़ मॉडर्न इंडियन फिक्शन' शीर्षक से आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने आदिवासी कथा लेखक सोवेंद्र शेखर हांसदा के काम पर विस्तार से चर्चा की। श्री कुशल एंड्रयू बिस्वास ने समापन वक्तव्य प्रस्तुत किया।

गुजराती

'कलापी : व्यक्तित्व और कृतित्व' पर परिसंवाद

29 जनवरी 2024, राजकोट, गुजरात

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई ने गुजराती भाषा साहित्य भवन, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट, गुजरात के सहयोग से 29 जनवरी 2024 को सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट के गुजराती भाषा साहित्य भवन के डोलरराय मांकड सभागार में 'कलापी : व्यक्तित्व और कृतित्व' पर परिसंवाद का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई के प्रभारी अधिकारी डॉ. ओम प्रकाश नागर ने प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत किया। उन्होंने साहित्य अकादेमी की विभिन्न गतिविधियों की रूपरेखा प्रस्तुत की। बीज-भाषण देते हुए साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद के सदस्य श्री जे.एम. चंद्रावाडिया ने कलापी का वर्णन किया, जो एक ऐसे कवि थे जिनकी कविताओं में उनकी अपनी करुणा झलकती थी। गुजराती भाषा साहित्य भवन के अध्यक्ष मनोज जोशी ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की।

उद्घाटन सत्र में मंच पर आसीन : डॉ. ओम प्रकाश नागर, श्री मनोज जोशी तथा श्री जे.एम. चंद्रावाडिया

विभिन्न विषयों को समर्पित सत्र की अध्यक्षता श्री जे.एम. चंद्रावाडिया ने की। श्री महेंद्रसिंह परमार ने "कश्मीर का प्रवास" पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री ज्वलंत छाया ने "कलापी के पत्र" पर आलेख प्रस्तुत किया। श्री राजू याज्ञिक ने "कलापी का काव्य और प्रस्तुति" पर आलेख प्रस्तुत किया तथा श्री प्रेमल याज्ञिक ने "कलापी की रचनाओं में संवाद-प्रस्तुति" पर आलेख प्रस्तुत किया। परिसंवाद में छात्र, विद्वान, साहित्यप्रेमी आदि उपस्थित थे।

गुजराती

'बरकत विराणी 'बेफाम' : व्यक्तित्व और कृतित्व' पर जन्मशतवार्षिकी' परिसंवाद

30 जनवरी 2024, राजकोट, गुजरात

उद्घाटन भाषण देते हुए प्रो. नीलांबरी दवे

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई ने गुजरात साहित्य अकादेमी, गाँधीनगर तथा गुजराती भाषा साहित्य भवन, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट के सहयोग से 30 जनवरी 2024 को डोलराई मांकड़ सभागार, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट के गुजराती भाषा साहित्य भवन के डोलरराय मांकड सभागार में 'बरकत विराणी 'बेफाम' : व्यक्तित्व और कृतित्व' पर जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद' का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई के प्रभारी अधिकारी डॉ. ओम प्रकाश नागर ने श्रोताओं तथा कार्यक्रम में भाग लेने वाले विद्वानों का स्वागत किया। साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद के सदस्य श्री जे.एम. चंद्रावाडिया ने आरंभिक वक्तव्य दिया। सौराष्ट्र विश्वविद्यालय की कुलपति नीलांबरी दवे ने परिसंवाद का उद्घाटन किया, जिसमें उन्होंने कहा कि "कला और साहित्य जीवन का आधार हैं। साहित्य व्यक्ति की संवेदनाओं को जागृत करने का काम करता है। आज के समय में सत्ता चाहे किसी की भी हो, साहित्य ही हमें जीवित रखता है।" वीरू पुरोहित ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि "बेफाम का विपुल कार्य ग़ज़ल में रहा। किंतु उन्होंने नाटक और फ़िल्मी गीत भी लिखे। उनके द्वारा रचित गीत आज भी गुजराती लोगों के मन में स्पष्ट रूप से मौजूद हैं, उनके गीतों की सरलता उनका प्रमुख गुण है। बेफाम की ग़ज़लों में सरलता और चेतना है। गहराई उनकी ग़ज़लों का आकर्षण है।" गुजराती भाषा साहित्य भवन के प्रोफ़ेसर दीपक पटेल ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

विभिन्न विषयों को समर्पित सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद के सदस्य श्री हसित मेहता ने की। श्री एस.एस. राही ने "बरकत विराणी की ग़ज़लों में छंद-विधान", श्री संजू वाळा ने "बरकत विराणी की ग़ज़लों में काव्य तत्त्व", श्री मनोज जोशी ने "बरकत विराणी की ग़ज़लों में अध्यात्म" तथा श्री रमेश मेहता ने "बरकत विराणी की ग़ज़लों में चिंतन" विषयों पर अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए। परिसंवाद में छात्र, विद्वान, साहित्यप्रेमी आदि उपस्थित थे।

कन्नड

'कन्नड तत्त्वपद : एक पुनरावलोकन' पर परिसंवाद

2 फ़रवरी 2024, विजयपुर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु ने चाणक्य कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, विजयपुर के सहयोग से 2 फ़रवरी 2024 को विजयपुर में महाविद्यालय परिसर में "कन्नड तत्त्वपद : एक पुनरावलोकन" पर परिसंवाद

बीज-भाषण देते हुए डॉ. बसवराज सदर

का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के सदस्य श्री चन्नप्पा कट्टी ने प्रतिभागियों तथा श्रोताओं का स्वागत किया तथा परिसंवाद के विषय के बारे में बताया। साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद के सदस्य डॉ. बसवराज सदर ने अपने बीज-भाषण में तत्त्वपद के मूल्य और महत्त्व तथा पुनरावलोकन की प्रासंगिकता के बारे में बात की और उन्होंने आशा व्यक्त की कि परिसंवाद से कर्नाटक में इस क्षेत्र के विभिन्न आयामों पर आधारित कई कार्यक्रम आयोजित किए जाएँगे। कमलादेवी स्मारक शिक्षा संस्थान के संस्थापक श्री एन.एम. बिरादर ने अपने अध्यक्षीय व्यख्यान में विजयपुर में परिसंवाद आयोजित करने के लिए साहित्य अकादेमी को धन्यवाद दिया तथा आशा व्यक्त की कि कॉलेज के संकाय और छात्र कार्यक्रम से लाभान्वित होंगे। प्रथम सत्र की अध्यक्षता नटराज बुडालू ने की। 2 विख्यात विद्वानों, संगनागौड़ा हीरेगौदर तथा मनु पट्टार ने क्रमश: "तत्त्वपद में गुरुपरंपरा" तथा "तत्त्वपद में आधिपत्य विरोधी तत्त्व" विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्राध्यक्ष श्री नटराज बुडालू ने "तत्त्वपद के मूल सिद्धांत" विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री एम.एस. मादभवी ने की। 2 विख्यात विद्वानों, चन्नप्पा कट्टी तथा संगमेश मेत्री ने क्रमश: "तत्त्वपद में लैंगिक समानता" और "तत्त्वपद और सांप्रदायिक सद्भाव" पर आलेख प्रस्तुत किए। समापन सत्र के मुख्य अतिथि साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद के सदस्य डॉ. मनु बलिगर थे तथा कॉलेज के प्रिंसिपल प्रोफ़ेसर एस.टी. मेरावड़े ने सत्र की अध्यक्षता की। डॉ. बलिगर ने तत्त्वपद पर परिसंवाद आयोजित किए जाने का स्वागत किया और कहा कि यह एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है तथा उन्होंने अतीत में इस क्षेत्र में किए गए शोध का सारांश प्रस्तुत किया। प्रोफ़ेसर मेरावड़े ने कॉलेज में कार्यक्रम आयोजित करने के लिए अकादेमी को धन्यवाद दिया।

समकालीन साहित्य में जीवन समर्थक विचार पर परिसंवाद

3 फ़रवरी 2024, हावेरी

उद्घाटन व्याख्यान देते हुए डॉ. राजेंद्र चेनी

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु ने ज़िल्ला कन्नड साहित्य परिषद, हावेरी के सहयोग से 3 फ़रवरी 2024 को हावेरी स्थित प्री-यूनिवर्सिटी एम्प्लॉइज सभागार में 'समकालीन साहित्य में जीवन समर्थक विचार' पर परिसंवाद का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के सदस्य श्री चन्नप्पा अंगड़ी ने प्रतिभागियों तथा श्रोताओं का स्वागत किया तथा परिसंवाद के विषय का परिचय दिया। अपने उद्घाटन व्याख्यान में प्रख्यात लेखक, समालोचक तथा विद्वान डॉ. राजेंद्र चेनी ने कहा कि साहित्यिक परंपराओं में संवैधानिक पहलुओं सहित जीवन समर्थक विचार उपस्थित हैं तथा सहिष्णुता, सद्भाव, अखंडता और समावेशिता भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषताएँ हैं और यह साहित्यिक परंपराओं में भी परिलक्षित होती हैं। अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में साहित्य अकादेमी के सदस्य

डॉ. बसवराज सदर ने कन्नड साहित्य में जीवन समर्थक अवधारणाओं के बारे में बात की। श्री लिंगय्या हिरेमठ तथा नागराज द्यामनकोप्पा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे तथा श्री वाई.बी. अलादकट्टी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। प्रथम सत्र में 2 विख्यात विद्वानों - विजयकांत पाटिल तथा शुभा मरवंते ने क्रमश: "जाति और वर्ग पर काबू पाने की प्रक्रिया" तथा "लैंगिक राजनीति के आयाम" विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। सामाजिक कार्यकर्ता के.सी. अक्षता ने सत्र का सारांश प्रस्तुत किया। द्वितीय सत्र में 2 विख्यात विद्वानों - आनंद कुंचनूर, मल्लिकार्जुनगौड़ा तथा टूलाहल्ली ने क्रमश: "समाज पर वैश्वीकरण का प्रभाव" तथा "पर्यावरणीय पहलू" विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रोफ़ेसर रामजन किल्लेदार ने सत्र का सारांश प्रस्तुत किया। समापन सत्र के मुख्य अतिथि प्रख्यात लोक विद्वान, मीरासाबिहल्ली शिवन्ना थे। प्रख्यात कन्नड लेखक सतीश कुलकर्णी ने सत्र की अध्यक्षता की तथा आनंद मुदुकम्मनवर ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

कश्मीरी

'मुज़फ़्फ़र आज़िम : जीवन और कार्य' विषय पर परिसंवाद

11 सितंबर 2023, कुंजर, तंगमर्ग, कश्मीर

साहित्य अकादेमी द्वारा 11 सितंबर 2023 को टाउन हॉल, कुंजर में प्रसिद्ध कश्मीरी कवि, लेखक और अनुवादक मुज़फ़्फ़र आज़िम पर परिसंवाद आयोजित किया गया, जिसमें प्रमुख साहित्यिक हस्तियों, कश्मीर घाटी के कवियों तथा छात्रों ने भाग लिया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध कश्मीरी और उर्दू लेखक मोहम्मद ज़माँ आज़ुर्दा ने की। श्री आज़ुर्दा ने मुज़फ़्फ़र आज़िम के जीवन और साहित्यिक कार्यों के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने मुज़फ़्फ़र आज़िम की शायरी पर बात की और कहा कि मुज़फ़्फ़र

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए डॉ. रफ़ीक़ मसूदी

आज़िम को कश्मीरी साहित्य के शीर्षस्थ और क़द्दावर साहित्यकारों में गिना जा सकता है। अदबी मरकज़ कामराज़ के अध्यक्ष मोहम्मद अमीन भट्ट ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। अपने स्वागत वक्तव्य में श्री भट्ट ने कहा कि यद्यपि श्री आज़िम कामराज़ के हैं, लेकिन उन्होंने न केवल कामराज़ को बल्कि पूरी कश्मीरी भाषा और साहित्य को प्रभावित किया है। कश्मीरी परामर्श मंडल के संयोजक शाद रमज़ान ने उद्घाटन वक्तव्य प्रस्तुत किया। शाद रमज़ान ने अपने संबोधन में मुज़फ़्फ़र आज़िम के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। अपना संबोधन देते हुए शाद रमज़ान ने कहा कि मुज़फ़्फ़र आज़िम स्वभाव से सौंदर्य और प्रेम के कवि थे। उन्होंने कहा कि हालाँकि कश्मीरी भाषा साहित्य, विशेषकर कविता में समृद्ध है और मुज़फ़्फ़र आज़िम इस समृद्ध साहित्य का सबसे महत्त्वपूर्ण अध्याय है।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता रफ़ीक़ मसूदी ने की। मसूदी ने कहा कि उन्हें इस दिग्गज साहित्यकार से कई बार आमने-सामने मुलाक़ात का अनुभव मिला है। इस सत्र में आबिद अशरफ़, फ़ारूक़ शाहीन, निसार आज़म और शहनाज़ रशीद ने भाग लिया। इस सत्र में प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता और मुज़फ़्फ़र आज़िम के परिवार के सदस्य ज़हूर अहमद मीर ने भी सहभागिता की।

परिसंवाद के अंतिम सत्र की अध्यक्षता डॉ. शौक़त फ़ारूक़ी ने की। इस सत्र में महफूज़ा जान, शौकत शफ़ी

और गुलशन बदरानी ने मुज़फ़्फ़र आज़िम के जीवन और साहित्यिक कार्यों के विभिन्न पहलुओं पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। शौकत फ़ारूक़ी ने कहा कि मुज़फ़्फ़र आज़िम ने कश्मीरी भाषा और साहित्य को वर्तमान डिजिटल दुनिया से परिचित कराया और मुज़फ़्फ़र आज़िम ने कश्मीरी कीबोर्ड का सॉफ्टवेयर विकसित करके छात्रों के बीच कश्मीरी भाषा और साहित्य के प्रति रुचि पैदा की। उन्होंने आगे कहा कि जब कश्मीर विश्वविद्यालय में कश्मीरी विभाग की स्थापना की गई थी तब मुज़फ़्फ़र आज़िम ने छात्रों में कश्मीरी भाषा और साहित्य के प्रति रुचि विकसित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

कार्यक्रम का संचालन कश्मीरी परामर्श मंडल के सदस्य और कवि शबनम तिलगामी ने किया। कार्यक्रम में भाग लेने वाले अन्य प्रमुख कवियों और लेखकों में राशिद रोशन, हसन दरवेश, शकीलउररहमान, गुलज़ार अहमद राथर, शाहनाज़ रशीद, मकबूल शैदा और वसीम परवेज़ आदि शामिल हैं। कार्यक्रम का समापन करते हुए शाद रमज़ान ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

गुलाम नबी नाज़िर पर परिसंवाद

05 दिसंबर 2023, शोपियाँ, कश्मीर

कश्मीरी लेखक गुलाम नबी नाज़िर पर 5 दिसंबर 2023 को गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज, शोपियाँ, जम्मू-कश्मीर में उनकी 8वीं पुण्य तिथि के अवसर परिसंवाद का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रख्यात कश्मीरी कवि, लेखक, आलोचक और शोधकर्ता गुलाम नबी नाज़िर उर्फ़ नाज़िर कुलगामी के जीवन और कार्यों पर, तथा उनके द्वारा कश्मीर के साहित्यिक और सांस्कृतिक परिदृश्य में दिए गए महत्त्वपूर्ण योगदान पर चर्चा की गई। परिसंवाद में कश्मीरी साहित्य जगत की प्रतिष्ठित हस्तियों ने भाग लिया। साहित्य अकादेमी के कश्मीरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रोफ़ेसर शाद रमज़ान ने साहित्य अकादेमी की

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए श्री गुलाम नबी आतश

ओर से अतिथियों का स्वागत किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रतिष्ठित कवि, शोधकर्ता, शिक्षाविद् तथा लोकगीतकार श्री गुलाम नबी आतश ने की।

वनस्पति विज्ञान विभाग के अध्यक्ष एवं महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य प्रो. टाक ने महाविद्यालय को परिसंवाद स्थल के रूप में चुनने के लिए साहित्य अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त किया तथा सभी प्रतिभागियों का हार्दिक स्वागत किया। जे.के.ए.ए.सी.एल. के पूर्व प्रधान संपादक, कश्मीरी, जफ़र मुजफ्फर ने आरंभिक वक्तव्य में गुलाम नबी नाज़िर के जीवन और कार्यों पर प्रकाश डाला। शाद रमज़ान ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में अकादेमी द्वारा परिसंवाद आयोजित करने के कारणों तथा कश्मीर के प्रमुख कवि और लेखक के रूप में गुलाम नबी नाज़िर की अद्वितीय पहचान तथा साहित्यिक प्रतिभा पर अपने विचार व्यक्त किए। गुलाम नबी आतश ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में गुलाम नबी नाज़िर के साथ उनके लंबे समय तक रहे जुड़ाव के बारे में बताया तथा इसके साथ ही उन्होंने श्रद्धेय कवि के साहित्यिक व्यक्तित्व तथा योगदान की भी चर्चा की।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता शाद रमज़ान ने की, तथा मुज़फ़्फ़र अहमद टाक, यूसुफ जहाँगीर, अशरफ़ रवि और राशिद सरशार ने गुलाम नबी नाज़िर के जीवन और कार्यों के विभिन्न पहलुओं पर आधारित अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता राजकीय डिग्री

कॉलेज के प्रधानाचार्य ने की तथा शहज़ादा रफ़ीक़, हसरत हुसैन, ऐजाज़ गुलाम मोहम्मद लालू तथा डॉ. शैदा हुसैन शैदा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

चर्चा के दौरान कई लेखकों ने गुलाम नबी नाज़िर के जीवन और कार्यों के बहुमुखी पहलुओं के साथ न्याय करने की चुनौती पर अपने विचार व्यक्त किए। प्रतिभागियों में शामिल थे - रेयाज़ अंज़नू, हामिद नासिर, इज़हार मुबाशिर, शकील आज़ाद तथा रशीद राशिद। साहित्य अकादेमी के कश्मीरी परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. रौफ़ आदिल ने समस्त उपस्थित लोगों की भागीदारी तथा व्यावहारिक योगदान की सराहना करते हुए अकादेमी की ओर से धन्यवाद प्रस्ताव दिया। कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी के कश्मीरी परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. गुलज़ार अहमद राथर ने किया। परिसंवाद में क्षेत्र के उत्साही पाठक, छात्र तथा साहित्य प्रेमी उपस्थित थे, जिससे आकर्षक और समावेशी माहौल तैयार हुआ। इस परिसंवाद का आयोजन कश्मीरी साहित्य पर गुलाम नबी नाज़िर के प्रभाव को समझने, उनके कृतित्व पर गहनता से विचार-विमर्श करने आदि के लिए आयोजित किया गया था।

मैथिली

मैथिली सिनेमा एवं साहित्य पर परिसंवाद

30 सितंबर 2023, सहरसा, बिहार

साहित्य अकादेमी ने ईस्ट एन वेस्ट टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, सहरसा, बिहार के सहयोग से 30 सितंबर 2023 को "मैथिली सिनेमा और साहित्य" पर परिसंवाद का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र के गणमान्य अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन और सहयोगी महाविद्यालय द्वारा अभिनंदन के बाद भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय के वरिष्ठ सीनेट की सदस्य श्रीमती मनीष द्वारा स्वागत वक्तव्य दिया गया। साहित्य अकादेमी के उप सचिव एन.

परिसंवाद के प्रतिभागी

सुरेश बाबू ने परिसंवाद में सभी आमंत्रित प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि भरत मुनि का नाट्यशास्त्र नाटक का मूल स्रोत है, जिससे सिनेमा की उत्पत्ति हुई है। परंपरागत रूप से, दृश्य काव्य को श्रव्यकाव्य से सर्वश्रेष्ठ माना जाता है क्योंकि वह हमारे मस्तिष्क को लंबे समय तक याद रहता है। मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' ने अपने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि पारंपरिक मैथिली कई अन्य संस्कृतियों और भाषाओं से प्रभावित थी, हालाँकि भक्ति पर आधारित इसकी अपनी सांस्कृतिक विरासत है। इस परिप्रेक्ष्य में, मैथिली सिनेमा का भविष्य उज्ज्वल है क्योंकि मिथिला समाज में मैथिली रंगमंच नाटक का प्रभाव अभी भी है। किस्लय कृष्ण ने मैथिली सिनेमा की उत्पत्ति से लेकर उसके तथ्यों और आंकड़ों के बारे में बताते हुए अपना बीज वक्तव्य प्रस्तुत किया। बाद में, ईस्ट एन वेस्ट टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज के अध्यक्ष रजनीश रंजन ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में सभी से भावी पीढ़ी के लिए मैथिली भाषा और संस्कृति के प्रचार-प्रसार का अनुरोध किया। ईस्ट एन वेस्ट टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज के प्रिंसिपल नागेंद्र कुमार झा के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ उद्घाटन सत्र संपन्न हुआ।

प्रथम सत्र में रमण कुमार सिंह ने 'राजकमल कहानी 'ललका पाग' : स्टेज से सिल्वर स्क्रीन तक', एन. मंडल ने 'मैथिली सिनेमा में प्रयुक्त विभिन्न बोलियों के संवाद', श्री प्रकाश झा ने 'मैथिली थिएटर और मैथिली सिनेमा के बीच संयोग की संभावनाएँ', प्रवीण नारायण चौधरी

ने 'साहित्यिक ग्रंथों पर आधारित और प्रदर्शित : दर्शकों के नज़रिए से मैथिली की लघु फिल्में' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र की अध्यक्षता कुणाल ने की तथा 'धारावाहिक 'नैन ना तिरपिट भेल' की साहित्यिक पृष्ठभूमि : निर्माण और चरमोत्कर्ष' पर आलेख भी प्रस्तुत किया।

द्वितीय सत्र में पुष्य मित्र ने 'व्यापक रूप से प्रशंसित मैथिली फिल्म 'गामक घर' : समकालीन संदर्भ', राजशेखर ने 'मैथिली में लोककथाओं पर आधारित सिनेमा की संभावना', रामकुमार सिंह ने 'मैथिली कहानियों में सिनेमाई तत्त्वों आदि की संभावनाओं' और शैलेन्द्र शैली ने 'मैथिली साहित्य और लोककथाओं पर आधारित विभिन्न लघु फ़िल्में' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र की अध्यक्षता रमेश रंजन ने की तथा मैथिली साहित्य और टेलीविज़न पर आलेख प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी के उप सचिव एन. सुरेश बाबू ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

मणिपुरी

'मणिपुरी साहित्य के पहलू' पर परिसंवाद

28 जनवरी 2024, अगरतला

साहित्य अकादेमी ने मणिपुरी साहित्यिक एवं सांस्कृतिक मंच, त्रिपुरा के सहयोग से 28 जनवरी 2024 को अगरतला के त्रिपुरा छात्र स्वास्थ्य गृह के सम्मेलन कक्ष में 'मणिपुरी साहित्य के पहलू' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। परिसंवाद में साहित्य अकादेमी के सहायक संपादक क्षेत्रवासी नायक ने स्वागत व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने श्रोताओं को वक्ताओं का परिचय दिया। साहित्य अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक राजेन तोइजाम्बा ने आरंभिक व्याख्यान प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मणिपुरी साहित्य परिषद, इंफ़ाल के अध्यक्ष श्री एल. जॉयचंद्र सिंह थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता मणिपुरी साहित्यिक एवं सांस्कृतिक मंच के

व्याख्यान देते हुए कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्री एल. बीरमंगल सिंह

अध्यक्ष श्री एन. बीरा सिंह ने की। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि मणिपुरी साहित्य परिषद, त्रिपुरा के अध्यक्ष एल. बीरमंगल सिंह थे। साहित्य अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के सदस्य खोइसनम बिरला ने धन्यवाद ज्ञापित किया। प्रथम सत्र में थोकचोम इबोहनबी सिंह, अनुराधा नोंगमाईथेम तथा खोइसनम मंगोल ने एम. अभिराम सिंह की अध्यक्षता में अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र में ए.सी. नेत्रजीत, सोरोक्खैबम गम्भिनी तथा क्षेत्रिमयुम प्रेमचंद्र ने एल. जॉयचंद्र सिंह की अध्यक्षता में अपने आलेख प्रस्तुत किए। वक्ताओं ने मणिपुरी साहित्य के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की तथा मणिपुरी साहित्य के समग्र विकास पर अपने विचार व्यक्त किए।

एलंगबाम नीलकांत सिंह के व्यक्तित्व और कृतित्व पर परिसंवाद

10 फ़रवरी 2024, इंफ़ाल

साहित्य अकादेमी ने द कल्चरल फ़ोरम, मणिपुर के सहयोग से 10 फ़रवरी 2024 को सीनेट हॉल, अर्थ साइंस डिपार्टमेंट, एम.यू., कांचीपुर, मणिपुर में 'एलंगबाम नीलकांत सिंह के व्यक्तित्व और कृतित्व' पर परिसंवाद का आयोजन किया।

परिसंवाद में स्वागत व्याख्यान साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने प्रस्तुत किया। आरंभिक व्याख्यान साहित्य अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक श्री राजेन तोइजाम्बा ने दिया। उन्होंने

व्याख्यान देते हुए श्री एल. जॉयचंद्र सिंह

एलंगबाम नीलकांत सिंह के व्यक्तित्व और कृतित्व पर संक्षेप में बात की। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि प्रख्यात मणिपुरी लोकगीतकार तथा विद्वान हुइरेम बिहारी सिंह थे। उन्होंने एलंगबाम नीलकांत सिंह के जीवन के महत्त्वपूर्ण चरणों पर चर्चा की। सांस्कृतिक मंच की अध्यक्ष कोइजाम शांतिबाला देवी ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने आधुनिक मणिपुरी कविता के अग्रदूत के रूप में एलंगबाम नीलकांत सिंह की भूमिका पर बात की। सांस्कृतिक मंच के महासचिव नाओरेम अहंजाओ मीतेई ने धन्यवाद ज्ञापन किया। प्रथम सत्र में के. कोइरेंग, निंगोमबाम नंद सिंह तथा के. मेमटन देवी ने क्रमशः 'नीलकांत सिंह का व्यक्तित्व और कृतित्व', 'कवि के रूप में एलंगबाम नीलकांत सिंह' तथा 'समालोचक के रूप में एलंगबाम नीलकांत सिंह' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र की अध्यक्षता लोंगजाम जॉयचंद्र सिंह ने की। द्वितीय सत्र में डब्ल्यू. रोमेश, टी. कुंजेशोर सिंह तथा एल. आनंद ने क्रमशः 'निबंधकार के रूप में एलंगबाम नीलकांत', 'यात्रा लेखक के रूप में एलंगबाम नीलकांत' तथा 'एलंगबाम नीलकांत के कृतित्व की भाषा और शब्दावली' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र की अध्यक्षता रतनकुमार सिंह ने की।

मराठी

मराठी लेखक जी.पी. प्रधान जन्मशतवार्षिकी पर परिसंवाद

7 अक्तूबर 2023, पुणे

साहित्य अकादेमी ने साधना ट्रस्ट, पुणे के सहयोग से 7 अक्तूबर 2023 को एस.एम. जोशी सभागार में मराठी लेखक जी.पी. प्रधान की जन्मशतवार्षिकी पर परिसंवाद का आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव के स्वागत वक्तव्य से हुई। प्रथम प्रस्तुति में श्री विनोद शिरसाठ ने जी.पी. प्रधान के व्यक्तित्व और कृतित्व के विभिन्न पहलुओं पर विचार व्यक्त किए। अपने आरंभिक वक्तव्य में शिरसाठ ने प्रधान की उल्लेखनीय यात्रा पर प्रकाश डाला और कहा कि 34-35 वर्ष की आयु में ही उन्होंने खुद को महान लेखक के रूप में स्थापित कर लिया था। प्रधान की सबसे बड़ी विशेषता भाषा पर उनकी असाधारण पकड़ तथा लेखन में उनका स्पष्ट उद्देश्य था। वे तिलक तथा अगरकर की विचारधाराओं को समान महत्त्व देते थे।

उन्होंने तिलक तथा अगरकर की विचारधाराओं को समान महत्त्व दिया, जो उनके लेखन में परिलक्षित होता है। उद्घाटन वक्तव्य रावसाहेब कसाबे ने दिया, जिन्होंने साहित्य में प्रधान के योगदान तथा नास्तिकता और आस्तिकता पर उनके अद्वितीय दृष्टिकोण के महत्त्व

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्री विश्वास पाटिल

पर प्रकाश डाला। उन्होंने भारतीय दर्शन तथा महाराष्ट्र की समृद्ध आध्यात्मिक परंपरा में मन और शरीर द्वैतवाद की अवधारणा के प्रचलन की बात की। विनय हार्डिकर ने अपने बीज-वक्तव्य में इस बात पर प्रकाश डाला कि प्रधान ने कभी दूसरों पर हावी होने की कोशिश नहीं की। बापट और प्रधान दोनों तिलक की प्रशंसा करते थे किंतु गोखले और अगरकर के आदर्शों के आधार पर राजनीति करते थे। प्रधान का दर्शन किसी और के धन पर निर्भर रहने के बजाय अपना पैसा कमाने को प्राथमिकता देता था। विश्वास पाटिल ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रधान को श्रद्धांजलि अर्पित की तथा लेखकों की भावी पीढ़ियों को उनके द्वारा प्रदान की गई गहन प्रेरणा को स्वीकार किया।

परिसंवाद के प्रथम सत्र में अरुण खोरे ने प्रधान की जीवनी पर चर्चा की। राजेंद्र नायकवाडे ने प्रधान की प्रशंसित पुस्तक, सात उत्तराची कहानी के महत्त्व पर बल दिया। सत्र की अध्यक्षता करने वाले दिलीप धोंडगे ने प्रधान की भाषा के सावधानीपूर्वक तथा नियंत्रित उपयोग की सराहना की।

द्वितीय सत्र में, सकलप गुर्जर तथा गौरी देशपांडे ने प्रधान द्वारा लिखित रिपोर्ताज पर अपने दृष्टिकोण साझा किए, तथा उनके साहित्यिक योगदान के स्थायी प्रभाव को भी रेखांकित किया। सत्र की अध्यक्षता श्री हेमंत गोखले ने की।

अपने समापन वक्तव्य में अभिजीत वैद्य ने प्रधान के व्यक्तिगत जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। सत्राध्यक्ष श्री लक्ष्मीकांत देशमुख ने अपने वक्तव्य में प्रधान के विचारों के गहन महत्त्व पर प्रकाश डाला। परिसंवाद का संचालन क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई के प्रभारी अधिकारी डॉ. ओम प्रकाश नागर ने किया।

नेपाली

लेखक से भेंट : नवसापकोटा एवं 'नेपाली साहित्य में पर्यावरण और चेतना' पर परिसंवाद

30 सितंबर 2023, गुवाहाटी

स्वागत वक्तव्य देते हुए श्री दुर्गा खतिवड़ा

साहित्य अकादेमी ने असम नेपाली साहित्य सभा के सहयोग से 30 सितंबर 2023 को कम्युनिटी हॉल, गौशाला, मालीगाँव, गुवाहाटी, असम में 'नेपाली साहित्य में पर्यावरण और चेतना' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया तथा प्रख्यात नेपाली लेखक नवसापकोटा के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम का उद्घाटन नेपाली परामर्श मंडल के संयोजक एस.डी. ढकाल ने पौधारोपण करके किया। गुवाहाटी विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त डीन शिबनाथ शर्मा ने दीप प्रज्वलित किया। उसके पश्चात् मंगलाचरण हुआ। नेपाली परामर्श मंडल के सदस्य दुर्गा खतिवड़ा ने स्वागत वक्तव्य दिया। असम नेपाली साहित्य सभा के सचिव मदन थापा ने अतिथियों को अंगवस्त्रम, माला तथा पारंपरिक टोपी से सम्मानित किया।

अपने बीज-भाषण में एस.डी. ढकाल ने अकादेमी द्वारा किए गए विभिन्न कार्यक्रमों के बारे में विस्तार से बताया तथा अकादेमी द्वारा एक मानकीकृत शब्दकोश के प्रकाशन के बारे में भी आश्वस्त किया। नेपाली साहित्य

सभा के सचिव मदन थापा ने अकादेमी को धन्यवाद दिया और कहा कि नेपाली साहित्य सभा इस क्षेत्र में नेपाली साहित्य के विकास और प्रचार के लिए हमेशा पहल करेगी। असम नेपाली साहित्य सभा के अध्यक्ष कालिदास शर्मा तथा सचिव विकास छेत्री ने असम नेपाली साहित्य सभा के सहयोग से कार्यक्रम आयोजित करने के लिए साहित्य अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त किया।

उद्घाटन सत्र के बाद, नवसापकोटा के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम आयोजित किया गया। एस.डी. ढकाल ने प्रख्यात नेपाली साहित्यकार नवसापकोटा तथा उनकी पत्नी को अंगवस्त्रम, फूल और शॉल देकर सम्मानित किया। परामर्श मंडल के सदस्य चंद्रमणि उपाध्याय, दुर्गा खतिवड़ा तथा पूर्व परामर्श मंडल के सदस्य ज्ञान बहादुर छेत्री ने भी दोनों का स्वागत किया। नवसापकोटा ने अपनी कुछ कविताएँ पढ़ीं जिसके बाद एक संवाद सत्र हुआ।

प्रथम सत्र के दौरान चंद्रमणि उपाध्याय ने वेदों, उपनिषदों तथा श्रीमद्भगवद्गीता के संदर्भों का हवाला देते हुए नेपाली साहित्य में पर्यावरण और चेतना में आध्यात्मिकता के बारे में बात की। सत्र की अध्यक्षता जीवन राणा ने की।

द्वितीय सत्र के दौरान देवेन सापकोटा ने पावरपॉइंट प्रस्तुति के माध्यम से अपना आलेख प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने असमिया कवियों की कविता में पर्यावरण के रूपकों पर चर्चा की। खेमराज नेपाल ने अथर्ववेद, महाकाव्य शकुंतला, मनुसंहिता आदि के संदर्भों का हवाला देते हुए भारतीय दर्शन में पर्यावरण और चेतना पर बात की। भक्त गौतम ने पर्यावरण के वर्तमान परिदृश्य पर अपनी चिंता व्यक्त की तथा पर्यावरण सुरक्षा की आवश्यकता पर बल दिया। ज्ञान बहादुर छेत्री ने सभी प्रतिभागियों को धन्यवाद दिया तथा पर्यावरण के संरक्षण पर अपने विचार साझा किए। कार्यक्रम का समापन कालिदास शर्मा के वक्तव्य से हुआ।

'भारतीय नेपाली भाषा मानकीकरण' विषय पर परिसंवाद

7 अक्तूबर 2023, खरसाङ, दार्जीलिङ

सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ. जीवन नामदुङ

साहित्य अकादेमी ने गोर्खा जन पुस्तकालय तथा गोर्खा सांस्कृतिक संस्थान के सहयोग से 7 अक्तूबर 2023 को पार्क लोकेशन, खरसाङ, दार्जीलिङ में गोर्खा सार्वजनिक भवन में 'भारतीय नेपाली भाषा मानकीकरण' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। कार्यक्रम का उद्घाटन श्री गोमा सुब्बा ने किया। साहित्य अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल की सदस्य श्रीमती आशा मुखिया लामा ने स्वागत व्याख्यान प्रस्तुत किया। सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के पूर्व संयोजक डॉ. जीवन नामदुङ ने की। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि प्रख्यात नाटककार तथा गोर्खा जन पुस्तकालय के अध्यक्ष श्री पूर्ण गुरूङ 'निरुपम' थे। अपने बीज-भाषण में श्री शंकरदेव ढकाल ने नेपाली भाषा को मानकीकृत करते समय एकरूपता लागू करने के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए। श्री बिनोद रसाइली ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम के प्रथम सत्र में श्री दिवाकर प्रधान ने 'भारतीय नेपाली भाषा के शुद्धिकरण परियोजना' पर अपना आलेख पढ़ा। डॉ. जीवन नामदुङ ने सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने कहा कि 'झार्रोवादी' की उपस्थिति के बावजूद भाषा में कई विदेशी शब्द शामिल हो गए हैं। श्री चक्रपाणी भट्टराई ने 'सिक्किम के सरकारी कामकाज में नेपाली भाषा का प्रयोग' विषय पर अपना आलेख पढ़ा।

श्री राजकुमार छेत्री ने 'नेपाली आख्यान में लोक-शब्दों का प्रयोग' विषय पर अपना आलेख पढ़ा। श्री सपन प्रधान ने 'नई पीढ़ी के भीतर नेपाली भाषा की स्थिति और भाषाविदों का कर्त्तव्य' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री गोकुल सिन्हा ने की। श्री योगेश खाती ने 'भारतीय नेपाली भाषा के विकास में मिशनरियों का योगदान' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। इस विषय पर चर्चा करते हुए श्री योगेश खाती ने कुछ मिशनरियों के नामों का उल्लेख भी किया। श्री अमीर दर्जी ने 'भारत में नेपाली कविता और गीतों में प्रयुक्त भाषा का स्वरूप' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने इस विषय पर कुछ घटनाओं का उल्लेख भी किया।

ओड़िआ

'ओड़िआ साहित्य में व्यंग्य और हास्य' पर परिसंवाद

22 जनवरी 2024, शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल

साहित्य अकादेमी ने विश्व भारती के ओड़िआ विभाग के सहयोग से 22 जनवरी 2024 को कॉन्फ्रेंस हॉल, भाषा भवन, विश्व भारती, शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल में 'ओड़िआ साहित्य में व्यंग्य और हास्य' पर परिसंवाद का आयोजन किया।

परिसंवाद में साहित्य अकादेमी के सहायक संपादक क्षेत्रवासी नायक ने स्वागत व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने ओड़िआ में व्यंग्य और हास्य साहित्य की विधा के महत्त्व पर चर्चा की। परिसंवाद का उद्घाटन विश्व भारती विश्वविद्यालय के कुलपति संजय कुमार मल्लिक ने किया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि ओड़िआ विश्वविद्यालय की कुलपति सुश्री सबिता प्रधान थीं। ओड़िआ विभाग, एम.एस.सी.बी. विश्वविद्यालय, बारिपदा के विभागाध्यक्ष बब्रुवाहन महापात्र ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वभारती के ओड़िआ विभाग के विभागाध्यक्ष मनोरंजन प्रधान ने की। उन्होंने प्रमुख ग्रंथों के संदर्भ में ओड़िआ में व्यंग्य और हास्य साहित्य के विकास की उत्पत्ति पर विस्तार पूर्वक चर्चा की। विश्वभारती के ओड़िआ विभाग के सहायक प्रोफ़ेसर शरत कुमार जेना ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। प्रथम सत्र में अनन्या दत्ता गुप्ता, चिन्मय होता, मुक्तेश्वर नाथ तिवारी तथा प्रमिला पतुलिया ने पीतवास राउतराय की अध्यक्षता में अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र में देबाशीष महापात्र, इंद्रमणि साहू, रवींद्र कुमार दास, शरत कुमार जेना तथा स्वप्नरानी सिंह ने राधू मिश्र की अध्यक्षता में अपने आलेख प्रस्तुत किए।

अध्यक्षीय व्याख्यान देते हुए प्रो. मनोरंजन प्रधान

'हाशिए के लोग और ओड़िआ साहित्य' पर परिसंवाद

24 फ़रवरी 2024, राउरकेला, ओड़िशा

साहित्य अकादेमी ने सरकारी स्वायत्त महाविद्यालय, राउरकेला के सहयोग से 24 फ़रवरी 2024 को सरकारी

उद्घाटन सत्र के प्रतिभागीगण

स्वायत्त महाविद्यालय, राउरकेला, ओड़िशा के सम्मेलन कक्ष में 'हाशिए के लोग और ओड़िआ साहित्य' पर परिसंवाद का आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता के सहायक संपादक क्षेत्रवासी नायक ने स्वागत व्याख्यान प्रस्तुत किया। सरकारी स्वायत्त महाविद्यालय, राउरकेला के प्राचार्य बिजय कुमार बेहरा ने आरंभिक व्याख्यान प्रस्तुत किया। प्रख्यात विद्वान प्रकाश चंद्र पटनायक ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने ओड़िआ साहित्य में हाशिए के लोगों का संक्षेप में चित्रण प्रस्तुत किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के ओड़िआ परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. गौरहरि दास ने की। प्रथम सत्र में करुणाकर पटसानी, पीतांबर तराई, संजय कुमार बाग तथा सुषमा मोदी ने ओड़िआ साहित्य में हाशिए के लोगों के चित्रण की विभिन्न प्रवृत्तियों पर आलेख प्रस्तुत किए। सत्र की अध्यक्षता बासुदेव सुनानी ने की। द्वितीय सत्र में रजनी किसान, रंजन सेठी तथा सुचित्रा महांति ने ओड़िआ साहित्य के उन विभिन्न पहलुओं पर आलेख प्रस्तुत किए जो हाशिए के लोगों से निकटता से जुड़े हैं। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता सुचित्रा महांति ने की।

पंजाबी

अजमेर सिंह औलख पर परिसंवाद

23 नवंबर 2023, बठिंडा

साहित्य अकादेमी ने 23 नवंबर 2023 को पंजाबी यूनिवर्सिटी रीजनल सेंटर, बठिंडा के सहयोग से गुरु काशी भाषा एवं सामाजिक विज्ञान विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय गुरु काशी कैंपस, दमदमा साहिब (तलवंडी साबो) में अजमेर सिंह औलख पर परिसंवाद का आयोजन किया। पंजाबी के प्रमुख नाटककार अजमेर सिंह औलख को दलित लोगों के नाटककार के रूप में

परिसंवाद के उद्घाटन सत्र का दृश्य

जाना जाता है, जिन्होंने पूरी प्रतिबद्धता के साथ पंजाब के निम्नवर्ग के किसानों के लिए लिखा। कार्यक्रम में प्रख्यात लेखकों, संकाय सदस्यों, साहित्य प्रेमियों, शोध विद्वानों तथा औलख की थिएटर टीम के सदस्यों ने भाग लिया। उद्घाटन सत्र का आरंभ कुलदीप दीप द्वारा निर्देशित अजमेर सिंह औलख पर तैयार वृत्तचित्र के प्रदर्शन के साथ हुआ। पंजाबी यूनिवर्सिटी रीजनल सेंटर, बठिंडा की प्रोफ़ेसर बलविंदर कौर सिधु ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी के पंजाबी परामर्श मंडल के संयोजक प्रोफ़ेसर रवेल सिंह ने उद्घाटन वक्तव्य प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने समकालीन समय के दौरान अजमेर औलख द्वारा लिखे गए नाटकों के महत्त्व पर प्रकाश डालने के अलावा पंजाबी साहित्य को बढ़ावा देने में अकादेमी के योगदान की चर्चा की। अजमेर औलख की पत्नी मनजीत कौर औलख कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि थीं। उन्होंने औलख से जुड़ी अपनी यादें साझा कीं। प्रख्यात नाटककार, सतीश कुमार वर्मा ने अपने बीज-वक्तव्य में पंजाबी नाटक के इतिहास पर विस्तार से प्रकाश डाला तथा नाटककार के रूप में अजमेर औलख की यात्रा तथा पंजाबी साहित्य के क्षेत्र में उनकी विरासत पर चर्चा की। पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला के कुलपति अरविंद ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में आयोजन की सराहना की तथा साहित्यिक क्षेत्र में शोध के महत्त्व पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने औलख की

प्रतिबद्धता को ग्रामीण शिक्षा के लिए विश्वविद्यालय के दृष्टिकोण से जोड़ा। साहित्य अकादेमी के पंजाबी परामर्श मंडल के सदस्य जसपाल मनखेरा ने समापन वक्तव्य प्रस्तुत किया। इंग्लैंड से पधारे एन.आर.आई. सुखदेव सिंह बंसल कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। पंजाबी यूनिवर्सिटी, गुरु काशी कैंपस के निदेशक कमलजीत सिंह ने भी साहित्यिक आयोजन के लिए अकादेमी को धन्यवाद दिया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात मार्क्सवादी समालोचक सुरजीत सिंह भट्टी ने की। बूटा सिंह चौहान, कुलदीप सिंह दीप, प्रीतम सिंह रूपल तथा लछमन मलूका ने औलख के लेखन पर आधारित अपने आलेख प्रस्तुत किए। उन्होंने अजमेर औलख के साथ अपने निजी अनुभव साझा किए। तत्पश्चात् सम्मानित श्रोताओं तथा प्रतिभागियों के बीच संवाद हुआ।

कार्यक्रम के अंत में पंजाबी यूनिवर्सिटी, गुरु काशी कैंपस के भाषा विभागाध्यक्ष कुमार सुशील ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

मियां मोहम्मद बख़्श पर परिसंवाद

23 सितंबर 2023, श्रीनगर

साहित्य अकादेमी ने जम्मू-कश्मीर कला, संस्कृति और भाषा अकादेमी के सहयोग से 23 सितंबर 2023 को श्रीनगर के टैगोर हॉल में महान पंजाबी सूफ़ी कवि मियां मोहम्मद बख़्श पर परिसंवाद का आयोजन किया। आरंभ में साहित्य अकादेमी के पंजाबी परामर्श मंडल के संयोजक रवेल सिंह ने अतिथियों का स्वागत किया और अपने आरंभिक वक्तव्य में मियां मोहम्मद बख़्श की कविता के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। अकादेमी के पंजाबी परामर्श मंडल के सदस्य ख़ालिद हुसैन ने बीज-भाषण देते हुए मियां मोहम्मद बख़्श की मुख्य रूप से सूफ़ी कविता पर ध्यान केंद्रित करते हुए मियां साहब के साहित्यिक कार्यों के बारे में जानकारी दी और उनके समकालीनों के साथ उनके कार्यों का तुलनात्मक विवरण प्रस्तुत किया। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में, प्रख्यात नाटककार, रंग निर्देशक और लेखक, सतीश वर्मा ने मियां मोहम्मद बख़्श की महान कृति 'सैफ उल मलूक' के कई छंदों को उद्धृत किया और वर्तमान परिदृश्य में उनकी कविता की प्रासंगिकता के बारे में बताया। उन्होंने श्रीनगर में इतना महत्त्वपूर्ण साहित्यिक कार्यक्रम आयोजित करने के लिए अकादेमी और सहयोगी संस्था जे. एंड के. अकादेमी को भी धन्यवाद दिया। सचिव, जे.के.ए.ए.सी.एल. की ओर से जे.के.ए.ए.सी.एल. के पहाड़ी अनुभाग के प्रधान संपादक फ़ारूक़ अनवर मिर्ज़ा ने समापन वक्तव्य दिया और देश के विभिन्न हिस्सों से आए सभी प्रतिभागियों और उपस्थित साहित्यप्रेमियों को धन्यवाद दिया। परिसंवाद के द्वितीय सत्र की अध्यक्षता रवेल सिंह ने की, जिसमें रणधीर कौर, अरविंदर अमन, अजीत सिंह मस्ताना, जुबैर कुरेशी और अमन प्रीत कौर ने मियां मोहम्मद बख़्श के जीवन और कविता और उनके महाकाव्य 'सैफ उल मलूक' पर अपने सुचिंतित आलेख प्रस्तुत किए, जबकि स्वामी अंतर नीरव और सुरिंदर नीर ने अपनी कविताएँ सुनाईं। कार्यक्रम का समापन अनुपम तिवारी, संपादक हिंदी, साहित्य अकादेमी के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ, जिन्होंने अकादेमी की गतिविधियों, विशेषकर पंजाबी भाषा और साहित्य के बारे में जानकारी दी।

परिसंवाद के उद्घाटन सत्र का दृश्य

राजस्थानी

'राजस्थानी भाषा साहित्य का शिक्षण : दशा और दिशा' पर परिसंवाद

28 मार्च 2024, जोधपुर, राजस्थान

सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. अर्जुन देव चारण

साहित्य अकादेमी ने जोधपुर (राजस्थान) में जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय के राजस्थानी विभाग के सहयोग से 'राजस्थानी भाषा साहित्य का शिक्षण : दशा और दिशा' पर परिसंवाद का आयोजन किया। परिसंवाद के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए साहित्य अकादेमी के राजस्थानी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. अर्जुन देव चारण ने कहा कि मातृभाषा से ही संस्कृति का संरक्षण होता है। उद्घाटन सत्र में प्रो. कल्याण सिंह शेखावत ने कहा कि राजस्थानी भाषा संवैधानिक मान्यता की हकदार है, किंतु वर्तमान में राजस्थानी भाषा संवैधानिक संकट से गुज़र रही है, क्योंकि नई शिक्षा नीति के अंतर्गत दस करोड़ की आबादी वाले राजस्थान में अभी तक राजस्थानी भाषा को मातृभाषा का दर्जा नहीं मिला है तथा इसका खामियाज़ा राज्यवासियों को भुगतना पड़ रहा है। कार्यक्रम के संयोजक एवं जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय के राजस्थानी विभागाध्यक्ष डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित ने स्वागत व्याख्यान प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के राजस्थानी विभागाध्यक्ष डॉ. सुरेश कुमार सालवी ने की। सत्र के दौरान डॉ. इंद्रदान चारण तथा डॉ. रामरतन लटियाल ने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित ने की। सत्र के दौरान डॉ. जितेंद्र सिंह साठीका तथा डॉ. अमित गहलोत ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम के समापन सत्र के मुख्य अतिथि तथा राजस्थानी के प्रख्यात विद्वान डॉ. देव कोठारी ने कहा कि राजस्थानी भाषा हमारे राज्य की अस्मिता से जुड़ी हुई है। कार्यक्रम के समापन सत्र के मुख्य अतिथि डॉ. प्रकाश अमरावत ने कहा कि राज्य के विद्यार्थी राजस्थानी भाषा एवं साहित्य का अध्ययन करना चाहते हैं, किंतु दुर्भाग्यवश विद्यालयों में समुचित व्यवस्था न होने के कारण वे अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने से वंचित रह जाते हैं।

'मध्यकालीन राजस्थानी साहित्य : इतिहास और साहित्य का अंतर्संबंध' विषय पर परिसंवाद

29 मार्च 2024, जोधपुर, राजस्थान

साहित्य अकादेमी ने जोधपुर, राजस्थान में जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय के राजस्थानी विभाग के सहयोग से 'मध्यकालीन राजस्थानी साहित्य : इतिहास और साहित्य का अंतर्संबंध' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. माधव हाडा ने कहा कि

व्याख्यान देते हुए कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. माधव हाडा

मध्यकालीन राजस्थानी साहित्य में उपलब्ध जानकारी अद्‌भुत है। अपने अध्यक्षीय व्यख्यान में साहित्य अकादेमी के राजस्थानी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. अर्जुन देव चारण ने भारतीय तथा पाश्चात्य दृष्टिकोण से उदाहरण देकर इतिहास और साहित्य के अंतरसंबंधों पर अपने विचार साझा किए और कहा कि साहित्य और इतिहास के बारे में हर समाज की अपनी अलग धारणा होती है। कार्यक्रम के संयोजक एवं जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय के राजस्थानी विभागाध्यक्ष डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित ने स्वागत व्याख्यान प्रस्तुत किया। उद्‌घाटन सत्र का संचालन डॉ. धनंजय अमरावत ने किया।

प्रथम सत्र में डॉ. दिनेश चारण एवं डॉ. धनंजया अमरावत ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा सत्र की अध्यक्षता डॉ. मंगत बादल ने की। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री मधु आचार्य 'आशावादी' ने की। इस सत्र में श्रीमती मीनाक्षी बोराणा एवं डॉ. प्रकाशदान चारण ने आलेख प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम के समापन सत्र में जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के.एल. श्रीवास्तव ने कहा कि जन्म देने वाली माँ, मातृभूमि तथा मातृभाषा में कोई अंतर नहीं है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि तथा राजस्थानी के प्रख्यात विद्वान डॉ. भंवर सिंह सामौर ने कहा कि दुनिया के जिन इतिहासकारों ने मध्यकालीन राजस्थानी साहित्य की अनदेखी कर राजस्थान का इतिहास लिखा है, वे प्रामाणिक नहीं हैं, क्योंकि प्रामाणिक इतिहास राजस्थानी दोहों, सोरठों तथा छंदों में मौजूद है। सत्राध्यक्ष प्रो. सोहनदान चारण ने कहा कि राजस्थान के इतिहास लेखन में राजस्थानी लोक साहित्य को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। इस अवसर पर कई प्रतिष्ठित लेखक, शिक्षक, शोध छात्र तथा मातृभाषा राजस्थानी से प्रेम करने वाले श्रोता उपस्थित थे।

संस्कृत

संस्कृत साहित्य में महर्षि श्री अरविंद पर परिसंवाद

2 दिसंबर 2023, कोलकाता

बीज-भाषण प्रस्तुत करते हुए प्रो. प्रफुल्ल कुमार मिश्र

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली ने रामकृष्ण मिशन आवासीय महाविद्यालय (स्वायत्त), नरेंद्रपुर, कोलकाता के सहयोग से 2 दिसंबर 2023 को 'संस्कृत साहित्य में महर्षि श्री अरविंद' पर परिसंवाद का आयोजन किया। उद्‌घाटन सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रामकृष्ण मिशन आवासीय महाविद्यालय, नरेंद्रपुर, कोलकाता के प्राचार्य स्वामी एकचित्तानंद थे। उद्‌घाटन सत्र की शुरुआत साहित्य अकादेमी के संस्कृत परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. हरेकृष्ण सतपथी द्वारा विषय प्रवर्तन से हुई। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। सचिव ने अकादेमी के शैक्षणिक कार्यों पर प्रकाश डाला तथा प्रतिभागियों को संस्कृत भाषा सीखने के लिए प्रेरित किया। प्रख्यात संस्कृत लेखक प्रो. प्रफुल्ल कुमार मिश्र ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने श्री अरविंद दर्शन आदि पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि स्वामी एकचित्तानंद ने श्री अरविंद के कर्मयोग का उल्लेख किया। श्री माधव कौशिक ने अपने अध्यक्षीय व्यख्यान में देश के ऐतिहासिक विकास तथा संस्कृत साहित्य पर प्रकाश डाला। उन्होंने संस्कृति, जाति और समाज पर

आधुनिक लेखकों के योगदान की प्रशंसा की। साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष डॉ. कुमुद शर्मा ने अपने समापन व्यख्यान में श्री अरविंद के लेखन के नैतिक मूल्यों पर प्रकाश डाला। परिसंवाद के प्रथम सत्र की अध्यक्षता पूर्व प्रोफ़ेसर, संस्कृत विभाग, आर.बी.यू, कोलकाता के डॉ. सत्यनारायण चक्रवर्ती ने की। सत्र का समन्वयन एसोसिएट प्रोफ़ेसर, संस्कृत विभाग, रामकृष्ण मिशन आवासीय महाविद्यालय, नरेंद्रपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल के डॉ. सुरजीत बनर्जी ने किया। इस सत्र में डॉ. संपदानंद मिश्र, डॉ. नारायण दाश, डॉ. बुद्धेश्वर षड़ंगी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता साहित्य विभाग, श्री सदाशिव परिसर, सीएस विश्वविद्यालय, दिल्ली के प्रोफ़ेसर डॉ. धर्मेंद्र कुमार सिंह देव ने की। सत्र के समन्वयक रामकृष्ण मिशन आवासीय महाविद्यालय कोलकाता, पश्चिम बंगाल के संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. नारायण दाश थे। डॉ. तन्मय कुमार भट्टाचार्य, प्रो. अयन भट्टाचार्य तथा प्रो. प्रतिभा मंजरी रथ ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का समापन साहित्य अकादेमी के उप सचिव डॉ. एन. सुरेश बाबू के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ। शांतिपाठ से समापन सत्र संपन्न हुआ।

'त्रिपुरा में साहित्य, संस्कृति तथा शक्ति-तत्त्व की परंपरा' विषय पर परिसंवाद

12 दिसंबर 2023, अगरतला, त्रिपुरा

साहित्य अकादेमी और त्रिपुरा विश्वविद्यालय ने संयुक्त रूप से मंगलवार, 12 दिसंबर 2023 को विश्वविद्यालय परिसर में त्रिपुरा तथा अन्य पूर्वोत्तर राज्यों के प्रख्यात विद्वानों के साथ 'त्रिपुरा में साहित्य, संस्कृति तथा शक्ति-तत्त्व की परंपरा' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। प्रोफेसर गंगा प्रसाद प्रसैन ने परिसंवाद का उद्घाटन किया तथा त्रिपुरा की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के

दीप प्रज्वलित करते गणमान्य व्यक्ति

दस्तावेज़ीकरण तथा प्रचार-प्रसार के महत्त्व पर चर्चा की। साहित्य अकादेमी के संस्कृत परामर्श मंडल के संयोजक प्रोफेसर हरेकृष्ण सत्पथी भी इस अवसर पर उपस्थित थे तथा उन्होंने त्रिपुरासुंदरी और उसके इर्द-गिर्द विकसित हुई धार्मिक परंपरा पर विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान प्रस्तुत किया। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि त्रिपुरा विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार डॉ. दीपक शर्मा थे। उन्होंने परिसंवाद के विषय पर बोलते हुए बताया कि किस प्रकार देवी के प्रति आस्था, संस्कृति और परंपरा ने त्रिपुरा को शेष भारत के साथ एक सूत्र में जोड़ कर रखा हुआ है। प्रो. राजेंद्र नाथ शर्मा ने बीज-वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने त्रिपुरा और पूर्वोत्तर में प्रचलित तंत्र साहित्य तथा प्रथाओं पर विस्तार से चर्चा की। उद्घाटन सत्र में संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. शिप्रा राय ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। शेष दो शैक्षणिक सत्रों में त्रिपुरा तथा पूर्वोत्तर के प्रख्यात विद्वानों जैसे - प्रो. जगदीश गनचौघुरी, प्रो. अनिल आचार्य, डॉ. रामेश्वर भट्टाचार्य, डॉ. निर्मल दास तथा डॉ. देवराज पाणिग्रही द्वारा देवी पूजा से जुड़े विकास और संवर्धन, कला तथा वास्तुकला, साहित्य और धर्म पर कुल 5 आलेख प्रस्तुत किए। सत्रों की अध्यक्षता संस्कृत विश्वविद्यालय के संस्थापक कुलपति कुमार भास्कर वर्मा, साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित प्रो. दीपक कुमार शर्मा तथा केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, एकलव्य परिसर के निदेशक प्रो. प्रभात कुमार महापात्र ने की। परिसंवाद में विश्वविद्यालय के

विभिन्न विभागों के छात्रों तथा शोधार्थियों ने भाग लिया। परिसंवाद का समन्वयन त्रिपुरा विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के सहायक प्रोफेसर तथा साहित्य अकादेमी के संस्कृत परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. जय साहा ने किया।

संताली

'संताली साहित्य में कथा लेखन की प्रवृत्तियाँ' विषय पर परिसंवाद

23 सितंबर 2023, करनडीह, जमशेदपुर

साहित्य अकादेमी ने जाहेर थान समिति, दिशोम जाहेर, करनडीह, जमशेदपुर के सहयोग से 23 सितंबर 2023 को दिशोम जाहेर, करनडीह, जमशेदपुर में 'संताली साहित्य में कथा लेखन की प्रवृत्तियाँ' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया।

उद्घाटन सत्र में स्वागत वक्तव्य साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव देवेंद्र कुमार देवेश ने दिया। आरंभिक वक्तव्य साहित्य अकादेमी के संताली परामर्श मंडल के संयोजक चैतन्य प्रसाद माझी द्वारा दिया गया। उन्होंने संताली गल्प लेखन की उत्पत्ति और विकास पर संक्षेप में बात की। कार्यक्रम का उद्घाटन प्रख्यात संताली लेखक रूपचांद हांसदा ने किया, जिन्होंने संताली कथा लेखन की वर्तमान स्थिति पर बात की। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात विद्वान लखाई बास्की ने की। जाहेर थान समिति, दिशोम जाहेर, करनडीह के सदस्य ताला टुडू ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र में, संताली गल्प साहित्य की उत्पत्ति और विकास पर आलेख दाशरथी माझी, श्री दुर्गा सोरेन और श्री महान चंद्र बास्की द्वारा प्रस्तुत किए गए। सत्र की अध्यक्षता बादल हेम्ब्रम ने की। द्वितीय सत्र में, लक्ष्मण किस्कू और टीकाराम टुडू द्वारा यशोदा मुर्मू की अध्यक्षता में इसी विषय पर आलेख प्रस्तुत किए गए। वक्ताओं ने कई प्रमुख संताली गल्प कृतियों का उल्लेख किया तथा उनके विशिष्ट पहलुओं के साथ-साथ समग्र रूप से संताली साहित्य में उनके योगदान पर प्रकाश डाला।

उद्घाटन वक्तव्य देते हुए श्री रूपचांद हांसदा

'संताली गीतों में परिलक्षित धार्मिक अवधारणाएँ' विषय पर परिसंवाद

17 जनवरी 2024, भुवनेश्वर

साहित्य अकादेमी ने तुलनात्मक जनजातीय भाषा और साहित्य विद्यालय, के.आई.एस.एस. के सहयोग से 17 जनवरी 2024 को के.आई.एस.एस., भुवनेश्वर के प्रशासनिक भवन परिसर-3 के सम्मेलन कक्ष-2 में 'संताली गीतों में परिलक्षित धार्मिक अवधारणाएँ' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने स्वागत व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने संताली साहित्य

उद्घाटन सत्र का दृश्य

के संदर्भ में भारतीय साहित्य में धार्मिक विषयों के योगदान पर अपने विचार व्यक्त किए। साहित्य अकादेमी के संताली परामर्श मंडल के संयोजक चैतन्य प्रसाद माझी ने आरंभिक व्याख्यान प्रस्तुत किया। के.आई.आई.टी. तथा के.आई.एस.एस. के संस्थापक अच्युत सामंत ने उद्घाटन व्याख्यान प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी के संताली परामर्श मंडल के सदस्य नाकू हांसदा ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया तथा इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात संताली विद्वान गंगाधर हांसदा ने की। के.आई.एस.एस. के उप निदेशक (अकादमिक) कदै सोरेन ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। प्रथम सत्र में जतिंद्रनाथ बेसरा, सुखचांद सोरेन तथा सिद्धिलाल मुर्मू ने भुजंग टुडू की अध्यक्षता में आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र में धनेश्वर माझी, अंजन कर्मकार तथा लालचंद सोरेन ने आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र की अध्यक्षता रूपचंद हांसदा ने की। सभी प्रतिभागियों ने प्रमुख ग्रंथों के संदर्भ में संताली गीतों के विभिन्न पहलुओं तथा उन पर धार्मिक अवधारणाओं के प्रभाव पर चर्चा की।

सिंधी

ए.जे. उत्तम : व्यक्तित्व और कृतित्व पर परिसंवाद

11 दिसंबर 2023, मुंबई

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई ने 11 दिसंबर 2023 को दादर, मुंबई स्थित अकादेमी के सभागार में "ए.जे. उत्तम : व्यक्तित्व और कृतित्व" पर सिंधी में जन्म शताब्दी परिसंवाद का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई के प्रभारी अधिकारी डॉ. ओम प्रकाश नागर ने प्रतिभागियों तथा श्रोताओं का स्वागत किया। श्री साहिब बिजानी ने वर्चुअल माध्यम

आरंभिक वक्तव्य देते हुए श्री मोहन हिमथाणी

से कार्यक्रम का उद्घाटन किया। श्री मोहन हिमथाणी ने आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए, प्रख्यात सिंधी लेखक श्री मोहन गेहाणी ने ए.जे. उत्तम के साहित्यिक कार्यों के बारे में विस्तार से बात की। उन्होंने उत्तम को क्रांतिकारी लेखक बताया, जिनकी पीड़ा उनकी कलम ने बयान की। उनके लेखन में सिंधी समुदाय के स्वतंत्रता संग्राम और पीड़ा को दर्शाया गया है।

प्रथम की अध्यक्षता जगदीश लच्छाणी ने की, जबकि शोभा मल्ही ने ए.जे. उत्तम के व्यक्तित्व पर बात की। उन्होंने उत्तम के साथ बातचीत के अपने अनुभव साझा किए। सत्र के दूसरे आलेख वक्ता हूंदराज बलवाणी ने ए.जे. उत्तम के कथात्मक तथा अनुवाद कार्यों पर चर्चा की। जगदीश लच्छाणी ने आलेख वक्ताओं द्वारा प्रस्तुत आलेखों पर टिपण्णी करने के साथ-साथ ए.जे. उत्तम के साथ अपने व्यक्तिगत अनुभवों के बारे में जानकारी देते हुए सत्र का समापन किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता मोहन गेहाणी ने की। संध्या कुंदनाणी ने ए.जे. उत्तम द्वारा लिखित ग़ैर-काल्पनिक कहानियों का वर्णन किया, जबकि कमला गोकलाणी ने संपादक तथा समालोचक के रूप में ए.जे. उत्तम के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी। डॉ. ओम प्रकाश नागर ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

उर्दू

'साहिर लुधियानवी और उनके समकालीन कवि' विषय पर परिसंवाद

25 सितंबर 2023, पटना

साहित्य अकादेमी ने उर्दू विभाग, पटना विश्वविद्यालय के सहयोग से 25 सितंबर 2023 को उर्दू विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना में 'साहिर लुधियानवी और उनके समकालीन कवि' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। "साहिर की शायरी न केवल सामाजिक परिस्थितियों का प्रतिबिंब है, बल्कि एक सरल हृदय व्यक्ति के दर्द और कष्टमय जीवन को समझने का एक ज़रिया भी है। साहिर की शायरी में सरल हृदय लोगों की पीड़ा के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। साहिर एक ऐसे शायर हैं, जिन्होंने अपनी शायरी में सरल कथ्य को जगह दी है। साहिर की शायरी बनावटीपन से मुक्त है, लेकिन अनुकरण, मूर्तिकला, नक्काशी और चित्रकला के बेहतरीन उदाहरण हैं। साहिर ने प्रेम गीतों को कड़वाहट की दास्तान बनाया है और अपनी कविता 'ताजमहल' में पहली बार इसे अपनाया है"; यह वक्तव्य उर्दू विभाग, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के प्रोफ़ेसर ख्वाजा मोहम्मद इकरामुद्दीन ने अपने बीज वक्तव्य में कही। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली के उर्दू परामर्श मंडल के संयोजक श्री चंद्रभान ख्याल ने की। साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली के श्री मूसा रज़ा ने सभी अतिथियों तथा प्रतिभागियों का स्वागत किया। डॉ. शहाब ज़फ़र आज़मी, अध्यक्ष उर्दू विभाग, पटना विश्वविद्यालय, ने वक्तव्य प्रस्तुत किया तथा साहिर की शायरी के बारे में बहुमूल्य जानकारी साझा की। डॉ. आज़मी ने कहा कि साहिर सकारात्मक मूल्यों के शायर हैं। साहिर ख़्वाबों और उम्मीदों के शायर हैं। साहिर की शायरी हमें नई ज़िंदगी की प्रेरणा देती है।

उद्घाटन सत्र में दीप प्रज्वलित करते हुए अतिथिगण

पटना विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश कुमार चौधरी ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में कहा कि साहिर सपनों को सच करने वाले शायर हैं। हमें भी सपने देखना चाहिए और उन्हें साकार करने का प्रयास करना चाहिए। प्रो. चौधरी ने विश्वविद्यालय की रचनात्मक और प्रस्तावित परियोजनाओं के साथ-साथ पटना विश्वविद्यालय की शिक्षण और अनुसंधान गतिविधियों पर भी विस्तार से चर्चा की। बिहार विधान सभा के सदस्य डॉ. शकील अहमद ख़ान ने अपने व्याख्यान में छात्रों को सलाह दी कि उन्हें साहिर की शायरी के दो संग्रह "तल्खियाँ" और "परछाइयाँ" का विशेष रूप से अध्ययन करना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि आप उर्दू भाषा के द्वारा दुनिया जीत सकते हैं।

मौलाना मज़हरूल हक़ अरबी एवं फ़ारसी विश्वविद्यालय, पटना के पूर्व कुलपति प्रो. एजाज़ अली अरशद ने अपने व्याख्यान में कहा कि पटना विश्वविद्यालय से मेरा रिश्ता लगभग पचास वर्ष पुराना है। एक छात्र के रूप में मैंने इस विश्वविद्यालय के पचास रंग देखे हैं और एक शिक्षक के रूप में भी मैंने इस विश्वविद्यालय के पचास रंग देखे हैं। जिन छात्रों को मैंने पढ़ाया है, वे शिक्षक और प्रोफ़ेसर बन गए हैं और मुझे उन पर गर्व है। साहिर के बारे में उन्होंने कहा कि साहिर की शायरी और उनकी मोहब्बत दोनों मशहूर हैं। साहिर अपने असफल प्रेम संबंधों के मद्देनज़र जाने-अनजाने हमें उर्दू शायरी

की एक नई यथार्थवादी अवधारणा दे गए हैं। नज़ीर अकबराबादी के बाद साहिर लुधियानवी दूसरे सबसे बड़े शायर हैं। इसलिए साहिर को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए। उद्घाटन सत्र के अध्यक्ष सुप्रसिद्ध शायर श्री चंद्रभान ख़्याल ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि साहिर मेरे पसंदीदा शायर हैं, साहिर अपनी शायरी के माध्यम से समाज के पीड़ित व्यक्तियों के पसंदीदा हैं। अंत में डॉ. सूरज देव सिंह, एसोसिएट प्रोफ़ेसर, उर्दू विभाग, पटना विश्वविद्यालय ने परिसंवाद में पधारे सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों को धन्यवाद दिया।

उद्घाटन सत्र के बाद दो तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया, जिसमें देश भर के प्रख्यात लेखकों और विद्वानों ने हिस्सा लिया। दोनों तकनीकी सत्रों में अपने आलेख प्रस्तुत करने वालों में प्रोफ़ेसर रेयाज़ अहमद (जम्मू), प्रोफ़ेसर मोहम्मद काज़िम (दिल्ली), प्रोफ़ेसर हुमायूं अशरफ (हज़ारीबाग), हक्कानी अल कासमी (दिल्ली), प्रोफ़ेसर सैयद शाह हसीन अहमद (पटना) तथा प्रोफ़ेसर नईम अनीस (कोलकाता) शामिल थे। परिसंवाद के दौरान बड़ी संख्या में उर्दू प्रेमी, शोधार्थी, छात्र एवं छात्राएँ तथा श्रोता उपस्थित थे।

उन्मेष 2023

Conference
उन्मेष
UNMESHA
उत्कर्ष
UTKARSH

उन्मेष
UNMESHA
अंतरराष्ट्रीय साहित्य उत्सव
उत्कर्ष
UTKARSH
भारत की लोक एवं जनजातीय
अभिव्यक्तियों का राष्ट्रीय उत्सव
Chief Guest
Smt Droupadi Murmu
Hon'ble President of India

उन्मेष
UNMESHA
अंतरराष्ट्रीय साहित्य उत्सव
Chief Guest

उन्मेष
UNMESHA
अंतरराष्ट्रीय साहित्य उत्सव
उत्कर्ष
UTKARSH

उन्मेष 2023

Promoting Indian Literature
in Foreign Languages
ILA

Different Strokes

उत्कर्ष
उन्मेष

संस्कृतसमुन्मेषः

संस्कृतसमुन्मेषः
राष्ट्रियसंस्कृतसम्मेलनम्
NATIONAL SANSKRIT CONVENTION
संस्कृतशोभायात्रा
SAMSKRITA SHOBHAVATRA

SAMSKRITA SAMUNMESHA

संस्कृतसमुन्मेषः
SAMSKRITA SAMUNMESHA
NATIONAL SANSKRIT CONVENTION

संस्कृतसमुन्मेषः

संस्कृतसमुन्मेषः
राष्ट्रियसंस्कृतसम्मेलनम्
SAMSKRITA SAMUNMESHA
NATIONAL SANSKRIT CONVENTION

SAMSKRITA SAMUNMESHA

संस्कृतसमुन्मेषः
राष्ट्रियसंस्कृतसम्मेलनम्
SAMSKRITA SAMUNMESHA

संस्कृतसमुन्मेषः

संस्कृतसमुन्मेषः
राष्ट्रियसंस्कृतसम्मेलनम्
SAMSKRITA SAMUNMESHA
NATIONAL SANSKRIT CONVENTION

पुस्तकायन 2023

Ministry of Culture
Sahitya Akademi
PUSTAKAYAN
BOOK FAIR & LITERARY PROGRAMMES

साहित्योत्सव 2024

साहित्योत्सव 2024

वितस्ता

गणमान्य अतिथियों का साहित्य अकादेमी में आगमन

भारत में क्यूबा गणराज्य दूतावास के राजदूत महामहिम
श्री अलेजांद्रा सिमांकास मारिन

भारत में बोस्निया और हर्ज़ेगोविना दूतावास के राजदूत महामहिम श्री मुहम्मद चेंगीच

भारत में लिथुआनिया गणराज्य की राजदूत महामहिम
सुश्री डायना मिकेविसीन

भारत में इज़राइल दूतावास की कल्चरल अटैशी सुश्री रेउमा मंतज़ुर

साहित्य अकादेमी द्वारा 1 अप्रैल 2023 से 31 मार्च 2024 तक आयोजित कार्यक्रमों की सूची

अस्मिता

कन्नड लेखिका सम्मिलन
22 जुलाई, किट्टूर, बेलागावी कर्नाटक

असमिया लेखिका सम्मिलन
9 अक्तूबर 2023, नम्ति, शिवसागर, असम

बोडो लेखिका सम्मिलन
23 दिसंबर 2023, बी.टी.ए.डी., असम

उर्दू लेखिका सम्मिलन
27 दिसंबर 2023, नई दिल्ली

कश्मीरी लेखिका सम्मिलन
24 जनवरी 2024, जम्मू, जम्मू और कश्मीर

बहुभाषी लेखिका सम्मिलन
2 मार्च 2024, नई दिल्ली

बहुभाषी कवयित्री सम्मिलन
8 मार्च 2024, कोलकाता

पुरस्कार/महत्तर सदस्यता

साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2023 अर्पण समारोह
9 नवंबर 2023, नई दिल्ली

आनंद कुमारस्वामी महत्तर सदस्यता 2023 अर्पण समारोह
29 नवंबर 2023, नई दिल्ली

प्रेमचंद महत्तर सदस्यता 2023 अर्पण समारोह
8 दिसंबर 2023, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2023 अर्पण समारोह
12 जनवरी 2024, कोलकाता

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2023 अर्पण समारोह
12 मार्च 2023, नई दिल्ली

आनंद कुमारस्वामी महतर सदस्यता 2023 अर्पण समारोह
13 मार्च 2023, नई दिल्ली

बाल साहिती

अंग्रेज़ी लेखकों के साथ बाल साहिती
16 फ़रवरी 2024, नई दिल्ली

बोडो लेखकों के साथ बाल साहिती
16 फरवरी 2024, क'क्राझार, असम

पुस्तक चर्चा

***तमिष़ सिरुकथैंगल* पर पुस्तक चर्चा**
13 अप्रैल 2023, चेन्नै

***कुष़जंधै कविज़र अज़ा.* पर *वल्लियप्पा पाडल थोगुप्पु* पुस्तक चर्चा।**
25 मई 2023, चेन्नै

***एम.एल. थांगप्पाविन थर्नथेडुक्कपट्टा पाक्कल* पर पुस्तक चर्चा**
15 जून 2023, चेन्नै

***कनाविल थोलैन्धवन* पर पुस्तक चर्चा**
20 जुलाई 2023, चेन्नै

***आराचार* पर पुस्तक चर्चा**
10 अगस्त 2023, चेन्नै

प्रमुख बाङ्ला पुस्तकों पर पुस्तक चर्चा
23 अगस्त 2023, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

***वाज़क्कै पाधै* पर पुस्तक चर्चा**
21 सितंबर 2023, चेन्नै

***महाकवि भरतियार* पर पुस्तक चर्चा**
30 नवंबर 2023, चेन्नै

***थाई मन्न* पर पुस्तक चर्चा**
28 दिसंबर 2023, चेन्नै

***पिन नवीनथुवा तमिष़ इलाक्किया मरिसनथिन* पनमुगंगल पर पुस्तक चर्चा**
25 जनवरी 2024, चेन्नै

***इन्धा आयुधंगलाल थान* पर पुस्तक चर्चा**
29 फरवरी 2024, चेन्नै

***सी.वी. श्रीरामणिन थेर्नथेडुक्कप्पट्ट सिरियुकथैगल* पर पुस्तक चर्चा**
14 मार्च 2024, चेन्नै

सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम

भारत में बोस्निया और हर्ज़ेगोविना के माननीय राजदूत महामहिम श्री मुहम्मद सेंगिक के साथ साहित्य मंच
2 जून 2023, नई दिल्ली

दलित चेतना

हिंदी कविता-पाठ
14 अप्रैल 2023, नई दिल्ली

मलयाळम् कविता पाठ
13 फरवरी 2024, कोझीकोड, केरल

वृत्तचित्र प्रदर्शन (दर्पण)

दर्पण (वृत्तचित्र प्रदर्शन)
30 अक्तूबर 2023 से 3 नवंबर 2023 तक आभासी मंच, नई दिल्ली

नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती पर दर्पण (वृत्तचित्र प्रदर्शन)
3 नवंबर 2023, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

एक भारत श्रेष्ठ भारत शृंखला

एक भारत श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत डोगरी-तेलुगु कवि सम्मिलन
11 अप्रैल 2023, आभासी मंच

एक भारत श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत वर्चुअल मैथिली-तमिऴ कवि सम्मिलन
12 अप्रैल 2023, आभासी मंच

एक भारत श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत मलयाळम्-संस्कृत कवि सम्मिलन
13 अप्रैल 2023, आभासी मंच

एक भारत श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत डोगरी-मणिपुरी कवि सम्मिलन

16 मई 2023, आभासी मंच

एक भारत श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत कश्मीरी-मैथिली कवि सम्मिलन

17 मई 2023, आभासी मंच

एक भारत श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत असमिया-संस्कृत कवि सम्मिलन

18 मई 2023, आभासी मंच

एक भारत श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत नेपाली-तमिऴ कवि सम्मिलन

26 मई 2023, आभासी मंच

एक भारत श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत डोगरी-तेलुगु कवि सम्मिलन

13 जून 2023, आभासी मंच पर

एक भारत श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत मैथिली-पंजाबी कवि सम्मिलन

14 जून 2023, आभासी मंच पर

एक भारत श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत ओड़िआ-तमिऴ कवि सम्मिलन

14 जून 2023, आभासी मंच पर

एक भारत श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत ओड़िआ-संस्कृत कवि सम्मिलन

15 जून 2023, आभासी मंच पर

एक भारत श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत पंजाबी-तमिऴ कवि सम्मिलन

21 जुलाई 2023, आभासी मंच पर

एक भारत श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत राजस्थानी-तमिऴ कवि सम्मिलन

17 अगस्त 2023, आभासी मंच पर

एक भारत श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत संस्कृत-तमिऴ कवि सम्मेलन सम्मिलन

29 सितंबर 2023, आभासी मंच पर

एक भारत श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत संताली-तमिऴ कवि सम्मिलन

29 नवंबर 2023, आभासी मंच पर

एक भारत श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत सिंधी-तमिऴ कवि सम्मिलन

22 दिसंबर 2023, आभासी मंच पर

एक भारत श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत उर्दू-तमिऴ कवि सम्मिलन

28 फ़रवरी 2024, आभासी मंच पर

एक भारत श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत असमिया-तमिऴ कवि सम्मिलन

19 मार्च 2024, आभासी मंच पर

साहित्योत्सव 2024

साहित्य अकादेमी की प्रदर्शनी का उद्घाटन

11 मार्च 2024, रवींद्र भवन परिसर

भारत का भक्ति साहित्य
11 मार्च 2024, वाल्मीकि सभागार

क्या साहित्य अन्य कलाओं से महत्त्वपूर्ण है?
11 मार्च 2024, वाल्मीकि सभागार

सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में रंगमंच
11 मार्च 2024, वाल्मीकि सभागार

कूटनीति और साहित्य
11 मार्च 2024, वाल्मीकि सभागार

भारत में बाल साहित्य के अनुवाद से जुड़े मुद्दों पर चर्चा
11 मार्च 2024, वेद व्यास सभागार

एलजीबीटीक्यू लेखक सम्मिलन - मेरा पहला लेखन अनुभव
11 मार्च 2024, वेद व्यास सभागार

साहित्य और महिला सशक्तीकरण पर चर्चा
11 मार्च 2024, वेद व्यास सभागार

प्रौद्योगिकी और साहित्य
11 मार्च 2024, वेद व्यास सभागार

बहुभाषी कविता पाठ
11 मार्च 2024, मीराबाई सभागार

युवा साहिती : युवा भारत का उदय : कविता पाठ
11 मार्च 2024, मीराबाई सभागार

कवयित्री सम्मिलन
11 मार्च 2024, मीराबाई सभागार

भारत को जोड़ना : कविता पाठ
11 मार्च 2024, मीराबाई सभागार

भारतीय पारिस्थितिकी आलोचना पर चर्चा
11 मार्च 2024, कबीर सभागार

अस्मिता : कवयित्री सम्मेलन
11 मार्च 2024, कबीर सभागार

युवा साहिती : कहानी-पाठ
11 मार्च 2024, कबीर सभागार

लेखन एक हथियार के रूप में
11 मार्च 2024, कबीर सभागार

बहुभाषी कहानी पाठ
11 मार्च 2024, शंकरदेव सभागार

पूर्वोत्तरी : उत्तर पूर्व और उत्तरी लेखक सम्मिलन - समकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियों पर चर्चा
11 मार्च 2024, शंकरदेव सभागार

पूर्वोत्तरी : उत्तर पूर्व और उत्तरी लेखक सम्मिलन - कविता पाठ
11 मार्च 2024, शंकरदेव सभागार

पूर्वोत्तरी साहित्य में समकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियाँ
11 मार्च 2024, शंकरदेव सभागार

बहुभाषी कवि सम्मिलन
11 मार्च 2024, ललद्यद सभागार

बहुभाषी कविता-पाठ
11 मार्च 2024, ललद्यद सभागार

भारत का एलजीबीटीक्यू साहित्य - पिछले 4 दशकों पर चिंतन
11 मार्च 2024, ललद्यद सभागार

मेरे लिए कविता का क्या अर्थ है?
11 मार्च 2024, ललद्यद सभागार

युवा साहिती : कहानी-पाठ
11 मार्च 2024, तुलसीदास सभागार

कविता : आत्मा का दर्पण
11 मार्च 2024, तुलसीदास सभागार

मैं क्यों लिखता हूँ?
11 मार्च 2024, तुलसीदास सभागार

बहुभाषी कविता-पाठ
11 मार्च 2024, तुलसीदास सभागार

भारत को जोड़ना : कहानी-पाठ
11 मार्च 2024, नरसी मेहता सभागार

भारत और इंडोनेशिया की साझा सांस्कृतिक विरासत
11 मार्च 2024, नरसी मेहता सभागार

बहुभाषी कवि सम्मिलन : विभिन्न भाषाओं में भारतीय कविता
11 मार्च 2024, नरसी मेहता सभागार

महत्तर सदस्यों का सम्मान
11 मार्च 2024, मेघदूत मुक्ताकाश रंगशाला

सांस्कृतिक कार्यक्रम-भरतनाट्यम : शृंगारम-रस की रानी
11 मार्च 2024, मेघदूत मुक्ताकाश रंगशाला

भारत के ग्राफ़िक उपन्यास
12 मार्च 2024, वाल्मीकि सभागार

साहित्य मेरे लिए क्या अर्थ रखता है?
12 मार्च 2024, वाल्मीकि सभागार

बहुभाषी, बहुसांस्कृतिक समाज में अनुवाद
12 मार्च 2024, वेद व्यास सभागार

बहुभाषी कविता पाठ : विभिन्न भाषाओं में भारतीय कविता
12 मार्च 2024, वेद व्यास सभागार

कविता का भविष्य?
12 मार्च 2024, वेद व्यास सभागार

साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेताओं 2023 के साथ मीडिया की बातचीत
12 मार्च 2024, मीराबाई सभागार

मातृभाषाओं का महत्त्व
12 मार्च 2024, मीराबाई सभागार

बहुभाषी कहानी-पाठ
12 मार्च 2024, कबीर सभागार

क्या साहित्य का अनुवाद संस्कृति का अनुवाद है?
12 मार्च 2024, कबीर सभागार

बहुभाषी कहानी-पाठ
12 मार्च 2024, कबीर सभागार

पूर्वोत्तरी और पश्चिमी लेखक सम्मिलन : कवि सम्मिलन
12 मार्च 2024, शंकरदेव सभागार

पूर्वोत्तर और पश्चिमी लेखक सम्मिलन - समकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियों पर चर्चा
12 मार्च 2024, शंकरदेव सभागार

बहुभाषी कहानी-पाठ
12 मार्च 2024, शंकरदेव सभागार

आदिवासी लेखक सम्मिलन : कवि सम्मिलन
12 मार्च 2024, लल द्यद सभागार

आदिवासी लेखक सम्मिलन : आदिवासी लेखन में वर्तमान साहित्यिक प्रवृत्तियाँ
12 मार्च 2024, लल द्यद सभागार

बहुभाषी कवि सम्मिलन
12 मार्च 2024, लल द्यद सभागार

आदिवासी लेखक सम्मिलन
12 मार्च 2024, तुलसीदास सभागार

माटी के गीत : आदिवासी लेखक सम्मिलन
12 मार्च 2024, तुलसीदास सभागार

आदिवासी लेखकों के समक्ष चुनौतियों पर चर्चा
12 मार्च 2024, तुलसीदास सभागार

बहुभाषी कवि सम्मिलन
12 मार्च 2024, नरसी मेहता सभागार

बहुभाषी कहानी-पाठ
12 मार्च 2024, नरसी मेहता सभागार

आदिवासी लेखक सम्मिलन : कविता-पाठ
12 मार्च 2024, नरसी मेहता सभागार

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2023 विजेताओं के सम्मान में स्वागत समारोह
12 मार्च 2024, रवींद्र भवन परिसर

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2023 अर्पण समारोह
12 मार्च 2024, कमानी सभागार

सांस्कृतिक कार्यक्रम-कस्तूरी : गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर को श्रद्धांजलि
12 मार्च 2024, कमानी सभागार

एलजीबीटीक्यू कवि सम्मिलन
13 मार्च 2024, वाल्मीकि सभागार

21वीं सदी का अंग्रेज़ी में भारतीय लेखन
13 मार्च 2024, वाल्मीकि सभागार

भविष्य के उपन्यासों पर चर्चा
13 मार्च 2024, वाल्मीकि सभागार

21वीं सदी के भारतीय उपन्यास
13 मार्च 2024, वाल्मीकि सभागार

क्या ई-बुक्स और ऑडियो बुक्स मुद्रित पुस्तकों का स्थान ले रही हैं?
13 मार्च 2024, वेद व्यास सभागार

लेखक, प्रकाशक और कॉपीराइट मुद्दे
13 मार्च 2024, वेद व्यास सभागार

मेरे लिए स्वतंत्रता का क्या अर्थ है?
13 मार्च 2024, वेद व्यास सभागार

साहित्य और सामाजिक आंदोलन
13 मार्च 2024, वेद व्यास सभागार

कंबोडिया के श्री छुंटेंग हुन को आनंद कुमारस्वामी महत्तर सदस्यता अर्पण समारोह
13 मार्च 2024, मीराबाई सभागार

बहुभाषी कवि सम्मिलन
13 मार्च 2024, मीराबाई सभागार

अस्मिता : बहुभाषी कवयित्री सम्मिलन
13 मार्च 2024, मीराबाई सभागार

पूर्वोत्तरी और दक्षिणी लेखक सम्मिलन - मेरा पहला लेखन अनुभव
13 मार्च 2024, कबीर सभागार

पूर्वोत्तरी और दक्षिणी लेखक सम्मिलन
13 मार्च 2024, कबीर सभागार

नारी चेतना : लेखिका सम्मेलन : कहानी-पाठ
13 मार्च 2024, कबीर सभागार

साहित्य में मेरी प्रेरणा
13 मार्च 2024, कबीर सभागार

मीर संगोष्ठी
13 मार्च 2024, शंकरदेव सभागार

बहुभाषी कवि सम्मिलन
13 मार्च 2024, शंकरदेव सभागार

लेखक सम्मिलन
13 मार्च 2024, तिरुवल्लुवर सभागार

विदेश में भारतीय साहित्य पर चर्चा
13 मार्च 2024, तिरुवल्लुवर सभागार

बहुभाषी कवि सम्मिलन
13 मार्च 2024, तिरुवल्लुवर सभागार

आदिवासी लेखक सम्मिलन : कविता-पाठ
13 मार्च 2024, ललद्यद सभागार

बहुभाषी कहानी-पाठ
13 मार्च 2024, तुलसीदास सभागार

भारतीय साहित्य में जादुई यथार्थवाद
13 मार्च 2024, तुलसीदास सभागार

21वीं सदी की भारतीय कविता : कविता-पाठ
13 मार्च 2024, तुलसीदास सभागार

21वीं सदी की भारतीय कविता : कवि सम्मिलन
13 मार्च 2024, नरसी मेहता सभागार

भारत को जोड़ना : कहानी-पाठ
13 मार्च 2024, नरसी मेहता सभागार

बहुभाषी कवि सम्मिलन
13 मार्च 2024, नरसी मेहता सभागार

आदिवासी लेखक सम्मिलन
13 मार्च 2024, नरसी मेहता सभागार

गुलज़ार द्वारा संवत्सर व्याख्यान
13 मार्च 2024, मेघदूत-ओपन एयर थिएटर

किताबों से रील और रील से किताबें : सिनेमा और साहित्य का परस्पर संबंध
14 मार्च 2024, वाल्मीकि सभागार

लेखन : जुनून या पेशा
14 मार्च 2024, वाल्मीकि सभागार

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर कौन-सी सीमाएँ उचित हैं?
14 मार्च 2024, वाल्मीकि सभागार

भारत की साहित्यिक विरासत
14 मार्च 2024, वाल्मीकि सभागार

बहुभाषी कहानी-पाठ
14 मार्च 2024, वेद व्यास सभागार

भारत में नाटक लेखन पर चर्चा
14 मार्च 2024, वेद व्यास सभागार

रचनात्मकता बढ़ाने वाली शिक्षा
14 मार्च 2024, वेद व्यास सभागार

भारत की लोककथाओं पर चर्चा
14 मार्च 2024, वेद व्यास सभागार

मैं क्यों लिखता हूँ?
14 मार्च 2024, मीराबाई सभागार

बहुभाषी कहानी-पाठ
14 मार्च 2024, मीराबाई सभागार

भारतीय भाषाओं में बाल साहित्य
14 मार्च 2024, मीराबाई सभागार

भारत को जोड़ना : कहानी-पाठ
14 मार्च 2024, मीराबाई सभागार

भारत को जोड़ना : कविता-पाठ
14 मार्च 2024, कबीर सभागार

युवा साहिती : नई फ़सल : कविता-पाठ
14 मार्च 2024, कबीर सभागार

बहुभाषी कवि सम्मिलन
14 मार्च 2024, कबीर सभागार

भारत को जोड़ना : बहुभाषी कवि सम्मिलन
14 मार्च 2024, कबीर सभागार

मीर संगोष्ठी
14 मार्च 2024, शंकरदेव सभागार

अकादेमी की वार्षिक संगोष्ठी
14 मार्च 2024, तिरुवल्लुवर सभागार

आदिवासी लेखक सम्मिलन
14 मार्च 2024, ललद्यद सभागार

बहुभाषी कवि सम्मेलन
14 मार्च 2024, ललद्यद सभागार

पूर्वोत्तरी और पूर्वी लेखक सम्मिलन : कविता-पाठ
14 मार्च 2024, तुलसीदास सभागार

पूर्वोत्तरी और पूर्वी लेखक सम्मिलन : अभिव्यक्ति का साधन
14 मार्च 2024, तुलसीदास सभागार

भारत की कविता : सुस्वादु विचार और सुगंधित भावनाएँ
14 मार्च 2024, तुलसीदास सभागार

मुलाक़ात : युवा कवि सम्मिलन
14 मार्च 2024, तुलसीदास सभागार

आमने-सामने
14 मार्च 2024, नरसी मेहता सभागार

बहुभाषी कवि सम्मिलन
14 मार्च 2024, नरसी मेहता सभागार

सांस्कृतिक कार्यक्रम : संत वाणी गायन
14 मार्च 2024, मेघदूत मुक्ताकाश रंगशाला

लोकप्रिय चेतना में राम की कहानी
15 मार्च 2024, वाल्मीकि सभागार

भारत की सांस्कृतिक विरासत
15 मार्च 2024, वाल्मीकि सभागार

भारतीय साहित्यिक नारीवाद : लेखिकाएँ और दुनिया को बदलना
15 मार्च 2024, वाल्मीकि सभागार

भारतीय क्लासिक्स और विश्व साहित्य पर चर्चा
15 मार्च 2024, वेद व्यास सभागार

भारत का धार्मिक और दार्शनिक साहित्य
15 मार्च 2024, वेद व्यास सभागार

भारतीय भाषाओं में विज्ञान कथाएँ
15 मार्च 2024, वेद व्यास सभागार

भारतीय भाषाओं में फ्लैश फिक्शन
15 मार्च 2024, वेद व्यास सभागार

बहुभाषी कवि सम्मिलन
15 मार्च 2024, मीराबाई सभागार

जुनून और कौशल : लेखन के दो स्तंभ
15 मार्च 2024, मीराबाई सभागार

नैतिकता और साहित्य
15 मार्च 2024, मीराबाई सभागार

बहुभाषी कवि सम्मिलन
15 मार्च 2024, मीराबाई सभागार

भारतीय साहित्य में आत्मकथाएँ
15 मार्च 2024, कबीर सभागार

मीडिया और साहित्य पर चर्चा
15 मार्च 2024, कबीर सभागार

अनेकता में एकता
15 मार्च 2024, कबीर सभागार

बहुभाषी कहानी-पाठ
15 मार्च 2024, कबीर सभागार

वाचिक महाकाव्य पर संगोष्ठी
15 मार्च 2024, शंकरदेव सभागार

अकादेमी की वार्षिक संगोष्ठी
15 मार्च 2024, तिरुवल्लुवर सभागार

आदिवासी लेखक सम्मिलन
15 मार्च 2024, ललद्यद सभागार

बहुभाषी कवि सम्मिलन
15 मार्च 2024, ललद्यद सभागार

21वीं सदी की भारतीय कविता : बहुभाषी कवि सम्मिलन
15 मार्च 2024, तुलसीदास सभागार

कहानी-पाठ
15 मार्च 2024, तुलसीदास सभागार

युवा साहित्य : युवा भारत का उदय : कवि सम्मिलन
15 मार्च 2024, तुलसीदास सभागार

बहुभाषी कवि सम्मिलन
15 मार्च 2024, नरसी मेहता सभागार

बहुभाषी कहानी-पाठ
15 मार्च 2024, नरसी मेहता सभागार

आदिवासी लेखक सम्मिलन
15 मार्च 2024, नरसी मेहता सभागार

सांस्कृतिक कार्यक्रम : सम्राट अशोक
15 मार्च 2024, मेघदूत मुक्ताकाश रंगशाला

दिव्यांग लेखक सम्मिलन
16 मार्च 2024, वाल्मीकि सभागार

बहुभाषी, बहुसांस्कृतिक समाज में अनुवाद
16 मार्च 2024, वेद व्यास सभागार

हमें भारत की भाषाओं को क्यों संरक्षित करना चाहिए?
16 मार्च 2024, वेद व्यास सभागार

भारतीय संदर्भ में पुनर्कथन/पुनर्निर्माण के रूप में अनुवाद
16 मार्च 2024, वेद व्यास सभागार

बहुभाषी कहानी-पाठ
16 मार्च 2024, वेद व्यास सभागार

विभिन्न भाषाओं में भारतीय कविता : कवि सम्मिलन
16 मार्च 2024, मीराबाई सभागार

21वीं सदी की भारतीय कविता : कविता-पाठ
16 मार्च 2024, मीराबाई सभागार

बहुभाषी कहानी पाठ
16 मार्च 2024, मीराबाई सभागार

वाचिक महाकाव्य पर संगोष्ठी
16 मार्च 2024, शंकरदेव सभागार

अकादेमी की वार्षिक संगोष्ठी
16 मार्च 2024, तिरुवल्लुवर सभागर

गोपीचंद नारंग पर संगोष्ठी
16 मार्च 2024, नरसी मेहता सभागार

आओ कहानी बुने (बच्चों का कार्यक्रम)
16 मार्च 2024, मेघदूत- ओपन एयर थिएटर

ग्रामालोक

ग्राम बम्मनहल्ली में कन्नड लेखकों के साथ
28 मई 2023

ग्राम नाडा के.डी., तालुक इंडी में कन्नड लेखकों के साथ कविता-पाठ
24 जून 2023

ग्राम मनावेली, अरियानकुप्पम, पुदुचेरी में रचनात्मक साहित्य में लोकगीत पर चर्चा
27 जून 2023

ग्राम हुल्लाम्बी टीक्यू., कालाघाटगी, धारवाड़, कर्नाटक में लोक साहित्य पर व्याख्यान
9 जुलाई 2023

ग्राम सलाकाती, क'क्राझार, असम में बोडो लेखकों के साथ
9 जुलाई 2023

ग्राम उदयनारायणपुर, हावड़ा, पश्चिम बंगाल में बाङ्ला कवियों के साथ
15 जुलाई 23

ग्राम इंदरकूट, तेह, सुंबल, बांदीपोरा, जम्मू और कश्मीर में कश्मीरी कविता पाठ
20 जुलाई 2023

ग्राम गदावंती में कन्नड लेखकों के साथ
26 जुलाई 2023

ग्राम पुलारी अरावत, बेकल, कासरगोड, केरल में मलयाळम् कवि सम्मिलन
30 जुलाई 2023

ग्राम मुलियार, ज़िला : कासरगोड, केरल में मलयाळम् कविता-पाठ
19 अगस्त 2023

ग्राम बनयारी शर्की, तह-हाजिन, बांदीपोरा, कश्मीर में कश्मीरी कवियों के साथ
22 सितंबर 2023

ग्राम बाबा रेशी, तंगमर्ग, कश्मीर में कश्मीरी कवियों की बैठक
24 सितंबर 2023

ग्राम नमलिनार, बारामूला, कश्मीर में कश्मीरी कविता-पाठ
25 सितंबर 2023

ग्राम तेहत, बानिहाल, जम्मू और कश्मीर में कश्मीरी कवि सम्मिलन
2 नवंबर 2023

ग्राम खारी, बानिहाल, जम्मू और कश्मीर में कश्मीरी कवि सम्मिलन
4 नवंबर 2023

गाँव हंडियाया, ज़िला : बरनाला, पंजाब में पंजाबी कविता-पाठ
5 नवंबर 2023

गाँव जूहामा, चडूरा, जम्मू और कश्मीर में कश्मीरी कविता-पाठ
11 नवंबर 2023

गाँव चडूरा, बडगाम, जम्मू और कश्मीर में कश्मीरी कविता-पाठ
18 नवंबर 2023

गाँव दुमचीपारा, मदारीहाट, जिला अलीपुर द्वार, पश्चिम बंगाल में नेपाली लेखकों के साथ
10 दिसंबर 2023

ग्राम शिवसागर, असम में असमिया लेखकों के साथ
10 दिसंबर 2023

ग्राम बरगढ़, ओड़िशा में ओड़िआ लेखकों के साथ
15 दिसंबर 2023

ग्राम जम्मू में कश्मीरी लेखक सम्मिलन
16 दिसंबर 2023, जम्मू

ग्राम जोरहाट, असम में असमिया लेखकों के साथ
16 दिसंबर 2023

ग्राम बक्सा, असम में बोडो लेखकों के साथ
17 दिसंबर 2023

ग्राम संबलपुर, ओड़िशा में ओड़िआ लेखकों के साथ
17 दिसंबर 2023

ग्राम भोगपुर, जिला जालंधर, पंजाब में पंजाबी कवियों के साथ
17 दिसंबर 2023

ग्राम सिशुआ बयालिश मौजा, जिला कटक, ओड़िशा में ओड़िआ लेखकों के साथ
24 दिसंबर 2023

ग्राम मानखंड, ज़िला 24 पीजीएस (एस), पश्चिम बंगाल में बाङ्ला लेखकों के साथ
7 जनवरी 2024

ग्राम शेख दौलत, जगरांव के पास, ज़िला : लुधियाना, पंजाब में पंजाबी व्याख्यान के साथ
7 जनवरी 2024

रायपुर, बंटालाब, जम्मू में कश्मीरी कवि सम्मिलन
15 जनवरी 2024

पौनी, रियासी, जम्मू, जम्मू और कश्मीर में डोगरी कविता-पाठ
17 जनवरी 2024

माथुर, दक्षिण 24 परगना, पश्चिम बंगाल में बाङ्ला लेखकों के साथ
28 जनवरी 2024

पजलपोरा, ब्रिजबेहरा, जम्मू-कश्मीर में कश्मीरी लेखकों के साथ
4 फ़रवरी 2024

पुलवामा, जम्मू-कश्मीर में कश्मीरी लेखकों के साथ
6 फ़रवरी 2024

कन्याकुमारी में तमिळ लेखकों के साथ
8 फ़रवरी 2024

गोविंदपुर, दक्षिण 24 परगना, पश्चिम बंगाल में बाङ्ला लेखकों के साथ
11 फ़रवरी 2024

भिल्खी में पंजाबी लेखकों के साथ
25 फ़रवरी 2024

असम के बक्सा गाँव में बोडो लेखकों के साथ
3 मार्च 2024

ओड़िशा के कोरापुट के नुआ छोटेगुडा गाँव में ओड़िआ लेखकों के साथ
5 मार्च 2024

जम्मू, जम्मू और कश्मीर में कश्मीरी लेखकों के साथ
21 मार्च 2024

जम्मू, जम्मू और कश्मीर में कश्मीरी कविता-पाठ
22 मार्च 2024

कवि-अनुवादक

सिद्धलिंग पट्टनशेट्टी और धरणेंद्र कुरकुरी के साथ कवि-अनुवादक
18 फ़रवरी 2024, धारवाड़, कर्नाटक

कथासंधि

प्रख्यात डोगरी लेखक गिरधारी लाल राही के साथ कथासंधि
13 जून 2023, जम्मू, जम्मू और कश्मीर

प्रख्यात ओड़िआ लेखक काली चरण हेम्ब्रम के साथ कथासंधि
28 जुलाई 23, बारिपदा, मयूरभंज, ओड़िशा

प्रख्यात कश्मीरी लेखक राशिद रसीद, के साथ कथासंधि
16 अगस्त 2023, पुलवामा, जम्मू और कश्मीर

प्रख्यात ओड़िआ लेखक मृत्युंजय षडंगी के साथ कथासंधि
16 जनवरी 2024, भुवनेश्वर, खुर्दा, ओड़िशा

प्रख्यात असमिया लेखक रंजु हाजरिका के साथ कथासंधि
24 फ़रवरी 2024, नलबाड़ी, असम

कविसंधि

प्रख्यात डोगरी कवि अशोक अंगुराना के साथ कविसंधि
13 जून 2023, जम्मू, जम्मू और कश्मीर

प्रख्यात असमिया कवि उरखावो गोरा ब्रह्म के साथ कविसंधि
8 सितंबर 2023, क'क्राझार, असम

प्रख्यात ओड़िआ कवि सौभाग्यवंत महाराणा के साथ कविसंधि

9 सितंबर 2023, संबलपुर, ओड़िशा

प्रख्यात संताली कवि भुजंग टुडू के साथ कविसंधि

1 अक्तूबर 2023, चाकुलिया, झारखंड

प्रख्यात तेलुगु कवि खादर मोहिउद्दीन के साथ कविसंधि

9 दिसंबर 2023, गवर्नर पेट, विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश

प्रख्यात कश्मीरी कवि सागर सरफराज के साथ कविसंधि

3 फ़रवरी 2024, हाजिन, जम्मू और कश्मीर

प्रख्यात असमिया कवि बिपुल ज्योति शइकीआ के साथ कविसंधि

26 फ़रवरी 2024, रंगापारा, शोणितपुर, असम

साहित्य मंच

फ़िराक़ गोरखपुरी के जीवन और कृतित्व पर साहित्य मंच

11 अप्रैल 2023, नई दिल्ली

अज्जमपुरा जी. सूरी साहित्यावलोकन पर साहित्य मंच

28 अप्रैल 2023, अज्जमपुरा

नादोजा सारा अबुबक्कर की स्मृति में सारा साहित्य पर साहित्य मंच

30 अप्रैल 2023, बेंगळूरु, कर्नाटक

साहित्य मंच : नाटक पाठ

4 मई 2023, नई दिल्ली

साहित्य मंच : तमिळ कविता-पाठ

6 मई 2023, चेन्नै

साहित्य मंच मधुराचेनारा काव्य माधुर्य

14 मई 2023, बेंगळूरु, कर्नाटक

साहित्य मंच : पंप भारत महाकाव्य में कर्ण के चरित्र के चित्रण पर व्याख्यान

15 मई 2023, रायचूर, कर्नाटक

साहित्य मंच : बाङ्ला साहित्य में दलित चेतना

26 मई 2023, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

साहित्य मंच : कवितायोलासेगेयवास फलामावुदोए पर

26 मई 2023, बसवनगुड़ी, बेंगळूरु

ता रा सु साहित्यावलोकन पर साहित्य मंच

27 मई 2023, चिक्कमगळूरु

कविता और अध्यात्म पर साहित्य मंच

20 जून 2023, नई दिल्ली

कन्नड और तमिळ दलित कविता में अभिव्यक्ति की जड़ों पर साहित्य मंच

30 जून 2023, गंगावती

कश्मीरी कविता-पाठ विषयक साहित्य मंच

3 जुलाई 2023, कुलगाम, जम्मू और कश्मीर

कश्मीरी कविता-पाठ के साथ साहित्य मंच
6 जुलाई 2023, चादूरा, बडगाम, जम्मू और कश्मीर

सुंदरा शनमुगनर पर साहित्य मंच
8 जुलाई 2023, पुदुचेरी

पूर्ण चंद्र तेजस्वी की साहित्य समीक्षा पर साहित्य मंच
8 जुलाई 2023, मूडीगेरे, चिक्कमगळुरु

अक्कई पद्मशाली : अथमकाथेया ओन्दु ओलानोटा पर साहित्य मंच
14 जुलाई 2023, जयनगर, बेंगळूरु

साहित्य मंच : ओड़िआ लेखकों का कहानी-पाठ
16 जुलाई 23, बालासोर, ओड़िशा

तेलुगु उपन्यासों में परिलक्षित बुनकरों के जीवन पर साहित्य मंच
16 जुलाई 2023, अडोनी, ज़िला-कुरनूल, आंध्र प्रदेश

युवा मलयाळम् लेखकों के रचनात्मक लेखन पर साहित्य मंच
19 जुलाई 2023, कोझीकोड, केरल

साहित्य मंच : कन्नड कवि सम्मिलन
22 जुलाई 2023, सुरपुरा तालुक कार्यालय, यादगिरी ज़िला, कर्नाटक

कन्नड साहित्य की समकालीन कहानी पर साहित्य मंच
23 जुलाई 2023, जे.पी. नगर, कप्पाना अंगाला

मलयाळम् साहित्यिक वार्ता पर साहित्य मंच
23 जुलाई 2023, दर्शनम, कोझीकोड, केरल

शकूर रेशी पर साहित्य मंच कार्यक्रम
27 जुलाई 2023, बद्रेकोट, तंगमर्ग, जम्मू और कश्मीर

जबर रेशी पर साहित्य मंच
27 जुलाई 2023, बद्रेकोट, तंगमार्ग, जम्मू और कश्मीर

कुवेम्पु साहित्यावलोकन पर साहित्य मंच
28 जुलाई 2023, शृंगेरी, चिक्कमगळूरु

न्यू मीडिया युग में पढ़ने के अनुभव पर साहित्य मंच
28 जुलाई 2023, चेंकल, तिरुवनंतपुरम्, केरल

साहित्य मंच कवि सम्मिलन 'कवितेयोलासेगेयवा फलामावुडो'
28 जुलाई 2023, बसवनगुडी, बेंगळूरु

प्रगतिशील साहित्य पर साहित्य मंच : उत्पत्ति और विकास
05 अगस्त 2023, अथानी, ज़िला-बेलगावी, कर्नाटक

दलित चेतना पर साहित्य मंच
05 अगस्त 2023, रंगमपेट, यादगिरी

साहित्य और सिनेमा पर साहित्य मंच
09 अगस्त 2023, एस.आर.नगर, बेंगळूरु

कन्नड-सिनेमा पर साहित्य मंच साहित्य मथु प्रादेशिक अनन्यते
11 अगस्त 2023, विल्सन गार्डन, बेंगळूरु

'आधुनिक मलयाळम् कविता में कथात्मक परिवर्तनों का पुनर्पाठ' पर साहित्य मंच
13 अगस्त 2023, कासरगोड जिला, केरल

कथात्मक अनुभव पर साहित्य मंच : समकालीन उपन्यास और कहानी लेखन
13 अगस्त 2023, तिरुवनंतपुरम, केरल

कश्मीरी कविता वाचन पर साहित्य मंच
16 अगस्त 2023, पुलवामा, जम्मू और कश्मीर

उपन्यास सृजन के बारे में उपन्यासकारों के विचार और चर्चा पर साहित्य मंच
19 अगस्त 2023, बसवना गुड़ी, बेंगळूरु

कन्नड नाटकगलल्ली स्त्री पात्र पर साहित्य मंच
20 अगस्त 2023, कप्पन्ना अंगला, बेंगळूरु

साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता-तेलुगु कवियों पर साहित्य मंच
22 अगस्त 2023, दरगामिट्टा, नेल्लोर, आंध्र प्रदेश

बहुजन कथा पर साहित्य मंच
24 अगस्त 2023, महबूबाबाद, तेलंगाना

पाठक और पुस्तक संस्कृति पर साहित्य मंच
26 अगस्त 2023, गडग, कर्नाटक

लोकगीत साहित्य समीक्षा पर साहित्य मंच
29 अगस्त 2023, कदुर तालुक, चिकमगळूरु

कश्मीरी कविता-पाठ के साथ साहित्य मंच
31 अगस्त 2023, अनंतनाग, जम्मू और कश्मीर

ब्रह्मपुत्र घाटी की बाङ्ला कहानी पर साहित्य मंच
7 सितंबर 2023, गुवाहाटी, कामरूप (एम), असम

मंगलु चरण बिस्वाल पर साहित्य मंच
9 सितंबर 2023, संबलपुर, ओड़िशा

नेपाली कवि मोतीराम भट्ट की 158वीं जयंती पर साहित्य मंच
10 सितंबर 2023, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

बाल साहित्य में केंद्र साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेताओं पर साहित्य मंच
15 सितंबर 2023, सिद्दीपेट, तेलंगाना

नए लेखकों के सामने चुनौतियों पर साहित्य मंच
16 सितंबर 2023, करुमम, तिरुवनंतपुरम, केरल

साहित्य मंच : बाङ्ला कविता-पाठ
02 सितंबर 2023, कोलकाता

साहित्य मंच : बहुभाषी कविता-पाठ
16 सितंबर 2023, नई दिल्ली

'प्रो. के. कृष्णमूर्ति का कन्नड काव्यशास्त्र को योगदान' और 'गंगाधर चित्तल की कविता के विभिन्न परिप्रेक्ष्य' पर विशेष व्याख्यान के साथ साहित्य मंच
22 सितंबर 2023, रायचूर, कर्नाटक

प्राचीन भारत शास्त्रीय साहित्य और ज्ञान प्रणाली पर साहित्य मंच
22 सितंबर 2023, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

ए. शिवलिंगनार पर साहित्य मंच
23 सितंबर 2023, मैलम

जयंत महापात्र : कवि और उनकी विरासत पर साहित्य मंच
29 सितंबर 2023, नई दिल्ली

दा.रा. बेंद्रे साहित्यावलोकन पर साहित्य मंच
29 सितंबर 2023, मल्लेश्वर, कर्नाटक

अंग्रेज़ी और उर्दू पर साहित्य मंच : अनुवाद संवाद
1 दिसंबर 2023, नई दिल्ली

"भारत और श्रीलंका का त्याग साहित्य" पर साहित्य मंच, असंग तिलकरत्ने द्वारा व्याख्यान
20 नवंबर 2023, बेंगळूरु

अमेरिका के अंग्रेज़ी कवि श्री दांते मिचॉक्स के साथ साहित्य मंच
4 दिसंबर 2023, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

स्पेन के कवियों द्वारा कविता-पाठ की विशेषता पर साहित्य मंच
6 दिसंबर 2023, नई दिल्ली

परंपरागत से डिजिटल पठन में बदलाव पर साहित्य मंच
12 दिसंबर 2023, पाला, केरल

रायलसीमा में नारीचेतना - महिला साहित्य पर साहित्य मंच
12 दिसंबर 2023, कडप्पा, आंध्र प्रदेश

मराठी कविता-पाठ के साथ साहित्य मंच
22 दिसंबर 2023, मुंबई

सांस्कृतिक दृष्टिकोण से अनुवाद की संभावनाओं पर साहित्य मंच
14 दिसंबर 2023, कार्यवट्टम, केरल

आदिवासी संस्कृति में मानवीय मूल्यों पर साहित्य मंच
24 दिसंबर 2023, कोरापुट, ओड़िशा

ओड़िआ कहानी में सामाजिक यथार्थ पर साहित्य मंच
24 दिसंबर 2023, कंटाबंजी, बलांगीर, ओड़िशा

आर.के. कमलजीत सिंह का जीवन और कृतित्व पर साहित्य मंच
25 दिसंबर 2023, अगरतला, पश्चिम त्रिपुरा

अर्जन देव मजबूर पर साहित्य मंच
06 जनवरी 2024, जम्मू, जम्मू और कश्मीर

संक्रमण की कविता पर साहित्य मंच
11 जनवरी 2024, नई दिल्ली

तुलसी घिमिरे के साथ साहित्य मंच
17 जनवरी 2024, जोरथाङ, दक्षिण सिक्किम

वी.वी.एस. अय्यर का कम्ब रामायणम - एक अध्ययन पर साहित्य मंच
18 जनवरी 2024, तिरुचिरापल्ली

माखन लाल कंवल पर साहित्य मंच
24 जनवरी 2024, जम्मू, जम्मू और कश्मीर

अशंगबम मीनकेतन सिंह के जीवन और कृतित्व पर साहित्य मंच

27 जनवरी 2024, अगरतला, पश्चिम त्रिपुरा

मीडिया और मणिपुरी साहित्य पर साहित्य मंच

28 जनवरी 2024, अगरतला, पश्चिम त्रिपुरा

कन्नड प्राचीन साहित्य और कृषि पर साहित्य मंच

29 जनवरी 2024, रायचूर

के. अब्दुल गफूर पर साहित्य मंच

30 जनवरी 2024, तिरुनेलवेली

मृणाल सेन पर साहित्य मंच

15 फ़रवरी 2024, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

मलयाळम् साहित्य में रेडियो के योगदान पर साहित्य मंच

16 फ़रवरी 2024, माडे, कन्नूर, केरल

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर 'मातृभाषाओं के महत्त्व' पर साहित्य मंच"

21 फरवरी 2024, विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश

साहित्य मंच : कविता-पाठ

18 फ़रवरी 2024, जबलपुर, मध्य प्रदेश

आनंद कुमारस्वामी फेलो श्री छुंटेंग हुन के साथ साहित्य मंच

14 मार्च 2024, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

कन्नड साहित्य में नारीवाद के आयामों की प्रकृति और कन्नड रोमांटिक कविता पर वड्र्सवर्थ के प्रभाव पर साहित्य मंच

17 मार्च 2024, सुरपुरा, यादगीर ज़िला, कर्नाटक

साहित्य मंच : विश्व कविता दिवस के अवसर पर बहुभाषी कविता पाठ

21 मार्च 2024, नई दिल्ली

लोक : विविध स्वर

लोक : बगरुम्बा, बर्दविला सिखला, दाओसरी देलाई (बोडो लोक नृत्य)

9 सितंबर 2023, क'क्राझार, असम

लेखक से भेंट

प्रख्यात कन्नड कवि और नाटककार एच.एस. शिवप्रकाश के साथ लेखक से भेंट

1 जून 2023, नई दिल्ली

प्रख्यात हिंदी लेखिका नासिरा शर्मा के साथ लेखक से भेंट

25 अगस्त 2023, नई दिल्ली

प्रख्यात कश्मीरी लेखक गुलाम नबी आतश के साथ लेखक से भेंट

31 अगस्त 2023, अनंतनाग, जम्मू और कश्मीर

प्रख्यात कश्मीरी लेखक सोहन कौल के साथ लेखक से भेंट

23 सितंबर 2023, श्रीनगर

प्रख्यात नेपाली लेखक विक्रम वीर थापा के साथ लेखक से भेंट

24 सितंबर 2023, शिलांग

प्रख्यात नेपाली लेखक नवसापकोटा के साथ लेखक से भेंट
30 सितंबर 2023, गुवाहाटी

प्रख्यात नेपाली लेखक जी.बी. बल 'जीवनीकर' के साथ लेखक से भेंट
7 अक्तूबर 2023, खरसाङ, दार्जीलिङ

प्रख्यात मलयाळम् लेखक सुभाष चंद्रन के साथ लेखक से भेंट
20 दिसंबर 2023, नई दिल्ली

प्रख्यात कन्नड कवि एच.एस.राघवेंद्र राव के साथ लेखक से भेंट
18 जनवरी 2024, बसवनगुडी, बेंगळूरु

प्रख्यात मलयाळम् लेखक प्रभा वर्मा के साथ लेखक से भेंट
24 जनवरी 2024, कोझिकोड, केरल

प्रख्यात कन्नड लेखक ओ.एल. नागभूषण स्वामी के साथ लेखक से भेंट
29 जनवरी 2024, मैसूर

प्रख्यात राजस्थानी लेखक मंगत बादल के साथ लेखक से भेंट
28 मार्च 2024, जोधपुर

विविध कार्यक्रम

विश्व पुस्तक दिवस
23 अप्रैल 2023, चेन्नै

स्वच्छता पखवाड़ा (स्वच्छता शपथ ग्रहण कार्यक्रम)
24 अप्रैल 2023, क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु

कन्नड लेखकों की प्रख्यात कश्मीरी लेखक और आलोचक मोहम्मद ज़मां आज़ुर्दा के साथ बातचीत
25 अप्रैल 2023, बेंगळूरु, कर्नाटक

पूर्वी क्षेत्रीय कवि सम्मेलन
29 अप्रैल 2023, गुवाहाटी, कामरूप (एम), असम

क़िस्सा-ओ-क़लम : बोलती क़लम, हिंदी और अंग्रेज़ी में रचनात्मक लेखन के लिए बच्चों की वार्षिक कार्यशाला
29 मई 2023 से 2 जून 2023

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का उत्सव
21 जून 2023, क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस
21 जून 2023, क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस
21 जून 2023, चेन्नै

अखिल भारतीय बोडो लेखक सम्मिलन
25 जुलाई 2023, आभासी मंच

हिंदी सप्ताह
14-21 सितंबर 2023, क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु

श्री नारायण गुरु महोत्सव
22-23 सितंबर 2023, पलक्कड़, केरल

'स्वच्छता ही सेवा' शपथ ग्रहण
26 सितंबर 2023, क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु

अंतरराष्ट्रीय अनुवाद दिवस के अवसर पर भाषांतर अनुभव
30 सितंबर 2023, कोलकाता

स्वच्छता ही सेवा-अभियान
2 अक्तूबर 2023, चेन्नै

सतर्कता जागरूकता पर व्याख्यान
2 नवंबर 2023, चेन्नै

राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह
14-20 नवंबर 2023, चेन्नै

डॉ. असंग तिलकरत्ने के साथ चर्चा
23 नवंबर 2023, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

स्वच्छता पखवाड़ा के अवसर पर साहित्य मंच
27 अप्रैल 2023, नई दिल्ली

हिंदी सप्ताह
14-21 सितंबर 2023, प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली

पुस्तकायन-पुस्तक मेला 2023
1-9 दिसंबर 2023, प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली

पुस्तक विमोचन कार्यक्रम
29 दिसंबर 2023, सैफाबाद, हैदराबाद, तेलंगाना

आलोचक श्री जानकी प्रसाद शर्मा के साथ एक शाम
30 जनवरी 2024, नई दिल्ली

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2024
10-18 फ़रवरी 2024, प्रगति मैदान, नई दिल्ली

कोलकाता और विश्व भारती में कविता उत्सव
16-17 फ़रवरी 2024, विश्व भारती

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस
21 फ़रवरी 2024, चेन्नै

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस
8 मार्च 2024, चेन्नै

साहित्य अकादेमी का स्थापना दिवस समारोह
12 मार्च 2022, चेन्नै

विश्व कविता दिवस
21 मार्च 2024, चेन्नै

भाषा सम्मेलन

साओरा भाषा सम्मेलन
22-23 अप्रैल 2023, भुवनेश्वर, ओड़िशा

कुरमाली भाषा सम्मेलन
6-7 दिसंबर 2023, राँची

मुलाक़ात

बोडो युवा लेखकों के साथ मुलाक़ात
9 सितंबर 2023, जनता कॉलेज, क'क्राझार, असम

असमिया लेखकों के साथ मुलाक़ात
5 दिसंबर 2023, माजुली, जोरहाट, असम

बाङ्ला लेखकों के साथ मुलाक़ात
19 दिसंबर 2023, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

असमिया लेखकों के साथ मुलाक़ात
29 दिसंबर 2023, गुवाहाटी, कामरूप, असम

बहुभाषी कवि/लेखक सम्मिलन

बहुभाषी कविता-पाठ
21 अगस्त 2023, गोगामुख, धेमाजी, असम

बहुभाषी ट्रांसजेंडर लेखक सम्मिलन
21 दिसंबर 2023, आभासी मंच

बहुभाषी कवि सम्मिलन
30 दिसंबर 2023, गुवाहाटी पुस्तक मेला, कामरूप, असम

बहुभाषी कवि सम्मिलन
25 जनवरी 2024, अंतरराष्ट्रीय कोलकाता पुस्तक मेला

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर बहुभाषी कवि सम्मिलन
21 फ़रवरी 2024, क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

अंतरराष्ट्रीय कविता दिवस के अवसर पर बहुभाषी कवि सम्मिलन
21 मार्च 2024, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

नारी चेतना

बहुभाषी कविता पाठ के साथ नारी चेतना
25 मई 2023, नई दिल्ली

अंग्रेज़ी लेखिकाओं के साथ नारी चेतना
25 जुलाई 2023, दिल्ली

तमिळ लेखिकाओं के साथ नारी चेतना
9 अगस्त 2023,

बोडो लेखिकाओं के साथ कोयंबटूर नारी चेतना
9 सितंबर 2023, जनता कॉलेज, क'क्राझार, असम

संताली लेखिकाओं के साथ नारी चेतना
23 सितंबर 2023, जाहेरथान, करणडीह, जमशेदपुर

नारी चेतना - तेलुगु साहित्यम महिला प्रस्थानम
7 अक्तूबर 2023, अज्जमपुरा, मेदक, तेलंगाना

नारी चेतना : पंजाबी कविता-पाठ
20 अक्तूबर 2023, नई दिल्ली

नारी चेतना : बहुभाषी कवयित्री सम्मिलन
20 नवंबर 2023, नई दिल्ली

कश्मीरी कवि सम्मिलन : नारी चेतना
6 जनवरी 2024, जम्मू, जम्मू और कश्मीर

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर बोडो लेखिकाओं के साथ नारी चेतना
08 मार्च 2024, क'क्रझार, असम

परिचर्चा

"विश्व पुस्तक दिवस" के अवसर पर 'मेरे जीवन में पुस्तकों की भूमिका' पर पैनल चर्चा
23 अप्रैल 2023, बेंगळूरु, कर्नाटक

"अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस" के अवसर पर "सामाजिक प्रभावक के रूप में महिला लेखिकाएँ" पर परिचर्चा
08 मार्च 2024, जे. पी. नगर, बेंगळूरु, कर्नाटक

कवि सम्मिलन

क'कबर'क कवि सम्मिलन
23 दिसंबर 2023, अगरतला

चकमा कवि सम्मिलन
10 फरवरी 2024, अगरतला,

बाङ्ला कवि सम्मिलन
10 मार्च 2024, अगरतला, पश्चिम त्रिपुर

प्रवासी मंच

प्रवासी मंच : सुप्रसिद्ध हिंदी लेखिका मृदुला कीर्ति के साथ
10 अप्रैल 2023, नई दिल्ली

प्रवासी मंच : विख्यात हिंदी लेखक अनुराग शर्मा
29 दिसंबर 2023, नई दिल्ली

प्रवासी मंच: सुप्रसिद्ध बाङ्ला कवि सौम्यदास गुप्ता के साथ
21 दिसंबर 2023, कोलकाता

प्रसिद्ध हिंदी लेखिका उल्पतखोन मुखीबोवा के साथ प्रवासी मंच
10 जनवरी 2024, नई दिल्ली

प्रसिद्ध हिंदी लेखिका शैलजा सकसेना के साथ प्रवासी मंच
26 फ़रवरी 2024, नई दिल्ली

संस्कृतसमुन्मेष:

(राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन)

संस्कृत शोभायात्रा : प्रातः 4:00 बजे से सायं 6:00 बजे तक
11 जुलाई 2023, तिरुपति शहर, आंध्र प्रदेश

उद्घाटन सत्र : पूर्वाह्न 10:00 बजे से अपराह्न 1:00 बजे तक
12 जुलाई 2023, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति, आंध्र प्रदेश

प्रथम सत्र : अष्टावधानम्: अपराह्न 2:00 बजे से सायं 4:30 बजे तक
12 जुलाई 2023, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति, आंध्र प्रदेश

द्वितीय सत्र : कवि सम्मेलन-सायं 5:00 बजे से 7:00 बजे तक
12 जुलाई 2023, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति, आंध्र प्रदेश

तृतीय सत्र : हरिकथा-सायं 7:00 बजे 8:00 बजे तक
12 जुलाई 2023, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति, आंध्र प्रदेश

चतुर्थ सत्र : संस्कृत और कंप्यूटर विज्ञान : पूर्वाह्न 10:00 बजे से मध्याह्न 12:00 बजे तक

13 जुलाई 2023, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति, आंध्र प्रदेश

पंचम् सत्र : संस्कृत एवं स्वास्थ्य (स्वास्थ्य विज्ञान) - मध्याह्न 12:00 बजे से अपराह्न 1:30 बजे तक

13 जुलाई 2023, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति, आंध्र प्रदेश

षष्ठ सत्र : संस्कृत एवं योग- अपराह्न 2:30 बजे से सायं 4:00 बजे तक

13 जुलाई 2023, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति, आंध्र प्रदेश

सप्तम सत्र : छात्रों द्वारा संस्कृत कहानी-पाठ- सायं 4:00 बजे से 6:00 बजे तक

13 जुलाई 2023, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति, आंध्र प्रदेश

अष्ठम् सत्र : रामायण के 'सुंदर कांड' पर हरिकथा- सायं 6:00 बजे से 7:00 बजे तक

13 जुलाई 2023, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति, आंध्र प्रदेश

नवम् सत्र : संस्कृत और भारतीय संगीत (व्याख्यान-प्रदर्शन)-पूर्वाह्न 10:00 बजे से अपराह्न 1:30 बजे तक

14 जुलाई 2023, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति, आंध्र प्रदेश

दशम् सत्र : संस्कृत और नृत्य (व्याख्यान-प्रदर्शन)- अपराह्न 2:30 बजे से सायं 5:30 बजे तक

14 जुलाई 2023, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति, आंध्र प्रदेश

समापन सत्र : सायं 5:30 बजे से 6:30 बजे तक

14 जुलाई 2023, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति, आंध्र प्रदेश

एकादश सत्र : संस्कृत नाटक-सायं 7:00 बजे से 8:00 बजे तक

14 जुलाई 2023, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति, आंध्र प्रदेश

जन्म शताब्दी संगोष्ठी

कोविलन पर जन्म शताब्दी संगोष्ठी

9 जुलाई 2023, गुरुवायूर, त्रिशूर, केरल

'गुलाम नबी फ़िराक़' पर जन्म शताब्दी संगोष्ठी 19

11-12 जुलाई 2023, बेमिना, श्रीनगर, जम्मू और कश्मीर

कोयल पंचानन मरांडी पर जन्म शताब्दी संगोष्ठी

28 जुलाई 23, बारीपदा, मयूरभंज, ओड़िशा

प्यारा सिंह पदम पर जन्म शताब्दी संगोष्ठी

23 अगस्त 2023, आभासी मंच

अज़गिरिसामी पर शताब्दी संगोष्ठी

25-26 अगस्त 2023, सत्तूर

सैयद वलीउल्लाह पर जन्म शताब्दी संगोष्ठी

30 अगस्त 2023, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

टीएमसी रघुनाथन पर दो दिवसीय शताब्दी संगोष्ठी
12-13 सितंबर 2023, पोलाची

अमीन कामिल पर दो दिवसीय शताब्दी संगोष्ठी
21- 22 सितंबर 2023, श्रीनगर

मोहिंदर सिंह सरना पर दो दिवसीय जन्म शताब्दी संगोष्ठी
27-28 सितंबर 2023, नई दिल्ली

पुलियुरकेसिगन पर द्वि-दिवसीय शताब्दी संगोष्ठी
26-27 सितंबर 2023, सत्तूर

अजमेर सिंह औलख पर एक दिवसीय संगोष्ठी
23 नवंबर 2023, बठिंडा

तमिळ ओली पर द्वि-दिवसीय शताब्दी संगोष्ठी
4-5 दिसंबर 2023, पुदुचेरी

गंगाधर चित्ताल की जन्म शताब्दी पर एक दिवसीय संगोष्ठी
29 दिसंबर 2023, मल्लेश्वरम, बेंगळूरु, कर्नाटक

गुलवंत सिंह पर एक दिवसीय जन्म शताब्दी संगोष्ठी
8 जनवरी 2024, आभासी मंच

बसंत कुमारी पटनायक पर एक दिवसीय जन्म शताब्दी संगोष्ठी
16 जनवरी 2024, कटक, ओड़िशा

सी. बालसुंदरनर पर द्वि-दिवसीय शताब्दी संगोष्ठी
19-20 जनवरी 2024, तिरुचिरापल्ली

कि. राजनारायणन पर द्वि-दिवसीय शताब्दी संगोष्ठी
22-23 जनवरी 2024, सेलम

संगोष्ठी

गोदावरी और वितस्ता पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी
1-2 अप्रैल 2023, पुणे, महाराष्ट्र

वितस्ता के महत्त्व पर कश्मीर महोत्सव के दौरान बौद्ध धर्म और कश्मीर पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी
24-25 जून 2023, श्रीनगर, कश्मीर

फ़कीर मोहन सेनापति और प्रेमचंद का कथा साहित्य : तुलनात्मक विश्लेषण पर संगोष्ठी
27 जुलाई 2023, बालासोर, ओड़िशा

"राजराजा नरेंद्र के राज्याभिषेक और आदिकवि नन्नया द्वारा महाभारत के लेखन" की 1000वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
16-17 अगस्त 2023, राजमहेंद्रवरम, आंध्र प्रदेश

आज़ादी का अमृत महोत्सव समारोह के भाग के रूप में भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में तेलुगु साहित्य के योगदान पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी
29-30 अगस्त 2023, खैरताबाद, हैदराबाद, तेलंगाना

वल्लालर - 200 पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी
28 - 29 अगस्त 2023, मदुरै

ओड़िशा में रामायण परंपरा और सिद्धेश्वर दास कृत विचित्र रामायण पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
20 सितंबर 2023, नई दिल्ली

डोगरी भाषा और साहित्य के इतिहास पर डोगरी में द्वि-दिवसीय संगोष्ठी
21-22 सितंबर 2023, जम्मू, जम्मू और कश्मीर

तीन साहित्यकारों चंद्रभानु सिंह, योगानंद झा और काशीनाथ झा पर मैथिली में द्वि-दिवसीय संगोष्ठी
1-2 अक्तूबर 2023, सुपौल, बिहार

स्वतंत्रता आंदोलन में उर्दू साहित्य के योगदान पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी
5-6 अक्तूबर 2023, नई दिल्ली

मैथिली साहित्य में सीता पर मैथिली में द्वि-दिवसीय संगोष्ठी
17-18 दिसंबर 2023, पुपरी, बिहार

कन्नड साहित्यिक शोध के विभिन्न आयामों पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी
29-30 जनवरी 2024, मैसूर

महाभारत की पुनर्कथन परंपरा पर द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
16 फरवरी 2024, तिरूर, मलप्पुरम ज़िला, केरल

जसवंत सिंह कंवल पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी
20-21 मार्च 2024, कुरुक्षेत्र

जन्म शताब्दी परिसंवाद

आर. रामचंद्रन पर जन्म शताब्दी परिसंवाद
07 अक्तूबर 2023, सुकापुरम, एडप्पल, ज़िला मलप्पुरम, केरल

एम. कृष्णन नायर पर जन्म शताब्दी परिसंवाद
12 अक्तूबर 2023, एर्नाकुलम, केरल

पडाला रामा राव पर जन्म शताब्दी परिसंवाद
06 जनवरी 2024, राजमहेंद्रवरम, आंध्र प्रदेश

अब्बूरी वरद राजेश्वर राव पर जन्म शताब्दी परिसंवाद
28 जनवरी 2024, राजम, ज़िला-विजयनगरम, आंध्र प्रदेश

के. सभा पर जन्म शताब्दी परिसंवाद
04 फरवरी 2024, चित्तूर, आंध्र प्रदेश

कम्बिसेरी करुणाकरण पर जन्म शताब्दी
19 फरवरी 2024, कोट्टायम, केरल

प्रो. जी. कुमारपिल्लई पर जन्म शताब्दी पर परिसंवाद
27 फरवरी 2024, पय्यानूर, केरल डॉ. वी. वी.

वेलुकुट्टी अरायण पर जन्म शताब्दी परिसंवाद
16 मार्च 2024, मारुथूरकुलंगरा, करुनागप्पल्ली, केरल

विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर 'पुस्तक, जिसने मेरा जीवन बदल दिया' पर परिसंवाद
23 अप्रैल 2023, नई दिल्ली

साहित्य के विकास में लघु पत्रिकाओं की भूमिका पर परिसंवाद
19 अगस्त 2023, पुदुचेरी

तमिऴ कहानी की नई प्रवृत्तियाँ पर परिसंवाद
09 फरवरी 2024, कन्याकुमारी

ए. माधवैया की रचनाओं पर परिसंवाद
20 फरवरी 2024, चेन्नै

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर स्वतंत्रता के दर्शन पर परिसंवाद
15 अगस्त 2023, नई दिल्ली

मियां मोहम्मद बख़्श पर परिसंवाद
23 सितंबर 2023, श्रीनगर

ओड़िआ भाषा साहित्य और संस्कृति पर परिसंवाद
24 मई 2023, चाईबासा, पश्चिमी सिंहभूम, झारखंड

आधुनिक कन्नड कविता : महिलाओं की संवेदनाएँ पर परिसंवाद
25 जुलाई 2023, सावनुरू, हावेरी, कर्नाटक

रशीद नाज़की पर परिसंवाद
24 अगस्त 2023, बांदीपोरा, जम्मू और कश्मीर

ज़फ़र गोरखपुरी : जीवन और कृतित्व पर परिसंवाद
2 सितंबर 2023, कोलकाता

मुज़फ़्फ़र आज़िम : जीवन और कार्य पर परिसंवाद
11 सितंबर 2023, चंदिलोरा, तंगमर्ग, कश्मीर

कश्मीरी साहित्य में मर्सिया पर परिसंवाद
16 सितंबर 2023, बडगाम, कश्मीर

साहिर और उनके समकालीन कवि पर परिसंवाद
25 सितंबर 2023, पटना

मैथिली सिनेमा और साहित्य पर मैथिली में परिसंवाद
30 सितंबर 2023, सहरसा, बिहार

असमिया बाल साहित्य : संभावनाएँ और चुनौतियाँ पर परिसंवाद
7 अक्तूबर 2023, गुवाहाटी, कामरूप (एम), असम

ज्योतिप्रसाद अग्रवाल : सृजन और दृष्टि पर परिसंवाद
9 अक्तूबर 2023, नम्ति, शिवसागर, असम

महर्षि श्री अरबिंदो पर संस्कृत में परिसंवाद
2 दिसंबर 2023, कोलकाता

गुलाम नबी नाज़िर के जीवन और योगदान पर परिसंवाद
5 दिसंबर 2023, शोपियां, कश्मीर

मलयाळम् उपन्यास में ज्ञान पर परिसंवाद
07 दिसंबर 2023, एर्नाकुलम, कोच्चि, केरल

समकालीन मलयाळम् कविता में बहुध्वनि पर परिसंवाद
08 दिसंबर 2023, एर्नाकुलम, कोच्चि, केरल

त्रिपुरा में शक्तितत्व के साहित्य, संस्कृति और परंपरा पर संस्कृत में परिसंवाद
12 दिसंबर 2023, अगरतला, पश्चिम त्रिपुरा

पूर्वी क्षेत्रीय भाषाओं में प्रेम कविता के विकास पर परिसंवाद
30 दिसंबर 2023, गुवाहाटी, कामरूप, असम

कश्मीरी भाषा में लीला पर परिसंवाद
05 जनवरी 2024, जम्मू, जम्मू एवं कश्मीर

कन्नड तत्त्वपद : एक पुनरीक्षण पर परिसंवाद
2 फरवरी 2024, विजयपुर, कर्नाटक

डोगरी से अनुवाद और अन्य भाषाओं से डोगरी में अनुवाद के विशेष संदर्भ के साथ 'डोगरी में साहित्य के रूप में अनुवाद' पर परिसंवाद
3 फ़रवरी 2024, जम्मू, जम्मू एवं कश्मीर

समकालीन साहित्य में जीवन समर्थक विचारों पर परिसंवाद
03 फ़रवरी 2024, दानेश्वरी नगर, हावेरी, कर्नाटक

नज़र निज़ामी : जीवन और कार्य पर परिसंवाद
18 फ़रवरी 2024, जबलपुर, मध्य प्रदेश

सी.वी. रमनपिल्लै पर परिसंवाद
21 फ़रवरी 2024, तिरुवनंतपुरम, केरल

कुमारानासन पर परिसंवाद
22 फ़रवरी 2024, तिरुवनंतपुरम, केरल

असमिया नाट्य साहित्य : अतीत, वर्तमान और भविष्य पर परिसंवाद
24 फ़रवरी 2024, नलबाड़ी, असम

स्वतंत्रता के बाद ओड़िआ भाषा, साहित्य और संस्कृति पर परिसंवाद
25 फ़रवरी 2024, ढेंकनाल, ओडिशा

के. सुरेंद्रन पर परिसंवाद
29 फ़रवरी 2024, कोट्टायम, केरल

काव्य अंतर्दृष्टि और जीवन पर परिसंवाद
26 फ़रवरी 2024, रंगापारा, शोणितपुर, असम

डोगरी में महिला लेखन के समकालीन मुद्दों और चुनौतियों पर डोगरी में परिसंवाद
7 मार्च 2024, जम्मू, जम्मू और कश्मीर

डोगरी कविता में भाव और मीटर के उपयोग, अलंकार पर डोगरी में परिसंवाद
22 मार्च 2024, जम्मू, जम्मू और कश्मीर

मेरे झरोखे से

प्रख्यात उर्दू लेखक और कवि सत्यपाल अख्तर रिज़वानी पर ज़ाहिद अबरोल का व्याख्यान
16 सितंबर 2023, नई दिल्ली

प्रख्यात तमिळ लेखक सुब्रह्मण्यम् भारती पर मालन
11 दिसंबर 2023, चेन्नै

प्रख्यात संस्कृत और तेलुगु विद्वान और कोशकार रव्वा श्रीहरि पर के. यादगिरी का व्याख्यान
16 दिसंबर 2023, खैरताबाद, हैदराबाद, तेलंगाना

प्रख्यात डोगरी लेखक रामनाथ शास्त्री पर नरसिंह देव जामवाल का व्याख्यान
27 दिसंबर 2023, जम्मू, जम्मू और कश्मीर

प्रख्यात कलाकार जनक झंकार नरजारी पर अजीत बोरो का व्याख्यान

16 फरवरी 2024, कोकराझार, असम

प्रख्यात मणिपुरी कवि और लेखक राजकुमार मोधुबीर सिंह पर नोंगमाईथेम टॉम्बी सिंह का व्याख्यान

30 मार्च 2024, इंफ़ाल

अनुवाद कार्यशाला

असमिया-नेपाली अनुवाद कार्यशाला

23 जनवरी 2024, उदलगुडी, असम

उन्मेष, भोपाल

उद्घाटन सत्र

3 अगस्त 2023, हंसध्वनि सभागार

बहुभाषी कविता-पाठ

3 अगस्त 2023, अंजनी सभागार

मेरे लिए आज़ादी का क्या अर्थ है?

3 अगस्त 2023, गौरांजनी सभागार

भारत पर कविता वाचन @75

3 अगस्त 2023, जयजयवंती सभागार

वैश्वीकृत दुनिया के लिए वैश्विक साहित्य

3 अगस्त 2023, शिवरंजनी सभागार

डॉक्टर द्वारा निर्धारित साहित्य

3 अगस्त 2023, नीलांबरी सभागार

मध्य प्रदेश के गीत

3 अगस्त 2023, मालकौंस सभागार

सिनेमा और साहित्य पर चर्चा

3 अगस्त 2023, अंजनी सभागार

भारत @75 कविता पाठ

3 अगस्त 2023, गौरांजनी सभागार

बहुभाषी कविता-पाठ

3 अगस्त 2023, जयजयवंती सभागार

मातृभाषाओं का महत्त्व

3 अगस्त 2023, शिवरंजनी सभागार

साहित्य और प्रकृति

3 अगस्त 2023, नीलांबरी सभागार

बहुभाषी कहानी-पाठ

3 अगस्त 2023, मालकौंस सभागार

आदिवासी कवि सम्मिलन

3 अगस्त 2023, अंजनी सभागार

"भारत का विचार" पर चर्चा

3 अगस्त 2023, गौरांजनी सभागार

पारिस्थितिकी आलोचना पर चर्चा

3 अगस्त 2023, शिवरंजनी सभागार

महासागर साहित्य पर चर्चा

3 अगस्त 2023, नीलांबरी सभागार

युवा साहिती : युवा भारत का उदय
3 अगस्त 2023, मालकौंस सभागार

रचनात्मकता को बढ़ावा देने वाली शिक्षा पर चर्चा
4 अगस्त 2023, गौरंजनी सभागार

कविता पाठ : युवा साहिती : नई फ़सल
4 अगस्त 2023, जयजयवंती सभागार

मशीनें - लेखकविहीन साहित्य?
4 अगस्त 2023, शिवरंजनी सभागार

भारतीय काव्यशास्त्र पर चर्चा
4 अगस्त 2023, नीलांबरी सभागार

आदिवासी कवि सम्मिलन
4 अगस्त 2023, मालकौंस सभागार

साहित्य और अन्य कलाएँ
4 अगस्त 2023, गौरांजनी सभागार

बहुभाषी कविता-पाठ : एक नई दुनिया बुनना
4 अगस्त 2023, जयजयवंती सभागार

कविता : आत्मा की अभिव्यक्ति
4 अगस्त 2023, शिवरंजनी सभागार

पूर्वोत्तरी - पूर्वोत्तरी साहित्य पर चर्चा
4 अगस्त 2023, नीलांबरी सभागार

बहुभाषी कहानी-पाठ
4 अगस्त 2023, मालकौंस सभागार

भारतीय नाटकों में अलगाव के प्रभाव पर चर्चा
4 अगस्त 2023, गौरंजनी सभागार

भारत @75 कविता-पाठ
4 अगस्त 2023, जयजयवंती सभागार

कविता मेरे लिए क्या अर्थ रखती है?
4 अगस्त 2023, शिवरंजनी सभागार

अनुवाद, प्रगति और आलोचनात्मक सोच का वाहक
4 अगस्त 2023, नीलांबरी ऑडिटोरियम

कविता पाठ : युवा साहिती : नई फ़सल
4 अगस्त 2023, मालकौंस सभागार

भारत का भक्ति साहित्य
4 अगस्त 2023, गौरंजनी सभागार

बहुभाषी कविता-पाठ : विभिन्न भाषाओं में भारतीय कविता
4 अगस्त 2023, जयजयवंती सभागार

अस्मिता : कहानीकार सम्मिलन
4 अगस्त 2023, शिवरंजनी सभागार

भारत की काव्य परंपराएँ
4 अगस्त 2023, नीलाम्बरी सभागार

योग साहित्य पर चर्चा
4 अगस्त 2023, मालकौंस सभागार

भारत की साहित्यिक विरासत
5 अगस्त 2023, गौरांजनी सभागार

भारत पर कविता पाठ @75
5 अगस्त 2023, जयजयवंती सभागार

काल्पनिक और विज्ञान कथाएँ
5 अगस्त 2023, शिवरंजनी सभागार

हाशिये के स्वर शोषितों का उत्थान
5 अगस्त 2023, नीलाम्बरी सभागार

बहुभाषी कहानी-पाठ वाचन
5 अगस्त 2023, मालकौंस सभागार

सीमाओं से परे कविताएँ
5 अगस्त 2023, गौरांजनी सभागार

बहुभाषी कविता-पाठ
5 अगस्त 2023, जयजयवंती सभागार

भारतीय लोकगीत की गाथा
5 अगस्त 2023, शिवरंजनी सभागार

ई-साहित्य पर चर्चा
5 अगस्त 2023, नीलांबरी सभागार

आदिवासी कवि सम्मिलन
5 अगस्त 2023, मालकौंस सभागार

विदेशी भाषाओं में भारतीय साहित्य को बढ़ावा देना
5 अगस्त 2023, गौरंजनी सभागार

बहुभाषी कहानी-पाठ : विश्व को बुनना
5 अगस्त 2023, जयजयवंती सभागार

बहुभाषी कहानी-पाठ
5 अगस्त 2023, शिवरंजनी सभागार

भारत में बाल साहित्य का अनुवाद
05 अगस्त 2023, नीलांबरी सभागार

युवा साहिती : कहानी-पाठ
5 अगस्त 2023, मालकौंस सभागार

कथा वाचन, भारत की परंपराएँ
05 अगस्त 2023, गौरंजनी सभागार

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में पत्रकारिता की भूमिका
05 अगस्त 2023, जयजयवंती सभागार

समकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियाँ
05 अगस्त 2023, शिवरंजनी सभागार

कूटनीति और साहित्य
05 अगस्त 2023, नीलांबरी सभागार

बहुभाषी कवि सम्मिलन
05 अगस्त 2023, मालकौंस सभागार

आदिवासी लेखक सम्मिलन
06 अगस्त 2023, अंजनी सभागार

नारीवाद और साहित्य
06 अगस्त 2023, गौरांजनी सभागार

साहित्य का महत्त्व
06 अगस्त 2023, जयजयवंती सभागार

बहुभाषी कविता-पाठ
06 अगस्त 2023, शिवरंजनी सभागार

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में पुस्तकों की भूमिका
06 अगस्त 2023, नीलांबरी सभागार

बहुभाषी कहानी-पाठ
06 अगस्त 2023, मालकौंस सभागार

आदिवासी कवि सम्मिलन
06 अगस्त 2023, अंजनी सभागार

विभिन्न प्रभाव
06 अगस्त 2023, गौरांजनी सभागार

भारत @75 कविता-पाठ
06 अगस्त 2023, जयजयवंती सभागार

भारत के महाकाव्यों पर चर्चा
06 अगस्त 2023, शिवरंजनी सभागार

भारतीय भाषाओं में अनुवादकों के समक्ष चुनौतियाँ
06 अगस्त 2023, नीलांबरी सभागार

आदिवासी कवि सम्मिलन
06 अगस्त 2023, मालकौंस सभागार

आदिवासी कवि सम्मिलन
06 अगस्त 2023, अंजनी सभागार

भारत की सांस्कृतिक विरासत
06 अगस्त 2023, गौरंजनी सभागार

मैं क्यों लिखता हूँ?
6 अगस्त 2023, जयजयवंती सभागार

बहुभाषी कहानी-पाठ
6 अगस्त 2023, शिवरंजनी सभागार

भारतीय भाषाओं में प्रकाशन
6 अगस्त 2023, नीलांबरी सभागार

धरा के गीत : आदिवासी लेखक सम्मिलन
6 अगस्त 2023, मालकौंस सभागार

आदिवासी कवि सम्मिलन
6 अगस्त 2023, अंजनी सभागार

बहुभाषी कविता-पाठ
6 अगस्त 2023, गौरंजनी सभागार

बहुभाषी कहानी-पाठ
6 अगस्त 2023, जयजयवंती सभागार

भारत की मृदु शक्ति
6 अगस्त 2023, शिवरंजनी सभागार

विविधता में एकता पर चर्चा
6 अगस्त 2023, नीलांबरी सभागार

दर्पण : वृतचित्रों का प्रदर्शन
6 अगस्त 2023, मालकौंस सभागार

लेखक सम्मिलन

अखिल भारतीय दिव्यांग लेखक सम्मिलन
18 जुलाई 2023, दिल्ली

मैथिली कथा लेखक सम्मिलन
14-15 दिसंबर 2023, झंझारपुर, बिहार

युवा साहिती

युवा ओड़िआ लेखकों के साथ
10 सितंबर 2023, बलांगीर, ओड़िशा

युवा असमिया कवियों के साथ
7 अक्तूबर 2023, गुवाहाटी, कामरूप (एम), असम

युवा मणिपुरी लेखकों के साथ
26 दिसंबर 2023, अगरतला, पश्चिम त्रिपुरा

युवा असमिया लेखकों के साथ
30 दिसंबर 2023, नलबाड़ी कॉलेज, नलबाड़ी, असम

युवा उर्दू लेखकों के साथ
3-4 जनवरी 2024, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

वर्ष 2023-2024 में आयोजित कार्यकारी मंडल, सामान्य परिषद, वित्त समिति, क्षेत्रीय मंडलों और भाषा परामर्श मंडलों की बैठकें

कार्यकारी मंडल

दिनांक	स्थान
23 जून 2023	साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
20 दिसंबर 2023	साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
11 मार्च 2024	साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

सामान्य परिषद

दिनांक	स्थान
23 जून 2023	साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
12 मार्च 2024	साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

वित्त समिति 2023-2024

दिनांक	स्थान
4 मार्च 2024	साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

क्षेत्रीय मंडलों की बैठकें

मंडल	दिनांक	स्थान
पूर्वी क्षेत्रीय मंडल (ईआरबी)	29 सितंबर 2023	क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता
पश्चिमी क्षेत्रीय मंडल (डब्ल्यूआरबी)	10 दिसंबर 2023	क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई
उत्तरी क्षेत्रीय मंडल (एनआरबी)	19 दिसंबर 2023	प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली
दक्षिणी क्षेत्रीय मंडल (एसआरबी)	09 दिसंबर 2023	क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु

भाषा परामर्श मंडलों की बैठकें

मंडल	दिनांक	स्थान
असिमया	29 अप्रैल 2023	गुवाहाटी
	24 फ़रवरी 2024	गुवाहाटी
बाङ्ला	16 मई 2023	कोलकाता
	4 मार्च 2024	कोलकाता
बोडो	30 अप्रैल 2023	गुवाहाटी
	25 फ़रवरी 2024	गुवाहाटी
डोगरी	25 अप्रैल 2023	नई दिल्ली
	19 फ़रवरी 2023	नई दिल्ली
अंग्रेज़ी	20 अप्रैल 2023	नई दिल्ली
	28 फ़रवरी 2024	नई दिल्ली
गुजराती	23 मई 2023	अहमदाबाद
	8 मार्च 2023	अहमदाबाद
हिंदी	22 जून 2023	नई दिल्ली
	10 मार्च 2024	नई दिल्ली
कन्नड	15 अप्रैल 2023	बेंगळूरु
	3 मार्च 2024	बेंगळूरु
कश्मीरी	10 मई 2023	नई दिल्ली
	5 मार्च 2024	नई दिल्ली
कोंकणी	12 मई 2023	नई दिल्ली
	23 फ़रवरी 2024	गोवा
मलयाळम्	14 मई 2023	कोची
	07 मार्च 2024	कोची
मैथिली	26 अप्रैल 2023	नई दिल्ली
	19 फ़रवरी 2024	नई दिल्ली
मणिपुरी	28 अप्रैल 2023	गुवाहाटी
	10 फ़रवरी 2024	इंफ़ाल
मराठी	13 मई 2023	मुंबई
	27 फ़रवरी 2024	मुंबई

नेपाली	11 मई 2023	नई दिल्ली
	26 फ़रवरी 2024	नई दिल्ली
ओड़िआ	21 मई 2023	भुवनेश्वर
	18 फ़रवरी 2024	भुवनेश्वर
पंजाबी	2 मई 2023	नई दिल्ली
	4 मार्च 2024	नई दिल्ली
राजस्थानी	18 मई 2023	नई दिल्ली
	26 फ़रवरी 2023	नई दिल्ली
संस्कृत	10 मई 2023	नई दिल्ली
	20 फ़रवरी 2024	नई दिल्ली
संताली	20 मई 2023	भुवनेश्वर
	02 फ़रवरी 2024	कोलकाता
सिंधी	12 मई 2023	मुंबई
	27 फ़रवरी 2024	मुंबई
तमिऴ	06 मई 2023	चेन्नै
	01 मार्च 2024	चेन्नै
तेलुगु	3 मई 2023	हैदराबाद
	29 फ़रवरी 2024	हैदराबाद
उर्दू	6 मई 2023	चेन्नै
	5 मार्च 2024	नई दिल्ली

अन्य मंडलों की बैठकें

मंडल	**दिनांक**	**स्थान**
साहित्य अकादेमी की फ़िल्म अभिलेखागार समिति	वर्ष 2023-24 में कोई बैठक नहीं	
उत्तर-पूर्व वाचिक साहित्य केंद्र (एनईसीओएल)	3 दिसंबर 2023	कोलकाता
अनुवाद केंद्र के लिए सलाहकार समिति	वर्ष 2023-24 में कोई बैठक नहीं	
वाचिक एवं जनजातीय साहित्य केंद्र (सीओटीएलआईटी)	30 नवंबर 2023	नई दिल्ली
भाषा विकास मंडल (एलडीबी)	29 नवंबर 2023	नई दिल्ली

वर्ष 2023-2024 में आयोजित पुस्तक प्रदर्शनियाँ / पुस्तक मेले

प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली

क्र.सं.	पुस्तक प्रदर्शनी/पुस्तक मेले का विवरण	तिथि
1.	आईआईसी, मैक्स म्यूलर मार्ग, नई दिल्ली में पुस्तक प्रदर्शनी।	17 मई 2023
2.	प्रगति मैदान, नई दिल्ली में दिल्ली पुस्तक मेला।	29 जुलाई 2023-02 अगस्त 2023
3.	'शैलेन्द्र' विनिबंध के पुस्तक के विमोचन के अवसर पर आकाशवाणी भवन में पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन।	2 सितंबर 2023
4.	एनएचपीसी, फ़रीदाबाद में हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन।	18 सितंबर 2023
5.	सीमा शुल्क विभाग, हवाई अड्डे पर हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन।	26 सितंबर 2023
6.	डीजीपीएम, चाणक्यपुरी में हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन।	27 सितंबर 2023
7.	भाई वीर साहित्य सदन, नई दिल्ली में प्रख्यात पंजाबी लेखक मोहिंदर सिंह सरना की जन्म शताब्दी संगोष्ठी के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन।	27-28 सितंबर 2023
8.	फ़रीदकोट, पंजाब में फ़रीदकोट पुस्तक मेले में सहभागिता।	19-23 सितंबर 2023
9.	राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा आयोजित उज्जैन पुस्तक मेले में सहभागिता।	01-06 सितंबर 2023
10.	दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी में सहभागिता।	20 अक्तूबर 2023
11.	'महापात्र नीलमणि साहू की स्मरणीय कहानियाँ' पुस्तक के विमोचन के अवसर पर आईआईसी लोधी एस्टेट, नई दिल्ली में पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया।	15 नवंबर 2023
12.	कन्नड साहित्य संघ, सत्य साईं लोधी रोड, नई दिल्ली में पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया।	15 नवंबर 2023

13.	मेजर ध्यानचंद स्टेडियम में आयोजित साहित्य आजतक के दौरान आयोजित पुस्तक मेले में सहभागिता।	24-26 नवंबर 2023
14.	आज़मगढ़ में आयोजित होने वाले आज़मगढ़ पुस्तक मेले में सहभागिता।	25 नवंबर 2023 - 2 दिसंबर 2023
15.	किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली में आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी में सहभागिता।	28-29 नवंबर 2023
16.	हरिऔध कला भवन, आज़मगढ़ में आयोजित आज़मगढ़ पुस्तक मेले में सहभागिता।	25 नवंबर 2023 2 दिसंबर 2023
17.	साहित्य अकादेमी द्वारा रवींद्र भवन, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली में आयोजित साहित्य अकादेमी पुस्तक महोत्सव - 2023 के अंतर्गत पुस्तकायन में सहभागिता की।	1-09 दिसंबर 2023
18.	पटना में आयोजित सीआरडी पटना पुस्तक मेले में भाग लिया।	1-12 दिसंबर 2023
19.	कुरुक्षेत्र में आयोजित कुरुक्षेत्र पुस्तक मेले - 2023 में सहभागिता।	16-24 दिसंबर 2023
20.	पंचकूला, हरियाणा में आयोजित पंचकूला पुस्तक मेले में सहभागिता।	15-22 जनवरी 2024
21.	महाराष्ट्र सूचना केंद्र, नई दिल्ली द्वारा आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी सह बिक्री 2024 में सहभागिता।	19-21 जनवरी 2024
22.	10वीं पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला द्वारा आयोजित पुस्तक मेला और साहित्य महोत्सव - 2024 में सहभागिता।	30 जनवरी 2024
23.	राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली में आयोजित रंग नाट्य महोत्सव में सहभागिता।	9-16 फ़रवरी 2024
24.	राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली द्वारा आयोजित विश्व पुस्तक मेले में भाग लिया, जो प्रगति मैदान, नई दिल्ली में आयोजित किया गया।	10-18 फ़रवरी 2024
25.	खालसा कॉलेज, अमृतसर द्वारा खालसा कॉलेज ग्राउंड में आयोजित अमृतसर पुस्तक मेले में सहभागिता।	21-25 फरवरी 2024
26.	साहित्योत्सव, 2024 के दौरान रवींद्र भवन, नई दिल्ली में पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित की गई।	11-16 मार्च 2024

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु

क्र.सं.	पुस्तक प्रदर्शनी/पुस्तक मेले का विवरण	तिथि
1.	7वाँ मैसूर साहित्य महोत्सव होटल साउदर्न स्टार, मैसूर, कर्नाटक में भाग लिया।	1-2 जुलाई 2023
2.	संगोष्ठी के दौरान राजराजा नरेंद्र के शासनकाल की 1000वीं जयंती के अवसर पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी - आदिकवि नन्नया और महाभारत की रचनाएँ, राजमुंदरी, आंध्र प्रदेश में पुस्तक प्रदर्शनी में भाग लिया।	16-17 अगस्त 2023
3.	तेलंगाना में आज़ादी का अमृत महोत्सव समारोह के भाग के रूप में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में तेलुगु साहित्य के योगदान पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी, रवींद्र भारती, सम्मेलन हॉल, कला भवन, खैरताबाद, हैदराबाद।	29-30 अगस्त 2023
4.	कर्नाटक में सेंट जोसेफ कॉलेज ऑफ़ कॉमर्स (स्वायत्त), 163, ब्रिगेड रोड, बेंगळूरु, 'अंतर-महाविद्यालयी साहित्यिक उत्सव'- "विविधा" के अवसर पर पुस्तक प्रदर्शनी।	25-27 सितंबर 2023
5.	कर्नाटक में मैसूर दशहरा मराठा मेला के अवसर पर ओवल ग्राउंड, डीसी ऑफिस के सामने, मैसूर में पुस्तक प्रदर्शनी में भाग लिया।	15-23 अक्तूबर 2023
6.	राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह 2023 के अवसर पर स्कूल ऑफ़ साइंसेज़, जैन (मान्य विश्वविद्यालय), जे.सी. रोड, बेंगळूरु, कर्नाटक में पुस्तक प्रदर्शनी में भाग लिया।	14-21 नवंबर 2023
7.	34वां विजयवाड़ा पुस्तक महोत्सव सरकारी पॉलिटेक्निक कॉलेज, विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश में भाग लिया।	28 दिसंबर 2023 7 जनवरी 2024
8.	गंगाधर चित्तला पर जन्म शताब्दी संगोष्ठी के दौरान एम.एल.ए. अकादमी ऑफ़ हायर लर्निंग, मल्लेश्वरम, बेंगळूरु, कर्नाटक में पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित की गई।	29 दिसंबर 2023
9.	पडाला रामाराव पर जन्म शताब्दी संगोष्ठी के दौरान राजामहाद्रवरम, आंध्र प्रदेश में आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी और छूट बिक्री का आयोजन किया गया।	6 जनवरी 2024

10.	एम.एल.ए. अकादमी ऑफ़ हायर लर्निंग, मल्लेश्वरम, बेंगळूरु, कर्नाटक में पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन।	18-19 जनवरी 2024
11.	हैदराबाद साहित्य उत्सव 2024 के दौरान सत्व नॉलेज सिटी, हाई-टेक सिटी, हैदराबाद, तेलंगाना में पुस्तक प्रर्दशनी आयोजित।	26-28 जनवरी 2024
12.	एनटीआर ग्राउंड्स, हैदराबाद, तेलंगाना में 36वां हैदराबाद राष्ट्रीय पुस्तक मेला।	9-19 फरवरी 2024
13.	"अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर मातृभाषाओं का महत्व" विषय पर आयोजित साहित्य मंच के दौरान आंध्र लोयोला कॉलेज (स्वायत्त), विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश में पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन।	21 फ़रवरी 2024

उप-कार्यालय, चेन्नै

क्र.सं.	पुस्तक प्रदर्शनी/पुस्तक मेले का विवरण	तिथि
1.	कोयंबटूर पुस्तक मेला	21-30 जुलाई 2023
2.	पुदुकोट्टई पुस्तक मेला	28 जुलाई 2023 - 06 अगस्त 2023
3.	इरोड पुस्तक मेला	4 - 15 अगस्त 2023
4.	कु. अझागिरिसामी पर शताब्दी संगोष्ठी	25-26 अगस्त 2023
5.	वल्लालर पर सेमिनार	28-29 अगस्त 2023
6.	नागपट्टिनम पुस्तक मेला	1-12 सितंबर 2023
7.	धर्मपुरी पुस्तक मेला	8-17 सितंबर 2023
8.	टीएमसी रघुनाथन पर शताब्दी संगोष्ठी	12-13 सितंबर 2023
9.	श्री नारायण गुरु महोत्सव	22-23 सितंबर 2023
10.	पुलियुरकेसिगन पर शताब्दी संगोष्ठी	26-27 सितंबर 2023
11.	डिंडीगुल पुस्तक मेला	5-15 अक्तूबर 2023
12.	मदुरै पुस्तक मेला	12-22 अक्तूबर 2023
13.	केरल विधानमंडल अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला	1-7 नवंबर 2023
14.	राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह	14-20 नवंबर 2023
15.	विरुधुनगर पुस्तक मेला	16-27 नवंबर 2023
16.	सलेम पुस्तक मेला	21 नवंबर 2023-06 दिसंबर 2023

17.	त्रिची पुस्तक मेला	23 नवंबर 2023 -04 दिसंबर 2023
18.	पुदुचेरी पुस्तक मेला	22-31 दिसंबर 2023
19.	चेन्नै पुस्तक मेला	3-21 जनवरी 2024
20.	तमिऴ ओली पर शताब्दी संगोष्ठी	4-5 जनवरी 2024
21.	सी. बालासुंदरनार पर शताब्दी संगोष्ठी	18-19 जनवरी 2024
22.	की. पर शताब्दी संगोष्ठी राजनारायणन	22-23 जनवरी 2024
23.	तिरुप्पुर पुस्तक मेला	25 जनवरी 2024 - 4 फ़रवरी 2024
24.	त्रिशूर पुस्तक मेला	28 जनवरी 2024 - 3 फ़रवरी 2024
25.	कांचीपुरम पुस्तक मेला	9-19 फ़रवरी 2024
26.	थुंचन पुस्तक महोत्सव	14-17 फ़रवरी 2024
27.	ए. माधवैया की कृतियों पर संगोष्ठी	20 फ़रवरी 2024

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता

क्र.सं.	पुस्तक प्रदर्शनी/पुस्तक मेले का विवरण	तिथि
1	नववर्ष बोई उत्सव 2023	16-25 अप्रैल 2023
2	न्यू अलीपुर कॉलेज में पुस्तक प्रदर्शनी	12 मई 2023
3	क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में पुस्तक प्रदर्शनी	16 मई 2023
4	क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में पुस्तक प्रदर्शनी	26 मई 2023
5	बारिपदा में पुस्तक प्रदर्शनी (कार्यक्रम के साथ)	27 जुलाई 2023
6	बालासोर में पुस्तक प्रदर्शनी (कार्यक्रम के साथ)	28 जुलाई 2023
7	भुवनेश्वर में पुस्तक प्रदर्शनी (कार्यक्रम के साथ)	9-10 अगस्त 2023
8	उत्कल विश्वविद्यालय में ओड़िआ कार्यक्रम के साथ पुस्तक प्रदर्शनी	10-11 अगस्त 2023
9	क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में पुस्तक प्रदर्शनी	23 अगस्त 2023
10	क्रिश्चियन महिला कॉलेज में अंग्रेज़ी कार्यक्रम के साथ पुस्तक प्रदर्शनी	28 अगस्त 2023
11	कार्यक्रम के साथ क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में पुस्तक प्रदर्शनी	30 अगस्त 2023

12	मुस्लिम संस्थान में उर्दू कार्यक्रम के साथ पुस्तक प्रदर्शनी के साथ उर्दू कार्यक्रम	2 सितंबर 2023
13	नेपाली कार्यक्रम के साथ क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में पुस्तक प्रदर्शनी	10 सितंबर 2023
14	कार्यक्रम के साथ क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में पुस्तक प्रदर्शनी	15 सितंबर 2023
15	कार्यक्रम के साथ कलकत्ता विश्वविद्यालय में पुस्तक प्रदर्शनी	19-20 सितंबर 2023
16	अंग्रेज़ी कार्यक्रम के साथ श्री शिक्षायतन महाविद्यालय में पुस्तक प्रदर्शनी	22-23 सितंबर 2023
17	कार्यक्रम के साथ जमशेदपुर में पुस्तक प्रदर्शनी	23-24 सितंबर 2023
18	एनबीटी द्वारा शिलांग पुस्तक मेला आयोजित	27 सितंबर 2023- 03 अक्तूबर 2023
19	कार्यक्रम के साथ क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में पुस्तक प्रदर्शनी	30 सितंबर 2023 को
20	बोई बाजार कोलकाता में पुस्तक प्रदर्शनी	28 सितंबर 2023-06 अक्तूबर 2023
21	क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में बाल साहिती कार्यक्रम के साथ पुस्तक प्रदर्शनी	15 नवंबर 2023 को
22	राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी	15-21 नवंबर 2023 को
23	क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में पुस्तक प्रदर्शनी	23 नवंबर 2023
24	नरेंद्रपुर रामकृष्ण मिशन में कार्यक्रम के साथ पुस्तक प्रदर्शनी	02 दिसंबर 2023
25	ओडिशा राज्य पुस्तक महोत्सव (राजधानी पुस्तक मेला)	1-10 दिसंबर 2023
26	डिब्रूगढ़ पुस्तक मेला	8-19 दिसंबर 2023
27	दमदम पुस्तक मेला	23-31 दिसंबर 2023
28	युवा पुरस्कार कार्यक्रम के साथ पुस्तक प्रदर्शनी	12-13 जनवरी 2024
29	असम पुस्तक मेला	29 दिसंबर 2023-09 जनवरी 2024
30	लिटिल मैगज़ीन मेला	10-14 जनवरी 2024
31	47वां अंतर्राष्ट्रीय कोलकाता पुस्तक मेला	18-31 जनवरी 2024
32	क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में कार्यक्रम के साथ	

	पुस्तक प्रदर्शनी	21 फ़रवरी 2024
33	क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में कार्यक्रम के साथ पुस्तक प्रदर्शनी	14 मार्च 2024
34	क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में कार्यक्रम के साथ पुस्तक प्रदर्शनी	21 मार्च 2024
35	महिला क्रिश्चियन कॉलेज में पुस्तक प्रदर्शनी	22 मार्च 2024
36	अगरतला पुस्तक मेला 2024	21 फ़रवरी 2024-05 मार्च 2024
37	संस्कृत भवन, भुवनेश्वर में पुस्तक प्रदर्शनी	22-23 अप्रैल 2023

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई

क्र.सं.	पुस्तक प्रदर्शनी/पुस्तक मेले का विवरण	तिथि
1	पुणे, महाराष्ट्र में 'गोदावरी और वितस्ता : एक संस्कृति यात्रा' विषय पर आयोजित संगोष्ठी के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी।	1-2 अप्रैल 2023
2.	मुंबई, महाराष्ट्र में 'विगत 25 वर्षों का मराठी साहित्य' पर संगोष्ठी के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी।	29 जुलाई 2023
3.	मुंबई में 'संयुक्त महाराष्ट्र चलवल आणि समकालीन महाराष्ट्र' पर संगोष्ठी के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी।	30 जुलाई 2023
4.	'साहित्य मंच' के दौरान, ठाणे, महाराष्ट्र में पुस्तक प्रदर्शनी।	17 अगस्त 2023
5.	अहमदाबाद, महाराष्ट्र में 'स्वतंत्रता के बाद का सिंधी साहित्य', विषय पर आयोजित सिंधी संगोष्ठी के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी।	9-10 सितंबर 2023
6.	हिंदी दिवस समारोह-2023 एवं तीसरा अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, पुणे, महाराष्ट्र	14-15 सितंबर 2023
7.	'वसंत बापट : व्यक्ति आणि' के दौरान विषयक परिसंवाद पुणे, महाराष्ट्र में पुस्तक प्रदर्शनियों का आयोजन।	6-7 अक्तूबर 2023
8.	'भारत : साहित्य एवं मीडिया महोत्सव, के दौरान मुंबई, महाराष्ट्र में पुस्तक प्रदर्शनी।	7-9 अक्तूबर 2023
9.	राष्ट्रीय पुस्तक मेला, नागपुर, महाराष्ट्र।	13-22 अक्तूबर 2023

10.	'अन्ना भाऊ साठे : व्यक्ति वा साहित्य' विषय पर आयोजित संगोष्ठी के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी, नांदेड़, महाराष्ट्र।	1-2 नवंबर 2023
11.	साहित्य अकादेमी के आनंद कुमारस्वामी फेलो, श्रीलंका के डॉ. असंग तिलकरत्ने के व्याख्यान के दौरान मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई, महाराष्ट्र में पुस्तक प्रदर्शनी।	27 नवंबर 2023
12.	अंग्रेज़ी संगोष्ठी के दौरान मुंबई, महाराष्ट्र में पुस्तक प्रदर्शनी।	7-8 दिसंबर 2023
13.	शणै गोयंबाब : व्यक्तित्व और कृतित्व संगोष्ठी के दौरान पणजी, गोवा में पुस्तक प्रदर्शनी।	16-17 दिसंबर 2023
14.	पुणे पुस्तक महोत्सव, पुणे, महाराष्ट्र।	16-24 दिसंबर 2023
15.	साहित्य मंच (उर्दू) के दौरान मुंबई, महाराष्ट्र में पुस्तक प्रदर्शनी।	22 दिसंबर 2023
16.	साहित्य मंच (मराठी) के दौरान, मुंबई, महाराष्ट्र में पुस्तक प्रदर्शनी।	29 दिसंबर 2023
17.	परिसंवाद के दौरान मुंबई, महाराष्ट्र में पुस्तक प्रदर्शनी।	4 जनवरी 2024
18.	गोवा पुस्तक मेला, मडगाँव, गोवा।	4-8 जनवरी 2024
19.	सतारा जिला ग्रंथ महोत्सव, सतारा, महाराष्ट्र।	5-8 जनवरी 2024
20.	बी.ए.आर.सी. मुंबई, महाराष्ट्र में पुस्तक प्रदर्शनी।	11-12 जनवरी 2024
21.	उर्दू किताब मेला, मुंबई, महाराष्ट्र।	6-14 जनवरी 2024
22.	विश्व मराठी सम्मेलन, नवी मुंबई, महाराष्ट्र।	27-29 जनवरी 2024
23.	गुजराती भाषा में परिसंवाद के दौरान, राजकोट, गुजरात में पुस्तक प्रदर्शनी।	29-30 जनवरी 2024
24.	97वाँ अखिल भारतीय मराठी साहित्य सम्मेलन, अमलनेर, महाराष्ट्र।	2-4 फ़रवरी 2024
25.	ठाणे ग्रंथ महोत्सव, नवी मुंबई, महाराष्ट्र।	20-21 फ़रवरी 2024
26.	मुंबई सिटी ग्रंथ महोत्सव, मुंबई, महाराष्ट्र।	22 -23 फ़रवरी 2024
27.	'गेटवे लिटफेस्ट', मुंबई, महाराष्ट्र।	1-2 मार्च 2024

1 अप्रैल 2023 से 31 मार्च 2024 तक प्रकाशित पुस्तकें

असमिया

काँचर कारबुर (नवोदय परियोजना के अंतर्गत कविता-संग्रह)
ले. गौतम प्रियम महंत
पृ. 102, रु. 160/-
ISBN: 978-81-19499-01-4

सिसिफासर पृथिबी (नवोदय परियोजना के अंतर्गत कहानी-संग्रह)
ले. सुप्रकाश भुइयाँ
पृ. 118, रु. 150/-
ISBN: 978-81-963564-5-3

ब्रह्मर्षि श्री नारायण गुरु
(मलयाळम् विनिबंध)
ले. टी. भास्करण
अनु. अश्विनी बेज़बरुआ
पृ. 144, रु. 50/-
ISBN: 978-93-5548-003-3

मोर बाबे मैथन शोनारुर फूल (पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्यास 'लैबर्नम फ़ॉर माय हेड')
ले. तेमसुला आव
अनु. माधुर्य ब'रा
पृ. 102, रु. 110/-
ISBN: 978-81-963564-6-0

बाबरर प्रार्थना आरु अन्यान्य कविता
(पुरस्कृत बाङ्ला कविता-संग्रह)
ले. शंख घोष
अनु. एम. कमालुद्दीन अहमद
पृ. 96, रु. 100/-
ISBN: 978-81-19499-04-5

कर्मभूमि (हिंदी उपन्यास)
ले. प्रेमचंद
अनु. इनुमणि दास
पृ. 344, रु. 470/-

दृष्टिपात
(पुरस्कृत कश्मीरी निबंध-संग्रह)
ले. मोहम्मद ज़माँ आज़ुर्दा
अनु. अरूपा बरुआ
पृ. 108, रु. 140/-
ISBN: 978-81-19499-02-1

मिर्ज़ा ग़ालिब
(उर्दू जीवनी, 17 स्क्रीन प्ले का संग्रह)
ले. गुलज़ार
अनु. शारदी सैकिया
पृ. 146, रु. 210/-
ISBN: 978-81-19499-30-4

शिखसूर्जो
(कन्नड उपन्यास *शिखर सूर्य*)
ले. चंद्रशेखर कंबार
अनु. शारोदी सैकिया
पृ. 387, रु. 460/-
ISBN: 978-93-6183-534-6

हसुलिपाकार उपकथा
(बाङ्ला उपन्यास *हांसुली बांकेर उपकथा*)
ले. ताराशंकर बंद्योपाध्याय
अनु. सुरेन तालुकदर
पृ. 246, रु. 300/-
ISBN: 978-93-6183-659-6

असमिया कल्पबिज्ञान गल्प-संकलन
(चयनित विज्ञान गल्प)
संक एवं संपा. शांतनु तमुली
पृ. 258, रु. 235/-
ISBN: 978-81-260-5397-1
तीसरा पुनर्मुद्रण: 2023

निर्वाचित असमिया शिशु-नाट
(चयनित असमिया बाल नाटक संकलन)
संक एवं संपा. शांतनु तमुली
पृ. 272, रु. 240/-
ISBN: 978-93-87989-39-9
तीसरा पुनर्मुद्रण: 2023

शिशु साहित्य
(बाङ्ला बाल रचना संचयन)
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अनु. विभिन्न
पृ. 200, रु. 180/-
ISBN: 978-81-260-1270-1
चौथा पुनर्मुद्रण: 2023

आधुनिक असमिया गद्य: प्रथम खंड
(आधुनिक असमिया गद्य संकलन)
संक एवं संपा. लीलावती सैकिया ब'र
पृ. 296, रु. 170/-
ISBN: 978-81-260-4222-7
दूसरा पुनर्मुद्रण: 2023

खरोसरोटा
(पुरस्कृत नेपाली कहानी-संग्रह 'खहारे')
ले. शिव कुमार राई
अनु. जयंत कृष्ण शर्मा
पृ. 88, रु. 130/-
ISBN: 978-93-87989-66-5
दूसरा पुनर्मुद्रण: 2023

संचयन (कविता-संग्रह)
संपा. महेश्वर नियोग
पृ. 480, रु. 500/-
ISBN: 978-81-260-2723-1
26 वाँ पुनर्मुद्रण 2023 एवं 27 वाँ पुनर्मुद्रण 2024

सिसिफासर पृथिबी (नवोदय परियोजना के अंतर्गत कहानी-संग्रह)
ले. सुप्रकाश भुइयाँ
पृ. 118, रु. 150/-
ISBN: 978-81-963564-5-3
दूसरा एवं तीसरा पुनर्मुद्रण: 2024

मोर बाबे मैथन शोनारुर फूल
(पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्यास)
ले. तेमसुला आव
अनु. माधुर्य बोरा
पृ. 102, रु. 110/-
ISBN: 978-81-963564-6-0
दूसरा एवं तीसरा पुनर्मुद्रण: 2024

अनधिकार प्रवेश आरु अन्यान्य गल्प
(टैगोर की 21 कहानियाँ)
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अनु. मनोज कुमार शर्मा
पृ. 96, रु. 110/-
ISBN: 978-93-89195-35-4
दूसरा पुनर्मुद्रण: 2024

कँहुआ
(पुरस्कृत संस्कृत कहानी-संग्रह *इक्षुगंधा*)
ले. अभिराज राजेंद्र मिश्र
अनु. दीपक कुमार शर्मा
पृ. 68, रु. 110/-
ISBN: 978-93-91494-10-0
दूसरा पुनर्मुद्रण: 2024

काँचर कारबुर
(नवोदय परियोजना के अंतर्गत कविता-संग्रह)
ले. गौतम प्रियम महंत
पृ. 102, रु. 160/-
ISBN: 978-81-19499-01-4
दूसरा पुनर्मुद्रण: 2024

बाबरर प्रार्थना आरु अन्यान्य कबिता
(पुरस्कृत बाङ्ला कविता-संग्रह)
ले. शंख घोष
अनु. एम. कमालुद्दीन अहमद
पृ. 96, रु. 100/-
ISBN: 978-81-19499-04-5
दूसरा पुनर्मुद्रण: 2024

ब्रह्मर्षि श्री नारायण गुरु
(मलयाळम् विनिबंध)
ले. टी. भास्करण
अनु. अश्विनी बेज़बरुआ
पृ. 144, रु. 50/-
ISBN: 978-93-5548-003-3
दूसरा पुनर्मुद्रण: 2024

बाङ्ला

महिशासुरेर मुख
(महिशासुरर मुहँ, पुरस्कृत ओड़िआ कहानी-संग्रह)
ले. बिभूति पट्टनायक
अनु. भारती नंदी
पृ. 160, रु. 220/-
ISBN: 978-93-5548-055-2

कबिता 1962 ओ नूतन कबितार भूमिका
(कबिता 1962 ओ नूतन कबितार भूमिका, पुरस्कृत ओड़िआ कविता-संग्रह)
ले. सचिदानंद राउतराय
अनु. मृदुला मिश्रा
पृ. 258, रु. 350/-
ISBN: 978-93-5548-275-4

मृगतृष्णा
(मृगतृष्णा, पुरस्कृत नेपाली कहानी-संग्रह)
ले. सानु लामा
अनु. सेबंती घोष
पृ. 92, रु. 150/-
ISBN: 978-93-5548-313-3

मृत आत्मा
(*म्यार्त्वये दुशी*, रूसी उपन्यास)
ले. निकोलाइ गोगोल
अनु. अरुण सोम
पृ. 458, रु. 550/-
ISBN: 978-81-19499-39-7

विषन्न बनानी
(*उदासीन रूखहरु,* पुरस्कृत नेपाली उपन्यास)
ले. प्रेम प्रधान
अनु. मुक्ति प्रसाद उपाध्याय
पृ. 116, रु. 180/-
ISBN: 978-81-19499-78-6

आमरा जा देखी (*हम जो देखते हैं,* पुरस्कृत हिंदी कविता-संग्रह)
ले. मंगलेश डबराल
अनु. सोमा बंद्योपाध्याय
पृ. 78, रु. 140/-
ISBN: 978-81-19499-38-0

काँटा ओ अन्यान्य गल्प (*कँटा ओ अन्यान्य गल्प,* पुरस्कृत ओड़िआ कहानी-संग्रह)
ले. गौरहरि दास
अनु. कृष्ण भट्टचार्य
पृ. 170, रु. 230/-
ISBN: 978-81-19499-46-5

बुल्हे शाह : निर्वाचित कविता संकलन (*बुल्हे शाह की काफ़ियाँ,* पंजाबी - कविताएँ)
अनु. विभिन्न अनुवादक
अनुवाद संपादन : सोमा बंद्योपाध्याय
पृ. 198, रु. 300/-
ISBN: 978-81-19499-37-3

असीम राय
(बाङ्ला लेखक पर विनिबंध)
ले. स्वप्न पंडा
पृ. 98, रु. 100/-
ISBN: 978-81-19499-21-2

बंगिय शब्दकोश, खंड एक एवं दो
(बाङ्ला—बाङला शब्दकोश)
संक एवं संपा. हरिचरन बंद्योपाध्याय
पृ. खंड एक : 1278, खंड दो : 1194
रु. 2500/- (एक सेट)
ISBN: 978-81-260-2661-6
दसवाँ पुनर्मुद्रण: 2023

लछमा
(*लछमा,* ओड़िआ कालजयी कृति)
ले. फ़कीर मोहन सेनापति
अनु. कृष्णा भट्टाचार्य
पृ. 104, रु. 140/-
ISBN: 978-93-88468-96-1
दूसरा पुनर्मुद्रण: 2024

महिशासुरेर मुख
(*महिशासुरर मुहँ,* पुरस्कृत ओड़िआ कहानी-संग्रह)
ले. बिभूति पट्टनायक
अनु. भारती नंदी
पृ. 160, रु. 220/-
ISBN: 978-93-5548-055-2
दूसरा पुनर्मुद्रण: 2024

बोडो

मधुपुरा जॅबॅर गॅजन
(*मधुपुर बहुदुर,* पुरस्कृत असमिया कहानी-संग्रह)
ले. शीलभद्र
अनु. जनिल कुमार ब्रह्म
पृ. 112, रु. 140/-
ISBN: 978-81-260-4965-3

गुफुर खाम
(*सादा ख़ाम,* पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास)
ले. मति नंदी
अनु. बिरहास गिरि बसुमतारी
पृ. 148, रु. 200/-
ISBN: 978-81-19499-11-3

अलोखाद सोम (*बिपन्न समय,* पुरस्कृत असमिया उपन्यास)
ले. मेदिनी चौधुरी
अनु. तरेन ब'र
पृ. 256, रु. 400/-
ISBN: 978-93-5548-242-6

खरथाई (*जंगम,* पुरस्कृत असमिया उपन्यास)
ले. देबेंद्रनाथ आचार्य
अनु. बिरुपाक्ष गिरि बसुमतारी
पृ. 224, रु. 350/-
ISBN: 978-93-5548-248-8

ब'र थुनलायो आइज़ो (संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेखों का संकलन)
संक. स्वर्ण प्रभा चैनारी
पृ. 120, रु. 190/-
ISBN: 978-93-86771-32-2
दूसरा पुनर्मुद्रण: 2023

ब'र सुंगदो सोलोनी बॅहॅविथी दाहर
(बोडो कहानी संकलन)
संक. स्वर्ण प्रभा चैनारी
पृ. 136, रु. 160/-
ISBN: 978-81-260-4652-2
चौथा पुनर्मुद्रण: 2023

गुफ़ुर खाम (*सादा ख़ाम,* पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास)
ले. मति नंदी
अनु. बिरहास गिरि बसुमतारी
पृ. 148, रु. 200/-
ISBN: 978-81-19499-11-3
दूसरा पुनमुर्द्रण: 2024

अबॅनग्लाओरिनी फाओ
(*दैवतिंटे विकृतिकल,* पुरस्कृत मलयाळम् उपन्यास)
ले. एम. मुकुंदन
अनु. गोपीनाथ ब्रह्मा
पृ. 328, रु. 270/-
ISBN: 978-81-260-5162-5
दूसरा पुनमुर्द्रण: 2024

डोगरी

डोगरी ग़ज़ल संग्रह
(डोगरी ग़ज़लों का संग्रह)
संक एवं संपा. सुशील बेगाना
पृ. 264, रु. 260/-
ISBN: 978-93-91017-84-2

डोगरी कविता दी 'सुन्न-खनेही'
(प्राचीन एवं मध्यकालीन डोगरी कविताओं का संग्रह)
संपा. ओम गोस्वामी
पृ. 320, रु. 300/-
ISBN: 978-81-19499-83-0

श्री रामकृष्ण वचनामृत सार
अनु. चंपा शर्मा
पृ. 384, रु. 380/-
ISBN: 978-93-5548-522-9

आँधी झक्कड़
(गालिवान, पुरस्कृत तेलुगु कहानी संग्रह)
ले. पी. पद्मराजू
अनु. अशोक दत्त
पृ. 142, रु. 180/-
ISBN: 978-93-5548-561-8

आर.के. नारायण
(प्रख्यात अंग्रेज़ी लेखक पर विनिबंध)
ले. रंगा राव
अनु. सुषमा रानी
पृ. 116, रु. 100/-
ISBN: 978-81-19499-89-2

बालकथा शतक (खंड एक)
(संस्कृत बाल कहानियाँ)
संपा. संपदानंद मिश्र
अनु. प्रकाश प्रेमी
पृ. 64, रु. 120/-
ISBN: 978-81-963564-9-1

बालकथा शतक (खंड दो)
(संस्कृत बाल कहानियाँ)
संपा. संपदानंद मिश्र
अनु. प्रकाश प्रेमी
पृ. 78, रु. 140/-
ISBN: 978-81-19499-41-0

बालकथा शतक (खंड तीन)
(संस्कृत बाल कहानियाँ)
संपा. संपदानंद मिश्र
अनु. प्रकाश प्रेमी
पृ. 107, रु. 190/-
ISBN: 978-81-19499-20-5

बालकथा शतक (खंड चार)
(संस्कृत बाल कहानियाँ)
सं. संपदानंद मिश्र
अनु. प्रकाश प्रेमी
पृ. 102, रु. 180/-
ISBN: 978-81-19499-72-4

न्हेरी गली
(*ओ अंधगली,* पुरस्कृत ओड़िआ कहानी-संग्रह)
ले. अखिल मोहन पटनायक
अनु. कृष्ण शर्मा
पृ. 182, रु. 180/-
ISBN: 978-93-5548-487-1

रवींद्रनाथ का बाल साहित्य-1
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अनु. इंद्रजीत केसर
पृ. 134, रु. 190/-
ISBN: 978-93-89195-68-2
पेपरबैक

रवींद्रनाथ का बाल साहित्य-2
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अनु. इंद्रजीत केसर
पृ. 140, रु. 195/-
ISBN: 978-93-89195-72-9
पेपरबैक

डोगरी बाल कहानियाँ
संपा. ज्ञानेश्वर
पृ. 132, रु. 150/-
ISBN: 978-93-88568-44-2
पेपरबैक

अंग्रेज़ी

वाटर लिलीज़ एण्ड वार ड्रम्स
(प्राचीन तमिळ संगम साहित्य से चयनित कविताएँ)
संक एवं संपा. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम
पृ. 200, रु. 340/-
ISBN: 978-93-5548-580-9

हर ओन वे एण्ड अदर स्टोरीज़
(पुरस्कृत तेलुगु कहानियाँ)
ले. अब्बूरी छाया देवी
अनु. बी. इंदिरा
पृ. 256, रु. 395/-
ISBN: 978-93-5548-623-3

फ्रॉम हम्पी टू हड़प्पा
(पुरस्कृत तेलुगु आत्मकथा)
ले. तिरुमाला रामचंद्र
अनु. सी.एल.एल. जयाप्रदा
पृ. 472, रु. 665/-
ISBN: 978-93-5548-637-0

रिसेप्शन एंड रिफ़्लेक्शन ऑफ़ फ़ॉकटेल्स इन इंडियन लाइफ़ एंड लिट्रेचर (निबंध)
संपा. करबी डेका हाज़रिका
पृ. 146, रु. 190/-
ISBN: 978-93-5548-259-4

इंदिरा गोस्वामी
(असमिया लेखिका पर विनिबंध)
ले. प्रांजल शर्मा वशिष्ठ
पृ. 96, रु. 60/-
ISBN: 978-81-19499-03-8

भूपेन हाज़रिका
(असमिया लेखक पर)
ले. मित्रा फुकन
पृ. 100, रु. 50/-
ISBN: 978-81-963564-4-6

महेंद्र बोरा
(असमिया लेखक पर विनिबंध)
ले. आनंद बरमुदै
पृ. 98, रु. 50/-
ISBN: 978-81-19499-00-7

नवकांत बरुआ
(असमिया लेखक पर विनिबंध)
ले. प्रदीप आचार्य
पृ. 84, रु. 50/-
ISBN: 978-81-963564-7-7

लुम्मर दई
(असमिया लेखक पर विनिबंध)
ले. येशे दोर्जी थोंगची
पृ. 90, रु. 100/-
ISBN: 978-93-5548-008-8

बर्ड्स लास्ट लिटेनी
(पुरस्कृत मणिपुरी कविता-संग्रह)
ले. अशाङबम मीनकेतन सिंह
अनु. एल. वीरेंद्रकुमार शर्मा
पृ. 136, रु. 160/-
ISBN: 978-93-5548-181-8

रामानंद चटर्जी (बाङ्ला विद्वान एवं लेखक पर विनिबंध)
ले. भारती राय
पृ. 100, रु. 50/-
ISBN: 978-93-5548-041-5

नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती (बाङ्ला विद्वान एवं लेखक पर विनिबंध)
ले. आलापन बंद्योपाध्याय
पृ. 110, रु. 100/-
ISBN: 978-81-19499-77-9

प्राची (2017 का साहित्यिक डाइजेस्ट, कविता, कहानी एवं निबंध)
प्रधान संपादक : सुबोध सरकार
पृ. 208, रु. 240/-
ISBN: 978-93-5548-348-5

सत्य नारायण राजगुरु (ओड़िआ लेखक पर विनिबंध)
ले. जयंती रथ
पृ. 88, रु. 50/-
ISBN: 978-81-19499-06-9

एड्रिफ़्ट
(स्वातंत्र्योत्तर मणिपुरी कविता संकलन)
संक एवं संपा. क्षेत्रिमयूम प्रेमचंद्र
पृ. 211, रु. 270/-
ISBN: 978-81-19499-05-2

अतीन बंद्योपाध्याय : सेलेक्टेड शार्ट स्टोरीज़
(बाङ्ला, चयनित कहानियाँ)
अनु. विभिन्न अनुवादक
पृ. 320, रु. 360/-
ISBN: 978-81-19499-99-1

रामकृष्ण परमहंस (अंग्रेज़ी विनिबंध)
ले. स्वामी लोकेश्वरानंद
पृ. 106, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-0218-4
चौथा पुनर्मुद्रण : 2023

मिसिंग फ़ोक टेल्स (लोक कथाओं का संकलन)
संक. एवं संपा. टाबु राम टाइद
पृ. 184, रु. 110/-
ISBN: 978.81.260.4439.9
तीसरा पुनमुर्द्रण: 2024

सत्य नारायण राजगुरु (ओड़िआ लेखक पर विनिबंध)
ले. जयंती रथ
पृ. 88, रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-0218-4
दूसरा पुनमुर्द्रण : 2024

रिसेप्शन एंड रिफ्लेक्शन ऑफ़ फोलटेल्स इन इंडियन लाइफ़ एंड लिटरेचर (निबंध)
संपा. करबी डेका हाज़रिका
पृ. 146, रु. 190/-
ISBN: 978.93.5548.259.4
दूसरा पुनमुर्द्रण : 2024

इंदिरा गोस्वामी
(असमिया लेखक पर विनिबंध)
ले. प्रांजल शर्मा बशिष्ट
पृ. 96, रु. 100/-
ISBN: 978-81-19499-03-8
दूसरा पुनमुर्द्रण : 2024

भूपेन हाज़रिका
(असमिया लेखक पर विनिबंध)
ले. मित्रा फुकन
पृ. 100, रु. 100/-
ISBN: 978-81-963564-4-6
दूसरा पुनमुर्द्रण : 2024

महेंद्र बोरा
(असमिया लेखक पर विनिबंध)
ले. आनंद बरमुदै
पृ. 98, रु. 100/-
ISBN: 978-81-19499-00-7
दूसरा पुनमुर्द्रण : 2024

नवकांता बरुआ
(असमिया लेखक पर विनिबंध)
ले. प्रदीप आचार्य
पृ. 84, रु. 100/-
ISBN: 978-81-963564-7-7
दूसरा पुनमुर्द्रण : 2024

बर्ड्स लास्ट लिटेनी
(पुरस्कृत मणिपुरी कविता-संग्रह)
ले. अशाङगम मीनकेतन सिंह
अनु. एल. वीरेंद्रकुमार शर्मा
पृ. 136, रु. 160/-
ISBN: 978.93.5548.181.8
दूसरा पुनमुर्द्रण : 2023

प्राची (2017 का साहित्यिक डाइजेस्ट, कविता, कहानी एवं निबंध)
प्रधान संपादक : सुबोध सरकार
पृ. 208, रु. 240/-
ISBN: 978-93-5548-348-5
दूसरा पुनमुर्द्रण : 2024

रामानंद चटर्जी
(बाङ्ला लेखक पर विनिबंध)
ले. भारती राय
पृ. 100, रु. 100/-
ISBN: 978-93-5548-041-5
दूसरा पुनमुर्द्रण : 2024

चक्रपाणि (अंग्रेज़ी विनिबंध)
ले. वेलगा वेंकटप्पैया
अनु. पी. हरि पद्मा रानी
पृ. 86, रु. 50/-
ISBN: 978-81-19499-10-6

एम.पी. सनकुन्नी नायर
(अंग्रेज़ी विनिबंध)
ले. सी. राजेंद्रन
पृ. 104, रु. 100/-
ISBN: 978-81-19499-81-6

बियोंड द शोर्स ऑफ़ द रिवर एक्ज़िसटेंटीयलिज़्म
(पुरस्कृत तेलुगु कहानी संग्रह, अस्तित्वनंदम आवाली तिराना)
ले. मुनीपल्ले बी. राजू
अनु. निदादावुलु मलाथी
पृ. 296, रु. 270/-
ISBN: 978-93-5548-539-7

हर ओन वे एण्ड अदर स्टोरीज़
(पुरस्कृत कहानी-संग्रह, *तन मार्गम*)
ले. अब्बुरी छाया देवी
अनु. बी. इंदिरा
पृ. 256, रु. 395/-
ISBN: 978-93-5548-623-3

फ्रॉम हम्पी टू हड़प्पा
(पुरस्कृत तेलुगु आत्मकथा)
ले. तिरुमाला रामचंद्र
अनु. सी.एल.एल. जयप्रदा
पृ. 472, रु. 665/-
ISBN: 978-93-5548-637-0

द चैरिअॅट पाथ
(तमिऴ उपन्यास, *थेरोडम वीथि*)
ले. नीला पद्मानाभन
अनु. एंडी सुंदरसन
पृ. xii+676, रु. 700/-
ISBN: 978-93-5548-509-0

जोगिंदर पॉल : ए रीडर
सं. चंदना दत्ता
पृ. xxiv+356, रु. 450/-
ISBN: 978-93-5548-499-4

एम्पेरॅर अशोका (पुरस्कृत हिंदी नाटक)
ले. दया प्रकाश सिन्हा, अंग्रेज़ी
अनु. हिना नंदराजोग
पृ. xl+88, रु. 150/-
ISBN: 978-93-5548-512-0

होमो मिनसकुला (असमिया विज्ञान कहानियों का संग्रह)
संक. एवं संपा. शांतनु तमुली
अनु. अमृतज्योति महंत
पृ. xliii+235, रु. 350/-
ISBN: 978-93-5548-366-9

शमस फ़क़ीर (विनिबंध, कश्मीरी)
ले. शम्सुद्दीन अहमद
अनु. फ़ारूक़ फ़याज़
पृ. 96, रु. 50/-
ISBN: 978-93-5548-511-3

एडोरेशन ऑफ़ मदर
(मणिपुरी कविताएँ, इमागी पुजाह)
ले. हिजम इरावत सिंह
अनु. सनासम उमानंद सिंह
पृ. 95, रु. 150/-
ISBN: 978-93-5548-633-2

मेनफ़ल्क एंड अदर स्टोरीज़
(पुरस्कृत राजस्थानी कहानियाँ, मर्दजात अर दुजी कहानियाँ)
ले. बुलाकी शर्मा
अनु. ज्योतिका एल्हांस
पृ. 120, रु. 200/-
ISBN: 978-93-5548-617-2

श्री वीमेन इन ए सिंगल-रूम हाउस
(अंग्रेज़ी कविताएँ)
ले. के. श्रीलता
पृ. 80, रु. 100/-
ISBN: 978-93-5548-626-4

कर्बला (हिंदी नाटक)
ले. प्रेमचंद
अनु. हरीस क़दीर एवं समी रफ़ीक़
पृ. 232, रु. 230/-
ISBN: 978-93-5548-632-5

क़ुर्रतुल ऐन हैदर (विनिबंध, उर्दू)
ले. जमील अख़तर
अनु. मोहम्मद असीम सिद्दीक़ी
पृ. 112, रु. 100/-
ISBN: 978-93-5548-639-4

वाई. मु. कोथाइनायकी अम्माल
(विनिबंध, तमिऴ)
ले. आर. प्रेमा
अनु. प्रभा श्रीदेवन
पृ. 108, रु. 100/-
ISBN: 978-93-5548-643-1

ड्वेलिंग्स चेंज (पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास, *बारी बदले जाय*)
ले. रमापद चौधुरी
अनु. तानिया चक्रवर्ती
पृ. 136, रु. 150/-
ISBN: 978-93-5548-630-1

रिमेम्बरिंग द स्काईज़
(पुरस्कृत कश्मीरी कविताएँ)
ले. शफ़ी शौक़
अनु. लेखक द्वारा
पृ. 160, रु. 175/-
ISBN: 978-93-5548-657-8

अंडर द सेम स्काई
संपा. रंजीत होसकोटे
पृ. 116/-
ISBN: 978-81-19499-65-6
पेपरबैक

टीनी वीनी बैलून एण्ड अदर स्टोरीज़
(बाल कहानी-संग्रह)
ले. दाश बेनहुर
अनु. बिक्रम के. दास
पृ. 48, रु. 100/-
ISBN: 978-93-90866-70-0
पेपरबैक

फ़ोकटेल्स ऑफ़ निकोबार
ले. रॉबिन रॉयचौधुरी
पृ. 120, रु. 80/-
ISBN: 978-81-260-1299-2
पेपरबैक

द बेड टाइम्स स्टोरीज़
ले. एम. मुल्लाकोया
अनु. वसंती शंकरनारायणन
पृ. 76, रु. 100/-
ISBN: 978-93-89195-59-0
पेपरबैक

करवल्हो
ले. केपी पूर्णचंद्र तेजस्वई
अनु. डी.ए. शंकर
पृ. 112, रु. 75/-
ISBN: 978-81-260-4249-4
पेपरबैक

कंटेम्परेरी इंडियन शार्ट स्टोरीज़-1
पृ. 160, रु. 150/-
ISBN: 978-1-260-4690-4
पेपरबैक

कंटेम्परेरी इंडियन शार्ट स्टोरीज़-2
पृ. 240, रु. 200/-
ISBN: 978-81-260-4691-1
पेपरबैक

व्हेन रवेंस स्पीक एण्ड हॉर्सेज़ फ़्लाई
पुनर्कथन : मोना लिसा जेना
पृ. 234, रु. 225/-
ISBN: 978-93-5548-108-5
पेपरबैक

बाबासाहेब अंबेडकर (विनिबंध)
ले. के. राघवेंद्र राव
पृ. 100, रु. 50/-
ISBN: 978-93-5548-102-3
पेपरबैक

फ़ैसिनेटिंग स्टोरीज़ (किशोर साहित्य)
ले. विभूतिभूषण बंद्योपाध्याय
पृ. 104, रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-1482-8
पेपरबैक

टौंगलिंग एक्सप्रेस
अनु. निवेदिता सेन
पृ. 224, रु. 125/-
ISBN: 978-81-260-2848-1
पेपरबैक

स्टोरीज़ ऑफ़ ह्यूइनानज़ी
ले. जिन यू
अनु. हन जियाङ्हौंग एवं हु ज़ोयायू
पृ. 100, रु. 95/-
ISBN: 978-81-260-4751-2
पेपरबैक

रवींद्रनाथ टैगोर : ए सेंटेनरी वॉल्यूम
ले. रवींद्रनाथ टैगोर
पृ. 562, रु. 800/-
ISBN: 978-81-7201-332-5
पेपरबैक

ए हिस्ट्री ऑफ़ इंडियन इंग्लिश लिटरेचर
ले. एम.के. नाइक
पृ. 344, रु. 300/-
ISBN: 978-81-260-1827-7
पेपरबैक

कल्हन्स राजतरंगिणी
ले. कल्हण
अनु. आर.एस. पंडित
पृ. 828, रु. 800/-
ISBN: 978-81-260-1236-7
पेपरबैक

ए हिस्ट्री ऑफ़ इंडियन लिटरेचर (500-1399)
ले. शिशिर कुमार दास
पृ. 316, रु. 450/-
ISBN: 978-81-260-2171-0
हार्डबैक

हर स्टोरी (नवोदय योजना के अंतर्गत अंग्रेज़ी कहानी-संग्रह)
ले. नेहा बंसल
पृ. 96, रु. 100/-
ISBN: 978-93-5548-312-6
पेपरबैक

श्री राम दर्शनम
ले. के.वी. पुट्टप्पा 'कुवेंपू'
अनु. शंकर मोकाशी पुणेकर
पृ. 704, रु. 800/-
ISBN: 978-81-260-1728-7
हार्डबैक

मॉनसून
ले. अभय के.
पृ. 68, रु. 110/-
ISBN: 978-93-5548-280-8
पेपरबैक

मिथ इन कंटेम्परेरी इंडियन लिटरेचर
संपा. के. सच्चिदानंदन
पृ. 346, रु. 300/-
ISBN: 978-81-260-2841-2
पेपरबैक

कौटिल्य अर्थशास्त्र एण्ड सोशल वेलफ़ेयर
संपा. वी.एन. झा
पृ. 546, रु. 500/-
ISBN: 978-8-260-0772-1
हार्डबैक

उपरा (पुरस्कृत मराठी उपन्यास)
ले. लक्ष्मण माने
अनु. ए.के. कामंत
पृ. 256, रु. 250/-
ISBN: 978-81-7201-0231-3
पेपरबैक

बिनोदिनी
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अनु. कृष्ण कृपलानी
पृ. 256, रु. 250/-
ISBN: 978-81-7201-403-2
पेपरबैक

मिथ, लीजेंड, कॉन्सेप्ट्स
ले. मनोज दास
पृ. 440, रु. 500/-
ISBN: 978-81-260-5113-7
पेपरबैक

सिनेमा एण्ड लिटरेचर
(संवत्सर व्याख्यान-38)
ले. गुलज़ार
पृ. 24, रु. 40/-
ISBN: 978-93-6183-397-7
पेपरबैक

गुजराती

पारिजात (पुरस्कृत हिंदी उपन्यास)
ले. नासिरा शर्मा
अनु. मोहन डांडिकर
पृ. 510, रु. 475/-
ISBN 978-93-5548-427-7

पोस्ट बॉक्स नं. 203 नालासोपारा
(पुरस्कृत हिंदी उपन्यास)
ले. चित्रा मुद्गल
अनु. उमा मेहता
पृ. 216, रु. 330/-
ISBN 978-93-5548-514-4

सुमति मेहता
(गुजराती लेखक पर विनिबंध)
ले. दर्शन ढोलकिया
पृ. 88, रु. 50/-
ISBN 978-93-5548-432-1

कोई बिजू नाहीं
(पुरस्कृत हिंदी कविता संग्रह *कोई दूसरा नहीं*)
ले. कुँवर नारायण
अनु. हरीश मीनाश्रु
पृ. 160, रु. 265/-
ISBN 978-93-5548-554-0

हिंदी

राजेंद्र शाह
(गुजराती कवि पर विनिबंध)
ले. हर्षद त्रिवेदी
पृ. 96, रु. 100/-
ISBN 978-93-5548-636-3

गंगासती
ले. मनोज रावल
पृ. 82, रु. 50/-
ISBN 978-93-5548-483-3

भोला भाई पटेल
(गुजराती लेखक पर विनिबंध)
ले. विपुल पुरोहित
पृ. 84, रु. 50/-
ISBN 978-93-5548-149-8

दासी जीवन
ले. निरंजन राज्यगुरु
पृ. 118, रु. 50/-

आलोक (पुरस्कृत मराठी उपन्यास)
ले. आसाराम लोमटे
अनु. नयना अडरकर
पृ. 224, रु. 250/-
ISBN: 978-93-5548-425-3

गौरी
(पुरस्कृत मलयाळम् कहानी संग्रह)
ले. टी. पद्मानाभन
अनु. आर.एस. भास्कर
पृ. 108, रु. 200/-
ISBN: 978-93-5548-517-5

अवधेश्वरी (पुरस्कृत कन्नड उपन्यास)
ले. शंकर मोकाशी पुणेकर
अनु. सुरेश ककोडकर
पृ. 358, रु. 450/-
ISBN 978-93-5548-518-2

मंत्र अनि हेर कथा (हिंदी कहानी-संग्रह)
ले. प्रेमचंद
अनु. एन. शिवदास
पृ. 148, रु. 100/-
ISBN 978-81-260-4572-3

मन भुलावनयो कनयो
(चयनित कहानियाँ)
ले. विभूतिभूषण बंद्योपाध्याय
अनु. ज्योति कुनकोलिएंकर
पृ. 154, रु. 70/-
ISBN 81-260-2961-7 (पुनमुर्द्रण)

कलमेली तलवार
(पुरस्कृत असमिया उपन्यास)
ले. इंदिरा गोस्वामी
अनु. ज्योति कुनकोलिएंकर
पृ. 228, रु. 120/-
ISBN: 978-81-260-4573-0
(पुनमुर्द्रण)

मतायेचो मोग (कन्नड उपन्यास)
ले. शिवराम कारंथ
अनु. यशवंत एस. पालेकर
पृ. 336, रु. 120/-
ISBN: 81-7201-036-2 (पुनमुर्द्रण)

आयकत कनी
(हिंदी बाल कहानियाँ *सुनो कहानी*)
ले. विष्णु प्रभाकर
अनु. नयना अडरकर
पृ. 64, रु. 50/-
ISBN: 81-260-2235-3 (पुनमुर्द्रण)

एका शराचे मंथन
(पुरस्कृत डोगरी उपन्यास)
ले. ओ.पी. शर्मा 'सारथी'
अनु. शकुंतला भराने
पृ. 78, रु. 75/-
ISBN: 81-260-4923-9 (पुनमुर्द्रण)

हान्व असो घदलोन (मराठी उपन्यास)
ले. भालचंद्र मुंगेकर
अनु. हेमा नाइक
पृ. 246, रु. 125/-
ISBN 978-81-260-2966-2
(पुनमुर्द्रण)

वनतित एक जनेल आस्तालेन
(पुरस्कृत हिंदी उपन्यास *दीवार में खिड़की थी*)
ले. विनोद कुमार शुक्ल
अनु. मुकेश थाली
पृ. 192, रु. 270/-
ISBN 978-93-5548-549-6

वरहदी बोलितिल लोककथा
(वरहदी लोक कहानियों का संग्रह)
संपा. रावसाहेब काले
पृ. 188, रु. 340/-
ISBN 978-93-5548-452-9

शानी
(आधुनिक हिंदी कथाकार पर विनिबंध)
ले. जानकी प्रसाद शर्मा
अनु. चंद्रकांत भोनजल
पृ. 120, रु. 50/-
ISBN 978-93-5548-523-6

चौरंग (पुरस्कृत कोंकणी एकांकी नाटक संग्रह)
ले. पुंडलिक नारायण नाइक
अनु. अरुणा दुभाषी
पृ. 96, रु. 200/-
ISBN 978-93-5548-496-3

श्रीरामानुज (विनिबंध)
ले. एम. नरसिम्हाचार्य
अनु. सतीश बड़वे
पृ. 52, रु. 50/-
ISBN 978-93-5548-302-7

संत गाडगेबाबा
(समाज सुधारक पर विनिबंध)
ले. अशोक राना
पृ. 120, रु. 50/-
ISBN 978-93-5548-547-2

समर्थ रामदास
(मराठी संत कवि पर विनिबंध)
ले. मनीषा ज्ञानेश्वर बाठे
पृ. 96, रु. 50/-
ISBN 978-93-5548-424-6

महिमभट्ट
(संस्कृत संत कवि पर विनिबंध)
ले. सी. राजेंद्रन
अनु. सोनाली नवनगुल
पृ. 64, रु. 50/-
ISBN 978-93-91017-72-9

जा ओलंदुनी
ले. एस.एल. भैरप्पा
अनु. उमा वी. कुलकर्णी
पृ. 460, रु. 575
ISBN 978-81-260-2773-6
(पुनमुर्द्रण)

समर्थ रामदास
(मराठी समाज सुधारक पर विनिबंध)
ले. मनीषा बाठे
पृ. 100, रु. 100/-
ISBN 978-93-5548-424-6
(पुनमुर्द्रण)

जय कय जुई?
(पुरस्कृत कोंकणी निबंध)
ले. दत्ता दामोदर नाइक
अनु. विद्या वासुदेव प्रभादेसाई
पृ. 92, रु. 200/-
ISBN 978-93-5548-644-8

चोखामेला
(मराठी संत कवि पर विनिबंध)
ले. दिलीप धोंडगे
पृ. 104, रु. 100/-
ISBN 978-93-5548-647-9

चित्रलिपि
(पुरस्कृत कोंकणी कविता-संग्रह)
ले. परेश नरेंद्र कामत
अनु. आदित्य दयानंद सिनाई भनगुई
पृ. 90, रु. 135/-
ISBN: 978-93-5548-546-5

हिंदी कविता में अंडमान
संक. एवं संपा. व्यास मणि त्रिपाठी
पृ. 244, रु. 200/-
ISBN: 978-93-5548-196-2

श्याम माधवम
(पुरस्कृत मलयाळम् कविता-संग्रह)
ले. प्रभा वर्मा
अनु. अरविंदाक्षन
पृ. 112, रु. 150/-
ISBN: 978-93-5548-488-8

दीनानाथ नादिम : कविता संचयन
संक. एवं अनु. अग्निशेखर
पृ. 184, रु. 220/-
ISBN: 978-93-5548-490-1

किस्त किस्त जीवन
(पुरस्कृत मराठी आत्मकथा)
ले. एवं अनु. शेफालिका वर्मा
पृ. 312, रु. 325/-
ISBN: 978-93-5548-019-4

मौज में रहें
(पुरस्कृत गुजराती व्यंगात्मक निबंध)
ले. रतिलाल बोरीसागर
अनु. योगेश अवस्थी
पृ. 127, रु. 170/-
ISBN: 978-93-5548-552-6

बारीक बात (पुरस्कृत राजस्थानी कृति)
ले. रामस्वरूप किसान
अनु. सत्यनारायण सोनी
पृ. 120, रु. 150/-
ISBN: 978-81-19499-76-2

समकालीन नवगीत संचयन (खंड 1)
ले. ओमप्रकाश सिंह
पृ. 494, रु. 475
ISBN: 978-93-5548-570-0

समकालीन नवगीत संचयन (खंड 2)
ले. ओमप्रकाश सिंह
पृ. 507, रु. 490
ISBN: 978-93-5548-569-4

त्रिलोचन रचना संचयन
चयन एवं संपा. गोविंद प्रसाद
पृ. 318, रु. 330/-
ISBN: 978-93-5548-445-1

स्वाधीन भारत का हिंदी साहित्य
(खंड 1)
संपा. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, नंदकिशोर आचार्य, इंद्रनाथ चौधुरी, माधव कौशिक, कौशलनाथ उपाध्याय, त्रिभुवननाथ शुक्ल
पृ. 678, रु. 640/-
ISBN: 978-93-5548-530-4

स्वाधीन भारत का हिंदी साहित्य
(खंड 2)
संपा. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, नंदकिशोर आचार्य, इंद्रनाथ चौधुरी, माधव कौशिक, कौशलनाथ उपाध्याय, त्रिभुवननाथ शुक्ल
पृ. 449, रु. 440/-
ISBN: 978-93-5548-531-1

अठारह सौ सत्रह
(कालजयी ओड़िआ उपन्यास)
ले. पंडित गोदावरीश मिश्र
अनु. अरुण होता
पृ. 223, रु. 250/-
ISBN: 978-93-5548-491-8

शैलेंद्र (हिंदी विनिबंध)
ले. इंद्रजीत सिंह
पृ. 96, रु. 50/-
ISBN: 978-93-5548-491-8

परिणीता
(पुरस्कृत मैथिली कहानी-संग्रह)
ले. वीणा ठाकुर
अनु. कुमार मनीष अरविंद
पृ. 106, रु. 150/-
ISBN: 978-93-5548-585-4

किम सोवल की कविताएँ
चयन एवं अनु. दिविक रमेश
पृ. 108, रु. 160/-
ISBN: 978-93-5548-550-2

धा धूँ दिल्ली के कंगूरे
(पुरस्कृत पंजाबी कृति)
ले. बलदेव सिंह
अनु. ऋतु भनोट
पृ. 416, रु. 400/-
ISBN: 978-93-5548-581-6

शब्द-कथा
(सिंधी कविता-संग्रह 'आखर कथा')
ले. नंद जावेरी
अनु. देवी नागरानी
पृ. 184, रु. 220/-
ISBN: 978-93-5548-583-0

जेल की डायरी
(पुरस्कृत मैथिली कृति)
ले. उदयनारायण सिंह
अनु. अरुणाभ सौरभ
पृ. 72, रु. 100/-
ISBN: 978-93-5548-584-7

महाभारत-अष्टादशी
(पुरस्कृत बाङ्ला कृति)
ले. नृसिंह प्रसाद भादुड़ी
अनु. रामशंकर द्विवेदी
पृ. 1140, रु. 1350/-
ISBN: 978-81-19499-49-6

संतोख सिंह (हिंदी विनिबंध)
ले. लालचंद गुप्त 'मंगल'
पृ. 75, रु. 100/-
ISBN: 978-93-5548-418-5

कविता में दिल्ली (कविता-संग्रह)
चयन एवं संपा. राधेश्याम तिवारी
पृ. 352, रु. 280/-
ISBN: 978-93-86771-99-5

श्रीनारायण चतुर्वेदी (हिंदी विनिबंध)
ले. रामशंकर द्विवेदी
पृ. 140, रु. 100/-
ISBN: 978-93-86771-72-8

जंगल में मंगल
(डोगरी बाल साहित्य)
ले. ओम गोस्वामी
अनु. यशपाल निर्मल
पृ. 56, रु. 75/-
ISBN: 978-93-5548-101-6
पेपरबैक

राजकुमार का सपना
(पंजाबी बाल साहित्य)
ले. कुलबीर सिंह सुरी
अनु. जसबीर कौर
पृ. 60, रु. 75/-
ISBN: 978-93-5548-102-3
पेपरबैक

भारतीय बाल कहानियाँ-1
संपा. हरिकृष्ण देवसरे
पृ. 96, रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-2676-0
पेपरबैक

भारतीय बाल कहानियाँ-2
संपा. हरिकृष्ण देवसरे
पृ. 104, रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-2677-7
पेपरबैक

भारतीय बाल कहानियाँ-3
सं. हरिकृष्ण देवसरे
पृ. 90, रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-2678-4
पेपरबैक

बंटी के सूरज दादा
ले. पुष्पा अंताणी
अनु. रजनीकांत एस. साहा
पृ. 52, रु. 75/-
ISBN: 978-93-5548-100-9
पेपरबैक

जंगल एक अनोखा सा
ले. हुंदराज बलवाणी
पृ. 68, रु. 75/-
ISBN: 978-93-91017-12-5
पेपरबैक

बच्चों ने दबोचा चोर
ले. गंगाधर गाडगिल
अनु. एच. एस. साने
पृ. 56, रु. 50/-
ISBN: 978-81-7201-522-0
पेपरबैक

सुनो कहानी (हिंदी बाल साहित्य)
ले. विष्णु प्रभाकर
पृ. 60, रु. 50/-
ISBN: 978-93-5548-102-3
पेपरबैक

11 तुर्की कहानियाँ
अनु. मस्तराम कपूर
पृ. 156, रु. 125/-
ISBN: 978-81-260-2433-9
पेपरबैक

लू लू का आविष्कार
(हिंदी बाल साहित्य)
ले. दिविक रमेश
पृ. 52, रु. 75
ISBN: 978-93-5548-012-5
पेपरबैक

सत्तर बाल कहानियाँ (बाल साहित्य)
ले. जनार्दन हेगड़े
अनु. मीरा द्विवेदी
पृ. 112, रु. 100/-
ISBN: 978-93-5548-105-4
पेपरबैक

किशोर कहानियाँ
ले. विभूति भूषण बंद्योपाध्याय
अनु. अमर गोस्वामी
पृ. 160, रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-0747-9
पेपरबैक

चुक्कू कहाँ गया रे तू
(बाल साहित्य)
ले. स्वयं
अनु. रश्मि भटनागर
पृ. 68, रु. 100/-
ISBN: 978-93-5548-316-4
पेपरबैक

माटी की महक
ले. देवेंद्र सत्यार्थी
अनु. अलका सोइन
पृ. 68, रु. 90/-
ISBN: 978-93-5548-317-1
पेपरबैक

मॉनीटर (बाल साहित्य)
ले. कुमुद भिकू नाइक
अनु. हरीश कुमार अग्रवाल
पृ. 64, रु. 75/-
ISBN: 978-93-5548-293-8
पेपरबैक

नन्हे मुन्नों की सरकार
(बाल साहित्य)
ले. असद रज़ा
अनु. फ़ारूक़ अर्गली
पृ. 56, रु. 75/-
ISBN: 978-93-5548-107-8
पेपरबैक

रौशन राह (बाल कहानी-संग्रह)
ले. जगदीश लच्छानी
अनु. शालिनी सागर
पृ. 36, रु. 60/-
ISBN: 978-93-5548-134-4
पेपरबैक

जादूई पेन (राजस्थानी बाल साहित्य)
ले. नीरज दइया
अनु. प्रीतपाल कौर
पृ. 44, रु. 75/-
ISBN: 978-93-5548-419-2
पेपरबैक

बाल सुधा सागर (नेपाली बाल साहित्य)
ले. शंकर देव ढकाल
अनु. उदय ठाकुर
पृ. 800, रु. 80/-
ISBN: 978-93-5548-255-6
पेपरबैक

मैथिली शरण गुप्त
(हिंदी लेखक पर विनिबंध)
ले. रेवती रमण
पृ. 116, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-0013-5
पेपरबैक

जंगल के खजाने की खोज
(मराठी बाल साहित्य)
ले. सलीम सरदार मुल्ला
अनु. सुनीता डागा
पृ. 68, रु. 75/-
ISBN: 978.93.5548.342.3
पेपरबैक

गोस्वामी तुलसीदास (मध्यकालीन संत कवि पर विनिबंध)
ले. रामजी तिवारी
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-0517-8
पेपरबैक

नया चना चबे ना
(कश्मीरी बाल साहित्य)
ले. गुलाम नबी आतश
अनु. बीना बुदकी
पृ. 148, रु. 115
ISBN: 978-93-89195-30-9
पेपरबैक

श्रेष्ठ बाल कहानियाँ-1
(हिंदी बाल साहित्य)
संपा. प्रकाश मनु
पृ. 96, रु. 90/-
ISBN: 978-93-5548-318-8
पेपरबैक

श्रेष्ठ बाल कहानियाँ-2
(हिंदी बाल साहित्य)
संपा. प्रकाश मनु
पृ. 96, रु. 90/-
ISBN: 978-93-5548-334-8
पेपरबैक

सृष्टि में गोष्टि-1
ले. अनिल अवचट
अनु. गोरख थोराट
पृ. 92, रु. 100/-
ISBN: 978-93-5548-310-2
पेपरबैक

सृष्टि में गोष्टि-2
ले. अनिल अवचट
अनु. गोरख थोराट
पृ. 92, रु. 100/-
ISBN: 978-93-5548-324-9
पेपरबैक

धमाल पमपाल के जूते
ले. प्रकाश मनु
पृ. 166, रु. 125/-
ISBN: 978-93-91017-04-0
पेपरबैक

प्रतिनिधि बाल कविता संचयन
(भाग-2)
संपा. दिविक रमेश
पृ. 112, रु. 100/-
ISBN: 978-93-91494-80-3
पेपरबैक

प्रतिनिधि बाल कविता संचयन
(भाग-3)
संपा. दिविक रमेश
पृ. 108, रु. 100/-
ISBN: 978-93-91494-95-7
पेपरबैक

प्रतिनिधि बाल कविता संचयन
(भाग-4)
संपा. दिविक रमेश
पृ. 108, रु. 100/-
ISBN: 978-93-91494-01-8
पेपरबैक

प्रतिनिधि बाल कविता संचयन
(भाग-6)
संपा. दिविक रमेश
पृ. 112, रु. 100/-
ISBN: 978-93-91494-17-9
पेपरबैक

प्रतिनिधि हिंदी बाल नाटक
संपा. हरिकृष्ण देवसरे
पृ. 212, रु. 150/-
ISBN: 978-81-260-4305-7
पेपरबैक

जम्भोजी
(राजस्थानी लेखक पर विनिबंध)
ले. हीरालाल महेश्वरी
पृ. 96, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-2434-6
पेपरबैक

सरोजनी नायडू
(अंग्रेजी लेखिका पर विनिबंध)
ले. महेंद्र कुमार वर्मा
पृ. 112, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-0610-6

बारहठ नरहरिदास (राजस्थानी लेखक पर विनिबंध)
ले. ओंकार सिंह लखावट
पृ. 112, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-1613-6
पेपरबैक

प्रेमचंद रचना संचयन
ले. प्रेमचंद
संपा. कमल किशोर गोयनका
पृ. 1052, रु. 750/-
ISBN: 978-81-7201-863-0
पेपरबैक

महादेवी वर्मा
(हिंदी लेखिका पर विनिबंध)
ले. जगदीश गुप्त
पृ. 164, रु. 200/-
ISBN: 978-81-7201-474-2
पेपरबैक

शाहज़ादा दाराशिकोह-1
(पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास)
ले. श्यामल गंगोपाध्याय
अनु. ममता खरे
पृ. 548, रु. 500/-
ISBN: 978-81-260-0744-8
पेपरबैक

शाहज़ादा दाराशिकोह-2
(पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास)
ले. श्यामल गंगोपाध्याय
अनु. ममता खरे
पृ. 548, रु. 500/-
ISBN: 978-81-260-0744-8
पेपरबैक

जैनेंद्र कुमार (हिंदी लेखक पर विनिबंध)
ले. गोविंद मिश्र
पृ. 1052, रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-1579-5
पेपरबैक

मुक्तिबोध की कविताएँ
अनु. त्रिलोचन शास्त्री
पृ. 192, रु. 200/-
ISBN: 978-81-260-0674-8
पेपरबैक

प्रतिनिधि आप्रवासी हिंदी कहानियाँ
संपा. हिमांशु जोशी
पृ. 476, रु. 400/-
ISBN: 978-81-260-2349-3
पेपरबैक

कुमाउनी
ले. शेर सिंह बिष्ट
पृ. 256, रु. 200/-
ISBN: 978-81-260-2991-4
पेपरबैक

प्रेमचंद चुनिंदा कहानियाँ-1
ले. प्रेमचंद
अनु. अमृत राय
पृ. 96, रु. 100/-
ISBN: 978-81-7201-975-4
पेपरबैक

अंतरिक्ष में विस्फोट
ले. जयंत विष्णु नार्लीकर
अनु. सुरेखा पाणंदीकर
पृ. 116, रु. 125/-
ISBN: 978-81-7201-423.0
पेपरबैक

गढ़वाली लोकगीत
अनु. गोविंद चातक
पृ. 524, रु. 400/-
ISBN: 978-81-260-1001-1
पेपरबैक

महादेवी रचना संचयन
ले. महादेवी वर्मा
संपा. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
पृ. 376, रु. 300/-
ISBN: 978-81-260.0437-9
पेपरबैक

डॉन क्विकज़ोट
ले. सर्वांतीस
अनु. छविनाथ पांडेय
पृ. 494, रु. 550/-
ISBN: 978-81-260-2146-8
पेपरबैक

गढ़वाली
ले. केशवदत्त रूवाली
पृ. 256, रु. 250/-
ISBN: 978-81-260-4550-1
पेपरबैक

पहाड़ गाथा (हिंदी कहानी-संग्रह)
संपा. सुदर्शन वशिष्ट
पृ. 276, रु. 250/-
ISBN: 978-81-260-4994-3
पेपरबैक

पराया (पुरस्कृत मराठी उपन्यास)
ले. लक्ष्मन माने
अनु. दामोदर खडसे
पृ. 246, रु. 200/-
ISBN: 978-81-7201-179-6
पेपरबैक

स्वतंत्रता पुकारती (देशभक्ति पूर्व हिंदी कविताओं का संचयन)
संपा. नंद किशोर नवल
पृ. 476, रु. 400/-
ISBN: 978-81-260-2256-4
पेपरबैक

कन्नड

चलत चित्रव्यूह (पुरस्कृत मराठी स्मृति)
ले. अरुण खोपकर
अनु. चंद्रकांत पोकाले
पृ. 264, रु. 415/-
ISBN: 978-93-5548-628-8

पेड्डिभोतला सुब्बारमैया कथेगलु
(पुरस्कृत तेलुगु कहानियाँ)
ले. पेड्डिभोतला सुब्बारमैया
अनु. गायत्रीदेवी
पृ. 344, रु. 515/-
ISBN: 978-93-5548-649-3

आडमबोला
(पुरस्कृत मलयाळम् उपन्यास)
ले. कोविलन
अनु. के.के. नायर एवं अशोक कुमार
पृ. 366, रु. 545/-
ISBN: 978-93-5548-624-0

नम्मंथा बल्लिदरू
(पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्यास)
ले. नयनतारा सहगल
अनु. एच.एस.एम. प्रकाश
पृ. 262, रु. 425/-
ISBN: 978-93-5548-652-3

प्रतिनिधि नेपाली कथेगलु
(नेपाली कहानियों का संचयन)
संपा. दुर्गाप्रसाद श्रेष्ठ
अनु. आर. लक्ष्मीनारायण
पृ. 192, रु. 320/-
ISBN: 978-93-5548-631-8

कश्मीरी

मोती लाल साक़ी
(कश्मीरी लेखक पर विनिबंध)
ले. प्यारे हताश
पृ. 82, रु. 50/-
ISBN: 978-93-5548-502-1

काशुर लड़ी शाह
संपा. गुलज़ार अहमद राथर
पृ. 149, रु. 170/-
ISBN: 978-93-5548-533-5

मिर्ज़ा अब्दुल क़ासिम
(कश्मीरी लेखक पर विनिबंध)
ले. सैयद अख़तर हुसैन मंसूर
पृ. 92, रु. 50/-
ISBN: 978-93-5548-538-0

मोहम्मद अय्यूब बेताब (विनिबंध)
ले. शहज़ादा रफ़ीक़
पृ. 83, रु. 50/-
ISBN: 978-93-5548-532-8

अब्दुल रशीद फ़िदा राजौरवी (विनिबंध)
ले. वली मोहम्मद असीर क़िश्तवारी
पृ. 92, रु. 50/-
ISBN: 978-93-5548-534-2

शाहबाज़ राजौरवी (विनिबंध)
ले. मंशूर बानिहाली
पृ. 94, रु. 50/-
ISBN: 978-93-5548-535-9

हेमलेट
ले. विलियम शेक्सपियर
अनु. सुरेंद्र मोहन कौल
पृ. 158, रु. 180/-
ISBN: 978-93-5548-537-3

बुल्हे शाह - अख सूफ़ी मानुष
(अंग्रेज़ी विनिबंध)
ले. सुरेंद्र सिंह कोहली
अनु. हसरत हुसैन
पृ. 134, रु. 50/-
ISBN: 978-81-19499-85-4

कंटेम्पररी पंजाबी शार्ट स्टोरीज़
(कार्यशाला)
सं. यूसुफ़ जहाँगीर
पृ. 298, रु. 330/-
ISBN: 978-81-19499-64-9

मिशअल सुल्तानपुरी (विनिबंध)
ले. अब्दुल अहद हाजिनी
पृ. 92, रु. 100/-
ISBN: 978-81-19499-84-7

अब्दुर्रहमान आज़ाद (विनिबंध)
ले. गुलाम नबी आतश
पृ. 92, रु. 100/-
ISBN: 978-93-6183-660-2

मोती लाल केमू (विनिबंध)
ले. सोहन लाल कौल
पृ. 77, रु. 100/-
ISBN: 978-93-6183-623-7

सजूद सैलानी (विनिबंध)
ले. अयाज़ रसूल नाज़की
पृ. 85, रु. 100/-
ISBN: 978-93-6183-897-2

कोंकणी

आलोक (पुरस्कृत मराठी कृति)
ले. आसाराम लोमटे
अनु. नयना अडरकर
पृ. 224, रु. 250/-
ISBN: 978-93-5548-425-3

गौरी
(पुरस्कृत मलयाळम् कहानियाँ)
ले. टी. पद्मनाभन
अनु. आर.एस. भास्करन
पृ. 108, रु. 200/-
ISBN: 978-93-5548-517-5

अवधेश्वरी
(पुरस्कृत कन्नड उपन्यास)
ले. शंकर मोकाशी पुणेकर
अनु. सुरेश ककोडकर
पृ. 358, रु. 450/-
ISBN: 978.93.5548.518.2

मंत्र अणि हर कथा
(हिंदी कहानियाँ)
ले. प्रेमचंद
अनु. एन. शिवदास
पृ. 148, रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-4572-3
(पुनमुर्द्रण)

मन भुलावनयो कनयो
(कहानी संचयन)
ले. विभूतिभूषण बंद्योपाध्याय
अनु. ज्योति कुनकोलिएंकर
पृ. 154, रु. 70/-
ISBN: 81-260-2961-7 (पुनमुर्द्रण)

कलमेली तलवार
(पुरस्कृत असमिया उपन्यास)
ले. इंदिरा गोस्वामी
अनु. ज्योति कुनकोलिएंकर
पृ. 228, रु. 120
ISBN: 978-81-260-4573-0
(पुनमुर्द्रण)

मतायेचो मोग (कन्नड उपन्यास)
ले. शिवराम कारंथ
अनु. यशसवंत एस. पालेकर
पृ. 336, रु. 120/-
ISBN: 81-7201-036-2 (पुनमुर्द्रण)

आयकत कानी
(हिंदी बाल कहानी *सुनो कहानी*)
ले. विष्णु प्रभाकर
अनु. नयना अडरकर
पृ. 64, रु. 50/-
ISBN: 81-260-2235-3 (पुनमुर्द्रण)

एका शराचे मंथन
(पुरस्कृत डोगरी उपन्यास)
ले. ओ.पी. शर्मा 'सारथी'
अनु. शंकुतला भरने
पृ. 78, रु. 75/-
ISBN: 81-260-4923-9

हाँव असो घड़लोन (मराठी उपन्यास)
ले. भालचंद्र मुंगेकर
अनु. हेमा नायक
पृ. 246, रु. 125/-
ISBN: 978-81-260-2966-2
(पुनमुर्द्रण)

वनतीत एक जनेल आसतालेन
(हिंदी उपन्यास 'दीवार में एक खिड़की थी')
ले. विनोदकुमार शुक्ल
अनु. मुकेश थळी
पृ. 192, रु. 270/-
ISBN: 978-93-5548-549-6

मैथिली

पड़ोसिया (पुरस्कृत मलयाळम् उपन्यास, *अयळकर*)
ले. पी.केशव देव
अनु. विजयेंद्र झा
पृ. 316, रु. 320/-
ISBN: 978-93-5548-435-2

गुजरातीक श्रेष्ठ एकांकी
(सलेक्टेड गुजराती वन-एक्ट प्लेस)
ले. गुलाब दास ब्रोकर
अनु. सबिता झा 'सोनी'
पृ. 280, रु. 280/-
ISBN: 978-93-5548-473-4

अवधेश्वरी (पुरस्कृत कन्नड उपन्यास)
ले. शंकर मोकाक्षी पुनेकर
अनु. कविता कुमारी
पृ. 344, रु. 350/-
ISBN: 978-93-5548-218-1

भारतीय कथा (1900-2000)
(एंथोलॉजी ऑफ सलेक्टेड शॉर्ट स्टोरी फ्रॉम 21 इंडियन लैंग्वेज़ेस)
संपा. ई.वी. रामकृष्णन
अनु. आशुतोष झा
पृ. 504, रु. 500/-
ISBN: 978-93-5548-493-2

पत्थर पसिझाबक क्षण
(पुरस्कृत कन्नड कहानी संग्रह, *कल्लु करागुव समाय*)
ले. पी. लंकेश, अनु. निवेदिता झा
पृ. 132, रु. 140/-
ISBN: 978-93-5548-495-6

एक कावेरी सी
(पुरस्कृत तमिळ उपन्यास, *ओरु कवेरतयाल पोला*)
ले. तिरुपुरासुंदरी 'लक्ष्मी'
अनु. महेश दक्खरामी
पृ. 194, रु. 200/-
ISBN: 978-81-19499-16-8

विवेकानंद ठाकुर
(लब्धप्रतिष्ठ मैथिली लेखक पर विनिबंध)
ले. कुमार मनीष अरविंद
पृ. 136, रु. 100/-
ISBN: 978-81-19499-23-6

आकाश सन सघन
(पुरस्कृत ओड़िआ कविता संग्रह, *आकाशपरी निबिड*)
ले. सौरींद्र बारीक
अनु. उपेंद्र प्रसाद यादव
पृ. 84, रु. 100/-
ISBN: 978-81-19499-62-5

हिंदी कहानी संकलन
(एंथोलॉजी ऑफ़ मार्डन हिंदी शॉर्ट स्टोरी)
संपा. भीष्म साहनी
अनु. शैलेंद्र नाथ झा
पृ. 472, रु. 470/-
ISBN: 978-81-19499-62-5

गोदान
(हिंदी उपन्यास)
ले. प्रेमचंद
अनु. नरेंद्र नाथ झा
पृ. 606, रु. 600/-
ISBN: 978-81-19499-93-9

मैथिली काव्यक विकास
संपा. सुरेश्वर झा
पृ. 256, रु. 250/-
ISBN: 978-81-260-0462-1
पेपर बैक

मैथिली कथक विकास
संपा. वासुकीनाथ झा
पृ. 224, रु. 200/-
ISBN: 978-81-260-1511-5
पेपर बैक

वर्ण रत्नाकर
ले. ज्योतिरीश्वर कविशेखराचार्य
संपा. सुनीति कुमार चटर्जी, बाबू मिश्र
पृ. 356, रु. 300/-
ISBN: 978-81-260-0439-3
पेपर बैक

मलयाळम्

एन.एन. कक्कड (मलयाळम् विनिबंध)
ले. देसामंगलम रामाकृष्णन्
पृ. 132, रु. 50/-
ISBN: 81-260-0987-vi पुनर्मुद्रण

वैक्कं मुहम्मद बशीर
(मलयाळम् विनिबंध)
ले. एम.एन. कारशेरी
पृ. 132, रु. 50/-
ISBN: 81-260-2477-1 पुनर्मुद्रण

ओरु मनुशियान, ओरु विडु, ओरु लोकम (पुरस्कृत तमिळ उपन्यास ओरु मणिथन, ओरु विडु, ओरु उलागम)
ले. जयकांतन
अनु. के.एस. वेंकिटचलम
पृ. 296, रु. 250/-
ISBN: 978-81-19499-40-3

इंटे थालायक्कले कोन्ना
(पुरस्कृत अंग्रेजी कहानी-संग्रह 'लेबर्नम फॉर माय हेड')
ले. तेमसुला आओ
अनु. एस. सलीम कुमार
पृ. 112, रु. 125/-
ISBN: 978-81-19499-82-3

कुन्नु क्यारी थिरिंजु नोक्कुमपोल
(पुरस्कृत कन्नड आत्मकथा कुडी हेसारु)
ले. विजया
अनु. सुधाकरन रामाथली
पृ. 440, रु. 350/-
ISBN: 978-81-19499-44-1

मणिपुरी

सेइरेंगा माथोट करकपासिंग्गा
(युवा लेखकों की कविताएँ)
संपा. गिवे पटेल
अनु. आर.के. भुबनसना
पृ. 200, रु. 150/-
ISBN: 978-81-19499-12-0

चोंगथाम मणिहर सिंघगी अखननागा वारेंग खरा (चोंगथाम मणिहर सिंह का निबंध-संग्रह)
संक. एवं संपा. साइखोम रोबिंद्रो सिंह
पृ. 194, रु. 150/-
ISBN: 978-81-19499-13-7

वाङ्मादा शतपी थाडो
(नवोदय कविता संग्रह)
ले. चोंगथाम रोनिकुमार सिंह
पृ. 66, रु. 110/-
ISBN: 978-81-19499-68-7

मराठी

वारहडी बोलितिल लोककथा
(बारहडी लोककथा संचयन)
संपा. रावसाहेब काले
पृ. 188, रु. 340/-
ISBN: 978-93-5548-452-9

शानी
(आधुनिक हिंदी लेखक पर विनिबंध)
ले. जानकीप्रसाद शर्मा
अनु. चंद्रकांत भोंजल
पृ. 120, रु. 50/-
ISBN: 978-93-5548-523-6

चौरंग (पुरस्कृत कोंकणी नाटक)
ले. पुंडलिक नारायण नायक
अनु. अरुणा दुभाषी
पृ. 96, रु. 200/-
ISBN: 978-93-5548-496-3

श्रीरामानुज (विनिबंध)
ले. एम. नरसिम्हाचार्य
अनु. सतीश बडवे
पृ. 52, रु. 50/-
ISBN: 978-93-5548-302-7

संत गाडगेबाबा
(समाज सुधार पर विनिबंध)
ले. अशोक राणा
पृ. 120, रु. 50/-
ISBN: 978-93-5548-547-2

समर्थ रामदास
(मराठी संत कवि पर विनिबंध)
ले. मनीषा ध्यानेश्वर बाथे
पृ. 96, रु. 50/-
ISBN: 978-93-5548-424-6

महिमभट्ट
(संस्कृत संत कवि पर विनिबंध)
ले. सी. राजेंद्रन
अनु. सोनाली नवगुल
पृ. 64, रु. 50/-
ISBN: 978-93-91017-72-9

जा ओलनदुनी
ले. एस.एल. भैरप्पा
अनु. उर्मा वी. कुलकर्णी
पृ. 460, रु. 575/-
ISBN: 978-81-260-2773-6
(पुनर्मुद्रण)

समर्थ रामदास
(मराठी समाज सुधारक पर विनिबंध)
ले. मनीषा बाथे
पृ. 100, रु. 100/-
ISBN: 978-93-5548-424-6
(पुनर्मुद्रण)

जाय काय जुय?
(पुरस्कृत कोंकणी निबंध संग्रह)
ले. दत्ता दामोदर नायक
अनु. विद्या वासुदेव प्रभुदेसाई
पृ. 92, रु. 200/-
ISBN: 978-93-5548-644-8

चोखामेला
(मराठी संत कवि पर विनिबंध)
ले. दिलीप धोंडगे
पृ. 104, रु. 100/-
ISBN: 978-93-5548-647-9

नेपाली

संताली लोककथा संग्रह
(*तुमल काहिनी माला,* संताली लोककथाओं का संग्रह)
ले. जितेंद्रनाथ मुर्मु
अनु. मुक्ति प्रसाद उपाध्याय
पृ. 146, रु. 200/-
ISBN: 978-93-5548-038-5

हरिमोहन झाका श्रेष्ठ कथाहरु
(मैथिली कहानियों का संचयन 'बीछल कथा')
ले. हरिमोहन झा
अनु. सतीश रसाइली
पृ. 288, रु. 220/-
ISBN: 978-93-5548-421-5

मैथिली कथा : शतकीय संकलन
(मैथिली कहानी संचयन)
संपा. रामदेव झा एवं इंद्रकांत झा
अनु. ओम नारायण गुप्त
पृ. 444, रु. 350/-
ISBN: 978-93-5548-096-5

असीत राई (नेपाली विनिबंध)
ले. हस्ता नेचाली
पृ. 88, रु. 50/-
ISBN: 978-93-5548-563-2

भारतीय बाल कहानियाँ (भाग-4)
ले. हरिकृष्ण देवसरे
अनु. उषाकिरण 'सत्यदर्शी'
पृ. 108, रु. 40/-
ISBN: 978-81-260-2740-8

बी.बी. लखनद्री (नेपाली विनिबंध)
ले. पवन राय नामदुंग
पृ. 116, रु. 50/-
ISBN: 978-93-5548-566-3

भारतीय नेपाली कथा साहित्यको सय वर्ष (संगोष्ठी के आलेख)
ले. नकुल छेत्री
पृ. 115, रु. 150/-
ISBN: 978-93-5548-565-6

भाईचंद प्रधान रचना-संचयन
सं. इंद्र बहादुर छेत्री
पृ. 279, रु. 360/-
ISBN: 978-93-5548-562-5

तुलसीराम शर्मा 'कश्यप' रचना-संचयन
सं. गीता निरोला
पृ. 212, रु. 300/-
ISBN: 978-93-5548-568-7

बी.आर. अम्बेडकर (नेपाली विनिबंध)
ले. के. राघवेंद्र राव
अनु. तेजमान बरायली
पृ. 100, रु. 100/-
ISBN: 978-93-5548-662-2

हरि प्रसाद 'गोर्खा' राई रचना-संचयन
संपा. खेमराज नेपाल
पृ. 284, रु. 370/-
ISBN: 978-93-5548-648-6

महानंद पौड्याल (अंग्रेज़ी विनिबंध)
ले. गोकुल सिन्हा
पृ. 76, रु. 50/-
ISBN: 978-93-5548-458-1

कुमार घीसिंग रचना संचयन
संपा. जीवन नामदुंग
पृ. 300, रु. 400/-
ISBN: 978-81-19499-55-7

इंद्रमणि दरनाल (नेपाली विनिबंध)
ले. बिंद्या सुब्बा
पृ. 104, रु. 100/-
ISBN: 978-93-6183-189-8

नेपालीमा अनुदित केहि असमिया कथा
संपा. गोविंद प्रसाद शर्मा, शालिनी भराली और हृदयन एवं गागोई
पृ. 296, रु. 430/-
ISBN: 978-93-6183-545-2

ओड़िआ

जदुमणि महापात्र (ओड़िआ विनिबंध)
ले. कृष्ण चंद्र प्रधान
पृ. 100, रु. 50/-
ISBN: 978-93-5548-271-6

इक्षुंगधा (पुरस्कृत संस्कृत कहानी-संग्रह 'इक्षुगंधा')
ले. अभिराज राजेंद्र मिश्र
अनु. पूमा चंद्र ओझा
पृ. 68, रु. 60/-
ISBN: 978-93-5548-422-2

फेडरिको गार्सिआ लोर्का : निर्बाचित कबिता
(गार्सिआ लोर्का की चुनिंदा अंग्रेज़ी कविताएँ)
ले. गार्सिया लोर्का
अनु. संग्राम जेना
पृ. 324, रु. 300/-
ISBN: 978-93-5548-234-1

ओड़िआ गाँधीकथा
(गाँधी की विचारधारा पर कहानियों का संग्रह)
चयन एवं संपादन : संघमित्रा भंज
पृ. 352, रु. 330/-
ISBN: 978-93-5548-303-4

बांछनिधि महांतिक निर्बाचित कबिता
(ओड़िआ में बांछनिधि महांति की चुनिंदा कविताओं का संकलन)
चयन एवं संपा. अरबिंद गिरि
पृ. 260, रु. 230
ISBN: 978-93-5548-241-9

ओडिशार आदिवासी लोकगीत संचयन
(ओड़िआ आदिवासी लोकगीतों का संग्रह)
संक. देबाशीष पात्र
पृ. 144, रु. 150/-
ISBN: 978-93-5548-264-8

मनोरंजन दास
(ओड़िआ विनिबंध)
ले. देवीप्रसाद सतपथी
पृ. 96, रु. 50/-
ISBN: 978-81-19499-60-1

रफ़ु (नवोदय योजना के अंतर्गत ओड़िआ कविता संग्रह)
ले. माधबनानंद पात्र
पृ. 98, रु. 150/-
ISBN: 978-93-89778-81-6

लोकवाद्या परंपरारे घुडका
(ओड़िआ आलोचना)
ले. पबित्र कुमार दंडसेना
पृ. 82, रु. 120/-
ISBN: 978-93-5548-345-4

मनमोहन मिश्र (ओड़िआ विनिबंध)
ले. बिजॅय मोहन मिश्र
पृ. 96, रु. 100/-
ISBN: 978-81-19499-25-0

शेष स्वप्न (नवोदय योजना के अंतर्गत ओड़िआ कविता-संग्रह)
ले. त्रिलोचन साहू
पृ. 62, रु. 100/-
ISBN: 978-81-19499-32-8

कांतकवि लक्ष्मीकांत महापात्र
(ओड़िआ विनिबंध)
ले. कुलमणि महापात्र
पृ. 192, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-4804-5
(तृतीय पुनर्मुद्रण: 2023)

गोरा (बाङ्ला उपन्यास 'गोरा')
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अनु. लक्ष्मी नारायण महांति
पृ. 426, रु. 85/-
ISBN: 978-81-7201-886-3
(तृतीय पुनर्मुद्रण: 2023)

श्रीरामानुज (अंग्रेज़ी विनिबंध)
ले. एम. नरसिम्हाचार्य
अनु. पंचानंन मिश्र
पृ. 52, रु. 50/-
ISBN: 978-93-90866-91-5
(द्वितीय पुनर्मुद्रण: 2023)

संताली लोक कहानी
(संताली लोककथाएँ, *तुमल काहिनी माला*)
संक. जितेंद्रनाथ मुर्मु
अनु. दमयंती बेसरा
पृ. 140, रु. 130/-
ISBN: 978-81-260-5023-9
(द्वितीय एवं तृतीय पुनर्मुद्रण: 2023)

महापात्र नीलमणि साहू
(ओड़िआ विनिबंध)
ले. अर्चना नायक
पृ. 98, रु. 50/-
ISBN: 978-93-91494-77-3
(द्वितीय पुनर्मुद्रण: 2023)

चंद्रमणि दास (ओड़िआ विनिबंध)
ले. गोबिंद चंद्र चंद
पृ. 96, रु. 50/-
ISBN: 978-93-91017-51-4
(तृतीय पुनर्मुद्रण: 2023)

गोपाल छोटराय
(ओड़िआ विनिबंध)
ले. संघमित्रा मिश्र
पृ. 114, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5248-6
(तृतीय पुनर्मुद्रण: 2023)

अनंत पटनायक (ओड़िआ विनिबंध)
ले. बिजय कुमार सतपथी
पृ. 104, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-2503-9
(चतुर्थ पुनर्मुद्रण: 2023)

पद्मानदीर माझी
(*पद्मनदीर माझी,* बाङ्ला उपन्यास)
ले. माणिक बंद्योपाध्याय
अनु. गोबिंद चंद्र साहू
पृ. 110, रु. 130/-
ISBN: 978-81-260-1534-4
(चतुर्थ पुनर्मुद्रण: 2023)

केंडिड (फ्रैंच उपन्यास 'केंडिड')
ले. वालतेयर
अनु. शकुंतला बलियारसिंह
पृ. 126, रु. 190/-
ISBN: 978-93-86771-69-8
तृतीय पुनर्मुद्रण: 2023

एकइसिटी गल्प
(बाङ्ला की चुनिंदा कहानी-संग्रह)
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अनु. कालिंदी चरण पाणिग्रही
पृ. 416, रु. 180/-
ISBN: 978-81-260-3011-8
(आठवाँ पुनर्मुद्रण: 2023)

कृशन चंदरंक श्रेष्ठ गल्प
(चुनिंदा कहानी संग्रह)
ले. कृशन चंदर
अनु. सुरजन प्रकाश दास
पृ. 192, रु. 110/-
ISBN: 978-81-260-2499-0
(तृतीय पुनर्मुद्रण: 2023)

कृपसिंधु मिश्र चयनिका
(ओड़िआ लेखकों का संग्रह)
संक. एवं संपा. प्रसन कुमार स्वाईं
पृ. 344, रु. 280/-
ISBN: 978-93-91494-83-4
(द्वितीय पुनर्मुद्रण: 2023)

स्वाधीनोत्तर ओड़िआ क्षुद्र गल्प (भाग-1)
(ओड़िआ कहानियों का संग्रह)
संक. एवं संपा. सतकड़ी होता
पृ. 348, रु. 150/-
ISBN: 978-81-260-4432-0
तृतीय पुनर्मुद्रण: 2023

ओड़िआ लोककथा
(ओड़िआ लेखकों का संग्रह)
संक. एवं. संपा. अरबिंद पटनायक
पृ. 168, रु. 160/-
ISBN: 978-81-260-3198-6
चतुर्थ पुनर्मुद्रण: 2023

श्री अरबिंद (अंग्रेजी विनिबंध)
ले. मनोज दास
अनु. महापात्र नीलमणि साहू
पृ. 136, रु. 40/-
ISBN: 978-81-260-3112-2
चतुर्थ पुनर्मुद्रण: 2023

तारुण्यर स्वर (ओड़िआ कविता-संग्रह)
संक. एवं संपा. प्रदीप बिस्वाल
पृ. 144, रु. 200/-
ISBN: 978-93-91494-42-1
द्वितीय पुनर्मुद्रण: 2023

ओड़िआ शिशु किशोर कविता
(ओड़िआ कविता-संग्रह)
संक. एवं संपा. महेश्वर महांति
पृ. 280, रु. 190/-
ISBN: 978-81-260-4726-0
द्वितीय पुनर्मुद्रण: 2023

लघु कथा संग्रह (भाग-1)
(संताली कहानी संग्रह)
संक. एवं संपा. जयमंत मिश्र
अनु. कनक मंजरी साहू
पृ. 118, रु. 110/-
ISBN: 978-81-260-5024-6
द्वितीय पुनर्मुद्रण: 2023

रवींद्रनाथ टैगोर (अंग्रेज़ी विनिबंध)
ले. शिशिरकुमार घोष
अनु. बिनोद चंद्र नायक
पृ. 152, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-3381-2
चतुर्थ पुनर्मुद्रण: 2023

टुनटुनीर बही (बाङ्ला क्लासिक *टुनटुनीर बोई*)
ले. उपेंद्रकिशोर रायचौधुरी
अनु. रामकृष्णन नंद
पृ. 84, रु. 60/-
ISBN: 978-81-260-0097-5
तृतीय पुनर्मुद्रण: 2023

रमण ओ राजा
(तमिऴ बाल साहित्य)
ले. कमला लक्ष्मण
अनु. हरिहर शुक्ला
पृ. 72, रु. 50
ISBN: 978-81-260-2303-5
तृतीय पुनर्मुद्रण: 2023

अब्बु खानेर छेली (उर्दू कहानी)
ले. जाकिर हुसैन
अनु. कनक मंजरी साहू
पृ. 96, रु. 60/-
ISBN: 978-81-260-1517-7
तृतीय पुनर्मुद्रण: 2023

आमरा गाछा अबेबी देहरारे बढ़ुछी
(पुरस्कृत अंग्रेजी कहानी-संग्रह 'आवर ट्रीज स्टिल ग्रोज इन देहरा')
ले. रस्किन बांड
अनु. मृणाल चटर्जी
पृ. 128, रु. 80/-
ISBN: 978-81-260-1977-9
द्वितीय पुनर्मुद्रण: 2023

सास्वत विवेकानंद : एक संकलन
(द पेरेननियल विवेकानंद : ए सलेक्शन, कम्पाइलेशन ऑफ लेक्चर, लेटर एंड पोएम्स)
संक. एवं संपा. स्वामी लोकेश्वरानंद
अनु. श्रीनिबास मिश्र
पृ. 344, रु. 250/-
ISBN: 978-81-260-5028-4
द्वितीय पुनर्मुद्रण: 2023

पंजाबी

नागफनी जंगल दा इतिहास
(पुरस्कृत तमिऴ उपन्यास 'कलिकट्टू इतिहासकम')
ले. वैरमुत्तु, अनु मंजीत सिंह
पृ. 318, रु. 450/-
ISBN: 978-93-5548-536-6

वैक्कं मुहम्मद बशीर
(मलयाळम् विनिबंध)
अनु. मंजीत सिंह
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN: 978-93-5548-594-6

सबाल्र्टन समवेदना : पंजाबी साहित अते समाज
(संगोष्ठी के आलेख)
चयन एवं संपादन : मनमोहन
पृ. 342, रु. 500/-
ISBN: 978-93-5548-592-2

काली पहाड़ी
(पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्या, 'द ब्लैक हिल')
ले. ममंग दई
अनु. प्रवेश शर्मा
पृ. 292, रु. 350/-
ISBN: 978-93-5548-587-8

प्रवासी पंजाबी कविता
चयन. एवं संपा. मनमोहन
पृ. 356, रु. 450/-
ISBN: 978-81-19499-61-8

दया नदी: कलिंग युद्ध दी साक्षी
(पुरस्कृत हिंदी कविता संग्रह 'दयानदी')
ले. गायत्री बाला पंडा
अनु. वनीता
पृ. 80, रु. 130/-
ISBN: 978-81-19499-58-8

बारीक बात
(पुरस्कृत राजस्थानी कहानी-संग्रह)
ले. रामस्वरूप किसान
अनु. केसरा राम
पृ. 112, रु. 165/-
ISBN: 978-81-19499-76-2

टोकरी विच दिगंत 'थेरी गाथा': 2014
(पुरस्कृत हिंदी कविता-संग्रह, टोकरी में दिगंत 'थेरी गाथा')
ले. अनामिका
अनु. भुपिंदर कौर प्रीत
पृ. 172, रु. 280/-
ISBN: 978-81-19499-47-2

राजस्थानी

पारिजात (पुरस्कृत हिंदी उपन्यास)
ले. नासिरा शर्मा
अनु. नवनीत पांडेय
पृ. 508, रु. 508/-
ISBN: 978-93-5548-572-4

अन्नाराम सुदामा (हिंदी विनिबंध)
ले. अरुणा व्यास
पृ. 96, रु. 50/-
ISBN: 978-93-5548-663-9

अवधेश्वरी (पुरस्कृत कन्नड उपन्यास)
ले. शंकर मोकाक्षी पुनेकर
अनु. राजेंद्र जोशी
पृ. 326, रु. 420/-
ISBN: 978-93-5548-619-6

संयाजी झूला (राजस्थानी विनिबंध)
ले. धनंजया अमरावत
पृ. 84, रु. 100/-
ISBN: 978-93-5548-620-2

इक्कीसवीं सदी री राजस्थानी कहानियाँ (संचयन)
संपा. मधु आचार्य 'आशावादी'
पृ. 388, रु. 500/-
ISBN: 978-93-5548-574-8

इक्कीसवीं सदी री राजस्थानी कहानियाँ (संचयन)
संपा. मंगत बादल
पृ. 296, रु. 430/-
ISBN: 978-93-5548-571-7

अंधारकाल (भारत में ब्रिटिशराज)
(पुरस्कृत अंग्रेज़ी कथेतर 'एन एरा ऑफ़ डार्कनेस')
(द ब्रिटिश एम्पायर इन इंडिया)
ले. शशि थरूर
अनु. लक्ष्मीनारायण रंगा
पृ. 356, रु. 500/-
ISBN: 978-93-5548-576-2

चोलो (पुरस्कृत गुजराती कहानी-संग्रह *अंचलो*)
ले. मोहन परमार
अनु. हर्षवर्धन सिंह राव
पृ. 252, रु. 370/-
ISBN: 978-93-5548-467-3

आवारा सिजदा
(पुरस्कृत उर्दू कविता-संग्रह *आवारा सजदे*)
ले. कैफी आज़मी
अनु. सीमा भाटी
पृ. 84, रु. 150/-
ISBN: 978-93-5548-469-7

राजस्थानी दुहा कथा कोश
संपा. भँवर सिंह सामौर
पृ. 142, रु. 230/-
ISBN: 978-93-5548-579-3

उर्मा रा एनन
(युवा राजस्थानी कवियों का कविता संचयन)
संपा. हरीश बी. शर्मा
पृ. 292, रु. 425/-
ISBN: 978-93-5548-575-5

डोकरो अर समंदर
(नोबल पुरस्कृत अंग्रेजी उपन्यास 'द ओल्ड मैन एंड द सी')
ले. अर्नेस्ट हेमिंग्वे
अनु. ऋतु शर्मा
पृ. 68, रु. 135/-
ISBN: 978-93-5548-577-9

महाभारत रूपक
ले. सांवल दान आशिया
संपा. चंद्र प्रकाश देवल
पृ. 532, रु. 650/-
ISBN: 978-93-5548-117-7
पेपरबेक

संस्कृत

बलदेव विद्याभूषण
(गौड़ीय वैष्णव आचार्य पर विनिबंध)
ले. अनंत चरण शुक्ल
पृ. 142, रु. 50/-
ISBN: 978-93-5548-548-9
पेपरबेक

देवानाम् उपत्यका
(पुरस्कृत गुजराती यात्रा-संस्मरण, *देवोनी घाटी*)
ले. भोलाभाई पटेल
अनु. बलदेवानंद सागर
पृ. 156, रु. 160/-
ISBN: 978-93-5548-486-4

वेदांतपरंपरा एंड सुधाद्वैतदर्शन
(भारतीय संत और दार्शनिक के दर्शन पर संग्रह)
ले. राजलक्ष्मी वर्मा
पृ. 140, रु. 150/-
ISBN: 978-93-5548-485-7

दयानदी (पुरस्कृत ओड़िआ कविता-संग्रह *दयानदी*)
ले. गायत्रीबाला पंडा
अनु. भागीरथी नंद
पृ. 128, रु. 130/-
ISBN: 978-81-19499-43-4

वैदिकसंस्कृति: विकास:
(पुरस्कृत मराठी सांस्कृतिक इतिहास)
ले. तर्कतीर्थ शास्त्री लक्ष्मण जोशी
अनु. मंजुषा कुलकर्णी
पृ. 260, रु. 260/-
ISBN: 978-81-19499-36-6

वेद शास्त्र संग्रह
संपा. विश्वबंधु
अनु. प्रभुदयालु अग्निहोत्री
पृ. 496, रु. 450/-
ISBN: 978-81-260-1023-3
पेपरबेक

सुभाषित संग्रह
संपा. वी. राघवन
अनु. रामूर्ति त्रिपाठी
पृ. 256, रु. 200/-
ISBN: 978-81-7201-348-6
पेपरबेक

संताली

जनुम अर इमानतेयाह कहानी
(पुरस्कृत ओड़िआ कहानी-संग्रह, *कंटा ओ अन्यान्य गल्प*)
ले. गौरहरि दास
अनु. अनपा मरांडी
पृ. 218, रु. 230/-
ISBN: 978-93-5548-214-3

रवींद्रनाथ टैगोर - अक कटिच कहिनी थोप (सलेक्टेड बाङ्ला कहानी-संग्रह, भाग-1)
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अनु. बादल हेम्ब्रम
पृ. 456, रु. 550/-
ISBN: 978-81-19499-26-7

सिंधी

कोई पुस्तक नहीं

तमिऴ

थो परमासिवन (विनिबंध)
ले. ए. मोहन
पृ. 128, रु. 50
ISBN: 978-93-5548-544-1

पिन नवीनाथवा तमिऴ इलाक्किया विमर्शीनाथिन पनमुगंगल
चयन एवं संक. तमिऴवन (एस. कार्लोस)
पृ. 144, रु. 365/-
ISBN: 978-93-5548-472-7

कलैञ्जर मू. करुणानिधि (विनिवंध)
ले. एम. राजेंद्रन
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN: 978-93-5548-538-4

यारम इन्नोरुवर इल्लै
(पुरस्कृत हिंदी कविता-संग्रह)
ले. कुँवर नारायण
अनु. एम. गोपालकृष्णन
पृ. 144, रु. 250/-
ISBN: 978-93-5548-590-8

इंधा अयुधंगलाल थान
(पुरस्कृत हिंदी उपन्यास)
ले. अमरकांत
अनु. कृष्णांगिनी
पृ. 1060, रु. 1330/-
ISBN: 978-93-5548-476-5

अशोकमित्रन (विनिबंध)
ले. सा. कंदासामी
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN: 978-93-89467-58-1
द्वितीय पुनर्मुद्रण

वी.ओ. चिदंबरम् (विनिबंध)
ले. एम.आर. आरसु
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-1713-2
सातवां पुनर्मुद्रण

मुदियारसन (विनिबंध)
ले. आर. मोहन
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN: 978-93-5548-063-7
द्वितीय पुनर्मुद्रण

तिरीकूदारसाप्पाकविरयार (विनिबंध)
ले. ए. मुथैय्या
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN: 978-93-5548-068-2
द्वितीय पुनर्मुद्रण

वा. रामासामी (विनिबंध)
ले. एस. वेंकटरमण
पृ. 96, रु. 50/-
ISBN: 978-93-5548-060-6
द्वितीय पुनर्मुद्रण

थाई मन (पुरस्कृत नेपाली उपन्यास)
ले. गीता उपाध्याय, अनु. के. दक्षिणामूर्ति
पृ. 224, रु. 385/-
ISBN: 978-93-5548-615-8

कुलशेखर आऴवार (विनिबंध)
ले. एम.पी. श्रीनिवासन
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN: 978-93-5548-635-6

कलैञ्जर मू. करुणानिधि (विनिबंध)
ले. एम. राजेंद्रन
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN: 978-93-5548-558-8

की. राजनारायणन (विनिबंध)
ले. के. पंजानगम
पृ. 86, रु. 50/-
ISBN: 978-93-5548-645-5

सी.वी. श्रीरामनिन थेरंथेडुथा सिरुकथैगल
चयन एवं संक. सी.वी. श्रीरमन
अनु. टी. विष्णुकुमारन
पृ. 736, रु. 1000/-
ISBN: 978-93-5348-589-2

कुऴानधईगळुक्कान कथैगल
(बाल साहित्य पुरस्कार से पुरस्कृत)
ले. जनार्धन हेगडे
अनु. अलमेळु कृष्णन
पृ. 128, रु. 190/-
ISBN: 978-93-5548-618-9

कविज्ञर कन्नदासन (विनिबंध)
ले. एम. बालसुब्रमण्यन
पृ. 128, रु. 100/-
ISBN: 978-93-5548-656-1

अरिज्ञर अन्ना (विनिबंध)
ले. एस. शनमुग सुंदरम्
पृ. 144, रु. 100/-
ISBN: 978-93-5548-646-2

नम्माज़वार (विनिबंध)
ले. ए. श्रीनिवास राघवन
अनु. थम्बी श्रीनिवासन
पृ. 112, रु. 100/-
ISBN: 978-93-5548-650-9

तमिऴ सिरुकथैगल
(जीवंत तमिऴ संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाली कहानियों का एक संकलन)
चयन एवं. संक. भारतीबालन
पृ. 448, रु. 540/-
ISBN: 978-93-6183-107-2

समकाल तमिऴ सिरुकथैगल
(समकालीन तमिऴ कहानियाँ 2000-2020)
चयन एवं संक. संपा. कंडासामी
पृ. 512, रु. 610/-
ISBN: 978-93-6183-577-3

तमिऴिल रायिल कथैगल
(ट्रेनों और रेल यात्राओं के विषय पर केंद्रित तमिऴ कहानियों का संकलन)
पृ. 336, रु. 270/-
ISBN: 978-93-6183-772-2

वल्लिकन्नेनि थेरनथेदुथा सिरुकथैगल
(वल्लिकन्नन का कथा संग्रह)
चयन एवं संक. 'मेलम' सिवासु
पृ. 288, रु. 240/-
ISBN: 978-93-6183-289-5

अशोकमित्रन (विनिबंध)
ले. सा. कंदासामी
पृ. 128, रु. 100/-
ISBN: 978-93-6183-968-9

गननाकूथन (विनिबंध)
ले. अऴागियासिंगर
पृ. 128, रु. 100/-
ISBN: 978-93-6183-587-2

इंकलाब (विनिबंध)
ले. जमालन
पृ. 128, रु. 100/-
ISBN: 978-93-6183-229-1

मुल्लई मुथैया (विनिबंध)
ले. मुल्लई मू. पलानियाप्पन
पृ. 112, रु. 100/-
ISBN: 978-93-6183-417-2

सुंदर रामासामी (विनिबंध)
ले. अरविंदन
पृ. 112, रु. 100/-
ISBN: 978-93-6183-228-4

कलैज़र मू. करुणानिधि (विनिबंध)
ले. एम. राजेंद्रन
पृ. 128, रु. 100/-
ISBN: 978-93-6183-682-4

इंगल थाटावुक्कू ओरु यानी इरुंधाधु
ले. वैक्कं मुहम्मद बशीर
अनु. के.सी. शंकर नारायणन
पृ. 88, रु. 110/-
ISBN: 978-93-6183-634-3

जयकांतन (विनिबंध)
ले. के.एस. सुब्रमण्यन
पृ. 80, रु. 100/-
ISBN: 978-93-6183-051-8

सिरुवर नाडगा कलाज़ियम
चयन एवं संक. मू. मुरुगेश
पृ. 320, रु. 255/-
ISBN: 978-93-6183-694-7

सिरुवर कथैप्पादळगळ
(बच्चों के लिए कथात्मक कविताओं का संकलन)
चयन. एवं संक. सी. सेतुपति
पृ. 232, रु. 230/-
ISBN: 978-93-6183-549.0

अप्पार (विनिबंध)
ले. जी. वनमीगंथन्
पृ. 80, रु. 100/-
ISBN: 978-81-19499-91-5

सिंगारावेळर (विनिबंध)
ले. बी. वीरामणि
पृ. 128, रु. 100/-
ISBN: 978-81-19499-66-3

का. अयोतिदास पंडितर
(विनिबंध)
ले. गोवतामा सन्ना
पृ. 112, रु. 100/-
ISBN: 978-93-6183-013-6

अकिलन (विनिबंध)
ले. सु. वेंकटरमण
पृ. 112, रु. 100/-
ISBN: 978-81-19499-74-8

कमला दास (विनिबंध)
ले. पी.पी. रवींद्रन
अनु. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम
पृ. 160, रु. 100/-
ISBN: 978-93-5548-641-7
(दूसरा पुनमुर्द्रण)

आनंद कुमारस्वामी (विनिबंध)
ले. मालन
पृ. 128, रु. 100/-
ISBN: 978-93-5548-616-5

कादल ओराथिळे
(गुजराती उपन्यास)
ले. ध्रुव भट्ट
अनु. राजलक्ष्मी श्रीनिवासन
(विनोद मेघानी के अंग्रेज़ी संस्करण के माध्यम से अनुवाद)
रु. 415/-
ISBN: 978-93-5548-653-0

तमिऴ ताता (विनिबंध)
ले. की.वा. जगन्नाथन
पृ. 80, रु. 100/-
ISBN: 978-93-5548-621-9
(नवम संस्करण)

अव्वेयार (विनिबंध)
ले. तमिऴन्नल
पृ. 112, रु. 100/-
ISBN: 978-93-5548-640-0
(नवम संस्करण)

बाबासाहेब अम्बेडकर (विनिबंध)
ले. के. राघवेंद्र राव
अनु. अरु. मरुतादुरई
पृ. 112, रु. 100/-
ISBN: 978-93-5548-638-7
(छठा संस्करण)

पेरियार ई.वी.रा. (विनिबंध)
ले. अरु. अज्ञ़ागप्पन
पृ. 128, रु. 100/-
ISBN: 978-93-5548-659-2
(नवाँ संस्करण)

देवानेया पावानार (विनिबंध)
ले. आर. इल्लमकुमारन
पृ. 104, रु. 100/-
ISBN: 978-93-5548-660-8
(छठा संस्करण)

वा.वे.सु. अय्यर (विनिबंध)
ले. जी. सेलवम
पृ. 143, रु. 100/-
ISBN: 978-93-5548-625-7
(छठा संस्करण)

थी.का. शिवशंकरन (विनिबंध)
ले. आर. कामरासु
पृ. 128, रु. 100/-
ISBN: 978-93-6183-805-7
(तृतीय संस्करण)

तिरिकूदरासाप्पकविरायर (विनिबंध)
ले. ए. मुथैया
पृ. 128, रु. 100/-
ISBN: 978-93-6183-939-9
(तृतीय संस्करण)

एम.वी. वेंकटरम (विनिबंध)
ले. रविसुब्रहमण्यन
पृ. 128, रु. 100/-
ISBN: 978-93-6183-536-0
(द्वितीय संस्करण)

मा. अरंगनाथन (विनिबंध)
ले. एस. शनमुगम
पृ. 96, रु. 100/-
ISBN: 978-93-6183-206-2
(द्वितीय संस्करण)

मुदियारासन (विनिबंध)
ले. आर. मोहन
पृ. 128, रु. 100/-
ISBN: 978-93-6183-219-2
(तृतीय संस्करण)

वल्लिक्कण्णन (विनिबंध)
ले. कऴानियूरन
पृ. 112, रु. 100/-
ISBN: 978-93-6183-496-7
(द्वितीय संस्करण)

प्रेमचंदीन सिरांथा सिरुकथैगळ (भाग-1)
ले. प्रेमचंद
चयन एवं संपादन : अमृत राय
अनु. एन. श्रीधरन (भारनिथरन)
पृ. 142, रु. 160/-
ISBN: 978-93-6183-666-4
(तृतीय संस्करण)

प्रेमचंदीन सिरांथा सिरुकथैगळ (भाग-2)
ले. प्रेमचंद
चयन एवं संपादन : अमृत राय
अनु. एन. श्रीधरन (भारनिथरन)
पृ. 112, रु. 140/-
ISBN: 978-93-6183-584-1
(तृतीय संस्करण)

थि. जनकिरामनियन थेरंथेडुथा सिरुकथैगल
चयन एवं संपादन : मालन
पृ. 288, रु. 100/-
ISBN: 978-93-6183-687-9
(द्वितीय संस्करण)

थो. परमसिवन (विनिबंध)
ले. ए. मोहाना
पृ. 128, रु. 100/-
ISBN: 978-93-6183-425-7
(द्वितीय संस्करण)

कोवै ज्ञानि (विनिबंध)
ले. अळगियासिंगर
पृ. 112, रु. 100/-
ISBN: 978-93-6183-322-9
(द्वितीय संस्करण)

कि. राजनारायणन (विनिबंध)
ले. के. पंचांगम
पृ. 86, रु. 100/-
ISBN: 978-93-6183-980-1
(द्वितीय संस्करण)

सुजाता (विनिबंध)
ले. इरा. मुरुगन
पृ. 128, रु. 100/-
ISBN: 978-93-6183-648-0
(तृतीय संस्करण)

रेट्टामलै श्रीनिवासन (विनिबंध)
ले. जे. बालसुब्रह्मण्यम
पृ. 96, रु. 100/-
ISBN: 978-93-6183-933-7
(द्वितीय संस्करण)

जीवन लीला
(गुजराती यात्रा-संस्मरण)
ले. काका कालेलकर
अनु. बी.एम. कृष्णासामी
पृ. 480, रु. 520/-
ISBN: 978-93-6183-949-8
(चतुर्थ संस्करण)

तेलुगु

अदवी चेरुकु
(पुरस्कृत संस्कृत कहानी-संग्रह)
ले. अभिराज राजेंद्र मिश्र
अनु. एल. नारायण शर्मा
पृ. 72, रु. 185/-
ISBN: 978-93-5548-527-4

अवधेश्वरी
(पुरस्कृत कन्नड उपन्यास)
ले. शंकर मोकाशी पुनेकर
अनु. रंगनाथ रामचंद्र राव
पृ. 284, रु. 445/-
ISBN: 978-93-5548-528-1
(प्रथम संस्करण : 2023)

तकातुळु रघुनाथ
(पुरस्कृत हिंदी उपन्यास)
ले. काशीनाथ सिंह
अनु. पेरिसेट्टी श्रीनिवासराव
पृ. 176, रु. 300/-
ISBN: 978-93-5548-529-8

आकाशम ना वशम्
(पुरस्कृत तमिळ उपन्यास)
ले. प्रपंचन
अनु. गौरी किरुबनंदन
पृ. 500, रु. 725/-
ISBN: 978-93-5548-526-7

शवालनु मोसेवाडि कथा
(पुरस्कृत अंग्रेजी उपन्यास)
ले. साइरस मिस्त्री
अनु. इलांग
पृ. 216, रु. 370/-
ISBN: 978-93-5548-555-7

संचरम् (पुरस्कृत तमिळ उपन्यास)
ले. एस. रामाकृष्णन
अनु. जिलेल्ला बालाजी
पृ. 304, रु. 470/-
ISBN: 978-93-5548-556-4

तेलुगु साहित्यम, संस्कृति : गांधी प्रभावम् (संगोष्ठी आलेख)
चयन एवं संपा. रचापलम चंद्रशेखर रेड्डी
पृ. 176, रु. 300/-
ISBN: 978-93-5548-409-3

अर्द्ध सताब्दीलो अमेरिका तेलुगु कथा
चयन एवं संपादन : वेंगुरि चित्तेनराजु एवं सी. मृणालिनी
पृ. 429, रु. 595/-
ISBN: 978-93-5548-415-4

सक्ति वैद्यम
(पुरस्कृत तमिळ कहानी संग्रह)
ले. टी. जानकीरमन
अनु. श्रीपद जयाप्रकाश
पृ. 144, रु. 270/-
ISBN: 978-93-5548-557-1

मल्लाडी रामकृष्ण शास्त्री
(तेलुगु विबिनंध)
ले. पी.एस. गोपालकृष्णन्
पृ. 136, रु. 50/-
ISBN: 978-93-91017-19-4
संशोधित संस्करण: 2023

पप्पुरु रामाचार्युलु (तेलुगु विनिबंध)
ले. नागासुरि वेणुगोपाल
पृ. 112, रु. 100/-
ISBN: 978-81-19499-51-9

परावस्तु चिन्नय सूरी (तेलुगु विनिबंध)
ले. बुधराजु राधाकृष्ण
पृ. 64, रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-1075-4
(पुनर्मुद्रण)

त्रिपुरानेनि गोपीचंद (तेलुगु विबिनंध)
ले. अम्मंगि वेणुगोपाल
पृ. 148, रु. 100/-
ISBN: 978-81-19499-80-9

अवधेश्वरी
(पुरस्कृत कन्नड उपन्यास, *अवधेश्वरी*)
ले. शंकर मोकाशी पुनेकर
अनु. रंगनाथ रामचंद्र राव
पृ. 284, रु. 445/-
ISBN: 978-93-5548-528-1
प्रथम संस्करण : 2023

आकाशम ना वशम्
(पुरस्कृत तमिळ उपन्यास, *वनम वसप्पदम*)
ले. प्रपंच
अनु. गौरी किरुबनानन
पृ. 500, रु. 725/-
ISBN: 978-93-5548-526-7

तकातुळु रघुनाथ
(पुरस्कृत हिंदी उपन्या, *रेहन पर रग्घू*)
ले. काशीनाथ सिंह
अनु. पेरिसेट्टी श्रीनिवासराव
पृ. 176, रु. 300/-
ISBN: 978-93-5548-529-8

शवालनु मोसेवाडि कथा
(पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्यास *क्रोनिकल ऑफ़ ए कॉर्पस बियरर*)
ले. साइरस मिस्त्री
अनु. इलांग
पृ. 216, रु. 370/-
ISBN: 978-93-5548-555-7

संचरम
(पुरस्कृत तमिळ उपन्यास, *संचरम*)
ले. एस. रामकृष्णन
अनु. जिल्लेला बालाजी
पृ. 304, रु. 470/-
ISBN: 978-93-5548-556-4

मणिशिखी ओक अमुखम
(पुरस्कृत मलयाळम् उपन्यास *मनुष्यानु ओरु अमुखम*)
ले. सुभाष चंद्रन
अनु. एल.आर. स्वामी
पृ. 384, रु. 320/-
ISBN: 978-81-19499-97-7

अदवी चेरुकु
(पुरस्कृत संस्कृत कहानी-संग्रह 'इक्षुगंधा')
ले. अभिराज राजेंद्र मिश्र
अनु. एम. नारायण शर्मा
पृ. 72, रु. 185/-
ISBN: 978-93-5548-527-4

अर्द्ध शताब्दीलो अमेरिका तेलुगु कथा
चयन एवं संपादन : वेंगुरि चित्तेनराजु एवं सी. मृणालिनी
पृ. 428, रु. 595
ISBN: 978-93-5548-415-4

सक्थी वैद्यम
(पुरस्कृत तमिळ कहानी-संग्रह)
ले. टी. जानकीरमन
अनु. आचार्य श्रीपद जयप्रकाश
पृ. 142, रु. 270/-
ISBN: 978-93-5548-557-1

तेलुगु साहित्यम, संस्कृति : गांधी प्रभावम् (सेमिनार पेपर्स)
चयन एवं संपा. रचापलम चंद्रशेखर रेड्डी
पृ. 176, रु. 300/-
ISBN: 978-93-5548-409-3

उर्दू

नई सदी नया अदब
ले. शमीम तारिक़
पृ. 148, रु. 150/-
ISBN: 978-81-19499-94-6

हामिदी कश्मीरी (विनिबंध)
ले. मो. जमां आर्ज़ुदा
पृ. 95, रु. 100/-
ISBN: 978-81-19499-45-8

विष्णु प्रभाकर (हिंदी विनिबंध)
ले. प्रकाश मनु
अनु. हबीब कैफी
पृ. 169, रु. 100/-
ISBN: 978-93-5548-658-5

अंधेरे में अपना चेहरा
(पुरस्कृत असमिया कहानी-संग्रह)
ले. नगेन सइकिया
अनु. हुमायूँ अशरफ़
पृ. 152, रु. 170/-
ISBN: 978-81-19499-73-1

परिणीता
(पुरस्कृत मैथिली कहानी-संग्रह)
ले. वीणा ठाकुर
अनु. मोहम्मद जहांगीर वारसी
पृ. 116, रु. 130/-
ISBN: 978-93-5548-664-6

ये जो है ज़िंदगी
(कन्नड कवि सर्वज्ञ के वचन)
अनु. महेर मंसूर
पृ. 180, रु. 200/-
ISBN: 978-93-5548-307-2

घर (पुरस्कृत डोगरी कविता-संग्रह)
ले. कुँवर वियोगी
अनु. दीपक आरसी
पृ. 68, रु. 80/-
ISBN: 978-81-19499-88-5

असद बदायूनी (विनिबंध)
ले. ख़ान मोहम्मद रिज़वान
पृ. 94, रु. 100/-
ISBN: 978-93-6183-863-7

खुशवंत सिंह (विनिबंध)
ले. जी.जे.वी. प्रसाद
अंग्रेज़ी से उर्दू अनुवाद : सरवर हुसैन
पृ. 84, रु. 100/-
ISBN: 978-93-6183-466-0
प्रथम संस्करण: 02/2024

एक नई दुनिया
ले. अमित चौधुरी
अनु. फे सीन ऐजाज
पृ. 184, रु. 290/-
ISBN: 978-93-5548-102-3
पेपर बैक

स्लो डाउन
ले. नदीम अहमद नदीम
अनु. नछत्तर
पृ. 152, रु. 240/-
ISBN: 978-93-5548-013-2
पेपर बैक

जां निसार अख्तर
ले. बेग अहसास
पृ. 104, रु. 50/-
ISBN: 978-93-90866-33-5
पेपर बैक

नाज़िश प्रतापगढ़ी
ले. रियाज़ अहमद
पृ. 88, रु. 50/-
ISBN: 978-93-90866-34-2
पेपर बैक

पूर्णाहुति और दीगर कहानियाँ
ले. पेद्दिभोट्ला सुब्रमण्य
अनु. नौशाद मंज़र
पृ. 88, रु. 275/-
ISBN: 978-93-5548-023-1
पेपर बैक

वार्षिक लेखा
2023-2024

वार्षिक लेखा 2023-2024

तुलनपत्र

आय एवं व्यय लेखा

वित्तीय विवरण का अनुसूची निर्माण

प्राप्ति और भुगतान लेखा

लेखा पर टिप्पणियाँ

सामान्य भविष्य निधि का तुलन-पत्र

सामान्य भविष्य निधि का आय एवं व्यय लेखा

सामान्य भविष्य निधि का प्राप्ति एवं भुगतान लेखा

सामान्य भविष्य निधि खाता निवेश की अनुसूची

लेखापरीक्षा प्रतिवेदन

साहित्य अकादेमी
तुलन–पत्र विवरण यथातिथि 31 मार्च 2024

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुसूचियाँ	31 मार्च 2024	31 मार्च 2023
संग्रह निधि और दायित्व			
संग्रह निधि	1	29,896,223	(60,533,471)
आरक्षित और अधिशेष	2	-	-
नियत/अक्षय निधि	3	391,125,464	375,576,591
सुरक्षित ऋण और उधार	4	-	-
असुरक्षित ऋण और उधार	5	-	-
अस्थगित जमा दायित्व	6	87,193,295	88,112,532
चालू दायित्व और उपबंध	7	94,886,209	231,931,880
योग		**603,101,191**	**635,087,533**
परिसंपत्तियाँ			
स्थायी परिसंपत्तियाँ	8	253,052,961	201,348,136
नियत/अक्षय निधियों से निवेश	9	10,000,000	10,000,000
नियत	10	-	-
चालू परिसंपत्ति, ऋण, अग्रिम आदि	11	340,048,230	423,739,397
विविध व्यय (एक सीमा एक अवलेखित या समायोजित)			
योग		**603,101,191**	**635,087,533**
महत्त्वपूर्ण लेखा नीतियाँ	24		
प्रासंगिक दायित्व और लेखा पर टिप्पणियाँ	25		

	ह./–	ह./–	ह./–	ह./–
स्थान : नई दिल्ली	**(कुलदीप चंद)**	**(बाबुराजन एस.)**	**(कृष्णा आर. किम्बहुने)**	**(के. श्रीनिवासराव)**
दिनांक : 4 जून 2024	*प्रवर लिपिक*	*उपसचिव, लेखा*	*उपसचिव, प्रशासन*	*सचिव*

साहित्य अकादेमी

आय और व्यय लेखा : 31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुसूचियाँ	31 मार्च 2024	31 मार्च 2023
आय			
बिक्री/सेवाओं से प्राप्त आय	12	278,327	417,020
अनुदान/इमदाद राशि से प्राप्त आय	13	525,254,706	418,553,666
शुल्क/अंशदान प्राप्त	14	163,351	181,300
निवेश से प्राप्त आय	15	-	-
रॉयल्टी, प्रकाशन इत्यादि से प्राप्त आय	16	122,113,016	143,084,070
प्राप्त आय	17	4,326,508	2,761,231
अन्य आय	18	4,964,351	1,345,842
पूर्ण हुए कार्यों तथा किए जा रहे कार्यों के स्टॉक में उतार/चढ़ाव	19	3,057,512	30,113,282
योग (ए)		**660,157,770**	**596,456,411**
व्यय			
स्थापना व्यय	20	165,217,069	163,515,740
अन्य प्रशासनिक व्यय इत्यादि	21	396,490,558	451,521,170
संवर्धन एवं प्रचार–प्रसार की गतिविधियाँ	22	421,377	317,625
अनुदान, इमदाद आदि पर व्यय			
ब्याज	23	-	-
मूल्य मूल्यह्रास (अनुसूची 8 के अनुरूप वर्ष के अंत में कुल योग)			
योग (बी)		**562,129,004**	**615,354,535**
आय पर व्यय का आधिक्य (ए–बी)		98,028,766	(18,898,124)
पूर्व अवधि मदें		-	-
अतिरिक्त साधारण मदें–सेवानिवृत्ति/मूल्यह्रास		(7,599,072)	694,014
कुल योग अधिशेष के कारण/(घाटा) पूँजी निधि में अग्रेनीत		-	-
महत्त्वपूर्ण लेखा नीतियाँ	24	-	-
प्रासंगिक दायित्व और लेखा पर टिप्पणियाँ	25	90,429,694	(18,204,110)

हमारे समक्ष प्रस्तुत पुस्तकों और वाउचरों के आधार पर संकलित।

	ह./–	ह./–	ह./–	ह./–
स्थान : नई दिल्ली	**(कुलदीप चंद्र)**	**(बाबुराजन एस.)**	**(कृष्णा आर. किम्बहुने)**	**(के. श्रीनिवासराव)**
दिनांक : 4 जून 2024	*प्रवर लिपिक*	*उपसचिव, लेखा*	*उपसचिव, प्रशासन*	*सचिव*

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण, यथातिथि 31 मार्च 2024

अनुसूची–1

(राशि रुपये में)

विवरण		31 मार्च 2024	31 मार्च 2023
आय और व्यय लेखा			
	वर्ष के आरंभ में शेष	(60,533,471)	(42,329,360)
जमा	संग्रह/पूंजीगत निधि से स्थानांतरित शेष	-	-
	कुल आय/व्यय का शेष स्थानांतरित	90,429,694	(18,204,110)
	आय और व्यय लेखा से	-	-
	एन.ई. से योजना में अस्थायी स्थानांतरण की छूट		
	वर्ष के अंत में शेष (ए+बी)	**29,896,223**	**(60,533,471)**

-

-

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2024

अनुसूची–2

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2024	31 मार्च 2023
आरक्षित और अधिशेष		
1. आरक्षित पूँजी		
पिछले लेखा के अनुसार	-	-
जमा : वर्ष के दौरान जमा राशि	-	-
घटा : वर्ष के दौरान कटौतियाँ	-	-
योग	-	-
2. आरक्षित पुनर्मूल्यांकन		
पिछले लेखा के अनुसार	-	-
जमा : वर्ष के दौरान जमा राशि	-	-
घटा : वर्ष के दौरान कटौतियाँ	-	-
योग	-	-
3. विशेष आरक्षित		
पिछले लेखा के अनुसार	-	-
जमा : वर्ष के दौरान जमा राशि	-	-
घटा : वर्ष के दौरान कटौतियाँ	-	-
योग	-	-
4. सामान्य आरक्षित		
आदिशेष	-	-
जमा : वर्ष के दौरान आय की अधिकता / (घाटा)	-	-
सामान्य रिज़र्व बंद		
संग्रह निधि से स्थानांतरित	-	-
जमा : पूर्व अवधि समायोजन	-	-
घटा : संग्रह निधि से स्थानांतरित	-	-
योग	-	-
योग	-	-

साहित्य अकादेमी

अनुसूची–3

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2024

(राशि रुपये में)

विवरण	निधि–वार विच्छेद	31 मार्च 2024	31 मार्च 2023
नियत/अक्षय निधियाँ			
(ए) निधियों का आदि शेष		375,576,591	344,624,941
(बी) निधियों में बढ़ोतरी			
i दान/अनुदान			
अनुदान पूंजीकृत–स्थायी परिसंपत्ति		20,212,856	6,841,524
अनुदान पूंजीकृत–पूंजीगत कार्य प्रगति पर		-	-
ii खातों में निवेश की गई निधियों से प्राप्त आय		-	-
iii **अन्य बढ़ोतरियाँ**			
बैंक ब्याज		-	-
प्रकाशनों/वीडियो फ़िल्में/काग़ज़		-	-
पुस्तकालय एवं भेंट की गई पुस्तकें		171,240	160,615
अन्य जमा/समायोजन	संलग्न संलग्नक के अनुसार	3,057,512	30,113,282
योग (बी)		23,441,608	37,115,421
योग (ए+बी)		**399,018,199**	**381,740,362**
(सी) निधियों के इस्तेमाल/व्यय के उद्देश्यों के लिए			
i **पूँजी व्यय**			
स्थायी परिसंपत्ति		-	-
कार (सकल) की बिक्री में हानि		-	
वर्ष के दौरान कटौतियाँ/समायोजन		-	-
वर्ष के दौरान मूल्यह्रास		7,892,735	6,163,771
अन्य		-	-
योग		7,892,735	6,163,771
ii **राजस्व खर्च**			
वेतन, मजदूरी और भत्ते इत्यादि		-	-
वर्ष के दौरान कटौतियाँ/समायोजन/स्थानांतरण		-	-
सा.भ.नि. अंशदानकर्ताओं को ब्याज		-	-
अन्य प्रशासनिक व्यय		-	-
योग		-	-
योग (सी)		**7,892,735**	**6,163,771**
वर्ष के अंत में कुल शेष (ए+बी–सी)		**391,125,464**	**375,576,591**

साहित्य अकादेमी

जारी– अनुसूची–3, अनुलग्नक

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2024

(राशि रुपये में)

विवरण	निधि–वार विच्छेद		योग
	स्थायी परिसंपत्ति निधि	प्रकाशन निधि	31 मार्च 2024
नियत/अक्षय निधि	**चालू वर्ष**		
(ए) निधियों का आदि शेष	**208,792,152**	**166,784,439**	**375,576,591**
(बी) निधियों में बढ़ोतरी			
i **दान/अनुदान**	-	-	-
अनुदान पूंजीकृत–स्थायी परिसंपत्तियाँ	20,212,856	-	**20,212,856**
अनुदान पूंजीकृत–पूंजीगत कार्य प्रगति पर	-	-	-
ii खातों में निवेश की गई निधियों से प्राप्त आय	-	-	-
iii **अन्य बढ़ोतरियाँ**	-	-	-
बैंक ब्याज	-	-	-
प्रकाशन/वीडियो/फिल्में/कागज	-	-	-
पुस्तकालय/भेंट की गई पुस्तकें	171,240	-	**171,240**
अन्य जमा/समायोजन	-	3,057,512	**3,057,512**
योग (बी)	**20,384,096**	**3,057,512**	**23,441,608**
योग (ए+बी)	**229,176,248**	**169,841,951**	**399,018,199**
(सी) निधियों के इस्तेमाल/व्यय के उद्देश्यों के लिए			
i **पूंजी व्यय**			
स्थायी परिसंपत्तियाँ	-	-	-
कार (सकल) की बिक्री में हानि	-	-	-
वर्ष के दौरान कटौतियाँ/समायोजन	-	-	-
वर्ष के दौरान मूल्यह्रास	**7,892,735**	-	**7,892,735**
अन्य जमा/समायोजन	-	-	-
योग	**7,892,735**	-	**7,892,735**
ii **राजस्व खर्च**			
वेतन, मजदूरी और भत्ते इत्यादि	-	-	-
अन्य प्रशासनिक व्यय	-	-	-
योग	-	-	-
योग (सी)	**7,892,735**	-	**7,892,735**
वर्ष के अंत में कुल शेष (ए+बी–सी)	**221,283,513**	**169,841,951**	**391,125,464**

जारी– अनुसूची–3, अनुलग्नक

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2024

(राशि रुपये में)

विवरण	निधि–वार विच्छेद		योग
	स्थायी परिसंपत्ति निधि	प्रकाशन निधि	31 मार्च 2023
	गत वर्ष		
(ए) निधियों का आदि शेष	207,953,784	136,671,157	344,624,941
(बी) निधियों में बढ़ोतरी			
i **दान/अनुदान**	-	-	-
अनुदान पूंजीकृत–स्थायी परिसंपत्तियाँ	6,841,524	-	**6,841,524**
अनुदान पूंजीकृत–पूंजीगत कार्य प्रगति पर	-	-	3,562,275
ii खातों में निवेश की गई निधियों से प्राप्त आय	-	-	
iii **अन्य बढ़ोतरियाँ**			-
बैंक ब्याज	-	-	103,707
प्रकाशन/वीडियो/फ़िल्में/कागज़	-	-	-
पुस्तकालय/भेंट की गई पुस्तकें	160,615	-	**160,615**
अन्य जमा/समायोजन	-	30,113,282	**30,113,282**
योग (बी)	**7,002,139**	**30,113,282**	**37,115,421**
योग (ए+बी)	**214,955,923**	**166,784,439**	**381,740,362**
(सी) निधियों के इस्तेमाल/व्यय के उद्देश्यों के लिए			
i **पूंजी व्यय**			
स्थायी परिसंपत्तियाँ	-	-	-
कार (सकल) की बिक्री में हानि	-	-	-
वर्ष के दौरान कटौतियाँ/समायोजन	-	-	-
वर्ष के दौरान मूल्यह्रास	6,163,771	-	**6,163,771**
अन्य जमा/समायोजन	-	-	-
योग	**6,163,771**	**-**	**6,163,771**
ii **राजस्व खर्च**			
वेतन, मजदूरी और भत्ते इत्यादि	-	-	-
अन्य प्रशासनिक व्यय	-	-	-
योग	-	-	-
योग (सी)	**6,163,771**	**-**	**6,163,771**
वर्ष के अंत में कुल शेष (ए+बी–सी)	**208,792,152**	**166,784,439**	**375,576,591**

साहित्य अकादेमी

अनुसूची–4

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2024

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2024	31 मार्च 2023
सुरक्षित ऋण और उधार		
1 केंद्र सरकार	-	-
2 राज्य सरकार (उल्लेख करें)	-	-
3 **वित्तीय संस्थाएँ**		
(क) आवधिक ऋण	-	-
(ख) ब्याज प्रोद्भूत और देय	-	-
4 **बैंक**		
(क) आवधिक ऋण	-	-
(ख) ब्याज प्रोद्भूत और देय	-	-
(ग) अन्य ऋण (उल्लेख करें)	-	-
(घ) ब्याज प्रोद्भूत और देय	-	-
5 अन्य संस्थाएँ और अभिकरण	-	-
6 डिबेंचर और बॉण्ड्स	-	-
7 अन्य (उल्लेख करें)	-	-
योग	-	-

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2024

अनुसूची–5

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2024	31 मार्च 2023
सुरक्षित ऋण और उधार		
1 केंद्र सरकार	-	-
2 राज्य सरकार (उल्लेख करें)	-	-
3 वित्तीय संस्थाएँ	-	-
4 बैंक :		
(क) आवधिक ऋण	-	-
(ख) अन्य ऋण (उल्लेख करें)	-	-
5 अन्य संस्थाएँ और अभिकरण	-	-
6 डिबेंचर और बॉण्ड्स	-	-
7 आवधिक जमा	-	-
8 अन्य (उल्लेख करें)	-	-
योग	-	-

अनुसूची–6

विवरण	31 मार्च 2024	31 मार्च 2023
आस्थगित जमा दायित्व :		
(क) पूँजीगत उपस्करों तथा अन्य परिसंपत्तियों के बंधकीकरण द्वारा सुरक्षित स्वीकृतियाँ	-	-
(ख) उपदान के प्रावधान	52,078,351.00	53,194,007
(ग) अवकाश भुनाने के प्रावधान	35,114,944.00	34,918,525
(घ) अन्य	-	-
योग	**87,193,295.00**	**88,112,532**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2024

अनुसूची– 7

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2024	31 मार्च 2023
चालू दायित्व और उपबंध		
(ए) चालू दायित्व		
1 स्वीकृति		
प्रतिभूति जमा (द्वारा)		
पुस्तकालय के सदस्य	12,121,342	11,828,842
अन्य	1,241,907	526,291
2 विभिन्न लेनदार		
(क) रॉयल्टी	-	-
(ख) अन्य	14,779,815	19,391,537
(ग) गतावधि चेक व्युत्क्रमण	200,409	200,409
3 प्राप्त अग्रिम		
(क) ग्राहकों से अग्रिम	12,187,767	70,222,231
4 प्रोद्भूत ब्याज पर देय नहीं :		
(क) सुरक्षित ऋण / उधार	-	-
(ख) असुरक्षित ऋण / उधार	-	-
5 कानूनी दायित्व :		
(क) अतिशोध्य	-	-
(ख) अन्य	53,328	77,619
6 अन्य चालू दायित्व :		
(क) सा.भ.नि. लेखा	-	312,871
(ख) देय पेंशन	798,510	466,598
(ग) देय वेतन	474,968	723,917
(घ) अन्य कॉण्ट्रा भुगतान	438	-
7 अव्ययित अनुदान शेष	30,906,948	102,500,779
योग (ए)	**72,765,432**	**206,251,094**

साहित्य अकादेमी

जारी– अनुसूची–7

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2024

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2024	31 मार्च 2023
चालू दायित्व और उपबंध		
(बी) प्रावधान		
1. कर लगाने के लिए	-	-
2. प्रोद्भूत रॉयल्टी के लिए	1,320,436	3,351,984
3. अधिवर्षिता / पेंशन	2,100,000	2,100,000
4. संचित अवकाश भुनाना	247,695	247,695
5. व्यापार वारंटी / दावे	-	-
6. अन्य देय लेखापरीक्षा शुल्क	500,000	200,000
7. अन्य–व्यावसायिक शुल्क देय	170,188	100,820
8. उपदान के प्रावदान	11,363,572	12,665,185
9. अवकाश भुनाने के प्रावधान	6,134,486	6,730,702
10. पेंशनभोगियों को चिकित्सा सुविधा	284,400	284,400
योग (बी)	**22,120,777**	**25,680,786**
योग (ए+बी)	**94,886,209**	**231,931,880**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2024

अनुसूची–8

(राशि रुपये में)

क्र. सं.	विवरण		कुल ब्लॉक					मूल्यह्रास				कुल ब्लॉक	
		मूल्यह्रास की दर %	वर्ष के प्रारंभ में कुल लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के दौरान परिवर्तन (180 दिन से अधिक	वर्ष के दौरान परिवर्तन (180 दिन से कम	वर्ष के दौरान कटौतियाँ/ स्थानांतरित	वर्ष के अंत में कुल लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के प्रारंभ में	वर्ष के दौरान परिवर्धन	वर्ष के दौरान कटौतियाँ	वर्ष के अंत तक कुल योग	चालू वर्ष के अंत तक का कुल योग	पिछले वर्ष के अंत तक का कुल योग
ए.	**स्थायी परिसंपत्ति**												
1	भूमि	-	8,695,884	-	-	-	8,695,884	-	-	-	-	8,695,884	8,695,884
2	भवन	10%	46,250,559	-	-	-	46,250,559	34,250,389	1,200,018	-	35,450,407	10,800,152	12,000,170
3	सयंत्र और तंत्र	15%	159,285	-	-	-	159,285	81,989	11,594	-	93,583	65,702	77,296
4	वाहन	15%	2,413,155	-	991,276	-	3,404,431	1,926,299	147,374	-	2,073,673	1,330,758	486,856
5	फ़र्नीचर और जुड़नार	15%	43,826,751	2,148,197	842,435	-	46,817,383	34,751,661	1,219,312	-	35,970,973	10,846,410	9,075,090
6	कार्यालय उपकरण	15%	32,980,534	13,032,258	216,616	-	46,229,408	27,891,317	6,676,281	-	34,567,598	11,661,810	5,089,217
7	कंप्यूटर/ परिधीय	40%	25,082,652	1,111,177	1,168,125	-	27,361,954	21,865,185	1,965,083	-	23,830,268	3,531,686	3,217,467
8	विद्युतीय प्रस्थान	10%	931,140	4,584	6,500	-	942,224	768,458	17,052	-	785,510	156,714	162,682
9	पुस्तकालय में पुस्तकें	40%	44,418,439	100,987	590,701	-	45,110,127	42,208,097	1,042,672	-	43,250,769	1,859,358	2,210,342
10	पुस्तकालय पुस्तकें–भेंट स्वरूप	0%	848,667	-	171,240	-	1,019,907	-	558,121	-	558,121	461,786	848,667
	योग		**205,607,066**	**16,397,203**	**3,986,893**	**-**	**225,991,162**	**163,743,395**	**12,837,507**	**-**	**176,580,902**	**49,410,260**	**41,863,671**
बी.	**पूँजीगत कार्य प्रगति पर/ पूँजीगत अग्रिम**		159,484,465	20,577,658	23,580,578	-	203,642,701	-	-	-	-	203,642,701	159,484,465
	कुल योग		**159,484,465**	**20,577,658**	**23,580,578**	**-**	**203,642,701**	-	-	-	-	**203,642,701**	**159,484,465**
	योग (ए+बी)		**365,091,531**	**36,974,861**	**27,567,471**	**-**	**429,633,863**	**163,743,395**	**12,837,507**	**-**	**176,580,902**	**253,052,961**	**201,348,136**
	गत वर्ष												
	स्थायी परिसंपत्तियाँ		197,382,553	3,701,445	4,523,068	-	205,607,066	157,579,624	6,163,771	-	163,743,395	41,863,671	39,802,929
	पूँजीगत कार्य प्रगति पर		70,048,115	89,436,350	-	-	159,484,465	-	-	-	-	159,484,465	70,048,115
	गत वर्ष का कुल योग		**267,430,668**	**93,137,795**	**4,523,068**	**-**	**365,091,531**	**157,579,624**	**6,163,771**	**-**	**163,743,395**	**201,348,136**	**109,851,044**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2024

जारी–अनुसूची–8

(राशि रुपये में)

क्र. सं.	विवरण	मूल्यह्रास दर %	कुल ब्लॉक					मूल्यह्रास				कुल ब्लॉक	
			वर्ष के प्रारंभ में कुल लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के दौरान परिवर्तन (180 दिन से अधिक	वर्ष के दौरान परिवर्तन (180 दिन से कम	वर्ष के दौरान कटौतियाँ/ स्थानांतरित	वर्ष के अंत में कुल लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के प्रारंभ में	वर्ष के दौरान परिवर्धन	वर्ष के दौरान कटौतियाँ	वर्ष के अंत तक कुल योग	चालू वर्ष के अंत तक का कुल योग	पिछले वर्ष के अंत तक का कुल योग
	1 भूमि												
	फ्रीहोल्ड	0%	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	पट्टे पर दिया	0%	8,695,884	-	-	-	8,695,884	-	-	-		8,695,884	8,695,884
	कुल योग (1)		**8,695,884**	**-**	**-**	**-**	**8,695,884**	**-**	**-**	**-**	**-**	**8,695,884**	**8,695,884**
	2 भवन												
	फ्रीहोल्ड भूमि पर	10%	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	पट्टे की भूमि पर	10%	10,025,384	-				5,887,449	413,794	-	6,301,243	3,724,141	4,137,935
	स्वामित्व फ़्लैट्स/परिसर	10%	36,225,175	-				28,362,940	786,224	-	29,149,164	7,076,011	7,862,235
	कुल योग (2)		**46,250,559**				**46,250,559**	**34,250,389**	**1,200,018**	**-**	**35,450,407**	**10,800,152**	**12,000,170**
	3 संयंत्र मशीनरी और उपकरण		-										
	तकनीकी उपकरण	15%	159,285					81,989	11,594	-	93,583	65,702	77,296
	कुल योग (3)		**159,285**	**-**	**-**	**-**	**-**	**81,989**	**11,594**	**-**	**93,583**	**65,702**	**77,296**
	4 वाहन												
	मोटर, कार/स्कूटर	15%	24,13,155		991,276	-	3,404,431	1,926,299	147,374	-	2,073,673	1,330,758	486,856
	कुल योग (4)		**24,13,155**	**-**	**991,276**	**-**	**3,404,431**	**1,926,299**	**147,374**	**-**	**2,073,673**	**1,330,758**	**486,856**
	5 फर्नीचर, जुड़नार												
	फ़र्नीचर	10%	34,54,81,129	17,96,844	792,041	-	38,070,014	27,924,443	974,955	-	28,899,398	9,170,616	7,556,686
	स्थायी कैबिनेट्स, अलमारियाँ आदि	10%	7,61,653	1,22,858		-	884,511	86,783	79,773	-	166,556	717,955	674,870
	वोल्टेज स्टेबलाइजर्स, यूपीएस सिस्टम	15%	76,504	-	-	-	76,504	31,255	6,787	-	38,042	38,462	45,249
	जल वितरक	15%	52,260	-	-	-	52,260	21,934	4,549	-	26,483	25,777	30,326
	जल शोधक	15%	24,298	-	-	-	24,298	11,614	1,903	-	13,517	10,781	12,684
	एयर कूलर	15%	35,872	-	-	-	35,872	17,147	2,809	-	19,956	15,916	18,725
	एयर कंडीशनर	15%	73,95,035	2,28,495	50,394	-	7,673,924	6,658,485	148,536	-	6,807,021	866,903	736,550
	कुल योग (5)		**4,38,26,751**	**21,48,197**	**8,42,435**	**-**	**46,817,383**	**34,751,661**	**1,219,312**	**-**	**35,970,973**	**10,846,410**	**9,075,090**
	6 कार्यालय उपकरण					-							
	कार्यालय उपकरण	15%	3,06,71,928	1,29,89,687	1,01,485	-	43,763,100	27,516,396	6,371,208	-	33,887,604	9,875,496	3,155,532
	फैक्स मशीन, स्कैनर	15%	25,263	-	-	-	25,263	12,621	1,896	-	14,517	10,746	12,642
	उपस्थिति मशीन	15%	2,04,819	-	-	-	204,819	85,164	17,948	-	103,112	101,707	119,655
	फ़ोटो कॉपियर	15%	1,75,000	-	-	-	175,000	75,588	14,912	-	90,500	84,500	99,412
	सीसीटीवी कैमरे	15%	1,09,999	-	-	-	109,999	56,227	8,066	-	64,293	45,706	53,772
	मोबाइल फ़ोन	15%	20,000	-	-	-	20,000	9,951	1,507	-	11,458	8,542	10,049
	कूलर	15%	31,392	-	90,491	-	31,392	4,709	4,002	-	8,711	22,681	26,683
	हार्ड डिस्क	15%	24,994	-	24,640	-	115,485	1,875	10,255	-	12,130	103,355	23,119
	नाद प्रभू कंपेगोड़ा मैट्रो स्टेशन पर किताब घर	15%	16,46,100	42,571	-	-	1,713,311	123,458	236,630	-	360,088	1,353,223	1,522,642
	वैक्यूम क्लीनर	15%	71,039	-		-	71,039	5,328	9,857	-	15,185	55,854	65,711
	कुल योग (6)		**3,29,80,534**	**1,30,32.258**	**2,16,616**	**-**	**46,229,408**	**27,891,317**	**6,676,281**	**-**	**34,567,598**	**11,661,810**	**5,089,217**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2024

जारी– अनुसूची–8

(राशि रुपये में)

क्र. सं.	विवरण	मूल्यह्रास की दर %	कुल ब्लॉक					मूल्यह्रास				कुल ब्लॉक	
			वर्ष के प्रारंभ में कुल लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के दौरान परिवर्तन (180 दिन से अधिक	वर्ष के दौरान परिवर्तन (180 दिन से कम	वर्ष के दौरान कटौतियाँ/ स्थानांतरित	वर्ष के अंत में कुल लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के प्रारंभ में	वर्ष के दौरान परिवर्धन	वर्ष के दौरान कटौतियाँ	वर्ष के अंत तक कुल योग	चालू वर्ष के के अंत तक का कुल योग	पिछले वर्ष के अंत तक का कुल योग
7	**कंप्यूटर/परिधीय**												
	कंप्यूटर एवं कंप्यूटर परिधीय	40%	2,45,63,902	1111177	1,168,125	-	26,843,204	21,400,779	1,943,345	-	23,344,124	3,499,080	3,163,123
	कंप्यूटर सॉफ्टवेयर	40%	518,750	-	-	-	518,750	464,406	21,738	-	486,144	32,606	54,344
	कुल योग (7)		**25,082,652**	**1,111,177**	**1,168,125**	**-**	**27,361,954**	**21,865,185**	**1,965,083**	**-**	**23,830,268**	**3,531,686**	**3,217,467**
8	**विद्युतीय अधिष्ठान**												
	विद्युतीय अधिष्ठान	10%	931,140	4,584	6,500	-	942,224	768,458	17,052	-	785,510	156,714	162,682
	कुल योग (8)		**931,140**	**4,584**	**6,500**	**-**	**942,224**	**768,458**	**17,052**	**-**	**785,510**	**156,714**	**162,682**
9	**पुस्तकालय पुस्तकें**						-						
	पुस्तकालय पुस्तकें	40%	44,418,439	100,987	590,701	-	45,110,127	42,208,097	1,042,672	-	43,250,769	1,859,358	2,210,342
	कुल योग (9)		**44,418,439**	**100,987**	**590,701**	**-**	**45,110,127**	**42,208,097**	**1,042,672**	**-**	**43,250,769**	**1,859,358**	**2,210,342**
10	पुस्तकालय पुस्तकें/उपहार	0%	848,667	-	171,240	-	1,019,907	-	558,121	-	558,121	461,786	848,667
	कुल योग (10)		**848,667**	**-**	**171,240**	**-**	**1,019,907**	**-**	**558,121**	**-**	**558,121**	**461,786**	**848,667**
	कुल योग		**20,56,07,066**	**1,63,97,203**	**39,86,893**	**-**	**22,59,41,162**	**16,37,43,395**	**12,837,507**	**-**	**17,65,80,902**	**4,94,10,260**	**4,18,63,671**
बी.	**पूँजीगत कार्य प्रगति पर पूँजीगत अग्रिम**		-				-						
	अन्य		-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	शौचालय		-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	मॉडयूलर वर्कस्टेशन		-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	ए.सी. प्लांट पुस्तकालय		-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	प्रोर्टबल शौचालय		-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	किताब घर एवं चार दीवारी निर्माण आदि बेंगळूरु		2,416,105	-	-	-	2,416,105	-	-	-	-	2,416,105	2,416,105
	सिविल कार्य (कोलकाता)		-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	डक्टेबल ए.सी.		-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	द्वारका स्थित भवन निर्माण		116,907,985	3,098,364	-	-	120,006,349	-	-	-	-	120,006,349	116,907,985
	बेंगळूरु स्थित भवन निर्माण		40,160,375	17,479,294	23,580,578	-	81,220,247	-	-	-	-	81,220,247	40,160,375
	दिल्ली जल बोर्ड की पानी की लाइन का स्थानांतरण		-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	दिल्ली बीएसईएस विद्युत आपूर्ति लाइन का स्थानांतरण		-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	गैस आधारित स्प्रिंकलर सिस्टम		-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	कुल योग		**159,484,465**	**20,577,658**	**23,580,578**	**-**	**203,642,701**	**-**	**-**	**-**	**-**	**203,642,701**	**159,484,465**
	चालू वर्ष का योग		**365,091,531**	**36,974,861**	**27,567,471**	**-**	**429,633,863**	**163,743,395**	**12,837,507**	**-**	**176,580,902**	**253,052,961**	**201,348,136**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2024

अनुसूची–9

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2024		31 मार्च 2023	
नियत/अक्षय निधियों से निवेश	**राजस्व**	**योग**	**राजस्व**	**योग**
1 सरकारी प्रतिभूतियों से	-	-	-	
2 अन्य स्वीकृत प्रतिभूतियाँ	-	-		
3 शेयर	-	-		
4 डिबेंचर और बॉण्ड्स	-	-	-	
5 समानुषंगी और संयुक्त उद्यम	-	-	-	
6 **अन्य**	-	-	-	
– आवधिक जमा–संग्रह निधि/सा.भ.नि.	10,000,000	10,000,000	10,000,000	10,000,000
योग	**10,000,000**	**10,000,000**	**10,000,000**	**10,000,000**

अनुसूची–10

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2024		31 मार्च 2023	
निवेश–अन्य	**राजस्व**	**योग**	**राजस्व**	**योग**
योग				
1 सरकारी प्रतिभूतियों से	-	-	-	-
2 अन्य स्वीकृत प्रतिभूतियाँ	-	-	-	-
3 शेयर	-	-	-	-
4 डिबेंचर तथा बॉण्ड्स	-	-	-	-
5 समानुषंगी तथा संयुक्त उद्यम	-	-	-	-
6 अन्य	-	-	-	-
योग	**-**	**-**	**-**	**-**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2024

अनुसूची–11ए

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2024		31 मार्च 2023	
चालू परिसंपत्तियाँ, ऋण, अग्रिम आदि	राजस्व	योग	राजस्व	योग
(ए) चालू परिसंपत्तियाँ				
1 वस्तुसूची				
(क) स्टोर एंड स्पेयर्स	-	-	-	-
(ख) लूज टूल्स	-	-	-	-
(ग) प्रकाशन एवं कागज का स्टॉक	-			
तैयार माल	-	-	-	-
अकादेमी प्रकाशन	149,268,934	149,268,934	133,176,358	133,176,358
अपरोक्ष प्रकाशन	108,545	108,545	113,995	113,995
वीडियो फ़िल्में एवं सी.डी.	715,850	715,850	722,650	722,650
कार्य प्रगति पर	-	-	-	-
कच्चा माल	-	-	-	-
काग़ज़ : अपने पास	13,646,374	13,646,374	21,809,155	21,809,155
काग़ज़ : मुद्रणलयों में	6,102,248	6,102,248	10,962,281	10,962,281
2 विविध लेनदार				
(क) छः माह की अवधि से अधिक बकाया ऋण	7,955,714	7,955,714	7,597,122	7,597,122
(ख) अन्य	7,765,414	7,765,414	6,959,228	6,959,228
3 हाथ में शेष धन या बकाया राशि				
(जिसमें चेक / ड्राफ्ट रसीदी टिकट और अग्रदाय शामिल हैं)	544,458	544,458	568,670	568,670
4 बैंक में शेष धन				
(क) अनुसूचित बैंकों के साथ :				
–चालू खातों पर	-	-	-	-
–जमा खातों पर	-	-	-	-
–बचत खातों पर	30,362,489	30,362,489	101,932,109	101,932,109
(ख) गैर–अनुसूचित बैंकों के साथ :				
–चालू खातों पर	-	-	-	-
–जमा खातों पर	-	-	-	-
–बचत खातों पर	-	-	-	-
5 डाकघर बकाया राशि	-	-	-	-
बचत खातों में				
योग (ए)	**216,470,026**	**216,470,026**	**283,841,567**	**283,841,567**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2024

अनुसूची–11बी

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2024		31 मार्च 2023	
ऋण, अग्रिम तथा अन्य परिसंपत्तियाँ आदि (जारी)	राजस्व	योग	राजस्व	योग
(बी) ऋण, अग्रिम तथा अन्य परिसंपत्तियाँ				
1 ऋण				
(क) स्टॉफ	278,469	278,469	506,835	506,835
(ख) अन्य व्यक्ति / संस्था, जो समान गतिविधियों / कार्यों में संलिप्त हैं	-	-	-	-
(ग) **अन्य**–सा.भ.नि. अग्रिम	-	-	-	-
2 अग्रिम और अन्य राशियों जिन्हें नकदी अथवा सदृश्य अथवा उसके समतुल्य मूल्य के लिए वसूला जाना है				
(क) पूंजी खातों पर	-	-	-	-
(ख) पूर्व भुगतान	-	-	-	-
(ग) **अन्य**				
स्रोतों से कर कटौती	638,638	638,638	204,157	204,157
प्रतिभूति जमा	4,737,297	4,737,297	4,704,228	4,704,228
पूर्व भुगतान खर्चे	1,201,712	1,201,712	486,718	486,718
संयुक्त सेवाएँ वसूली योग्य	3,433,523	3,433,523	2,952,310	2,952,310
अन्य वसूली योग्य	-	-		-
–कर्मचारियों को अग्रिम	35,676	35,676	41,755	41,755
–बाहरी पार्टी को अग्रिम	8,191,100	8,191,100	5,123,973	5,123,973
–पूंजीगत अग्रिम	103,970,099	103,970,099	125,546,290	125,546,290
3 प्रोद्भूत आय				
(क) नियत / अक्षय निधियों से निवेश पर	1,091,690	1,091,690	331,564	331,564
(ख) निवेशों पर–अन्य	-	-	-	-
(ग) ऋणों तथा अग्रिमों पर	-	-	-	-
4 प्राप्त करने योग्य दावे	-	-	-	-
योग (बी)	**123,578,204**	**123,578,204**	**139,897,830**	**139,897,830**
(योग) (ए+बी)	**340,048,230**	**340,048,230**	**423,739,397**	**423,739,397**

साहित्य अकादेमी

अनुसूची–12

31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय लेखा के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2024	31 मार्च 2023
बिक्री / सेवाओं से प्राप्त आय		
1. **बिक्री से प्राप्त आय**		
(क) तैयार माल की बिक्री	-	-
(ख) कच्चे माल की बिक्री	-	-
(ग) कचचे स्क्रैप की बिक्री	-	-
2. **सेवाओं से आय**		
(क) सभागार रखरखाव रसीद	260,000	395,000
(ख) फ़ोटोकॉपी शुल्क	18,327	22,020
योग	**278,327**	**417,020**

अनुसूची–13

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2024	31 मार्च 2023
अनुदान / इमदाद (अटल अनुदान और प्राप्त इमदाद)		
1. भारत सरकार–संस्कृति मंत्रालय द्वारा		
–अकादेमी सेल–राजस्व वेतन	167,345,119	132,311,849
–अकादेमी सेल–राजस्व सामान्य	220,159,000	224,309,900
–अकादेमी सेल–राजस्व एन.ई.	-	-
–अकादेमी सेल–पूंजीगत परिसंपत्तियों का सृजन	30,000,000	29,351,721
–अकादेमी सेल–टीएसपी राजस्व सामान्य	-	-
–अकादेमी सेल–स्वच्छता कार्य योजना	500,000	477,697
–अकादेमी सेल–उन्मेष	52,650,998	55,736,436
–अकादेमी सेल–पुस्तकायन	-	6,358,394
–अकादेमी सेल–पुस्तकायन	-	-
–अकादेमी सेल–राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन संस्कृत समुन्मेषा	2,330,163	-
–अकादेमी सेल–सेम स्काई जी20 काव्य संकलन	888,450	-
–विशेष सेल–भारत महोत्सव–नेपाल	-	-
–विशेष सेल–रामानुजाचार्य की जन्मशतवार्षिकी	-	-
2 राज्य सरकार	-	-
3 सरकारी अभिकरण	-	-
4 संस्थाएँ / कल्याणकारी निकाय	-	-
5 अंतरराष्ट्रीय संगठन	-	-
6 अन्य		
जमा : वर्ष के प्रारंभ में अव्ययित शेष	102,500,778	79,349,972
घटा : वर्ष के अंत में अव्ययित शेष	(30,906,947)	(102,500,778)
घटा : वर्ष के दौरान स्थायी परिसंपत्तियों पर खर्च की गई पूंजीकृत अनुदान राशि	(20,212,856)	(6,841,524)
घटा : वर्ष के दौरान पूंजीगत कार्य प्रगति पर अग्रिम में खर्च की गई पूंजीकृत अनुदान राशि	-	-
घटा : संस्कृति मंत्रालय को अनुदान वापस	-	-
योग	**525,254,706**	**418,553,666**

साहित्य अकादेमी

अनुसूची–14

31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2024	31 मार्च 2023
शुल्क / अंशदान		
1. प्रवेश शुल्क	-	-
2. वार्षिक शुल्क / अंशदान	-	-
3. संगोष्ठी / कार्यक्रम शुल्क	-	-
4. परामर्श शुल्क	-	-
5. **अन्य**		
पुस्तकालय सदस्यता शुल्क	163,351	181,300
बुक क्लब सदस्यता शुल्क	-	-
योग	**163,351**	**181,300**

साहित्य अकादेमी

अनुसूची–15

31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

(राशि रुपये में)

विवरण	अक्षय निधि से निवेश	
	31 मार्च 2024	31 मार्च 2023
निवेश से प्राप्त आय		
1. **ब्याज**		
(क) सरकारी प्रतिभूतियों पर	-	-
(ख) अन्य बॉण्ड / डिबेंचर	-	-
2. **लाभांश**		
(क) शेयरों पर	-	-
(ख) म्युचुअल फ़ंड प्रतिभूतियों पर	-	-
3. **किराए**	-	-
4. **अन्य**		
बैंक की एफ.डी.आर. निवेश से प्राप्त ब्याज राशियाँ	-	3,684,538
घटा : सा.भ.नि. पूंजी में स्थानांतरित	-	(3,684,538)
योग	-	-
नियत / अक्षय पूंजी में स्थानांतरित		

विवरण	अन्य निवेश	
	चालू वर्ष	गत वर्ष
निवेश से प्राप्त आय		
1. **ब्याज**		
(क) सरकारी प्रतिभूतियों पर	-	-
(ख) अन्य बॉण्ड / डिबेंचर	-	-
2. **लाभांश**		
(क) शेयरों पर	-	-
(ख) म्युचुअल फ़ंड प्रतिभूतियों पर	-	-
3. **किराए**	-	-
4. **अन्य**		
घटा : आर्टिस्ट वेलफेयर पूंजी में स्थानांतरित		
योग	-	-
योग	-	-

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

अनुसूची–16

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2024	31 मार्च 2023
रॉयल्टी, प्रकाशनों इत्यादि से प्राप्त आय		
1 रॉयल्टी से प्राप्त आय	29,485	10,259
2 अकादेमी प्रकाशनों से प्राप्त आय	121,369,310	142,608,584
3 अन्य	-	-
(ग) भारतीय साहित्य पर ऑनलाइन सामग्री की बिक्री (जे.एस.टी.ओ.आर.)	714,221	465,227
योग	**122,113,016**	**143,084,070**

अनुसूची–17

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2024	31 मार्च 2023
प्राप्त ब्याज		
1 **सशर्त जमा**		
(क) अनुसूचित बैंकों के साथ	2,797,788	866,920
(ख) गैर–अनुसूचित बैंकों के साथ	-	-
(ग) संस्थाओं के साथ	-	-
(घ) अन्य–संग्रह निधि	763,916	1,208,683
2 **बचत ख़ातों पर**		
(क) अनुसूचित बैंक के साथ	509,713	444,650
(ख) गैर–अनुसूचित बैंकों के साथ	-	-
(ग) डाक घर के बचत खाते	-	-
(घ) अन्य	-	-
3 **ऋणों पर**		
(क) कर्मचारी/स्टॉफ़	255,091	240,978
(ख) अन्य	-	-
4 **ऋणदाताओं पर ब्याज तथा अन्य प्राप्तियाँ**		
(क) आयकर रिफंड पर ब्याज	-	-
योग	**4,326,508**	**2,761,231**

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

अनुसूची–18

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2024	31 मार्च 2023
अन्य आय		
1 **परिसंपत्तियों की बिक्री/निपटान से प्राप्त आय**		
(क) निजी परिसंपत्तियाँ		-
(ख) परिसंपत्तियाँ जो कि अनुदान अथवा निःशुल्क प्राप्त हुई	-	-
(ग) गैर उपभोज्य सामग्री (स्थायी परिसंपत्ति) की बिक्री	-	-
(घ) पुस्तकालय की खोई हुई पुस्तकों के मूल्य की वसूली	4,816	180
2 निर्यात को प्रोत्साहन	-	-
3 विविध सेवाओं के लिए शुल्क	-	-
4 **विविध आय**		
(क) अन्य विविध प्राप्तियाँ	3,264,444	951,712
(ख) कर्मचारियों का सी.जी.एच.एस. अंशदान	405,950	393,950
(ग) उत्तर क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र	1,149,141	-
(घ) नेताजी सुभाषचंद्र बोस	140,000	-
योग	**4,964,351**	**1,345,842**

अनुसूची–19

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2024	31 मार्च 2023
पूर्ण हुए कार्यों तथा किए जा रहे कार्यों के स्टॉक में (उतार/चढ़ाव)		
(ए) अंत शेष माल		
–तैयार सामान (पुस्तकें)	150,093,329	134,013,003
–कच्चा माल (काग़ज़)	19,748,622	32,771,436
(बी) आदि शेष माल		
–तैयार सामान (पुस्तकें)	(134,013,003)	(131,899,898)
–कच्चा माल (काग़ज़)	(32,771,436)	(4,771,259)
कुल (उतार)/चढ़ाव (ए–बी)	**3,057,512**	**30,113,282**

साहित्य अकादेमी

अनुसूची–20

31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2024	31 मार्च 2023
स्थापना व्यय		
(क) वेतन, मज़दूरी और भत्ते	130,207,459	131,775,131
(ख) एनपीएस में योगदान	6,837,279	6,187,376
(ग) कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति पर हुए ख़र्च तथा आवाधिक लाभ	22,530,622	21,510,117
(घ) अन्य निधियों में योगदान	-	-
(ङ) कर्मचारी कल्याण व्यय	-	-
(च) **अन्य**		
–चिकित्सा सुविधाएँ	4,426,848	2,563,144
–अवकाश यात्रा सुविधा	1,214,861	1,479,972
योग	**165,217,069**	**163,515,740**

अनुसूची– 21

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2024	31 मार्च 2023
अन्य प्रशासनिक व्यय		
(क) लेखा परीक्षा एवं लेखा शुल्क	610,948	255,615
(ख) मुद्रण एवं लेखन सामग्री	1,725,673	1,189,108
(ग) दूरभाष एवं डाक–व्यय	2,827,031	3,054,603
(घ) पेंशन	65,369,282	56,363,674
(ङ) अन्य आकस्मिक व्यय	357,909	378,873
(च) वाहन अनुरक्षण	211,690	225,523
(छ) किराया, परिकर एवं कर	35,825,246	41,488,551
(ज) प्रचार एवं प्रसार गतिविधियों के लिए व्यय	279,482,155	339,445,020
(झ) अन्य संयुक्त सेवाएँ	3,534,106	2,739,905
(ञ) कानूनी शुल्क	3,016,274	2,518,504
(ट) यात्रा ख़र्च	250,813	565,273
(ठ) व्यवसायिक शुल्क	172,548	260,970
(ड) पीओए सीजीएचसी नई दिल्ली	94,114	-
(ढ) जीपीएफ ब्याज आय में कमी	3,012,769	3,035,551
योग	**396,490,558**	**451,521,170**

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2024	31 मार्च 2023
वेतन, मजदूरी और भत्ते		
(क) मूल वेतन	68,241,696	72,486,567
(ख) ग्रेड पे	-	-
(ग) महँगाई भत्ता	31,517,820	28,955,144
(घ) मकान किराया	18,504,793	19,534,771
(ङ) यात्रा भत्ता	8,878,644	8,410,739
(च) बच्चों का शिक्षा भत्ता	1,350,854	1,250,500
(छ) व्यक्तिगत वेतन	53,800	106,500
(ज) वर्दी भत्ता	170,000	175,000
(झ) परिलब्धियाँ	1,421,640	236,940.00
(ञ) नकद भत्ता	13,285	16,800
(ट) स्टाफ़ वेतन एवं भत्ते–कार्यालय का सुधार	-	-
(ठ) वेतन बकाया	54,927	602,170
कुल योग	**130,207,459**	**131,775,131**
पेंशन		
(क) पेंशन	48,811,808	55,882,152
(ख) पेंशनभोगियों को महँगाई भत्ता	14,161,627	470,544
(ग) पेंशनभोगियों को चिकित्सा भत्ता	520,300	-
(घ) अतिरिक्त पेंशन	975,235	-
(ङ) पेंशनभोगियों को चिकित्सा सुविधा	900,312	10,978
कुल योग	**65,369,282**	**56,363,674**
कर्मचारी की सेवानिवृत्ति लाभ पर व्यय		
(क) उपदान	6,539,321	5,680,047
(ख) पारिवारिक पेंशन सहित पेंशन	11,111,635	11,021,204
(ग) अवकाश नकदीकरण	4,161,102	4,147,507
(घ) अर्धवेतन अवकाश	718,564	661,359
कुल योग	**22,530,622**	**21,510,117**
किराया, परिकर एवं कर		
(क) वार्षिक रखरखाव अनुबंध	1,296,930	1,167,222
(ख) बिजली / पानी शुल्क	4,173,421	9,854,815
(ग) किराया	30,354,895	30,466,514
कुल योग	**35,825,246**	**41,488,551**

साहित्य अकादेमी

अनुसूची–21

31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

(राशि रुपये में)

विवरण		चालू वर्ष (2023–2024)				गत वर्ष (2022–2023)			
	गतिविधियों का संवर्द्धन एवं प्रसार	सामान्य	एन.ई.	टी.एस.पी.	योग	सामान्य	एन.ई.	टी.एस.पी.	योग
ए	**अकादेमी सेल**								
01	बाल साहित्य पुरस्कार	4,308,577	463,686	136,445	**4,908,708**	6,101,694	680,660	156,909	**6,939,263**
02	राजभाषा कार्यक्रम	366,415	-	-	**366,415**	490,948	-	-	**490,948**
03	कुमारस्वामी फ़ैलोशिप	385,061	-	-	**385,061**	-	-	-	-
04	भाषाओं का विकास	-	-	2,531,925	**2,531,925**	-	-	5,100,025	**5,100,025**
05	भारतीय काव्य का विश्वकोश	704,199	-	-	**704,199**	-	-	-	-
06	फ़ैलोशिप	13,570	-	-	**13,570**	828,639	-	-	**828,639**
07	साहित्यिक समारोह एवं कार्यक्रम	19,057,213	1,300,871	968,655	**21,326,739**	24,753,766	3,122,046	894,558	**28,770,370**
08	आधुनिकीकरण एवं सुधार	21,771,561	-	-	**21,771,561**	22,144,894	-	-	**22,144,894**
09	बिक्री संवर्द्धन (विज्ञापन) इत्यादि	15,124,038	180,180	-	**15,304,218**	11,051,384	146,502	-	**11,197,886**
10	प्रकाशन योजनाएँ	59,486,300	3,428,969	79,733	**62,995,002**	143,018,481	602,298	98,163	**143,718,942**
11	प्रेमचंद फ़ैलोशिप	126,978	-	-	**126,978**	-	-	-	-
12	क्षेत्रीय साहित्यिक अध्ययन योजना	127,913	-	-	**127,913**	50,530	-	-	**50,530**
13	लेखकों को दी जानेवाली सेवाएँ	72,655,311	626,260	517,649	**73,799,220**	34,672,312	2,476,776	838,342	**37,987,430**
14	अनुवाद योजनाएँ	3,935,796	981,460	83,710	**5,000,966**	11,937,485	1,571,400	435,012	**13,943,897**
15	पुस्तकालय और सूचना सेवाओं में सुधार	1,440,804	-	-	**1,440,804**	478,380	-	-	**478,380**
16	युवा पुरस्कार	4,123,739	373,980	155,814	**4,653,533**	4,271,913	279,592	159,231	**4,710,736**
17	ट्रांसलेटिंग इंडिया	-	-	-	-	-	-	-	-
18	टैगोर नेशनल फैलोशिप	-	-	-	-	-	-	-	-
19	योग	1,252,453	-	-	**1,252,453**	470,968	-	-	**470,968**
20	महात्मा गाँधी की 150वीं जन्मशतवार्षिकी	29,530	-	-	**29,530**	30,789	-	-	**30,789**
21	राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन संस्कृत समुन्मेष	2,330,163	-	-	**2,330,163**	-	-	-	-
22	नेताजी सुभाष चंद्र बोस	-			**52,650,998**	55,671,502			**55,671,502**
23	अकादेमियाँ सेल–उन्मेष	52,650,998			**6,286,204**	6,366,154			**6,366,154**
24	अकादेमियाँ सेल–पुस्तकायन	6,286,204			**888,450**	-			-
25	द सेम स्काई जी20 काव्य संकलन	888,450	-	-	-	-	-	-	-
	कुल योग	**267,065,273**	**7,355,406**	**4,473,931**	**278,894,610**	**322,346,839**	**8,879,274**	**7,682,240**	**338,908,353**
बी	**एस.ए.पी.–स्वच्छता कार्य योजना**								
19	एस.ए.पी.–स्वच्छता कार्य योजना	587,545	-	-	**587,545**	536,667	-	-	**536,667**
सी.	**विशेष सेल**		-	-	-				
01	भारत महोत्सव–इज़राइल	-	-	-	-	-	-	-	-
02	भारत महोत्सव–स्पेन	-	-	-	-	-	-	-	-
03	भारत महोत्सव–थाइलैण्ड	-	-	-	-	-	-	-	-
04	भारत महोत्सव–नेपाल								
05	नेताजी सुभाषचंद्र बोस	-			-	-	-	-	-
	कुल योग	**267,652,818**	**7,355,406**	**4,473,931**	**#REF!**	**322,883,506**	**8,879,274**	**7,682,240**	**339,445,020**

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

अनुसूची–22

(राशि रुपये में)

विवरण	चालू वर्ष	गत वर्ष
अनुदान, इमदाद आदि पर ब्याज		
(क) संस्थाओं/संगठनों को दिए गए अनुदान		
i) राज्य अकादेमियों तथा अन्य संस्थाओं को सहायता	4,21,377	3,17,625
ii) राज्य अकादेमियों तथा अन्य संस्थाओं को सहायता के लिए एन.ई.	-	-
(ख) संस्थाओं/संगठनों को दी गई इमदाद	-	-
योग	**4,21,377**	**3,17,625**

अनुसूची–23

(राशि रुपये में)

विवरण	चालू वर्ष	गत वर्ष
वित्त शुल्क		
(क) स्थायी ऋण पर	-	-
(ख) अन्य ऋणों पर (बैंक शुल्क सम्मिलित)	-	-
(ग) अन्य (उल्लेख करें)	-	-
योग	**-**	**-**

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक–असाधारण

31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

(राशि रुपये में)

विवरण	चालू वर्ष	गत वर्ष
असाधारण मदें		
पूर्व अवधि मूल्यह्रास	49,44,772	(12,22,374)
पूर्व अवधि व्यय	26,54.300	-
अन्य असाधारण मदें	-	5,28,360
सेवानिवृत्ति लाभों के लिए प्रावधान (ग़ैर–वित्त पोषित)		
(क) सेवानिवृत्ति उपदान के लिए प्रावधान	-	-
(ख) सेवानिवृत्ति अवकाश नकदीकरण के लिए प्रावधान	-	-
योग	**75,99,072**	**(6,94,014)**

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

प्राप्तियाँ	अनुलग्नक	चालू वर्ष 2023–24	गत वर्ष 2022–23	भुगतान	अनुलग्नक	चालू वर्ष 2023–2024	गत वर्ष 2022–23
1. आदि शेष				**II. अनुदान प्राप्त**			
(क) हाथ रोकड़		568,670	636,289	**(क) भारत सरकार–संस्कृति मंत्रालय द्वारा**			
(चैक/ड्राफ्ट और टिकट सहित)				–अकादेमी सेल–राजस्व वेतन		17,654,881	32,688,151
(ख) बैंक में जमा				–अकादेमी सेल–राजस्व सामान्य		-	6,100
चालू खातों में		-	-	–अकादेमी सेल–पूंजीगत परिसंपत्तियों का सृजन		-	648,279
जमा खातों में		-	-	–अकादेमी सेल–टीएसपी. राजस्व सामान्य		-	-
बचत खातों में		101,932,109	78,713,683	–अकादेमी सेल–स्वच्छता कार्य योजना		-	22,303
				–अकादेमी सेल–उन्मेष		-	2,519,814
2. प्राप्त अनुदान				–अकादेमी सेल–पुस्तकायन		-	766,606
(क) भारत सरकार–संस्कृति मंत्रालय द्वारा				–अकादेमी सेल–राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन संस्कृत समुन्मेष		4,419,837	-
–अकादेमी सेल–राजस्व वेतन		185,000,000	165,000,000	**2. व्यय**	**10**	167,479,427	173,285,468
–अकादेमी सेल–राजस्व सामान्य		220,159,000	224,316,000	(क) स्थापना व्यय (अनुसूची 20 के अनुरूप)	**11**	115,280,680	111,056,890
–अकादेमी सेल–पूंजीगत परिसंपत्तियों का सृजन		30,000,000	30,000,000	(ख) प्रशासनिक व्यय (अनुसूची 21 के अनुरूप)			
–अकादेमी सेल–टी.एस.पी. राजस्व सामान्य		-	-				
–अकादेमी सेल–स्वच्छता कार्य योजना		500,000	500,000	**3. विभिन्न योजनाओं/परियोजनाओं के अंतर्गत भुगतान**			
–अकादेमी सेल–उन्मेष		52,650,998	58,256,250	(क) परियोजनाएँ/योजनाएँ			
–अकादेमी सेल–पुस्तकायन		-	7,125,000	अकादेमी राजस्व	**12**	199,931,731	213,367,409
–अकादेमी सेल–राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन		6,750,000	-	राज्य अकादेमियों और अन्य संस्थानों को सहायता	**12**	421,377	317,625
–अकादेमी सेल–संस्कृत समुन्मेष		-	-	अकादेमी राजस्व एनई	**12**	7,082,117	8,751,862
–अकादेमी सेल–द सेम स्काई जी20 काव्य संकलन		888,450	-	अकादेमी सेल–टीएसपी. राजस्व सामान्य	**12**	4,432,849	7,646,026
				अकादेमी स्वच्छता कार्य योजना	**12**	496,314	506,415
3. निवेशों से आय		-	880,909	अकादेमी उन्मेष	**12**	52,650,998	55,671,502
(क) नियत/अक्षय निधियों		-	-	अकादेमी पुस्तकायन	**12**	-	6,366,154
(ख)स्वपूंजी (अन्य निवेश)				अकादेमी राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन संस्कृत समुन्मेष	**12**	2,330,163	-
				अकादेमी द सेम स्काई जी20 काव्य संकलन	**12**	888,450	-
4. प्राप्त ब्याज	**1**			**4. निवेश और जमा की गई राशियाँ**			
(क) बैंकों में जमा राशि पर ब्याज	**1**	3,044,883	1,258,893	(क) नियत/अक्षय निधियों से		-	-
(ख) ऋण, अग्रिम आदि	**1**	255,485	240,978	(ख) अपनी निधि से (निवेश–अन्य)		-	48,000,000
5. अन्य आय				**5. स्थायी परिसंपत्तियों पर व्यय तथा पूंजी पर अधारित कार्य प्रगति पत्र**		-	-
(क) माल/सेवाओं की बिक्री से आय	**2**	992,548	882,247	(क) स्थायी परिसंपत्तियों की खरीद	**13**	8,178,476	6,826,774
(ख) फीस एवं अंशदान से आय	**3**	163,351	181,300	(ख) कार्य प्रगति पर व्यय की गई पूँजी	**13**		
(ग) रॉयल्टी, प्रकाशन आदि से आय	**4**	50,460,250	138,772,063	**6. कार्य प्रगति पर धन/ऋणों की वापसी**			
(घ) विविध आय/प्राप्तियाँ	**5**	4,964,351	1,345,842	(क) संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार को			
				(ख) राज्य सरकार को		-	-
				(ग) अन्य पूंजी उपलब्ध कराने वालों को		-	-

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

प्राप्तियाँ	अनुलग्नक	चालू वर्ष 2023–24	गत वर्ष 2022–23	भुगतान	अनुलग्नक	चालू वर्ष 2023–2024	गत वर्ष 2022–23
				7. वित्त शुल्क ब्याज		-	-
6. उधार ली गई राशि		-	-	**8. अन्य भुगतान**			
				(क) स्टाफ को अग्रिम राशि	**14**	73,234	-
				(ख) प्रतिभूति जमा राशि दी	**15**	33,069	4,785
				(ग) अन्य (वसूली योग्य)	**16**	55,094,671	3,648,783
7. कोई अन्य प्राप्तियाँ							
(क) स्टॉफ द्वारा चुकाए गए ऋण	**6**	301,600	291,600	**9. सामान्य आरक्षित**		594,996	515,160
(ख) लौटाने योग्य जमा राशि	**7**	1,008,116	406,950	**10. समापन शेष**			
(ग) कोट्रा प्राप्तियाँ और भुगतान	**8**	438	-	(क) हाथ में रोकड़		544,457	568,670
(घ) अन्य भुगतान योग्य	**9**	8,309,969	18,308,880	(ख) बैंक बैलेंस			
(ङ) अन्य लघु अवधि जमा परिपक्वता		-	48,000,000	(चेक / ड्राफ्ट और टिकटों सहित)			
(च) दिल्ली बीएसईएस विद्युत आपूर्ति लाइन की शिफ्टिंग		-	-	(i) चालू खातों में			
				(ii) जमा खातों में			
				(iii) बचत खातों में		30,362,489	101,932,109
योग		**66,79,50,217**	**775,116,884**	**योग**		**667,950,217**	**775,116,884**

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 4 जून 2024

ह./–	ह./–	ह./–	ह./–
(कुलदीप चंद्र)	**(बाबुराजन एस.)**	**(कृष्णा आर. किम्बहुने)**	**(के. श्रीनिवासराव)**
प्रवर लिपिक	*उपसचिव, लेखा*	*उपसचिव, प्रशासन*	*सचिव*

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
ब्याज प्राप्त	1		
संग्रह निधि पर ब्याज		-	880,909
कुल योग		**-**	**880,909**
सावधि जमा पर ब्याज		25,35,170	2,81,047
बैंक बचत खाते पर ब्याज		5,09,713	9,77,846
कुल योग		**3,044,883**	**1,258,893**
अग्रिम पर ब्याज		255,485	240,978
आयकर वापसी पर ब्याज		-	-
कुल योग		**255,485**	**240,978**
योग		**3,300,368**	**2,380,780**
माल और सेवाओं की बिक्री से प्राप्त व्यय	2		
बिक्री/सेवाओं से प्राप्त आय			
सभागार रखरखाव प्राप्ति		260,000	395,000
फ़ोटोकॉपी शुल्क		18,327	22,020
इंडियन लिटरेचर (जेएसटीओआर)		714,221	465,227
ऑनलाइन साहित्य सामग्री की बिक्री से प्राप्ति		-	-
योग		**992,548**	**882,247**
शुल्क और सदस्यता से प्राप्त आय	3		
पुस्तकालय सदस्यता शुल्क व्यय		163,351	181,300
बुक क्लब सदस्यता		-	-
योग		**163,351**	**181,300**
रॉयल्टी, प्रकाशन इत्यादि से प्राप्त व्यय	4		
रॉयल्टी से प्राप्त व्यय		29,485	10,259
अकादेमी प्रकाशनों से प्राप्त आय		50,430,765	138,761,804
योग		**50,460,250**	**138,772,063**
विविध प्राप्तियाँ	5		
खोई पुस्तक पर पुस्तकालय द्वारा वसूली		4,816	180
विविध प्राप्तियाँ		3,264,444	951,712
पूर्व अवधि प्राप्तियाँ		-	-
सीजीएचएस में कर्मचारी योगदान की वसूली		405,950	393,950
एनपीएस खाते में गैर प्रतिदेय राशि का नियोक्ता द्वारा दिया गया योगदान		-	-
संयुक्त सेवाएँ वसूली योग्य	-	-	
उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र		1,149,141	-
नेताजी सुभाष चंद्र बोस	-	140,000	-
नेपाल में भारत उत्सव (प्राप्तियाँ)		-	-
योग		**4,964,351**	**1,345,842**

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
स्टाफ द्वारा चुकाए गए ऋण	6		
स्टाफ कंप्यूटर अग्रिम		50,000	-
स्टाफ वाहन अग्रिम		-	-
त्यौहार अग्रिम		-	-
स्टाफ को गृह निर्माण अग्रिम		251,600	291,600
योग		**301,600**	**291,600**
प्रतिदेय जमा राशियाँ	7		
वर्ष के दौरान पुस्तकालय सदस्यता से प्राप्त		351,800	467,950
वर्ष के दौरान पुस्तकालय सदस्यता को प्रतिदेय		(59,300)	(71,000)
वर्ष के दौरान प्राप्त बयान राशि		3,774,574	1,959,469
वर्ष के दौरान प्रतिदेय बयाना राशि		(3,058,958)	(1,949,469)
योग		**1,008,116**	**406,950**
कॉट्रा (बैंक) प्राप्ति और भुगतान	8		
टीडीएस/आयकर			
प्राप्ति		-	-
भुगतान		-	-
कुल योग		-	-
जीएसटी			
प्राप्ति		-	660,732
भुगतान		-	(660,732)
कुल योग		-	-
जीएसटी (टीडीएस)			
प्राप्ति			
भुगतान		-	-
कुल योग		-	-
एन.पी.एस.			
प्राप्ति		-	-
भुगतान		-	-
कुल योग		-	-
सा.भ.नि.			
प्राप्ति		-	-
भुगतान		-	-
कुल योग		-	-

अनुलग्नक

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
जी.एस.एल.आई.सी.			
प्राप्ति		1,367,682	1,249,512
भुगतान		(1,367,244)	(1,249,512)
कुल योग		**438**	-
एल.आई.सी.			
प्राप्ति		219,517	217,343
भुगतान		(219,517)	(217,343)
कुल योग		-	-
सा.भ.नि. ऋण की वसूली			
प्राप्ति		1,498,550	1,384,030
भुगतान		(1,498,550)	(1,384,030)
कुल योग		**438**	-
योग		-	-
अन्य देय			
देनदारों से प्राप्त अग्रिम	9		
वर्ष के दौरान प्राप्त भुगतान		29,195,265	71,505,661
वर्ष के दौरान निपटाये गए अग्रिम		(17,848,659)	(60,591,497)
कुल योग		**11,346,606**	**10,914,164**
वर्ष के दौरान देनदारों से वसूली			
वर्ष के दौरान देय		-	-
वर्ष के दौरान निपटाये गए		-	-
कुल योग		-	-
बाहरी पार्टियों को अग्रिम			
वर्ष के दौरान छोड़े गए		32,013,076	28,251,393
वर्ष के दौरान स्वीकृत तथा निपटाये गए		(35,080,203)	(26,535,700)
कुल योग		**(3,067,127)**	**1,715,693**
अकादेमी कार्यक्रम तथा गतिविधियों के लिए कर्मचारियों को अग्रिम			
वर्ष के दौरान छोड़े गए		-	9,520,489
वर्ष के दौरान स्वीकृत तथा निपटाये गए		-	(9,428,032)
कुल योग		-	**92,457**
पूँजी अग्रिम			
वर्ष के दौरान स्वीकृत तथा		-	12,500,000
निटाये गए		-	(10,000,000)
वर्ष के दौरान छोड़ गए			
कुल योग		-	**2,500,000**

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
अर्जित ब्याज			
वर्ष के दौरान स्वीकृत तथा निपटाये गए		3,790	3,084,783
वर्ष के दौरान छोड़े गए		-	-
कुल योग		**3,790**	**3,084,783**
वसूली योग्य कर			
वसूली योग्य आयकर		-	-
वर्ष के दौरान आयकर की वापसी		-	-
कुल योग		-	-
विविध लेनदार			
वर्ष के दौरान देय			-
वर्ष के दौरान निपटाये गए			-
कुल योग			-
अन्य चालू दायित्व			
वर्ष के दौरान देय		-	142,126,960
वर्ष के दौरान निपटाये गए		-	(142,125,177)
कुल योग		-	**1,783**
अस्थायी स्थानांतरण			
वर्ष के दौरान देय		71,704,385	
वर्ष के दौरान निपटाये गए		(71,704,385)	-
संयुक्त सेवा वसूली योग्य			
संयुक्त सेवा वसूली योग्य		26,700	-
योग		**26,700**	**-**
कुल योग		**8,309,969**	**18,308,880**
स्थापना व्यय	10		
स्टाफ वेतन और भत्ते			
वेतन, मजदूरी और भत्ते			
मूल वेतन		68,241,696	72,486,567
महँगाई भत्ता		31,058,956	28,258,653
मकान किराया भत्ता		18,504,793	19,534,771
यात्रा भत्ता		8,839,431	8,350,949
बच्चों का शिक्षा भत्ता		1,350,854	1,250,500
व्यक्तिगत वेतन		53,800	106,500
वर्दी भत्ता		170,000	175,000
परिलब्धियाँ		1,421,640	236,940
नकद भत्ता		13,285	16,800
स्टाफ वेतन और भत्ते–कार्यालय का सुधार		-	-
एन.पी.एस. को अंशदान		6,804,937	6,142,052
वेतन बकाया		54,927	602,170

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति और सेवांत हितलाभ पर व्यय			
उपदान		8,956,590	13,268,327
पारिवारिक पेंशन सहित पेंशन		11,111,635	11,021,204
अर्धवेतन अवकाश		718,564	661,359
अवकाश नकदीकरण		4,560,899	7,132,320
अवकाश चिकित्सा सुविधाएँ		4,402,559	2,561,384
अवकाश यात्रा रियायत		1,214,861	1,479,972
योग		**167,479,427**	**173,285,468**
प्रशासनिक व्यय	11		
लेखा परीक्षा तथा लेखा शुल्क		145,268	281,085
प्रकाशन एवं लेखन सामग्री		1,652,805	1,156,671
टेलीफ़ोन तथा डाक शुल्क		2,716,427	2,987,227
अन्य आकस्मिक व्यय		357,909	374,393
वाहनों का रखरखाव		194,048	225,523
पेंशन			
पेंशन		48,811,808	55,882,152
पेंशनभोगियों के लिए महंगाई भत्ता		14,161,627	-
पेंशनभोगियों को चिकित्सा भत्ता		520,300	-
अतिरिक्त पेंशन		975,235	-
पेंशनभोगियों को चिकित्सा सुविधा		742,565	-
किराया, दरें और कर			
वार्षिक रखरखाव अनुबंध		1,213,156	985,447
बिजली/पानी का शुल्क		4,173,224	9,836,497
किराया		30,048,192	30,466,514
अन्य संयुक्त सेवाएँ		3,280,150	2,547,764
कानूनी शुल्क		3,016,274	2,518,504
यात्रा खर्चे		215,263	558,112
व्यावसायिक शुल्क		43,660	201,450
स.भ.नि. ब्याज आय की कमी		3,012,769	3,035,551
योग		**115,280,680**	**111,056,890**
संवर्धन एवं प्रचार–प्रसार की गतिविधियाँ	12		
सामान्य			
01 बाल साहित्य पुरस्कार		4,277,577	6,067,653
02 बनारस स्कूल परियोजना		-	-

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

	विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
03	राजभाषा कार्यक्रम		363,915	435,995
04	भाषाओं का विकास		-	-
05	फ़ेलोशिप		17,411,202	24,012,308
06	साहित्यिक समारोह एवं कार्यक्रम		20,593,692	21,405,591
07	आधुनिकीकरण एवं सुधार		13,980,150	10,935,292
08	बिक्री संवर्द्धन (विज्ञापन) इत्यादि		55,549,925	98,837,404
09	प्रकाशन योजनाएँ		127,913	50,530
10	क्षेत्रीय साहित्यिक अध्ययन योजना		69,740,400	34,007,920
11	लेखकों को दी जानेवाली सेवाएँ		3,661,741	11,775,387
12	अनुवाद योजनाएँ		1,416,013	470,132
13	पुस्तकालय तथा सूचना सेवाओं में सुधार		-	-
14	युवा पुरस्कार		4,039,739	4,225,906
15	इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन पोएटिक		679,993	-
16	भारतीय अनुवाद		-	-
17	टैगोर राष्ट्रीय फ़ैलोशिप		1,250,453	470,968
18	**योग**		**29,530**	**30,789**
19	महात्मा गाँधी की 150वीं जन्मशतवार्षिकी		-	7,000
20	कुमारस्वामी फ़ैलोशिप		382,736	-
21	प्रेमचंद फ़ैलोशिप		126,978	-
22	पुस्तकायन		6,286,204	-
	कुल योग		**199,931,731**	**213,367,409**
	राज्य अकादेमियों तथा अन्य संस्थाओं को सहायता			
	राज्य अकादेमियों को सहायता		421,377	317,625
	राज्य अकादेमियों को सहायता तथा अन्य संस्थानों के लिए एन.ई.		-	-
	कुल योग		**421,377**	**317,625**
	एन.ई.			
01	बाल साहित्य पुरस्कार		463,686	651,677
02	बनारस विद्यालय परियोजना		-	-
03	राजभाषा महोत्सव		-	-
04	भाषाओं का विकास		-	-
05	फैलोशिप		-	-
06	साहित्यिक समारोह एवं कार्यक्रम		1,265,371	3,083,204
07	आधुनिकीकरण एवं सुधार		-	-
08	बिक्री (विज्ञापन) इत्यादि का संवर्द्धन		146,164	146,502
09	प्रकाशन योजनाएँ		3,236,574	577,923
10	क्षेत्रीय साहित्यिक अध्ययन योजनाएँ		-	-
11	लेखकों को सेवाएँ		625,260	2,468,776

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

	विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
12	अनुवाद योजनाएँ		971,082	1,544,188
13	पुस्तकालयों का उन्नयन		-	-
14	युवा पुरस्कार		373,980	279,592
15	इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन पोएटिक		-	-
16	भारतीय अनुवाद		-	-
17	टैगोर नेशनल फ़ैलोशिप		-	-
18	योग		-	-
19	महात्मा गाँधी की 150वीं जन्मशतवार्षिकी		-	-
20	रवींद्रनाथ ठाकुर की 150वीं जन्मशतवार्षिकी तथा कॉफी टेबल पुस्तक का प्रकाशन		-	-
21	सरदार पटेल अनुवाद परियोजना		-	-
	कुल योग		**7,082,117**	**8,751,862**
	टी.एस.पी.			
01	बाल साहित्य पुरस्कार		136,445	156,909
02	बनारस विद्यालय परियोजना		-	-
03	राजभाषा महोत्सव		-	-
04	भाषाओं का विकास		2,531,925	5,073,711
05	फ़ैलोशिप		-	-
06	साहित्यिक समारोह एवं कार्यक्रम		968,655	894,558
07	आधुनिकीकरण एवं सुधार		-	-
08	बिक्री (विज्ञान) इत्यादि का संवर्द्धन		-	-
09	प्रकाशन योजनाएँ		46,651	98,163
10	क्षेत्रीय साहित्यिक अध्ययन परियोजनाएँ		-	-
11	लेखकों को सेवाएँ		517,649	834,342
12	अनुवाद योजनाएँ		83,710	431,112
13	पुस्तकालयों का उन्नयन		-	-
14	युवा पुरस्कार		147,814	157,231
15	इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन पोएटिक		-	-
16	भारतीय अनुवाद		-	-
17	टैगोर नेशनल फ़ैलोशिप		-	-
18	योग		-	-
19	महात्मा गाँधी की 150वीं जन्मशतवार्षिकी		-	-
20	रवींद्रनाथ ठाकुर की 150वीं जन्मशतवार्षिकी तथा कॉफी टेबल पुस्तक का प्रकाशन		-	-
21	सरदार पटेल अनुवाद परियोजना		-	-
	कुल योग		**4,432,849**	**7,646,026**
	एस.ए.पी.			
	स्वच्छता कार्य योजना		496,314	506,415
	कुल योग		**496,314**	**506,415**

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

	विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
	उन्मेष			
	उन्मेष		52,650,998	55,671,502
	कुल योग		**52,650,998**	**55,671,502**
	पुस्तकायन			
	पुस्तकायन		-	6,366,154
	कुल योग		**-**	**6,366,154**
	राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन संस्कृत समुन्मेष			
	राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन संस्कृत समुन्मेषा		2,330,163	-
	कुल योग		**2,330,163**	**-**
	द सेम स्काई जी20 काव्य संकलन			
	द सेम स्काई जी20 काव्य संकलन		**888,450**	**-**
	कुल योग		**-**	-
	विशेष सेल–भारत महोत्सव			
	भारत महोत्सव–इज़राइल		-	-
	भारत महोत्सव–स्पेन		-	-
	भारत महोत्सव–थाईलैंड		-	-
	भारत महोत्सव–नेपाल		-	-
	कुल योग		**-**	-
	विशेष सेल–श्रीरामानुजाचार्य की जन्मशतवार्षिकी			
	श्रीरामानुजाचार्य की 1000वीं जन्मशतवार्षिकी		-	-
	कुल योग		**268,233,999**	**292,626,993**
	स्थायी परिसंपत्तियों की खरीद	13		
	भूमि		-	-
	भवन		-	-
	सयंत्र और तंत्र		-	-
	वाहन		991,276	-
	फर्नीचर और जुड़नार		2,990,632	1,145,000
	कार्यालय उपकरण		1,230,919	2,196,158
	कंप्यूटर / परिधीय		2,279,302	2,960,822
	विद्युतीय संस्थापन	-	(5,341)	59,860
	पुस्तकालय की पुस्तकें		691,688	464,934
	योग		**8,178,476**	**6,826,774**
	पूंजीगत कार्य प्रगति पर व्यय			
	पूंजीगत कार्य प्रगति पर		-	-
	कुल योग		**8,178,476**	**6,826,774**
	कार्य प्रगति पर व्यय			
	कार्य प्रगति पर व्यय		-	-
	कुल योग		**8,178,476**	**6,826,774**

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

	विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
	स्टॉफ़ (परिसंपत्तियों) को प्रदत्त ऋण	14		
	स्टॉफ़ कंप्यूटर अग्रिम		50,000	-
	स्टॉफ़ वाहन अग्रिम		-	-
	स्टॉफ़ भवन निर्माण अग्रिम		23,234	-
	योग		**73,234**	**-**
	वसूली योग्य प्रतिभूति जमा	15		
	प्राप्ति योग्य प्रतिभूति जमा			
	वर्ष के दौरान जमा राशि		581,075	47,585
	वर्ष के दौरान जमा राशि प्रतिदाय		548,006	42,800
	योग		**33,069**	**4,785**
	अन्य प्राप्ति योग्य	16		
	देनदारों द्वारा दिए गए अग्रिम			
	वर्ष के दौरान प्राप्त भुगतान		-	-
	वर्ष के दौरान निपटाये गए अग्रिम		-	-
	योग		**-**	**-**
	बाहरी पार्टी को दिया गया अग्रिम			
	वर्ष के दौरान दिए गए अग्रिम		-	-
	वर्ष के दौरान स्वीकृत तथा निपटाये गए		-	-
	योग		**-**	**-**
	अग्रिम पूंजी			
	वर्ष के दौरान दिए गए अग्रिम		34,600,000	-
	वर्ष के दौरान स्वीकृत तथा निपटाये गए		-	-
	योग		**34,600,000**	**-**
	अकादेमी कार्यक्रम तथा गतिविधियों के लिए कर्मचारियों को अग्रिम			
	वर्ष के दौरान दिए गए अग्रिम		5,864,843	-
	वर्ष के दौरान स्वीकृत तथा निपटाये गए		(5,870,922)	-
	योग		**(6,079)**	**-**
	अस्थायी स्थानांतरण			
	भुगतान		-	-
	प्राप्ति		-	-
	योग		**-**	**-**
	ब्याज प्रोद्भूत			
	वर्ष के दौरान देय		-	-
	वर्ष के दौरान दिए गए		-	-
	योग		**-**	**-**

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

	विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
	वसूली योग्य कर			
	वसूली योग्य आयकर		34,807	10,851
	वर्ष के दौरान प्रतिदाय आयकर		-	(2,689)
	योग		**34,807**	**8,162**
	विविध लेनदार			
	वर्ष के दौरान देय		24,379,951	6,715,610
	वर्ष के दौरान निपटाये गए		(6,162,195)	(5,563,152)
	योग		**18,217,756**	**1,152,458**
	अन्य चालू दायित्व			
	वर्ष के दौरान देय		194,941,750	164,626,147
	वर्ष के दौरान निपटाये गए		(193,977,080)	(163,752,184)
	योग		**964,670**	**873,963**
	टी.डी.एस./आयकर			
	प्राप्ति		20,530,932	17,705,561
	भुगतान		(20,526,815)	(17,705,492)
	योग		**4,117**	**69**
	जी.एस.टी.			
	प्राप्ति		981,883	660,732
	भुगतान		(981,883)	(660,732)
	योग		-	-
	जी.एस.टी. (टी.डी.एस.)			
	प्राप्ति		(2,481,282)	(2,103,538)
	भुगतान		2,481,282	2,110,624
	योग		**-**	**7,086**
	सा.भ.नि.			
	प्राप्ति		-	-
	भुगतान		-	-
	योग		-	-
	एन.पी.एस.			
	प्राप्ति		11,823,356	11,538,809
	भुगतान		(11,745,668)	(11,445,504)
	योग		**77,688**	**93,305**
	संयुक्त सेवा वसूली योग्य		-	1,070,327
	संयुक्त सेवा वसूली योग्य			
	पूर्वदत्त व्यय			
	वर्ष के दौरान जारी			
	वर्ष के दौरान निपटाये गए		1,201,712	443,413
	कुल योग		**1,201,712**	**443,413**
	योग		**55,094,671**	**3,648,783**

साहित्य अकादेमी

सामान्य भविष्य निधि का तुलन–पत्र : यथातिथि 31–03–2024

2022–2023	दायित्व	2023–2024		2022–2023	परिसम्पत्तियाँ	2023–2024	
	सा. भ. नि. खाता				**निवेश (लागत पर)**		
103,472,043	01–04–2023 को शेष	96,710,384			**आवधिक जमा एवं बॉण्ड** (निम्नांकित बैंकों के साथ)		
	वर्ष के दौरान परिवर्धन :			178,672	केनरा बैंक, नई दिल्ली–नई पेंशन योजना	198,951	
14,970,750	कर्मचारियों का सा.भ.नि. में अंशदान	14,856,000		23,223,152	केनरा बैंक, नई दिल्ली–सा.भ.नि.	23,223,152	
-	अन्य परिवर्धन	-		55,424,391	यूको बैंक, नई दिल्ली–सा.भ.नि.	55,424,391	
6,697,299	ग्राहकों के खाते में ब्याज जमा	6,318,007		**78,826,215**			**78,846,494**
21,668,049		**21,174,007**					
	वर्ष के दौरान कटौती :				**निवेशों पर प्रोदभूत ब्याज–सा.भ.नि.**		
101,950	अंतिम निकासी	14,800,000		5,030,397	01–04–2023 को शेष	680,295	
12,773,258	अग्रिमों का अंतिम निकासी में परिवर्तन	-		680,295	जमा : वर्ष के दौरान प्रोदभूत ब्याज	5,731,769	
28,429,708	पूर्ण और अंतिम भुगतान	7,868,827		5,030,397	घटा : परिपक्वता पर प्राप्त ब्याज	-	
96,710,384		22,668,827		**680,295**			**6,412,064**
			95,215,564		**निवेशों पर प्रोदभूत ब्याज–एन.पी.एस**		
				1,123	01–04–2023 को शेष	8,455	
	नई पेंशन योजना			8,455	जमा : 2023–24 के दौरान प्रोदभूत ब्याज	11,770	
152,384	01–04–2023 को शेष	152,384		1,123	घटा : परिपक्वता पर ब्याज	-	
-	**वर्ष के दौरान परिवर्धन :**			**8,455**			**20,225**
-	अकादेमी का नई पेंशन योजना में अंशदान	-					
-	कर्मचारियों का नई पेंशन योजना में अंशदान	-			**ग्राहकों को अग्रिम**		
-	एन.पी.एस. आवधिक पर अर्जित / प्राप्त ब्याज	-		2,421,874	01–04–2023 को शेष	3,100,894	
-		-		2,165,000	जमा : वर्ष के दौरान स्वीकृत	630,000	
	वर्ष के दौरान कटौती :			101,950	घटा : अग्रिमों का अंतिम निकासी में परिवर्तन	-	
-	01–04–2023 को पी.एफ.आर.डी.ए. में शेष	-		1,384,030	घटा : वर्ष के दौरान वसूल की गई राशि	1,498,550	
-	घटा : राशि पी.एफ.आर.डी.ए. में स्थानांतरित	-		**3,100,894**			**2,232,344**
		-					
	परिवर्धन				**अन्य अग्रिम–टी.डी.एस.**		
-	जमा : साहित्य अकादेमी के लिए वापसी योग्य अंशदान	-		1,783	01–04–2023 को शेष	96,464	
				(1,783)	घटा : वर्ष के दौरान स्रोत पर टैक्स कटौती	(96,464)	
-	जमा : साहित्य अकादेमी के कर्मचारियों को वापसी योग्य अंशदान	-		1,783	जमा : साहित्य अकादेमी से प्राप्ति योग्य राशि	94,681	
				94,681	जमा : वर्ष के दौरान स्रोत पर कर कटौती	176,503	**2,71,184**
-		-		**96,464**			
152,384		-	**152,384**				
	ब्याज (अनुपयुक्त) लेखा				**बैंक शेष**		
(3,035,551)	01–04–2023 का शेष	(3,012,769)		11,137,676	एस.बी. खाता सं. 3264, केनरा बैंक, नई दिल्ली	7,652,515	**7,652,515**
3,035,551	जमा : अंशदान में अधिशेष स्थानांतरण	3,012,769		**11,137,676**			
3,012,769	घटा : आय पर व्यय का आधिक्य	66,878					
(3,012,769)			**66,878**				
93,849,999	**योग**		**95,434,826**	**93,849,999**	**योग**		**95,434,826**

	ह./–	ह./–	ह./–	ह./–
स्थान : नई दिल्ली	**(कुलदीप चंद्र)**	**(बाबुराजन एस.)**	**(कृष्णा आर. किम्बहुने)**	**(के. श्रीनिवासराव)**
दिनांक : 4 जून 2024	*प्रवर लिपिक*	*उपसचिव, लेखा*	*उपसचिव, प्रशासन*	*सचिव*

साहित्य अकादेमी

सामान्य भविष्य निधि का प्राप्ति और भुगतान लेखा : यथातिथि 01–04–2023 से 31–03–2024

2022–2023	प्राप्तियाँ	2023–2024		2022–2023	भुगतान	2023–2024	
	आदि बैंक शेष				**सा.भ.नि. खाता**		
7,112,226	केनरा बैंक	11,137,675		15,554,500	अंतिम निकासी	14,800,000	
-	स्टेट बैंक ऑफ इंडिया	-	**11,137,675**	-	अग्रिम का अंतिम निकासी में परिवर्तन	-	
7,112,226				12,773,258	पूर्ण एवं अंतिम निबटान	7,868,827	**22,668,827**
				28,327,758			
	सा.भ.नि. लेखा						
17,966,301	कर्मचारियों का अंशदान	17,868,769			**राष्ट्रीय पेंशन योजना**		
-	सा.भ.नि. से अग्रिमों का भुगतान	-		-	एन.पी.एस. में निवेश	-	
-	उपभोक्ताओं का ब्याज जमा	-	**17,868,769**	-	कर्मचारी को एन.पी.एस. का प्रतिदाय	-	
17,966,301				-	अकादेमी को एन.पी.एस. का प्रतिदाय	-	
	ग्राहकों को अग्रिम						
1,384,030	वर्ष के दौरान ग्राहकों को पुनः दी गई अग्रिम राशि	1,498,550			**ग्राहकों को अग्रिम**		
-	कर्मचारी अंशदान	-		2,167,337	वर्ष के दौरान ग्राहकों को दी गई अग्रिम राशि	630,000	
-	आवधिक जमा पर ब्याज	-	**1,498,550**	-	साहित्य अकादेमी में स्थानांतरित	-	**630,000**
1,384,030				**2,167,337**			
	प्राप्त ब्याज				**निवेश**		
166,922	सा.भ.नि. के निवेश पर ब्याज–केनरा बैंक	387,212		-	वर्ष के दौरान सा.भ.नि. खाते में किए गए निवेश	-	
-	सा.भ.नि. के निवेश पर ब्याज–यूको बैंक	-		-	सा.भ.नि. निवेश पर प्राप्त ब्याज	-	
120,914	बैंक बचत खातों पर ब्याज	61,015		-	वर्ष के दौरान एन.पी.एस. में निवेश	-	-
-	आई.डी.बी.आई. फलैक्सी बॉण्ड	-	**448,227**	-			
287,836					**साहित्य अकादेमी से वसूली योग राशि**		
	निवेश			-	स्रोत पर काटा गया कर	1,742	**1,742**
14,842,386	वर्ष के दौरान निकाली गई निवेश राशि–सा.भ.नि.	-		-			
-	वर्ष के दौरान निकाली गई निवेश राशि–एन.पी.एस.	-					
-	वर्ष के दौरान निकाली गई निवेश राशि–आई.डी.बी.आई.	-					
-	फलैक्सी बॉण्ड	-	-		**अन्य व्यय**		
14,842,386				-	सा.भ.नि. ग्राहक को दिया गया आकलित ब्याज	-	
				9	बैंक शुल्क	137	**137**
	साहित्य अकादेमी में स्थानांतरित			9			
40,000	साहित्य अकादेमी में स्थानांतरित	-	-				
40,000					**बैंक अंत शेष**		
		-		11,137,675	केनरा बैंक	7,652,515	
				-			**7,652,515**
				11,137,675			
41,632,779	**योग**		**30,953,221**	**41,632,779**	**योग**		**30,953,221**

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 4 जून 2024

ह./–
(कुलदीप चंद्र)
प्रवर लिपिक

ह./–
(बाबुराजन एस.)
उपसचिव, लेखा

ह./–
(कृष्णा आर. किम्बहुने)
उपसचिव, प्रशासन

ह./–
(के. श्रीनिवासराव)
सचिव

साहित्य अकादेमी

सामान्य भविष्य निधि का प्राप्ति और भुगतान लेखा : यथातिथि 01–04–2023 से 31–03–2024

2022–2023	प्राप्तियाँ	2023–2024		2022–2023	भुगतान	2023–2024	
					निवेश पर ब्याज		
6,697,299	सा.भ.नि. के ग्राहकों को ब्याज दिया गया	6,318,007		3,536,679	निवेश पर प्राप्त ब्याज	5,963,741	
8	बैंक शुल्क	138		147,859	बचत खाते पर प्राप्त ब्याज	12,954	
-	अन्य कटौतियाँ	-		-	अन्य अधिशेष	408,328	
6,697,307			**6,318,145**	**3,684,538**			**6,385,023**
	आय से अधिक व्यय	66,878			**आय पर व्यय का आधिक्य**		
3,012,769	टी/एफ की होने वाली हानि		**66,878**		घाटे को स्थानांतरित किया	-	
6,697,307	**योग**		**6,385,023**	**3,684,538**	**योग**		**6,385,023**

	ह./–	ह./–	ह./–	ह./–
स्थान : नई दिल्ली	**(कुलदीप चंद्र)**	**(बाबुराजन एस.)**	**(कृष्णा आर. किम्बहुने)**	**(के. श्रीनिवासराव)**
दिनांक : 4 जून 2024	*प्रवर लिपिक*	*उपसचिव, लेखा*	*उपसचिव, प्रशासन*	*सचिव*

साहित्य अकादेमी

सामान्य भविष्य निधि खाता निवेश और प्रोद्भूत ब्याज की अनुसूची : यथातिथि 31 मार्च 2024

निवेश									ब्याज		
क्र. सं.	एफ़.डी.संख्या	क्रय तिथि	परिपक्वता तिथि	ब्याज दर%	31–03–2024 को ब्याज का अंकित मूल्य	परिपक्वता मूल्य	प्राप्ति योग्य सकल ब्याज	31–03–2023 तक प्रोद्भूत	2023–2024 के दौरान प्रोद्भूत	प्रोद्भूत ब्याज पर टी.डी. एस. कटौती	31–03–2024 को कुल प्रोद्भूत ब्याज
	नई पेंशन योजना केनरा बैंक, नई दिल्ली में आवधिक जमा										
1	एफ.डी.आर. सं. 2417401000282/91	09/02/2022	09/02/2024	6.8%	-	2,00,277	2,00,277	-	11,109	1,111	9,998
	एफ.डी.आर. सं. 2417401000282/92	09/02/2024	09/02/2025	6.9%	1,98,951	2,12,933	13,982	-	1,969	197	1,772
	योग 1				**1,98,951**	**2,00,277**	**2,00,277**	**-**	**13,078**	**1,308**	**11,770**
	सा.भ.नि. की राशि यूको बैंक, नई दिल्ली में आवधिक जमा										
1	एफ.डी.आर. सं. 18250310055601	30/12/2020	03/04/2022	5.00%	-	-	-	-	-	-	-
3	एफ.डी.आर. सं. 18250310055618	30/12/2020	03/04/2022	5.00%	-	-	-	-	-	-	-
5	एफ.डी.आर. सं. 18250310055625	26/12/2020	30/06/2023	5.00%	-	-	-	-	-	-	-
2	एफ.डी.आर. सं. 18250310055632	26/12/2020	30/06/2023	5.00%	-	-	-	-	-	-	-
4	एफ.डी.आर. सं. 18250310055649	28/12/2020	31/03/2022	5.00%	-	-	-	-	-	-	-
6	एफ.डी.आर. सं. 18250310055656	28/12/2020	31/03/2022	5.00%	-	-	-	-		-	-
7	एफ.डी.आर. सं. 18250310115923	19/10/2022	10/19/2024	7.20%	30,000,000	34,602,181	4,602,181	9,83,323	22,91,756	-	32,75,079
8	एफ.डी.आर. सं. 18250310115930	19/10/2022	10/19/2024	7.20%	2,54,24,391	29,324,646	3,900,255	8,33,346	19,42,217	-	27,75,563
	योग 2				**5,54,24,391**	**63,926,827**	**85,02,436**	**18,16,669**	**42,33,973**	**-**	**60,50,642**
	सा.भ.नि. की राशि केनरा बैंक, नई दिल्ली में आवधिक जमा										
1	एफ.डी.आर. सं. 2417401000282/61	02/02/2021	10/19/2022	5.00%	-	-	-	-	-	-	-
2	एफ.डी.आर. सं. 2417401000282/62	02/02/2021	10/19/2022	5.00%	-	-	-	-	-	-	-
3	एफ.डी.आर. सं. 2417401000282/63	02/02/2021	10/19/2022	5.25%	-	-	-	-	-	-	-
4	एफ.डी.आर. सं. 2417401000282/75	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
5	एफ.डी.आर. सं. 2417303000243/8	26/05/2022	24/12/2022	4.50%	-	-	-	-	-	-	-
6	एफ.डी.आर. सं. 140062446634/1	19/10/2022	02/03/2023	7.00%	-	-	-	-	-	-	-
7	एफ.डी.आर. सं. 140062447153/1	19/10/2022	15/08/2024	7.00%	16,11,576	1,31,79,397	1567821.00	204,873	8,58,345	85,835	9,77,383
8	एफ.डी.आर. सं. 140062447420/1	19/10/2022	15/05/2024	7.00%	16,11,576	13,179,397	1567821.00	204,873	8,58,345	85,835	9,77,383
	योग 3			-	**2,32,23,152**	**2,63,58,794**	**31,35,642**	**4,09,746**	**17,16,690**	**1,71,670**	**19,54,766**
	कुल योग (1+2+3)			-	**7,88,46,494**	**9,04,85,898**	**1,18,38,355**	**22,26,415**	**59,63,741**	**1,72978**	**80,17,178**

31-03-2024 को समाप्त वर्ष के लिए वित्तीय लेखा के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

31-03-2024 को समाप्त वर्ष के लिए
वित्तीय लेखा के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

भूमिका

भारत की 'नेशनल एकेडेमी ऑफ़ लेटर्स' साहित्य अकादेमी साहित्यिक संवाद, प्रकाशन और उसका देशभर में प्रसार करने वाली केंद्रीय संस्था है तथा सिर्फ़ यही ऐसी संस्था है, जोकि भारत की चौबीस भाषाओं, जिसमें अंग्रेज़ी भी सम्मिलित है, में साहित्यिक क्रिया-कलापों का पोषण करती है। इसका विधिवत् उद्घाटन भारत सरकार द्वारा 12 मार्च 1954 को किया गया था। भारत सरकार के जिस प्रस्ताव में अकादेमी का यह विधान निरूपित किया गया था, उसमें अकादेमी की यह परिभाषा दी गई है—भारतीय साहित्य के सक्रिय विकास के लिए कार्य करने वाली एक राष्ट्रीय संस्था, जिसका उद्देश्य उच्च साहित्यिक मानदंड स्थापित करना, भारतीय भाषाओं में साहित्यिक मानदंड स्थापित करना, भारतीय भाषाओं में साहित्यिक गतिविधियों को समन्वित करना एवं उनका पोषण करना तथा उनके माध्यम से देश की सांस्कृतिक एकता का उन्नयन करना होगा। हालांकि अकादेमी की स्थापना सरकार द्वारा की गई है, फिर भी यह भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत एक स्वायत्तशासी संस्था के रूप में कार्य करती है। संस्था पंजीकरण अधिनियम 1860 के अंतर्गत इस संस्था का 1955-56 का पंजीकरण सं. 927 दिनांक 7 जनवरी 1956 को किया गया।

साहित्य अकादेमी का प्रधान कार्यालय रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110001 में स्थित है। इसके अतिरिक्त अकादेमी के कोलकाता, बेंगळूरु, मुंबई में तीन क्षेत्रीय कार्यालय तथा चेन्नै में एक उप-कार्यालय है।

अनुसूची-24- महत्त्वपूर्ण लेखा नीतियाँ

1. लेखा परिपाटी

वित्तीय विवरण ऐतिहासिक मूल्य परिपाटी तथा लेखा की प्रोद्भवन पद्धति के आधार पर तैयार किए गए हैं।

2. वस्तुसूची मूल्यांकन

(2.1) पुस्तकों के स्टॉक का मूल्यांकन उनके मुद्रित मूल्य की 40 प्रतिशत राशि पर किया गया है।

(2.2) पुस्तकों के स्टॉक का मूल्यांकन उनकी न्यूनतम लागत तथा कुल विश्वसनीय मूल्य पर किया गया है। लागत उनके तौल के औसत मूल्य या लागत पर आधरित है।

3. स्थायी परिसंपत्तियाँ

(3.1) स्थायी परिसंपत्तियाँ अर्जन की लागत पर आधारित हैं, जिसमें आवक भाड़ा, कर और परिकर तथा अर्जन से संबंधित आनुषंगिक एवं प्रत्यक्ष व्यय भी सम्मिलित हैं। निर्माण से संबंधित परियोजनाओं के संदर्भ में, पूर्व प्रचालन व्यय (जिनमें परियोजनाओं के पूर्ण होने पर दिए गए ऋणों पर ब्याज शामिल है), पूँजी परिसंपत्तियों के मूल्य का भाग हैं।

(3.2) गैर-अनुवीक्षण अनुदानों (संग्रह निधि के अलावा) द्वारा प्राप्त स्थायी परिसंपत्तियों की पूंजी का मूल्य निर्धारण तदनुरूप जमा आरक्षित पूँजी पर आधारित है।

4. मूल्यह्रास

(4.1) मूल्यहास को आयकर के 1961 के अधिनियम में विनिर्दिष्ट लिखित मूल्यों/दरों के अनुरूप किया गया है, इसमें पुस्तकालय की पुस्तकों पर छूट है, जिन पर मूल्यह्रास की दर 10 प्रतिशत है।

(4.2) वर्ष के दौरान स्थायी परिसंपत्तियों की बढ़ोतरी के संदर्भ में, मूल्यह्रास को परिसंपत्तियों की ब्लॉक पद्धति के आधार पर विचारा गया।

(4.3) वर्ष के दौरान स्थायी परिसंपत्तियों को कटौतियों के संदर्भ में, मूल्यह्रास को दर्शाए जाने की आवश्यता नहीं।

5. विविध व्यय

आस्थगित राजस्व व्यय को उस वर्ष से 5 वर्षों की अवधि में बट्टे खाते में डाल दिया गया है, जिस वर्ष से व्यय आरंभ किया गया था।

6. बिक्री के लिए लेखा

बिक्री में उत्पाद शुल्क और बिक्री का कुल लाभ, रियायत तथा व्यापार छूट शामिल हैं।

7. सरकारी अनुदान/इमदाद

(7.1) वह सरकारी अनुदान जो कि संगठन की प्रवृत्ति (या प्रकृति) के हैं, जिन पर पूँजी लागत द्वारा परियोजनाओं को चलाया जाता है उन्हें पूँजी राजस्व माना गया है।

(7.2) विशिष्ट स्थायी परिसंपत्तियों पर दिए गए अनुदान के संदर्भ में, उन्हें उनसे संबंधित परिसंपत्तियों में लागत पर कटौती में दर्शाया गया है।

(7.3) सरकारी अनुदानों/इमदादों को लेखा उगाही के आधार पर किया गया है।

8. विदेशी मुद्रा संचालन

(8.1) विदेशी मुद्रा में किया गया संव्यवहार, जिस तिथि पर लेन-देन दिया गया है, उस तिथि की विनिमय दर पर तय किया गया है।

(8.2) चालू परिसंपत्तियों, विदेशी मुद्रा ऋण तथा चालू दायित्वों को वर्ष के अंत तक चलनेवाली विनिमय दरों में परिवर्तित किया गया है तथा यदि विदेशी मुद्रा दायित्व स्थायी परिसंपत्तियों से संबंधित हैं तो उन्हें प्राप्त लाभ/हानि में स्थायी परिसंपत्तियों की लागत में समायोजित किया गया है और अन्य मामलों में उन्हें राजस्व माना गया है।

9. पट्टा

पट्टों के किराए पट्टों की शर्तों के आधार पर ख़र्च किए गए हैं।

10. सेवा-निवृत्ति लाभ

(10.1) किसी कर्मचारी की मृत्यु सेवा-निवृत्ति पर देय उपदान के प्रति देयता प्रत्येक वित्तीय वर्ष के अंत में किए गए बीमांकिक मूल्यांकन के आधार पर प्रदान की जाती है।

(10.2) प्रत्येक वित्तीय वर्ष के अंत में किए गए बीमांकिक मूल्यांकन के आधार पर कर्मचारियों को संचित अवकाशों के लाभों को भुनाने का भी प्रावधान है।

अनुसूची-25—प्रासंगिक दायित्व और लेखा पर टिप्पणियाँ

1. प्रासंगिक दायित्व

(1.1) संगठन (अथवा व्यक्ति) के विरुद्ध किए गए दावों को ऋणों की पावती के रूप में नहीं दर्शाया गया है— रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)

(1.2) निम्नांकित विवादास्पद माँगे :
आयकर- रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)
बिक्री कर - रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)
नगरपालिका कर- रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)

(1.3) संगठन द्वारा पार्टियों को दिए गए आदेशों का अनुपालन न किए जाने के विरुद्ध दावे- रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)।

2. पूँजीगत प्रतिबद्धताएँ

पूँजी लेखा में उन अनुबंधों का अनुमानित मूल्य जो निष्पादित किए जाने हैं तथा जो (कुल अग्रिम) शून्य है (गत वर्ष रु. शून्य), को उपलब्ध नहीं कराया गया है।

3. पट्टा दायित्व

भविष्य में प्लॉट और यंत्रों की वित्तीय पट्टे पर की जानेवाली देख-रेख पर व्यय की जानेवाली राशि— रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य) उपलब्ध नहीं कराई गई है।

4. 31-3-2024 को अक्षय निधि/उद्दिष्ट पूँजियों के निवेश का समाधान निम्न प्रकार किया गया :

निधि का नाम	अनुसूची सं.	राशियाँ	निधियों के नाम	अनुसूची सं.	राशियाँ
संग्रह निधि	1	1,00,00,000	तदनुसार निवेश	9	1,00,00,000
स्थायी परिसंपत्ति निधि	3	22,12,83,513	स्थायी परिसंपत्तियाँ	8	20,13,48,136
प्रकाशन निधि	3	16,98,41,951	स्टॉक प्रकाशन	11	16,98,41,951
अग्रिम पूँजी	11	3,17,69,448	निवेश पर प्रोद्भूत ब्याज	11	-
योग		**43,28,94,912**	**151,11,37,676**		**43,28,94,912**

5. चालू परिसंपत्तियाँ

संगठन का मानना है कि सामान्य व्यापार के संदर्भ में चालू परिसंपत्तियों, ऋणों और अग्रिमों से उतना ही उगाही योग्य पैसा है, जितना कि तुलन-पत्र के कुल योग में दर्शाया गया है।

6. सेवानिवृत्ति लाभ

भारतीय चार्टर्ड अकाउंटेड संस्थान द्वारा जारी 'कर्मचारी लाभ पर लेखा मानक-15 का अनुपालन न करने के संबंध में सीएजी लेखा परीक्षा अवलोकन का अनुपालन करने के संबंध में अकादेमी ने वित्त वर्ष 2018-19 से उनके अनुरूप सेवानिवृति देयता की मान्यता की दिशा में अपनी नीति में परिवर्तन किया है।

तदनुसार उसने इसके अंतर्गत दिए गए विवरणों के अनुसार बीमांकिक मूल्यांकन के आधार पर अवकाश नकदीकरण के प्रति अपनी सेवानिवृत्ति लाभ देयता को मान्यता दी है। 31 मार्च 2024 को समाप्त वित्त वर्ष के लिए बीमांकक मूल्यांकन के प्रासंगिक सार को पुनः प्रस्तुत किया गया है।

ग्रेच्युटी प्रचालन

2.3 : लाभ और हानि के विवरण में मान्यता प्राप्त व्यय :

अवधि	01-04-2023 से 31-03-2024 तक	01-4-2022 से 31-03-2023 तक
ब्याज लागत	47,74,791	51,41,323
वर्तमान सेवा लागत	28,74,159	30,08,512
विगत सेवा लागत	-	-
योजना परिसंपत्ति पर अपेक्षित लाभ	-	-
अवधि के दौरान मान्यता प्राप्त कुल बीमांकित लाभ/हानि	(17,41,653)	(24,69,788)
लाभ और हानि के विवरण में मान्यता प्राप्त व्यय	59,07,297	56,80,047

3.4 : वर्तमान देयता (*कंपनी अधिनियम, 2013 की अनुसूची III के अनुसार अगले वर्ष भुगतान अपेक्षित) :

अवधि	01-04-2023 से 31-03-2024 तक	01-4-2022 से 31-03-2023 तक
वर्तमान देयता (अल्प अवधि)*	1,13,63,572	1,26,65,185
ग़ैर वर्तमान देयता (दीर्घ अवधि)	5,20,78,351	5,31,94,007
कुल देयता	6,34,41,923	6,58,59,192

3-7 : तुलनपत्र में देयता का समाधान :

अवधि	01-04-2023 से 31-03-2024 तक	01-4-2022 से 31-03-2023 तक
सकल लाभ को देयता/(परिसंपत्ति) परिभाषित	6,58,59,192	7,34,47,472
लाभ और हानि में पहचाने जाने वाले व्यय	59,07,297	56,80,047
लाभ प्रदत्त (यदि कोई)	(83,24,566)	(1,32,68,327)
सकल लाभ को देयता/(परिसंपत्ति) परिभाषित इतिशेष	6,34,41,923	6,58,59,192

अवकाश नकदीकरण प्रचालन

2.3 : लाभ और हानि के विवरण में मान्यता प्राप्त व्यय :

अवधि	01-04-2023 से 31-03-2024 तक	01-4-2022 से 31-03-2023 तक
ब्याज लागत	30,19,569	31,24,383
वर्तमान सेवा लागत	24,58,233	24,74,550
योजना परिसंपत्ति पर अपेक्षित लाभ	-	-
अवधि के दौरान मान्यता प्राप्त कुल बीमांकित लाभ/हानि	(5,23,463)	(14,51,426)
लाभ और हानि के विवरण में मान्यता प्राप्त व्यय	49,54,339	41,47,507

3.4 वर्तमान देयता (*कंपनी अधिनियम, 2013 की अनुसूची III के अनुसार अगले वर्ष भुगतान अपेक्षित) :

अवधि	01-04-2023 से 31-03-2024 तक	01-4-2022 से 31-03-2023 तक
वर्तमान देयता (अल्प अवधि)*	61,34,486	67,30,702
ग़ैर वर्तमान देयता (दीर्घ अवधि)	3,51,14,944	3,49,18,525
कुल देयता	4,12,49,430	4,16,49,227

3.6 : तुलनपत्र में देयता का समाधान :

अवधि	01-04-2023 से 31-03-2024 तक	01-4-2022 से 31-03-2023 तक
सकल लाभ को देयता/(परिसंपत्ति) परिभाषित	4,16,49,227	4,46,34,040
लाभ और हानि में पहचाने जाने वाले व्यय	49,54,339	41,47,507
लाभ प्रदत्त (यदि कोई)	(53,54,137)	(71,32,320)
सकल लाभ को देयता/(परिसंपत्ति)परिभाषित इतिशेष	4,12,49,430	4,16,49,227

7. कराधान

अकादेमी को अपने कार्यक्रम और गतिविधियों के कार्यान्वयन के लिए संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पूर्णत: वित्त पोषित किया जाता है। आयकर अधिनियम 1961 के अनुच्छेद 12ए के तदनुसार, अकादेमी की आय को कर से छूट दी गई है। आयकर अधिनियम 1961 के अंतर्गत कर योग्य आय न होने को ध्यान में रखते हुए आयकर का प्रावधान आवश्यक नहीं है।

8. विदेशी मुद्रा संव्यवहार

(8.1) आयात के मूल्य की सी.आई.एफ. के आधार पर गणना : शून्य
तैयार सामान, कच्चा माल एवं अवयव (परागमन सहित)

	तथा पूँजीगत सामान की ख़रीद	
	भंडार, अतिरिक्त और उपभोज्य	
(8.2)	विदेशी मुद्रा में व्यय :	
(क)	विदेशों में पुस्तक मेलों तथा अन्य साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन—	
	राजस्व योजना के अंतर्गत	शून्य
(ख)	वित्तीय संस्थाओं/बैंकों को विदेशी मुद्रा में भेजी गई रकम और ब्याज भुगतान	शून्य
(ग)	उन्मेष और यू.ए.आई. भुगतान	₹ 44,525/-
(घ)	अन्य व्यय	शून्य
	विविध व्यय	₹ 1,54,500/-
	माल भाड़ा	शून्य
	यात्रा व्यय	शून्य
(8.3)	अर्जन :	
	एफ़.ओ.बी. के आधार पर निर्यात मूल्य	शून्य

9. अनुदान उपयोग

अकादेमी संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा पूर्णत: वित्त पोषित है। इसके अतिरिक्त, यह अपने प्रकाशन और बैंक ब्याज आदि की बिक्री के माध्यम से कुछ राजस्व भी उत्पन्न करती है। 31 मार्च 2024 को प्राप्त वर्ष के लिए प्राप्ति एवं भुगतान खाते के आधार पर अकादेमी द्वारा प्राप्त अनुदानों/वित्तीय सहायता की संक्षिप्त स्थिति इस प्रकार है :

विवरण	राजस्व वेतन	राजस्व सामान्य	राजस्व सी.सी.ए.	राजस्व एन.ई.	टी.एस.पी	एस.ए.पी.	उन्मेष	पुस्तकायन	योग	
	1	2	3	4	5	6	7	8	(1 से 8)	
01/04/2023 को अव्ययित आदिशेष	1,34,308	8,98,41,523	1,25,24,947	-	-	-	-	-	10,25,00,778	
संस्कृति मंत्रालय से प्राप्त अनुदान	18,50,00,000	22,01,59,000	3,00,00,000	-		5,00,000	5,26,50,998	67,50,000	8,88,450	49,59,48,448
संस्कृति मंत्रालय को अनुदान अभ्यर्पित/ प्रतिदाय/वापस लौटाया	(1,76,54,881)	-	-	-	-	-	-	(44,19,837)	-	(2,20,74,718)
अन्य प्राप्तियाँ	**-**	**5,77,32,495**	**2,53,529**	**70,82,117**	**44,32,849**	**-**	**-**	**-**	**-**	**6,95,00,000**
योग ए	**16,74,79,427**	**36,77,33,018**	**4,27,78,476**	**70,82,117**	**44,32,849**	**5,00,000**	**5,26,50,998**	**23,30,163**	**8,88,450**	**64,58,75,498**
व्यय	16,74,79,427	31,56,30,102	81,78,476	70,82,117	44,32,849	5,00,000	5,26,50,998	23,30,163	8,88,450	55,91,72,582
अन्य भुगतान	**-**	**2,11,95,970**	**3,46,00,00**	**-**	**-**	**-**	**-**	**-**	**-**	**5,57,95,970**
योग बी	**16,74,79,427**	**33,68,26,072**	**4,27,78,476**	**70,82,117**	**44,32,849**	**5,00,000**	**5,26,50,998**	**23,30,163**	**8,88,450**	**61,49,68,552**
31/03/2024 को अव्ययित अंत शेष	-	**3,09,06,946**	-	-	**-**	**-**	**-**	**-**	**-**	**3,09,06,946**

10. गत वर्ष के तदनुरूप आँकड़ों को जहाँ भी आवश्यक हो पुनर्वर्गीकृत/पुनर्व्यवस्थित किया गया है, जिससे उन्हें चालू वर्ष के आँकड़ों के साथ तुलनीय बनाया जा सके।

11. अनुसूची 1 से 28 जिसमें, प्राप्ति और भुगतान, सा.भ.नि., तुलनपत्र, सा.भ.नि. प्राप्ति और भुगतान, 31.03.2024 को समाप्त वर्ष के तुलन-पत्र के संलग्नक एवं अभिन्न अंग हैं तथा आय और व्यय लेखा भी इसी तिथि को समाप्त वर्ष का संलग्नक एवं अभिन्न अंग है।

12. जैसा कि सी एंड एजी ने अपने एसएआर 2022-23 में इंगित किया है, सा.भ.नि. का तुलनपत्र, आय और व्यय खाता तथा प्राप्ति और भुगतान खाता पृथक-पृथक तैयार किया है।

13. वित्त वर्ष 2021-22 में, तुलनपत्र में मान्यता प्राप्त इलैक्ट्रॉनिक वस्तुओं और पुस्तकालय पुस्तकों पर मूल्यह्रास की गणना 12,22,374/- रुपये से अधिक पाई गई थी, जिसके परिणामस्वरूप व्यय का अपव्यय हुआ तथा अचल संपत्तियों का न्यून व्यय हुआ। इस मद पर विचार किया गया तथा विगत वर्ष से संबंधित इलैक्ट्रॉनिक वस्तुओं तथा पुस्तकालय पुस्तकों के मूल्यह्रास में कमी आई है और इसे अतिरिक्त साधारण मदों (अनुसूची 26) के अंतर्गत प्रस्तुत किया गया है।

ह./-	ह./-	ह./-	ह./-
(कुलदीप चंद्र)	**(बाबुराजन एस.)**	**(कृष्णा आर. किम्बहुने)**	**(के. श्रीनिवासराव)**
प्रवर लिपिक	**उपसचिव**	**उपसचिव**	**सचिव**

दिनांक : 04.06.2023
स्थान : नई दिल्ली

नियंत्रक-महालेखापरीक्षक द्वारा 31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए साहित्य अकादेमी के लेखाओं पर पृथक् लेखापरीक्षा प्रतिवेदन

1. हमने साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली के 31 मार्च 2024 के संलग्न तुलन-पत्र तथा समाप्ति वर्ष के आय एवं व्यय/प्राप्ति एवं भुगतान लेखा की लेखापरीक्षा नियंत्रक-महालेखापरीक्षक (कर्त्तव्य, शक्तियों एवं सेवा की शर्तें) अधिनियम, 1971 की धारा 20 (1) के अंतर्गत कर ली है। वर्ष 2023-24 तक की अवधि के लिए लेखापरीक्षा सौंपी गई थी। वित्तीय विवरणों में अकादेमी के तीन क्षेत्रीय कार्यालयों तथा दो बिक्री कार्यालयों के लेखे भी शामिल हैं। इन वित्तीय विवरणों को तैयार करने की ज़िम्मेदारी अकादेमी के प्रबंधन की है। हमारी ज़िम्मेदारी लेखापरीक्षा के आधार पर इन वित्तीय विवरणों पर विचार व्यक्त करने की है।

2. इस पृथक् लेखापरीक्षा प्रतिवेदन में भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की टिप्पणियाँ केवल उत्तम लेखा पद्धतियों, लेखा मानकों प्रकटीकरण नियमों आदि के वर्गीकरण, अनुपालन के संबंध में हैं। वित्तीय लेन-देन के लेखापरीक्षा की टिप्पणियाँ नियमों, विनियमों, कानून एवं कार्यान्वयन पहलुओं, यदि कोई है, का उल्लेख निरीक्षण प्रतिवेदन/नियंत्रक-महालेखापरीक्षक के लेखापरीक्षा प्रतिवेदन में पृथक् रूप से किया गया है।

3. हमने लेखापरीक्षा सामान्यत: भारत में स्वीकृत लेखापरीक्षण मानकों और लागू नियमों के अनुरूप की है। इन मानकों में अपेक्षित है कि लेखापरीक्षा इस प्रकार आयोजित तथा निष्पादित की जाए कि वित्तीय विवरण तथ्यों की गलतबयानी से मुक्त हों। वित्तीय विवरणों की लेखापरीक्षा वित्तीय विवरणों में दी गई राशियों तथा तथ्यों के समर्थन में प्रस्तुत साक्ष्यों के आधार पर की जाती है। लेखापरीक्षा में लेखा संबंधी नियामों तथा प्रबंधन की महत्त्वपूर्ण सूचनाओं के साथ-साथ वित्तीय विवरणों की प्रस्तुति का पूर्ण मूल्यांकन भी शामिल है। हमें विश्वास है कि हमारी लेखापरीक्षा हमारे विचारों को उचित आधार प्रदान करती है।

4. अपनी लेखापरीक्षा के आधार पर हम सूचित करते हैं कि :

   (i) हमारी सर्वोत्तम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार हमने अपनी लेखापरीक्षा के उद्देश्य से आवश्यक सूचनाएँ और स्पष्टीकरण प्राप्त कर लिए हैं।

   (ii) इस प्रतिवेदन से संबंधित तुलनपत्र, आय एवं व्यय खाता/प्राप्ति एवं भुगतान खाता को वित्त मंत्रालय द्वारा स्वीकृत प्रारूप के अनुरूप तैयार किया गया है।

   (iii) हमारे विचार से लेखापरीक्षा के दौरान लेखा पुस्तकों की जाँच करने पर प्रतीत होता है कि साहित्य अकादेमी में लेखा पुस्तकों तथा अन्य संबंधित दस्तावेज़ों को समुचित ढंग से रखा जा रहा है।

   (iv) आगे हम यह सूचित करते हैं कि—

ए. तुलनपत्र

ए. परिसंपतियाँ

ए.1 स्थाई परिसंपत्तियाँ (अनुसूची-8) - 25.31 करोड़ रुपये

ए.1.1.1 वर्ष 2023-24 के दौरान, अकादेमी ने 9.00 लाख रुपये की राशि से भारत के लगभग 100 जाने-माने संस्कृत कवियों की व्यापक जानकारी युक्त एक विशाल ऑनलाइन पोर्टल विकसित किया है तथा व्यय को पूंजीगत व्यय के स्थान पर अनुसूची-21 में 'अन्य प्रशासनिक व्यय' के अंतर्गत राजस्व व्यय के रूप में आरक्षित किया है। इसके परिणामस्वरूप स्थाई परिसंपत्तियों को कम करके तथा प्रशासनिक व्यय को वर्ष के लिए 9.00 लाख रुपये से अधिक दर्शाया गया है।

बी. सामान्य

बी.1 चालू परिसंपत्तियाँ, ऋण, अग्रिम आदि (अनुसूची-11) में 31 मार्च 2024 तक 1.57 करोड़ रुपये की राशि के विविध देनदार शामिल हैं। 1.57 करोड़ रुपये में से 0.56 करोड़ रुपये 1987-88 से 2020-21 की अवधि से संबंधित हैं। अकादेमी को इन लंबे समय से लंबित देनदारों की समीक्षा करनी चाहिए तथा यदि आवश्यक हो तो, लंबे समय से बकाया संदिग्ध देनदारों के लिए प्रावधान बनाना चाहिए। पिछली रिपोर्टों में भी इस ओर इंगित किया गया था, किंतु अकादेमी ने कोई सुधारात्मक कार्रवाई नहीं की है।

बी.2 चालू संपत्ति, ऋण, अग्रिम आदि (अनुसूची-11) में अन्य वसूली योग्य के लिए 11.22 करोड़ रुपये की राशि शामिल है। 11.22 करोड़ रुपये में से 2.91 करोड़ रुपये 1992-93 से 2019-20 की अवधि से संबंधित हैं। अकादेमी को इन पुराने अग्रिमों को समायोजित करने के लिए प्रभावी कदम उठाने चाहिए।

सी. सहायता अनुदान :

वर्ष 2023-24 के लिए प्राप्त सहायता अनुदान तथा उसके उपयोग का विवरण निम्न प्रकार है :

(रुपए करोड़ में)

वर्ष के दौरान प्राप्त सहायता अनुदान	49.59
गत वर्ष का अव्ययित शेष	10.25
वर्ष के दौरान आंतरिक प्राप्तियाँ	6.95
कुल उपलब्ध निधि	**66.79**
भारत सरकार को अध्यर्पित निधियाँ	2.21
वर्ष के दौरान ख़र्च	61.49
अव्ययित शेष	3.09

इस प्रकार, वित्तीय वर्ष के अंत में साहित्य अकादेमी के पास 3.09 करोड़ रुपये का अव्ययित शेष है।

डी. प्रबंधन पत्र

लेखा परीक्षा प्रतिवेदन में जिन कमियों को शामिल नहीं किया गया है, उनके बारे में साहित्य अकादेमी को प्रबंधन पत्र के माध्यम से प्रभावी कार्रवाई के लिए अलग से बताया गया है।

(v) पूर्ववर्ती अनुच्छेदों में व्यक्त हमारे विचारों के संदर्भ में हम यह कहना चाहते हैं कि जिस तुलनपत्र, आय एवं व्यय लेखा तथा प्राप्ति एवं भुगतान लेखा का उपयोग इस प्रतिवेदन के लिए किया गया है, वे लेखा बहियों के साथ अनुबंधित हैं।

(vi) हमारे विचार और हमारी सर्वोततम सूचना तथा हमें दिए गए स्पष्टीकरणों के अनुसार, वित्तीय विवरण में दी गई महत्त्वपूर्ण सूचनाओं तथा अनुलग्नक में दिए गए अन्य तथ्यों के आधार पर, हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि यह रपट भारत में स्वीकृत लेखापरीक्षा मानकों और नियमों के अनुरूप है।

(क) यह साहित्य अकादेमी के 31 मार्च 2024 तक के कार्यकलापों के तुलनपत्र से संबंधित है; तथा

(ख) उसी तिथि को समाप्त वर्ष के अधिशेष के आय एवं व्यय लेखा से संबंधित है।

भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की ओर से
ह./-
(राजीव कुमार पाण्डेय)
महानिदेशक लेखापरीक्षा
(केन्द्रीय व्यय), नई दिल्ली

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 25 अक्तूबर 2024

"प्रस्तुत प्रतिवेदन मूल रूप से अंग्रेज़ी में लिखित पृथक् लेखापरीक्षा प्रतिवेदन का हिंदी अनुवाद है। यदि इसमें कोई विसंगति परिलक्षित होती है तो अंग्रेज़ी में लिखित प्रतिवेदन मान्य होगा।"

अनुलग्नक

1. आंतरिक लेखापरीक्षा व्यवस्था की पर्याप्तता

अकादेमी का आंतरिक लेखापरीक्षा वर्ष 2023-24 तक चार्टर्ड अकाउंटेंट फर्म द्वारा की गई है।

2. आंतरिक नियंत्रण व्यवस्था की पर्याप्तता

प्रबंधन की वैधानिक लेखा परीक्षा के प्रति प्रतिक्रिया प्रभावी नहीं थी क्योंकि 2005-06 से 2021-22 तक की अवधि के लिए 35 लेखापरीक्षा पैरे लंबित थे।

3. स्थायी परिसंपत्तियों के प्रयत्क्ष सत्यापन की व्यवस्था

- भूमि और भवनों तथा वाहनों का भौतिक सत्यापन मार्च 2024 तक किया गया तथा पुस्तकालय पुस्तकों का मार्च 2022 तक किया गया है। फ़र्नीचर एवं स्थावर जुड़नार तथा कंप्यूटर और सहायक उपकरणों जैसी अन्य स्थाई परिसंपत्तियों का प्रत्यक्ष सत्यापन 2014 तक किया गया है।
- साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय तथा उप-क्षेत्रीय कार्यालय में रखी परिसंपत्तियों का प्रत्यक्ष सत्यापन नहीं किया गया है।

4. सामान सूची के प्रत्यक्ष सत्यापन की व्यवस्था

सामान सूची का प्रत्यक्ष सत्यापन मार्च 2021 तक किया गया है।

5. देय राशि के भुगतान में नियमितता

31 मार्च 2024 तक छह माह से अधिक का कोई भुगतान बकाया नहीं था।

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय
रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग,
नई दिल्ली 110 001
दूरभाष : 011-23386636/27/28
फ़ैक्स : 091-11-23382428
ई-मेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in

विक्रय कार्यालय
स्वाति, मंदिर मार्ग
नई दिल्ली 110 001
दूरभाष : 011-23745297, 23364204
फ़ैक्स : 091-11-23364207
ई-मेल : sales@sahitya-akademi.gov.in

क्षेत्रीय कार्यालय

कोलकाता
4, डी.एल. ख़ान मार्ग
कोलकाता 700 025
दूरभाष : 033-24191683, 24191706
फ़ैक्स : 091-33-24191684
ई-मेल : rs.rok@sahitya-akademi.gov.in

मुंबई
172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग
दादर, मुंबई 400 014
दूरभाष : 022-24135744,24131948
फ़ैक्स : 091-22-24147650
ई-मेल : rs.rom@sahitya-akademi.gov.in

बेंगळूरु
कला ग्राम के सामने, पेट्रोल पंप के बगल में,
ओल्ड आउटर रिंग रोड, मैसूर रोड, ज्ञानज्योति नगर,
मल्लथाहल्ली, बेंगळूर 560056
दूरभाष : 080-22245152, 22130870
फ़ैक्स : 091-81-22121932
ई-मेल : rs.rob@sahitya-akademi.gov.in

चेन्नै
मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग (द्वितीय तल), 443(304)
अन्नासलाइ, तेनामपेट, चेन्नै 600018
चेन्नै 600018
दूरभाष : 044-24311741
फ़ैक्स : 091-44-2251466
ई-मेल : chennaioffice@sahitya-akademi.gov.in